रसिक लाल बांकानेर को ज्ञान सूरी महाराज ने मुंबई में सोनगढ़ जाने को मना किया था / वहाँ जहर है / जिज्ञासा हुई तो चले गये / और वहीँ के हो कर रह गये / आज उनके पुत्र कोलकाता में प्रतिदिन स्वाध्याय में गुरुदेव श्रीकि CD सुनते हैं /

काल खंड के मंगल मुहूर्त में दिग. प्रांगण पर पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी का अवतरण युग की एक क्रान्ति थी, सदियों से बंद जिनवाणी के विमोचक पूज्य गुरुदेव श्री के तत्व सम्पादन की एक स्पर्धाजनक खानी है, श्रुत रत्नाकर समयसार उन्हें मिला, जैसे सत्य का पिटारा ही पाया, अब वह पन्नों पर लिखा न रहा, बल्कि ज्ञान की अनुभूति में छप चुका था और उनके मन मन्दिर में उपास्य देव के रूप में प्रतिष्ठा पा चुका था / यही समयसार अभीष्ट मित्रवत जीवन के अंत तक उनके साथ रहा / दिग.संतों के ग्रन्थों का अपने स्वच्छ ज्ञान द्वारा दोहन कर उन्होंने शुद्ध आत्म तत्व की प्रतिष्ठा की / "पूज्य गुरुदेव से पूर्व आध्यात्मिक चिंतन का रिवाज तो था, पर चिंतन में अध्यात्म नहीं था /" सच कहा जाय तो पथ तो था पाथेय इस युग को आपसे मिला /- बाबू जुगल किशोर युगल कोटा

વિરહ ની વેદના

હોય રમત ઘડી બે ઘડી ની, બહુ તો દિવસ બે ચાર ની

આ તો અનંતા યુગ ગયા એવી રમત રમવી નથી . ૧.

હું તો ક્ષુધા નો સ્વાદીયો ચાલ્યો ક્ષુધા ની શોધમા

ઝેર ના પ્યાલા મળ્યા એવી રમત રમવી નથી. ૨.

उपदेश नोंध -१५ मुबई कार्तिक वद ११, १९५६ नव सन १९००

प्रव.सार प्रवचन न.१२३ दि ८-७-७९ बी साइड ६ मिनिट

"गुरुदेवश्री - श्रीमदजी को किसी जिज्ञासु ने पूछा कि आपके पवित्र तत्व का प्रचार कब होगा ? उत्तर- अमारा निर्वाण पछि ५० वर्षे आ पवित्र ज्ञान नुं प्रचारक निकणसे।"

अगास में ५० समयसार का आर्डर मिले तो समझ लेना कि प्रभावना काल आ गया।

अगास से ६००-७०० समयसार रामजी भाई ने मंगा लिये थे।

अध्यात्म प्रभावना नायक

सावधान – असंपादित है। मात्र सुधीजनों के अवलोकनार्थ समीक्षणार्थ समस्त संशोधन सहर्ष आमंत्रित हैं।

इस समय भारत में महारानी विक्टोरिया शासक एडवर्ड जार्ज पंचम का शासन था।

अनुक्रमणिका

प्रसंग
अध्ययन की सीमाएँ
तिथि गणना
मुनिराजों के प्रतिभक्ति पूर्ण उद्गार- समयसार की महिमा
संस्कृति पुनरुत्थान
अद्भुत बातें
हेमंत गाँधी के अनुसार

गुरुदेवश्री का स्वास्थ्य
वेदीप्रतिष्ठा
शासन प्रभावना (संस्कृति पुनरुत्थान)
करुणा
साधर्मी वात्सल्य
ब्रह्मचर्य
मंगलायतन पत्रिका अक्टू-२ पृ २
ग्रन्थ मिले
भ्रान्ति निरसन
मूल्यानकन- सादा भोजन
दृढ़ता, निर्भीकता, स्पष्ट वादिता
पुण्ययोग
श्रीमद रायचन्द्र- गुरुदेवश्री से श्रीमद राजचन्द्र की तुलना
आगम आग्रह
दिनचर्या
उत्तम क्षमा
भक्ति

धन्यावतार की प्रतिक्रिया
विचक्षणता – स्वप्न
विनोद प्रियता
विद्वानों का अभिमत श्रद्धांजलि
सरलता, निरभिमानता
भ्रांति निरसन
ब्र.हरिभाई की डायरी
मेरी अंतिम भावना
पूज्य गुरुदेवश्री
गुरुदेवश्री को ३ वार रोना आया
जन्म जयंती
परमागम मंदिर
प्रस्ताव - विद्वत परिषद
मुस्लिम परिवार पर मरणोपरांत प्रभाव

अध्ययन की सीमाएँ

कानजी = आत्मा, क्योंकि काया नहीं फिर भी जीता हैं |

का = काया

न = नहीं

जी = जीता

काया नहीं जीता = काया हारी, आत्मा जीता |

१- चार अनुयोग की मर्यादा |

२- इतिहास – गुण दोषों का उल्लेख | मात्र उज्जवल पक्ष का वर्णन मात्र नहीं | जैसे- अंजनचोर, भरत चक्रवर्ती, माघनंदी मुनिराज, श्रेणिक |

३- अंग्रेजी तिथि में परिवर्तन किया गया है, इसके लिये जन्मभूमि पंचांग, बोम्बे पुस्तक का प्रयोग किया गया है |

४- कथा पात्र का भुमिकानुसार नामोल्लेख किया गया है | जैसे – कानू, दलसुख भाई, पुई, भगत, मैडम, कानजीमुनि, कानजीमहाराज, कानजीस्वामी, गुरुदेवश्री |

५- कथानायक की आलोचना होगी |(सम्यक प्रकार से गुण दोषों का मूल्यान्कन किया जाएगा |)

६- नई पीढ़ी को सांस्कृतिक वसीयत (नई पीढ़ी को जिज्ञासा शामक हो |)

७- प्रमाणिकता हो |

८- निमित्तों की मुख्यता से कथन होगा |

९- गुरुदेवश्री के औदायिक भाव आदर्श नहीं हैं, जो उनका आदर्श है पारिणामिक भाव, वही हमारा आदर्श होना चाहिए |

१०- कथानायक रामवत होंगे | केवट, केकैयी की कथा ना होने से अन्य पात्रों की ज्यादा कथा ना होगी | अन्य की प्रशंसा-निंदा मात्र गुरुदेवश्री के

व्यक्तित्व को दिखलाने के लिये हैं | इसलिए सम्बन्धित पात्रों एवं उनसे सम्बंधित व्यक्तिओं से पूर्व में ही क्षमा प्रार्थी हूँ |

तिथि गणना

१-विक्रम स. गुजराती में कार्तिक से बदलता हैं, जबकि हिंदी प्रान्तों में चैत शुदी १ से |

२-मास का प्रारम्भ गुज में शुक्ल पक्ष से होता हैं जबकि हिंदी में कृष्ण पक्ष से |

३-अतः शुक्ल पक्ष का माह दोनों में सामान मिलता हैं | परन्तु कृष्ण पक्ष में माह के नाम का अंतर हो जाता हैं |

४-कार्तिक सुदी से चैत्र सुदी तक संवत एक समान चलता हैं चैत्र के बाद दोनों में अंतर दीखता हैं |

गुरुदेवश्री का जीवन का संक्षिप्त वर्णन

उमराला में- १३ वर्ष

गारियाधार- संस्कृत अभ्यास -१ वर्ष ६माह

पालेज में – ५ वर्ष

२१ वर्ष ४ माह साधू दशा में | फिर परिवर्तन

४५ वर्ष दिग. जैन शासन में |

मुनिराजों के प्रति भक्ति पूर्ण उद्गार

श्री कहान रत्न चिंतामणी जयंती महोत्सव पृ- ७०

१- संत नी वाणी भव अंत नी वाणी |

२- अहा मुनिराज ! एतो अरिहंत ना पुत्र छे, अरिहंत ना युवराज छे |

३- भावलिंगी साधुओं के हम तो दासानुदास हैं |

४- दिगम्बर साधू तो चलते फिरते सिद्ध ही हैं |

५- दिगम्बर साधू तो अरिहंत दशा की तलहटी हैं, अंतरमुहूर्त में उछल कर केवलज्ञान ले लेवें अहा ! इनकी अंतर परिणति की तो अद्भुत महिमा जयवंत हैं |

६- श्रावक के आँगन में मुनि पधारे अर्थात चलता फिरता मोक्षमार्ग ही पधारा है |

७- मुनि ने तो जिन तूल्य समजीने तेनु परम वहुमान अने आदर करवा योग्य छे |

८- मुनि दशा ऐटले छट्टा-सातमा गुणस्थाननी वीतरागी दशा |

९- मुनि तो सहज स्वरूप नी निर्विकल्प शांति माँ झूलता-२ सिद्धपद ने साधी रह्या छे |

१०- चैतन्य निधान ने खोलवा निकड़ेलो साधू जगत ना निधान मा लोभातो नथी |

११- दिग मुनिओं नी वाणी आ सामे आखा जगत भरे पाणी |

१२- "अहो ! जिस प्रकार कोई पराक्रमी कहा जाने वाला पुरुष वन में जाकर सिंहनी का दूध दुह लाता है, उसी प्रकार आत्म पराक्रमी महा मुनिवरों ने वन में बैठे-२ अंतर का अमृत दुहा है | सर्व संग परित्यागी निर्ग्रंथों ने वन में रहकर सिद्ध भगवंतों से बातें की हैं और अनंत सिद्ध भगवंत किसप्रकार सिद्धि को प्राप्त हुए हैं, उसका इतिहास इसमें भर दिया है |"

१३- अध्यात्म संदेश पृष्ठ ७२- "मुनि को तो बारम्बार निर्विकल्प ध्यान होता है वे तो केवलज्ञान के नजदीक के पडोशी हैं | वारम्वार शुद्धोपयोग के आनंद में झूलने वाले मुनिराजों की क्या बात है ! "

१४- "मुनि भगवंत तो शासन के सम्राट है, वीतराग मार्ग के स्तम्भ हैं, केवली के ज्येष्ठनंदन है और कल्पवृक्ष समयसार आगमों का आगम है |"- कानजी स्वामी

१५- जिनेन्द्र झलक मुनिराज चमकती

जैसे पुत्र में पिता का प्रतिभास आता है, वैसे ही मोक्षमार्गी मुनियों में वीतरागी जिन भगवान का प्रतिभास , वीतरागता का प्रतिभास झलकता है | मात्र
शांत...शांत...शांत वीतराग अकषाय भाव ही तेरता है |

१६- भाव लिंगी मुनि अर्थात चलते फिरते सिद्ध

अहो ! भाव लिंगी मुनि अर्थात चलते फिरते परमेश्वर ! जो भीतर आनंद के झूले में झूलते हैं और पञ्च महाव्रतों का राग उठे, उसे विष मानते हैं, आहा ! जिनके दर्शन बड़े भाग्य से प्राप्त हों, जो आनंद की खेती करते हों ...वह धन्य दशा अलौकिक है | गणधरों का नमस्कार जिसे पहुँचता हो, उस दशा की क्या बात !

17- छोटे से सिद्ध भगवान्

अहा ! आठ वर्ष का छोटा सा बालक – राजकुमार , जब दीक्षा लेकर मुनि होकर , ताप वैराग्य का वह अद्भुत दृश्य ! आनंद में लीनता !! मानो छोटे से सिद्ध भगवान् ऊपर से उतरे हों वाह रे वाह मुनिदशा !
जब वे छोटे से मुनिराज दो तीन दिन में आहार के लिए निकलें तब आनंद में झूलते - २ धीरे -२ चले आ रहे हों योग्य विधि का मेल मिलने पर आहार ग्रहण के लिए छोटे-२ हाथों की अंजुली जोड़कर खड़े हों, आहा ! वह दृश्य कैसा होगा |

18-

समयसार की महिमा - पूज्य गुरुदेव श्री के हृदय के उदगार -

१-भरत क्षेत्र के मनुष्य श्री कुन्दकुन्द आचार्य देव सदेह विदेह की यात्रा करि एक सप्ताह सीमंधर जिन की साक्षात् दिव्यध्वनी सुनी ओर भारत में पोंनुर पहाड़ पर श्री समयसार परमागमों की रचना करि और भव्य जीवों ने समयसार रूपी भेट दी है |

२-जय हो जय हो समयसार शुद्धात्मा भगवान् आत्मा की जय हो |

३-श्री समयसार भरत का सर्वोत्कृष्ट अद्वितीय नेत्र है सार में सार शब्द ब्रह्म का अंश है और आत्मा का हित करने जैसा है |

४-श्री समयसार अर्थात जगत का अज्ञान रूपी विष उतारने के लिए संक्षेप में मन्त्र हैं |

५-श्री समयसार तो अनंत-२ गुणों के आभरण से शोभित है और अध्यात्म का भण्डार भरा है |

६-श्री समयसार भरत क्षेत्र में केवलज्ञान का तिलक करनेवाला है | अर्थात जो इसे समझेगा उसे केवलज्ञान होगा ही |

७- श्री समयसार तो वीतरागी भागवत शास्त्र है |

८-जगत का भाग्य है जो यह अजोड़ शास्त्र समयसार, प्रवचनसार,नियमसार, पंचास्तिकाय, और अष्ट पाहड, जैसे शास्त्रों की रचना धन्य काल, धन्य घडी, धन्यपल में हुई | और शुरुआत से पुर्णतः रचाया गया है |

९-श्री समयसार यह अजोड़ रत्न है, अद्वितीय चक्षु है, और भगवान् के मुख से निकला शब्द ब्रह्म का यह एक अंग है, जैसे जगत में केवलज्ञान रूप चक्षु है उसी प्रकार यह एक जगत चक्षु है |

१०- श्री समयसार अर्थात भरत क्षेत्र में केवलज्ञान का दीपक है और यह तो केवली का कहा हुआ है |

११- आहा श्री समयसार तो जगत के भाग्य से यह वस्तु रह गई इसका पंचम काल में मूल्य नहीं हो सकता |

१२- श्री समयसार की प्रत्येक गाथा निश्चय का आश्रय एवं व्यवहार से भेद विज्ञान कराया है |

१३- यह समयसार अर्थात भरत क्षेत्र का भगवान् और आत्मा को साक्षात् हथेली में दिखाने वाला है |

१४- इस भरत क्षेत्र में श्री कुन्दकुन्द आचार्य देव ने तीर्थंकर जैसा काम किया है और अमृत चन्द्र आचार्य देव ने गणधर जैसा काम किया है | श्री श्री कुन्दकुन्द आचार्य देव के आँचल में से टीका बनाई है | उसके दरवाजे-मर्म खोले हैं |

१५- भाग्यवान लोगों के लिए भगवती शास्त्र रह गया है और इसका सुनना एक जीवन का लाभ है |

१६- समयसार अर्थात जगत का राजा, केवलज्ञान प्राप्त करने का वाचक और केवलज्ञान का विरह भुलाने वाला तथा केवली ने देखा जाना तत्व का गंभीर सूक्ष्म रहस्य है |

१७- समयसार ने तो संसार का मूल उखाड़ कर मोक्ष में पहुंचा दिया है |

१८- यह समयसार अर्थात भरत क्षेत्र में आत्मज्ञान पाने का सर्वोत्कृष्ट शास्त्र |

१९- यह समयसार भगवान का कहा हुआ भगवान है | यह समयसार और आत्मा अतिशय वाला है |

२०- इस समयसार की बात घणी गंभीर और रहस्यमय है विचारने से समझ में आती है |

२१- श्री समयसार की बात समझने के लिए कोई जुडी पात्रता हो तो समझ में आती है |

२२- यह अमृत चन्द्राचार्य की टीका पारमेश्वरी टीका है |

२३- यह समयसार अद्भुत चीज है सिद्ध होने की, संसार रहित, शरीर रहित होने की चीज है |

- शांतिनाथ कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन परमागम मंदिर देवलाली में लिखी प्रशस्ति |

भक्ति

१-प्रतिदिन प्रातः जागते हीं जिनवाणी माता को साष्टांग प्रणाम करते थे | फिर किसी से बात करते या भ्रमण आदि कोई कार्य में प्रवर्तते थे |

२-हर तीर्थयात्रा के बाद विधान कराते थे |

३-मानस्तम्भ की छाया पर भी पाँव नहीं रखते थे |

४- प्रत्येक प्रवचन में दिग. मुनिराजों एवं विद्वानों का नाम आदर सहित लेते थे |

५- आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी के फोटो का चलन देश भर के जिन्मंदिरों एवं घरों में कर दिया |

६- परमागम मंदिर आ.कुन्दकुन्द स्वामी का स्मृति मंदिर हैं | बेजोड़ हैं |

७- भजिने भगवंत भव अन्त लहो – सुनते हुए डोल उठते थे |

८- कहत बनारसी अल्प भवस्थिति जाकी |
सोई जिन प्रतिमा प्रमाणी जिन सारिखी ||

९- प्रतिदिन भक्ति एवं प्रवचन फिर यात्रा ही क्यों न हो |

१०- विषापहार स्त्रोत, भक्ताम्बर स्त्रोत, अपूर्व अवसर, पद्मनंदी पञ्चविन्शतिका पर प्रवचन |

११- वैराग्य पोषक भक्ति एवं संगीत ही पसंद था | आज भी सबसे ज्यादा आध्यात्मिक प्राचीन पद मुमुक्षुओं में ही पढ़े जाते हैं |

१२- अमृत भरी मूरति रची रे, उपमा न सोहे कोय |
शांत सुधा रस झरती रे, निरखत तृप्ति न होय ||
सीमंधर जिन ! देखे लोचन आज .....

१३- आ.अमृतचन्द्र के बारे में जैन गजट में 'काष्ठा संघी' पढ़ते ही आँसू आ गये थे |

१४- बेनश्री पंचकल्याणक पूर्व में ग्रामवासी मुमुक्षुओं को भक्ति, पूजा, प्रक्षाल, रात्री भोजन त्याग, नशा त्याग, जमीकंद त्याग, स्वाध्याय आदि सिखाती थी | स्वाध्याय करोगे तो आयेंगे नहीं तो नहीं | तो लोग सभी कुछ सीखने तैयार रहते थे | कोई भी ग्राम से आवे तो सारे समाचार पूछती थीं | स्थानक वासी संस्कार वश प्रमाद न हो इसकी चिंता रहती थी |

१५- अंकन्यास हेतु सोने की कटोरी एवं सलाई बनाई थी |

१६- ब्र.यशपाल – साहेब ! मैं नेरोबी न जा सकूँगा |

गुरुदेवश्री – डॉ साहेब ने कमाल किया हैं क्रमबद्ध पर्याय में, पढ़ी है तुमने |

ब्र. यशपाल – (मैंने फिर कहा) साहेब ! मैं नेरोबी न जा सकूँगा |

गुरुदेवश्री – अरे नियमसार की तो एक-एक गाथा में कमाल हैं |

ब्र. यशपाल – मैं फिर बोला परन्तु .....

गुरुदेवश्री – आगम पढने में आनंद ही आनंद होता हैं | समयसार आदि ग्रन्थों में तो आचार्यों ने कमाल किया हैं |

ब्र. यशपाल – मैं फिर बोला परन्तु .....गुरुदेवश्री ने धुन में सुना हीं नहीं |

गुरुदेवश्री – क्रमबद्ध पर्याय में क्या हैं, तुम क्या जानो !

(गुरुदेवश्री की धुन देखकर लगा की जयपुर का आग्रह छोड़कर मुझे नेरोबी जाना चाहिए और मैं गया भी)

१७- बेनश्री भक्ति के बाद पूरे मंदिर की व्यवस्था देखती थी | मैले कपड़े धुलवाती, छनने बदलवाना, सफाइ करना-कराना, स्वयं विधान मांडती, एवं भक्ती कराती थी |

१८- एक वार श्रीचन्द्रजी अकेले विधान मांड रहे थे | गुरुदेवश्री अचानक वहां आ गये तो फिर सब सहयोग के लिये आ गये |

१९- सीमंधर जिनालय को बड़ा कराने एवं शिखरबंद कराने का विकल्प गुरुदेवश्री को रहता था | ३ रात्री निद्रा न आयी | तब चम्पाबेन ने ७५०/- एवं सोने का हार तथा शांता बेन ने ५७५/- एवं सोने के कंगन तथा अन्य ब्र. बहिनों ने भी राशि एकत्रित कर गुरुदेवश्री के पास भेज दिए थे | ऐसे हीं एक ग्रन्थ छपने पर भी हुआ था |- प्रकाश कलकत्ता |

२०- आनन्द दशा में गुरुदेवश्री बोले आज मैं कुछ नहीं बोलूँगा हे सीमंधर भगवान आज आप ही बोलो | १ घंटे तक बोलते रहे खबर ही नहीं रहीं |

२१- भावलिंगी साधुओं के दासानुदास मानते थे |

२२- परमागम मंदिर का काम रुकने पर आ.कुन्दकुन्द का आव्हान किया हे प्रभो ! आप आओने जिन शासन प्रभावनार्थ मदद करो |

२३- फलटन – विद्वानों ने गुरुदेवश्री के समय में हंसी उड़ाते थे की बनारसीदास एवं टोडरमल जी अध्यात्म की भंग पीकर नाचे थे | गुरुदेवश्री बोले - अध्यात्म भंग है या अमृत खबर नहीं हैं | गुरुदेवश्री को बड़ा कष्ट हुआ |

२४- स्वामीजी ने २२ वर्ष सभा में एवं अकेले मे ५२ वर्ष समयसार जी वांचा होगा कैसे ? सोचो |

२५- गोंडल – झीकुलाल वालाचंद वेनाणी के पुत्र वसंत राय एवं उनके पुत्र जयेश भाई – ९३२७७-९१२६८ ने गोंडल में मंदिर बनाया | डॉ वहा प्रवचन करते हैं | एक वार गुरुदेव श्री नाटक देख रहे थे दिग मुनिओं का बिहार दिखाना था | मंडप में अन्धकार कर दिया गया परदे पर टोर्च से मुनि बिहार दिखाया गुरुदेव बड़ी उत्सुकता से आँखों के उपर हाथ रखकर देख रहे थे |

शासन प्रभावना

१-प.बनारसी दास जी के २०० वर्ष बाद प. टोडरमल जी हुएऔर उनके २०० वर्ष बाद पु.कानजीस्वामी हुए |

२-गुरुदेव श्री ने वाणी में अमृत घोली, जिसे सुन कर सारी दुनिया डोली /

३-जिनवाणी तो अनादि से धनुष वाण की तरह है वस अर्जुन की जरुरत हैं | गुरुदेव श्री अर्जुन की तरह भाव निकाल/ ग्रहण कर सके |

४- 103 डिग्री बुखार में प्रवचन करके आये बोले शरीर गरम लगता है |

कमजोरी क्या चीज ? प्रवचन करने का उत्साह रहता था |

५- जग मां वहु हतां अंधारा, सूझे नहीं मार्ग सांचा |

साथी साँचो जाग्यो कान, जगमां सत्य प्रकाशन हार ||

६- सम्मेद शिखर यात्रा में ईशरी में श्रुतसागर आचार्य के संघस्थ संस्कृत पाठी मुनिराज को किसी ने गुरुदेवश्री की शिकायत की तो उन्होंने संस्कृत हिंदी टीका मिलाई | गुरुदेवश्री को स्वयं ने कहा सभा में भी कहा कहीं भी गलती नही हैं |

७- गुरुदेवश्री के पहले सारे अज्ञानी एक पक्षीय दीखते थे | आपके प्रभावना योग से समाज का विभाजन हो गया | ज्ञानी-अज्ञानी विचारक एवं निर्विचारक ऐसे दो पक्ष अनादि- अनन्त हैं | जैसे पहले तीर्थंकर के जन्म लेते ही नरक एवं मोक्ष का रास्ता एक साथ खुलता हैं अर्थात आराधना एवं विराधना के भाव एक साथ ही अनेक जीवों अपेक्षा उत्पन्न होते हैं |

८- नारे बेनर की सोच बदल गई | अब हर कार्यक्रम में पूरा पांडाल देखने की इच्छा होती हैं |

९- १९७७ एवं १९७८ २ वर्ष प्रवचनकार प्रशिक्षण दिया |

१०- अब छाया तीर्थों का जन्म हो गया | जैसे – सोनगढ़, देवलाली, मंगलायतन, प.टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर, आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली, चैतन्य-धाम, सिद्धायतन इत्यादि |

११- २०१०-१३ स.- बछराज जी गंगवाल प्रायः बेनश्री को प्रेरणा करते थे की तीर्थयात्रा के बहाने गुरुदेवश्री को दिग.जैन शासन की विशालता एवं समाज का परिचय होने के लिए आवश्यक हैं की गुरुदेवश्री बाहर निकले | तब २०१३ में यात्रा हुई |

१२- खेडाग्राम का एक सदाचारी देरावासी गृहस्थ जो रामसूरीस्वर महाराज का शिष्य था ने गुरुदेवश्री एवं अपने गुरु रामसूरीश्वर महाराज को १५० प्रश्न पूछे थे | तीनों सम्प्रदाय में १- कर्म हेरान करते हैं जीव को ऐसा मानते हैं | २- जीव परमाणु का करता नहीं हैं परन्तु स्कंध का करता हैं | स्वामीजी से वार्ता करने के बाद उसने अपनी मान्यता बदली |

१३- गाथा ३२० के प्रवचन की फिल्म प्रोजेक्टर पर उतारी थी | बाद में खारा परिवार ने उसकी विडिओ बनायी |

१४- परमागम प्रतिष्ठा में २ लाख रु की बचत हुई थी | नवनीतभाई जवेरी ने नई पीढी को सोनगढ़ से जोड़ने के लिए जॉइंट लेट बाथ की सुविधा करने को कहा | उस समय तक सभी जंगल में ही जाते थे | इस योजना का बजूभाई हिम्मतभाई काफी विरोध करते थे | गुरुदेवश्री को भड़काते थे की नवनीतभाई दान ना पैसा संडास मां डाले छे | गुरुदेवश्री का विरोध उठाकर भी बड़ी कठिनाइयों से सुधार हो सका | डॉ चंदुभाई कहते थे साहेब ! आप ज्ञान दान का पैसा लाते हो और ये संडास में डाल देता है |

१५- नवनीतभाई ने सरस्वती भवन का मॉडल बोम्बे से ३०००/- रु में मुंबई से बनवाया | इसका भी बजूभाई ने काफी विरोध किया | साहेब ! घर का नक्शा कोई नहीं बनवाता ओर दान का पैसा - मंदिर का पैसा है अतः दुरुपयोग कर रहे हैं |

१६- नवनीतभाई ने सारा विरोध झेलकर भी जो ९००० केसेट बनाई इसने उनकी कर्मठता को अमर कर दिया |

१७- नवनीतभाई के आग्रह से गुरुदेवश्री ने समयसार कलश टीका पे ३०० प्रवचन किये | जबकि पूरे समयसार पर ही मात्र ६०० प्रवचन हुए थे |

१८- साहू शांतिप्रसाद ने ७०००/- तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट में दान दिए | समंतभद्र आचार्य कुम्भोज बाहुबलि ने कहा कि कहान नाम रखो तो खूब दान आयगा | निस्पृही रहते हुए भी प्रसन्नता से मांगलीक किया गुरुदेवश्री ने |

१९- रामजी भाई ने सामूहिक पूजा में कहा कि हिम्मत

२०- भाई बाधा डालते हैं तो उन्होंने क्षमा मांगी | ज्योतिषी के अनुमान अनुसार मन में था कि गुरुदेवश्री की आयु ८४ या ९१ की हैं अतः तब तक काम टलता रहे तो बाद में बहिनश्री का वचनामृत मात्र लिखना पड़ेगा | अतः अक्षर खोदने वाली मशीन का सदा विरोध किया आने पर भी कहा दरिया में डाल दो | अक्षर खुदने पर मिलाने भी नहीं जाते थे | आगरा के दयाल बाग़ का दृष्टांत देते थे की वहां हाथों से लिखा जा रहा हैं |

२१- सोनगढ़ नी वाणी अने पाणी बहु हार्ड छे |

२२- अनिवर्चनीय भाव कथन पद्धति के स्वामी |

२३- सोनगढ़ –स्वामीजी-समयसार-शुद्धात्मा- पर्यायवाची हो गये |

२४- ८ लाख लोग प्रभावित

२५- वनारसी दास से २०० वर्ष बाद टोडरमल जी उनसे २०० वर्ष बाद स्वामीजी |

२६- हजारों मनोज्ञ वक्ता तैयार – एक एतिहासिक घटना जानने योग्य है |

६० वर्ष से पूर्व श्वेताम्बरों ने १३ करोड़ की जमीन लाडनूं में खरीदी थी जहाँ विशाल विश्विद्यालय बनाया गया | राजस्थान में प्रथम मुख्यमंत्री हीरालाल जी शास्त्री थे जो संस्कृत प्रेमी एवं ज्ञाता थे अतः शास्त्री का कोर्स प्रारम्भ किया गया | आपके ही मित्र थे प. चेनसुखदास जी उनसे आपने कहा कि तुम

भी अपने धर्म का विभाग खोल दो | सभी अन्य धर्म के विभाग खुले थे | धन्य पल था कि ज्यादा ऊहापोह में न फंसा | सारी तैयारी हुई और सम्पूर्ण देश में राजस्थान ही एक मात्र ऐसा राज्य था जहाँ जैन धर्म से शास्त्री करके बी ऐ डिग्री कर सकते हैं | धन्य है कि गुरुदेवश्री का उदय हुआ और डॉ साहब ने जयपुर सम्हाला साथ ही वह भावना भी तैयार हुई कि अपने बच्चों को धर्म प्रभावना हेतु शास्त्री कराओ | डिग्री के अलावा भी स्मारक में ४५ ग्रन्थ पढाये जाते हैं जिससे आज ८०० विद्वान सारे देश में तत्वज्ञान का प्रभाव कर रहे हैं | और सोभाग्य तो यह है की देश भर की संस्थाएं आज स्मारक की ओर देख रहीं हैं और लाडनूं यूनिवर्सिटी का जैन विभाग भी दिग जैन शास्त्री ही चला रहे हैं | और श्वेताम्बर शास्त्री धन कमाने मात्र में लग गये जिससे उस समाज को तत्वज्ञान/ प्रवचनकार का लाभ न मिल सका | वहां आज भी प्रवचनकार का कार्य सम्माननीय नहीं माना जाता हैं |

२७- विद्वानों का आदर धन का नहीं | छोटी उम्र के वक्ता | १ जन ७७ जैन युवा फेड की स्थापना गुरुदेवश्री की हाजरी में हुई थी तब ग्रन्थ जलाए जा रहे थे, बहाए जा रहे थे, प्रतिष्ठित प्रतिमायें इसलिए निकाली जा रहीं थी की उस पर गुरुदेवश्री का नाम लिखा हैं | चांदखेडी में एक मुनिराज आहार त्याग कर जिद कर रहे थे की प्रतिमा निकाली जावें परन्तु सारे देश के १००० से अधिक युवक चांदखेडी पहुच गये कि हमारी लाश पर गुजर कर ही प्रतिमाएं हटाई जा सकेगी | आखिरकार मुनिराज को ही किसी तरह मनाया गया और वे विहार कर गये | और वे प्रतिमाएं आज भी पुज रहीं हैं | बाद में फेड के उद्देश्य आत्मानुभूति एवं तत्व प्रचार बनाया गया | ८० के बोम्बे अधिवेशन में गुरुदेवश्री पूरे अधिवेशन में विराजे थे और सञ्चालन किया था परमात्म प्रकाश भारिल्ल ने |

२८- समयसार पर १९ वार प्रवचन

२९- भक्तामर, श्रावकधर्म प्रकाश, विषापहार स्त्रोत, छहढाला, अपूर्व अवसर, आत्म सिद्धि पद्मनंदी पंचबिन्शतिका पर प्रवचन | कानातलाब के पटेलो में परिवर्तन |

३०- विरोध प्रचार की कुजी हैं |

३१- मैसूर में हाथी ने माला लेकर स्वागत किया रामजी भाई अनहोनी से बचाने हेतु स्वयं आगे आ गये और हाथी से माला ले ली | जयपुर इन्दोर में भी |

३२- अंत में सोनगढ़ की चिंता थी, परन्तु विश्वास भी था कि हिंदी प्रान्तों में ज्ञानचंद जी विदिशा एवं डॉ हुकम चन्द भारिल्ल तथा गुज में बाबुभाई(४२ ग्राम का राजा) खेमचन्द्र जी प्रभावना करेंगे |

३३- प्रवचन श्रोताओं में कस्तूरबा, गांधीजी, महादेवभाई देसाई, मुरारजी देसाई, ढेबरभाई समय-समय पर रहे |

३४- संत नी वाणी भव अंत नी वाणी –

३५- द्विसहस्त्राब्दी प्लान से मनी परन्तु एक भी व्यक्ति प्रभावित नहीं हुआ और गुरुदेवश्री की पवित्रता से लाखों प्रभावित हुए | व्यवस्थायें, केसेट, यात्रा, सहज ही होती चली गयी |

३६- गुरुदेवश्री को कैसे पहचाने ? एक भाई ने अपने ग्राम से आते समय पूछा | उत्तर – जिन्हें देखते ही तुम्हारा मन कह उठेगा की यही गुरुदेवश्री हैं |

३७- स्थानक में जनमना वरदान सिद्ध हुआ | विरोधिओं का आज भी परेशान रहना गुरुदेवश्री के प्रभाव को दर्शाती है | उन्नत प्राचीरें गुरुदेवश्री का धवल यशोगान कर रहीं हैं |

३८- विद्वत परिषद् – मंडन मिश्र के घर की पहचान की जहाँ तोता भी स्वतः परतः कह रहा हो | सोनगढ़ की पहचान जहाँ गली-२ में शुद्धात्मा की चर्चा चलती हो |

३९- आज भी कुन्दकुन्द आ.के ग्रंथो की टीकाएँ की जा रहीं हैं, अर्थ बदले जा रहे हैं | अतः गुरुदेवश्री को जीवित रखने का मतलब आ.कुन्दकुन्द एवं अमृतचंद्र को जीबित रखना |

४०- बेंगलूर में १६ दिन धर्मचक्र रहा | पंचकल्याणक के समय देवराज अर्श से स्वागत कराया तो वे बोले ऐसे महात्मा के सम्मान के लायक मैं नहीं हूँ | गुरुदेवश्री ने कभी हाथ में सम्मान नहीं लिया | नीचे देखते रहे |

४१- आज भी अजैन जैन बन रहे हैं |

४२- सब्जी विक्रेता – जैन यदि आलू ख़रीदे तो कहें आप जैन नहीं हो क्या ?

४३- मेहतरानी एवं माधूरी डॉ समयसार गाथाएं गाती थी |

४४- योग्य अभ्यासियों को पाटनीजी एवं खीमजीभाई प्रशिक्षित करते थे | ताकि वे प्रवचन सभा में प्रभावना कर सके |

४५- रत्नत्रय की धारा अल्पमत में ही रही हैं और रहेगी, अतः सदा प्रसन्न रहना |

४६- २००० वर्षों में पहली वार ४०००० व्यक्ति दिग हुए एवं ८ लाख प्रभावित |

४७- बाल संस्कार शिविर १९९० से प्रारम्भ

४८- आत्मधर्म ५ भाषाओं में |

४९- डॉ साहब – कानजी स्वामी का एक भी भक्त जहाँ रहता हैं वहां सोनगढ़ वसता हैं |

५०- महाभाग्य से बीसपन्थिओं को तत्वरूचि न होने से तेरह पंथी ही जुड़े जिससे शुद्धाम्नाय ही चली |

५१- गुरुदेवश्री को ४ थे गुणस्थान, वस्त्र, खानपान से सुरक्षित नहीं रखा जा सकता हैं महिमा मंडन से भी ज्यादा आवश्यक है कि गुरुदेवश्री का विराट प्रभावक तात्विक व्यक्तित्व को जाहिर करने से जैन संस्कृति का भविष्य सुरक्षित रहेगा | हम ज्यादा से ज्यादा तत्व की समझ बनावें इससे ही गुरुदेव श्री जिन्दा रहेंगे |

५२- १८३ ग्रंथों का स्वाध्याय |

५३- फिरोजाबाद – छदामीलाल जी ने सोनगढ़ के मानस्तम्भ को देखने इंजी भेजा और वैसा ही वनबाया | गुरुदेवश्री प्रवचन कर रहे हैं एक तरफ रामजीभाई दूसरी तरफ प.राजेन्द्र कुमार मथुरा झंडा हाथ में लिए हाथ जोड़े खड़े हैं | दर्शनीय हैं |

५४- गुज अनुवाद – १- स. १९९७ समयसार २- २००४ प्रवचन सार ३- २००७ पंचास्तिकाय ४- २०१४ नियमसार ५- अष्टपाहुड –अनुवादक हिम्मतभाई मेहता |

५५- चारों अनुयोगों एवं ज्ञान वैराग्य का सुंदर संगम- गुरुदेवश्री वर्णन करते – सीता कहती हैं – हे अग्नि ! ध्यान राखजे, जो जिनशासन का निर्मल यश मलिन होना हो तो ही मुझे छूना | अग्नि नहीं सुनती फिर भी सीता की श्रद्धा दृढ़ता ऐसा कहती हैं |

सांस्कृतिक पुनरुत्थान

१-पौन्नूरमलई- ७०० वर्षों तक कोई इतना बड़ा संघ लेकर कभी यहाँ नहीं आया | गुरुदेवश्री के पधारने से यह क्षेत्र प्रकाश में आया | और आज इस क्षेत्र की उन्नति देखते ही बनती है |

२-आ.श्री कुन्दकुन्द की सार्थकता, पैसे लेकर प्रवचन नहीं (१३-५-१९७७ परमात्म प्रकाश गाथा १९७ का प्रवचन में मुंबई से किसी विद्वान के पैसे लेने के समाचार पर "पैसे लेकर प्रवचन करने वाले लोभी से प्रवचन नहीं सुनना, मंडलों में प्रवचन नहीं कराना, समाज में बुलाना नहीं | याचना है ....भिखारी है ....पंडित या व्यापारी, प्रचार या व्यापार |" -आत्म दर्शन मई २०१४ से साभार), प.टोडरमल स्मारक, पंचकल्याणक सुधार, साधर्मी वात्सल्य, तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मंदिर निर्माण, प. जगन मोहन लाल जी का कथन स्वाध्याय जो उन ने देखी |

३-ग्रन्थ प्रकाशन, सारे देश को एक सूत्र में बंधा |

४-विदेशों में मंदिर प्रभावना | पाठशाला, पत्रकारिता सुधारी, तेरह पंथ का प्रचार-प्रसार- महाराष्ट्र, कर्नाटक, दक्षिण प्रदेशों में | गुजरात में दिग जैन मंदिर, गोम्मटेश्वर बाहुबली में कहान विश्रांति भवन, पोन्नुरमलई में जैन मंदिर, तीर्थ यात्रा में सुधार, पर्व मनाने में सुधार, प्रवचन के माध्यम से जुलूश, सांस्कृतिक कार्यक्रम होने लगे पहले विपरीत था | शोभा यात्रा में सुधार | भक्त नहीं भगवान बनेंगे | स्टडी सर्कल मुंबई, खडगासन प्रतिमा, कुन्दकुन्द्राद्री तीर्थ, जैन माडिया लाइव.कॉम पर २४ घंटे ३ रेडिओ चेनल जारी, अंग्रेजी माध्यम से प्रवचन प्रारम्भ, जैन हेल्प लाइन, शुद्ध भोजनालय, होस्टल, विद्यालय, शास्त्री बनने के ३ केंद्र, सारी दान राशी स्वप्रेरणा से प्राप्त | सी डी का चलन, कम्प्यूटर का चलन, फेस बुक, ७५ वर्ष पूर्व मंदिर में जिनवाणी के नाम पर पूजा की पुस्तक एवं कथायें थी, भजन चालीसा पढ़कर धर्म की इतिश्री समझ ली जाती थी स्वाध्याय का नाम निशान नहीं था |

आज जिनवाणी घर -२ में जितनी हैं उतनी तो कभी मंदिर में नहीं हुआ करती थी | कहीं-२ थी तो भी अलमारियों में बंद थी | इतने अन्धकार में शुद्धात्म तत्व की चर्चा हिन्दुस्तान के किसी कोने में माह दो माह में एक-आध लाइन गूंजती थी और फिर दासता, दीनता, कर्तत्व में बदल जाती थी | जब ज्ञायक की चर्चा दुर्लभ थी तो फिर पोषण की तो बात ही क्या थी |

५-परन्तु आज सभा में शास्त्र लेकर बेठने की परंपरा गुरुदेवश्री से चली |

संस्कृति परिवर्तन

६० वर्ष पूर्व और आज

क्र.	६० वर्ष पूर्व	और गुरुदेवश्री के बाद
१	पर्युषण, अष्टान्हिका पर्व पर भुज्जक-कथाकार आते थे	शेष मंदिरों में पूजा मात्र प्रधान थी		प्रवचन, गोष्ठी, अध्यात्मिक चर्चा वार्ता, नाटक, भजन, पूजन प्रधान	
२	अंधविश्वासी होकर अनुकरण	पूर्ण ज्ञान-परीक्षा करके अनुकरण
३	प्रथमानुयोग-चरणानुयोग प्रधानता	द्रव्यानुयोग-करणानुयोग सहित क्रिया – आचरण	
४	दीनता युक्त भजन अधिक पसंद	प्रभुता प्रधान भजन पूजन प्रधान
५	आध्यात्मिक रचनाये कम	अब प्रधान	
६	धन नहीं छूटता था		साधर्मी वात्सल्य पर न्योछावर

७	धन-दानी-आचरण-संयमी पुजते थे	अब ज्ञानीका भी आदर बड़ा हैं	
८	मुनिराजों में भी तात्विक चर्चा कम थी	अब उनमें भी अध्ययन बड़ा	
९	सफेद बाल-टोपी वाले पंडित थे	अब काले बाल एवं टोपी रहित हैं	
10		आज भी मुसलमान, हरिजन , सिन्धी एवं श्वेताम्वर लोग दिग जैन धर्म अपना रहे हैं	
		आधुनिक साधन पर जमकर चर्चा	Jain MediaLive.कॉम पर ३ channal चल रहे हैं	
		Mumukshu.org/.in/.net

ॐ ब्रह्मचर्य प्रतिज्ञा-विधि ॐ

अत्मार्थिओं को मार्गदर्शक जीवन ----------ब्रह्मचर्य

१-पात्र बिना वस्तु न रहें पात्रे आत्मीक ज्ञान, पात्र थवा सेवो सदा ब्र. मतिमान |

२-कपड़े बदल कर लघु शंका करते थे |

३-प्रासुक जल का सेवन करते थे |

४-जीवराज स्वामी को आधा ग्लास रस मोसम्बी का दिया रोगी दशा में | स्वयं नहीं लेते थे | ६ माह सीने में दर्द रहने पर डॉ की सलाह पर मुश्किल से लिया | केंसर की गरमी सर पर चढ़ती थी |

५-४५ दिन की बच्ची ८ वर्ष की कन्या अकेले नहीं आ सकती थी |

६-प्रवचन सभा में डिवाडडर लगाना | श्रोता की नजर स्त्री तरफ होने पर टोकते थे |---नियमसार ७९ कलश... दृष्टी मा खोट छे ? सा माटे त्यां जोवे छे |...भगा देते ...गुरु के कहने पर भी स्त्री एवं साध्वियों को नही पढाया |

७-ब्र.बहिनें ६-३० के बाद आश्रम से बाहर नहीं जा सकती थीं .....प्रवचन नहीं कर/सुन सकती थीं .... भाई-बहिनों का आश्रम एक साथ एक ग्राम में नहीं बनने दिया |

८-स्त्रिओं की कक्षा स्त्री लें |

९-बेनश्री की गाड़ी बिगड़ गई तो गुरुदेव की गाड़ी आई तो उसमें बैठनेसे मना कर दिया | फिर समाज ने दूसरी गाड़ी की व्यवस्था की |(विनय, भक्ति, ब्रह्मचर्य की मर्यादा)

१०- शिविरार्थी भी ब्र. पालते थे |

११- गृहस्थ भाई बहिनों के ठहरने की व्यवस्था अलग-२ |

१२- विधवाओं का भी स्थितीकरण |

१३- २१ वर्ष से पहले बहनों को ब्र. नहीं |

१४- परीक्षा लेकर अनुशासन देखकर दोनों बहनों की आज्ञा से ब्र.मिलता था |

१५- वैद्य को हाथ नहीं दिखाना |

१६- शील रक्षणार्थ चाकू, तान्गे में अकेले यात्रा नहीं करना, यात्रा में सावधानी समझाती थी |

१७- ९० वर्ष की उम्र में भी बुखार नापकर लेडी डॉ को नहीं दिया |

१८- ३५ वर्ष दोनों बेन ब्र. बहिनों को पढ़ाती थी |

१९- ब्र.पात्रता प्रगट करने के लिये दिया हैं ब्र. धर्म नहीं हैं प्रतिज्ञा पूर्व गुरुदेवश्री कहते थे | स्वाध्याय कर अनुभव कर ब्र. सार्थक करो |

२०- ब्र सूरज बेन बाल विधवा थी हर तरह से मदद की |

२१- ब्र. हेमचंद भोपाल – २ माह वाला विद्यार्थिओं के शिविर में गुरुदेवश्री को बुखार आया तो लेडी डॉ से इन्जेक्शन लेने से मना कर दिया तब राजकोट से डॉ चंदुभाई आये उन्होंने इलाज किया |

२२- विमलाबेन – थाली में रोटी परस्ते समय थाली में चोटी गिर गयी | अन्तराय माना |

२३- बेनश्री स्वास्थ्य पूछने आवें तो बीच में ब्र. चंदू भाई खड़े रहते थे |

२४- आकडिया पंचकल्याणक २०२३ में – एक महिलापैर छू गयी | प्रायश्चित लिया |

२५- अभयजी देवलाली – रक्षाबंधन के दिन गुरुदेवश्री स्वाध्याय मंदिर की ओसरी में आंटा मार रहे थे की उनकी नजर परमागम मंदिर के दरवाजे पर राखी बांधती बेनश्री पर पड़ी उसी समय गुरु अन्दर चले गये इधर बेनश्री भी अन्दर चली गयी | जब बेनश्री मंदिर से घर पहुँच गयी तब ही गुरुदेवश्री आंटा मारने बाहर आये | गुरुदेवश्री कमरे से बाहर भी कभी उघाड़े शरीर नहीं आते थे |

२६- शांतावेन ----------रीढ़ की हड्डी में दर्द होने पर प्रवचन में नीचे बैठते न बने तो गुरुदेवश्री के कहने से एक दिन कुर्सी पर बेठी परन्तु चित न लगा | फिर तो कष्ट उठाकर भी नीचे ही बैठती थीं |

२७- सुरेन्द्र नगर निवासी शारदाबेन (९ वर्ष की उम्र से सोनगढ रह रहीं हैं |) इन्ही की सगी बहिन सुशीला बेन ने सगाई छोड कर ब्रम्हचर्य लिया ५७ वर्ष से सोनगढ में रहती है |

२८- प्रथम पंचकल्याणकों में चर्चा की बजाय ७ से ८ नाटक होते थे | नाटक में लड़की बड़ी हो तो देखते नहीं थे | सती का नाटक देखकर वैराग्य आता था आँखों मे आँसू भर आते थे |

<u>गुरुदेवश्री द्वारा भाई वहिनों को इस विधि से प्रतिज्ञा दी जाती थी |</u>

१-सर्वप्रथम णमोकर मन्त्र एवं चत्तारि दण्डक का पाठ करते |

२-तुम्हारे आत्मा ने भूतकाल में खोटा देव-शास्त्र-गुरु को माना होय मनाव्या होय अनुमोदन करी होय उसकी आत्म साक्षी से त्याग करके सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा ज्ञान करो |

३-तुम्हारे आत्मा ने हिन्सा में ठीक माना-मनाव्या होय उसका पश्चाताप कर उसकी निवृत्ती करो और अपनी आत्मा को अहिंसा में स्थापो |

४-तुम्हारे आत्मा ने असत्य में लाभ माना-मनाव्या होय उसकी आत्म साक्षी से निवृत्ती करो और अपने आत्मा को सत्य में स्थापो |

५-तुम्हारे आत्मा ने चोरी के भावों में ठीक माना मनाव्या होय तो उसकी निवृत्ती कर के अपनी आत्मा की अचोर्य में स्थिति करो |

६-तुम्हारे आत्मा ने विषय में कृत कृत्यता मानी होय तो उसकी निवृत्ति करके ब्रह्मचर्य में अपनी सर्वस्वता जानो-मानो-आचरो |

७- तुम्हारे आत्मा ने परिग्रह में ममता करी होय, उस ममता का त्याग कर निर्ममत्व स्वभाव में - संतोष में परिणाम को लावो |

८- अब प्रतिक्रमण देते हैं –

तुम्हारे आत्मा को आजीवन पर्यंत काया से ब्रह्मचर्य पालना | प्रथम पञ्च परमेष्ठी की साक्षी से देव-शास्त्र-गुरु एवं आत्मा की साक्षी से ब्रह्मचर्य पालना |

तस्सं भंते पडिकमामि निंदामी गरहामि अप्पाणंबोसिरामी |

ब्र.लेकर शादी की-

१- डायाभाई – ये वर्णी जी के पक्षधर थे |

२- अमृतलाल भाई – विरोध कभी नहीं किया |

करुणा

१- अहमदावाद रेल्वे स्टेशन के सामने भाटिया की धर्म शाला मे गुरुदेवश्री को एक प्रश्न पूछा की वे सेठीयों को सभा मे आगे क्यों बिठाते हैं ? उत्तर- सबसे कम समझदार को सबसे आगे बिठाना चाहिए | ताकि कुछ समझ सके | अन्यथा ये तो मात्र हाजिरी देने आते हैं | पीछे बैठकर दूसरों को भी न सुनने देंगे | आखिर है तो भगवान आत्मा ही | आज नहीं तो कल समझेंगे | समझना यही पड़ेगा | आखिर समाज का नेतृत्व भी ऐसे ही हाथों मे होता है |

२- ८० वर्ष की उम्र में १९७० श्रावण भादो का माह था गुरुदेव दिशा के लिए जंगल गये थे नटू भाई आदि १०-१५ लोग साथ थे एक पनियल सर्प आया

और गुरुदेव को अंगूठे पर डंक मार कर चला गया सभी के हाथ में छाता थे किसी किसी के हाथ में डंडा भी था परन्तु गुरुदेव ने सभी को दूर कर दिया | तभी वह फिर दुवारा आ गया और वहीं डंक मार कर रहा तो गुरुदेव ने कहा भाई ! तू भी भगवान है इतना गुस्सा ठीक नहीं | फिर वह चला गया |

३-१९६२ में जब जितेन्द्र भाई ३ वर्ष के थे तब गुरुदेव की सेवा के लिए जाते थे | नाइ १०-१२ दिन में गुरुदेव के नाखून काटने को आता था नाख़ून एकत्रित करके खिड़की से बाहर फेंक दिए तो गुरुदेव ने कहा सारे नाखून के टुकड़े उठाकर लाओ | कारण पूछा तो बोले चिड़ीया इन्हें चावल समझ कर खाकर मर जावेगी | छोटा सा गड्ढा करके उसमे दबा दो | बालकने ऐसा ही किया | और जीवन भर के लिए एक शिक्षा भी मिल गई |

४-मैसूर में चिढ़ियाघर में बाघ के ऊपर हाथ रखकर फोटो खिचाया था उसे भी करुना से सम्बोधा | ब्र. रमाबेन देवलाली के पास फोटो है |

५-प्रति रविवार पलिताणा जाते थे | एक दिन रस्ते में एक दूध बेचने वाले राजपूत का एक्सीडेंट हो गया था | गाड़ी रोककर उसे जीथरी अस्पताल भिजवाया | जब तक स्वस्थ न हो गया तब तक जाते रहे एवं उसे आर्थिक मदद भी की |

६-नीम के फूल

७-गुरु.श्री की परिणति इतनी सुकोमल थी कि अगरबत्ती की गंध, सुगन्धित तैल वाला पुरुष प्रवचन में बैठा हो तो परिणति फिर जाती थी |

८-जीतूभाई गुरुदेवश्री के साथ घूमते समय नीचे झुकी डालियों को ऊपर उठाते तो गुरुदेवश्री मना करते अरे छूने मात्र से अनंत जीवों का घात होता हैं |

९-प्रवचन के बीच भी घास तोड़ने वाले को रोक देते थे |

१०- परमागम मंदिर बने या नहीं नीम के ५ झाड़ नहीं काटना |

११- सड़क पर मृत सांप को देख विरक्ति

१२- मान स्तम्भ के आस पास घास हटी |

१३- कुतिया व्याही सीरा खिलाया |

१४- स्याही का प्रयोग नहीं किया |

१५- वरसात में जीवात के कारण बोर्डिंग के कार्यक्रम बंद करा दिए |

१६- रात्रि में टोर्च से चर्चा करते थे | विद्युत् प्रयोग नहीं की |

१७- ८-८ दिन पानी गिरे तो प्रवचन बंद, भोजन कमरे में ही आ जाता था | भीग कर बीमार न हो जाओ | श्रोताओं के आ जाने पर भी इसलिए प्रवचन नहीं करते थे कि फिर अगले दिन फिर आ जाओगे |

१८- उतरते समय सीढ़ी के पास घास बचाने के चक्कर में पांव में फ्रेक्चर ..सीहोर के वैद्य का इलाज |

१९- लाठी- १८ वर्ष की ब्राह्मण लड़की लीला २ वर्ष पूर्व व्याह हुआ था चेचक में इल्ली पड़ गयी | रोवे मां मैंने इस जन्म में तो कोई पाप किये नहीं |

२०- वरसात एवं काई पर पैर नहीं रखते थे | चन्द्रगिरी पर्वत पर काई देखकर ऊपर नहीं गये |

२१- जैल में केदियों से मिलने गये | उन्हें उपदेश दिया | १- राजकोट जेल में २- बेगमगंज जेल में ८-१० डाकुओं को शाम के समय संबोधित किया था |

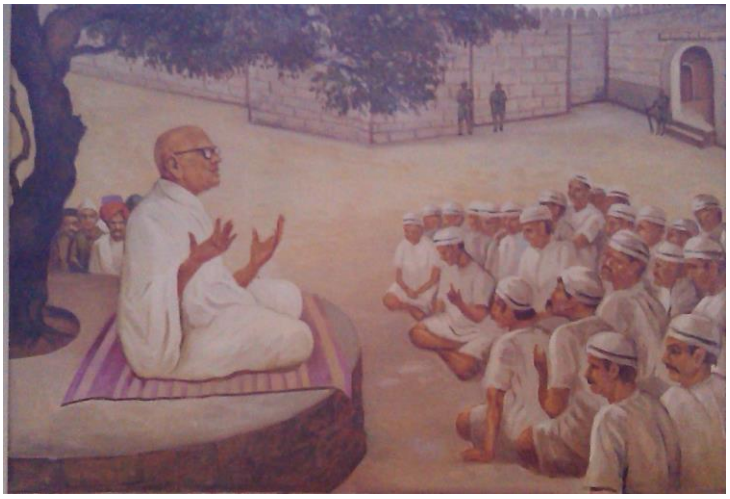

२२- ज्ञान चक्षु पृ-६ स्मरणांजलि – प्रभु भाई मोहन जी भाई घीया (जन्म- २२-७-१९०९- मृत्यु- ४-१०-१९६७) गुरुदेवश्री अंतिम समय सोनगढ़ से राजकोट दर्शन देने पधारे | बेसुधी में भी गुरुदेवश्री को पहुचते ही जागृति आयी एवं भक्ति भाव से ३ वार हाथ जोड़कर प्रणाम किया |

२३- एक भले घर की महिला को पानी पिलाती देखा | भीख मांगने की स्थिति में थी | गुरुदेवश्री को करुना आयी | गुरुदेवश्री को विदेह की सम्पन्नता एवं हम यहाँ कैसे आना पड़ा- जन्मे |

२४- हिम्मत भाई मेनेजर थे, सारा हिसाब-किताब, दान, पूजन व्यवस्था सम्हालते थे | रामजी भाई का मददगार था | हिम्मतभाई ने शंका कर के निकाल दिया | टीबी होने पर गुरुदेवश्री उसे जीथरी अस्पताल देखने दर्शन देने गये | उसका १००/- देकर इलाज कराया | गुरुदेवश्री के साथ सेठ आदि ४-६ लोग और भी होते ही है अतः डॉ सोचता जब आप जैसे महात्मा पधारे हैं तो अवश्य रोगी कोई विशिष्ट हैं, अतः इलाज करने में

और विशेष सावधानी रखता था | किसी ने पूछा कि उसे देखने क्यों गये ? गुरुदेवश्री – हम तो चोर को भी दिया-मार्ग दिखाते हैं |

२५- एक कुतिया व्याही स्वाध्याय मंदिर के पास | तो गुरुदेवश्री ने उसके भोजन पानी, दूध का प्रबंध कराया तथा सुरक्षा व्यवस्था भी करायी थी |

२६- हेदराबाद – उषाबेन की छोटी बहिन ने विधवा होने पर देवर से शादी की तो शर्मवश मंदिर न आती थी गुरुदेवश्री को सुन कर करुणा आई |

२७- वर्तमान चिकित्सा विद्या = अनार्य विद्या कहते थे | जिसमें बंदर आदि मारे जाते हैं |

२८- एक कुत्ता का रेल से एक्सीडेंट हो गया, किसी तरह लंगडाता-२ स्वाध्याय मंदिर के पास आ गया एवं भूख से व्याकुल होकर रोने लगा | गुरुदेवश्री ने फोरन देखा एवं प्रेमचंद भाई को बुलाया लगभग ५-५.३० बजे का समय था | बोले जल्दी रसोड़ा में जाओ एवं तेल का सीरा-हलवा बनबाकर लाओ | वे चले गये | परन्तु आने में काफी विलम्ब हो गया | गुरुदेवश्री बहुत नाराज हो गये | प्रेमचंद भाई कुछ न बोले मात्र क्षमा मांग ली | बाद में गुरुदेवश्री के साथ घूमते-२ गुरुदेवश्री ने पूछा की बिलम्ब का कारण क्या था ? उत्तर मिला – साहेब ! रसोड़ा बंद हो चुका था, रसोइया के घर गया तो वह बाजार चला गया था | जब उसे बाजार में ढूंढा, तब उसने आकर शीरा बनाया | अच्छा प्रेमचन्द भाई ! मैं व्यर्थ ही नाराज हो गया | क्षमा राखजो – करजो |

प्रेमचन्द भाई चरणों में गिर पड़े साहेब ! आपका इसमें क्या दोष हैं ? मेरा तो सोभाग्य हैं कि आपश्री की सेवा का अवसर मुझे मिलता हैं |

कुत्ते को घी का हलवा देने से खुजली का रोग हो जाता है अतः गुरुदेवश्री को लोक व्यवहार का ज्ञान था | उसे तेल का शीरा बनवाया था |

रोज गुरुदेवश्री उस कुत्ते के पास जाकर बैठ जाते तथा करुणा करते कि ओहो ! इस जीव ने भगवान आत्मा की विराधना करके कैसी-२ दशा धारण की हैं | बेचारा जीव अशरण हैं | जब तक कुत्ता स्वस्थ न हो गया रोज शीरा बनवाते थे | २-३ दिन बाद तो वह जाने कहाँ चला गया | गुरुदेवश्री पूछते रह गये | भागी ग्या |

25- एक दिन उमराला का एक व्यक्ति चप्पल उतारने के स्थान में बैठकर प्रवचन सुन रहा था | गुरुदेव श्री की नजर पड़ी तो फोरन पूछा कौन हैं ? सभा बोली चमार है | साहेब ! गुरुदेव बोले आत्मा चमार नहीं होती है उसे आगे बुलाकर सबसे आगे बैठाया और वह तो इस प्रसाद से निहाल हो गया |

२६- एक दिन गुरुदेव श्री अचानक बोले समिति - रसोड़े में चलो | वहां १० बजे पहुंचे तो रसोइया बेसन की चक्की चक्की बना रहा था | गुरुदेव बैठकर देखने लगे वह चाकू से निशान बनाने लगा तो गुरुदेव बोले ऐसे नहीं ऐसे और स्वयम चाकू से निशाँ लगाने लगे | रसोइया बोला साहेब इस तरह तो बर्फी का भुक्का-चूरा हो जाएगा गुरुदेव बोले - मने खबर छे | साबुत बर्फी रहेगी तो सेठ लोग खा जायेंगे इन कर्म चारियों को कुछ न बचेगा तो भुक्का तो बचेगा| इतनी विशाल सोच थी कि कर्म चारियों को भी मीठा खाने को मिले |

२७ - गाथा ३२० पर विशेष प्रवचन करने के लक्ष्य से इस गाथा के फोटो कॉपी कराई तब सभा में कोई व्यक्ति इस पाने से हवा करने लगा तब गुरुदेव बोले अरे ! ऐसे जिनवाणी कीअसादना होती है | अविनय देख नहीं सकते थे |

२८- बालकों को रोजाना बादाम पैडाआदि देते थे साथ ही रसोई में क्या बना पूछते थे | यहाँ तक किस्वाद कैसा आता है यह भी पूछते थे | कोई कमी ज्ञात होने पर फ़ौरन व्यवस्थापक को बोलते थे | सारे ट्रस्ट के कर्मचारी एवं व्यवस्थापक सजग रहतेथे |

२९- एक छोटे से ग्राम में गुरुदेव श्री को बुखार आ गया वहां श्रोता भी कम थे सभी ने अनुरोध किया कि आज प्रवचन नहीं करो | परन्तु गुरुदेव बोले अरे इन लोगों में भगवान् आत्मा की बात कब कानों में पड़ेगी | कम से कम बात तो सुनेंगे आज नहीं तो कल रूचि लगेगी और भगवान बनेंगे | और प्रवचन किये |

३०- जामनगर का एक १० वर्ष का बालक ने गुरुदेव को पूछा साहेब कारण परमात्मा सदा हाजिर है तो कार्यपर्मात्मा क्यों नहीं दिखाता ? गुरुदेव श्री बड़े प्रसन्न हुए और अनेकों वार इस प्रश्न की प्रसंशा की |

सरलता

१-दोनों बहने समकिती होने पर भी आँखे फाड़कर सुनती हैं तो तुम्हें तो सावधानी से सुनना चाहिए | बहिनों को भलामन करते थे |

२-हूँ नाच्यो नथी पण नाचणार ने जोयुं छे | वधु जोयुं |

३-ग्राम के अजैन स्वस्थ होने पर गुरुदेवश्री का आशीर्वाद लेने आते एवं उनकी महिमा बखानते तो गुरुदेवश्री कहते मैं खुद ही रोगी हूँ, मेरी महिमा से कोई स्वस्थ कैसे हो सकता है |

४-सनावद पंचकल्याणक में गुरुदेवश्री को मंदिर से ही न निकलने देते थे | समवशरण में आ.कुन्दकुन्द की प्रतिमा विराजने न दे रहे थे | गुरुदेवश्री ने सरलता से कह दिया कि मत विराजमान करो |

५-गुरुदेवश्री साधू दशा में दांत नहीं मांजते थे तो पीले पड़ गये थे पाटनीजी ने निवेदन किया तो मांजने लगे थे | अहो सरलता !

६-कलकत्ता-१९५७ की घटना |

७- भोगीभाई अहमदावाद ने परमागम मंदिर में सोना भराने से मना कर दिया कारण के असातना थाय छे | गुरुदेवश्री ने मान लिया | इसीलिए अष्टपाहुड में सोना भरा सके शेष में नहीं |

८- श्वेताम्बर रामविजय महाराज – तकरार करने को तैयार | गुरुदेवश्री ने चर्चा नहीं की चले गये | उन्होंने कहा – भाग गया | गुरुदेवश्री बोले- कषाय छोड़ के भाग गया | विरोधी कुछ भी करे तो गुरुदेवश्री मौन ही रखते थे |

९- द्विदल स्वीकार किया, दूध खिचड़ी खाना बंद कर दी | रसोड़ा में दही-छाछ की कढ़ी बंद करा दी थी | नीम्बू, केला सेव को हरे फल-सब्जी के रूप में माना पहले नहीं मानते थे | परन्तु दिग विद्वानों के आग्रह को सरलता से स्वीकारा-अपनाया |

१०- जीवराज महाराज का ध्यान रखने के लिए पूरणचन्द जी को रखा था | वे उतावल स्वभाव के व्यक्ति थे अतः उन्हें डाट पड़ जाती थी, परन्तु ग्रन्थ देते समय सबसे पहले उन्हीं को ग्रन्थ भेट करते थे |

११- सरलता----------फतेपुर पञ्चकल्याणक तक प.टोडरमलजी को व्रती मानते थे परन्तु डॉ साहब के कहने पर अव्रती समकिती मान लिया | ब्र.रायमल जी ने उन्हें अव्रती लिखा हैं | गुरुदेवश्री चिठ्ठी के आधार से 'यथायोग्य विनय अवधारना' से अनुमान लगाते थे |

१२- जिज्ञासु जीवों को रसोड़ा में भोजन एवं साहित्य निशुल्क दिलाते थे |

१३- एक दिन छात्रावास के बच्चों से पूछा- तमने शुं खादू ? बच्चे – भेल | गुरुदेवश्री समझ न सके बच्चे समझा न सके तो प्रवचन में बोले – रामजीभाई को पूछा उन्हें भी समझ में नहीं आया | जब समझ में आया तो बोले अरे ! भेल एटले के जुदी-जुदी चीजें मिलाइने खाबुं |

१४- सरलता- साहू शांतिप्रसाद के घर पर गुरु. डॉ साहब एवं स्व.हिम्मतभाई जोबालिया ठहरे हुये थे | रात्रि में डॉ साहब के २-३ प्रवचन सुनकर शांतिप्रसादजी बोले मेरे साथ कश्मीर चलो मुझे सिखाना | सभी ने कहा चले जाओ सेठिया खुश हो गया तो लाभ ही लाभ होगा | गुरुदेवश्री ने भी हाँ कह दी | डॉ साहब ने कहा – यहाँ का शिक्षण शिविर का लोस होगा | यहाँ तो आपके पुण्य प्रताप से सेठिया ४८ डिग्री में भी सुन लेते है | वहां तो वे मेरी नहीं सुनेगें मुझे सुनाएगें | अतः मुझे जाने के लिये न कहें | स्वार्थ छोड़कर धर्म के खातिर जाना न स्वीकारा | गुरुदेवश्री ने भी सरलता से स्वीकार कर ली |

१५- कुछ समय तक दोनों पर्युषण मनाये जाते थे | बाद में दिग मात्र ...श्वेताम्बर समझ जाए अतः उनके पर्युषण में भी प्रवचन करते थे | समिति में १८ दिन तक एक समय भोजन बनता उसमें भी हरी सब्जी नही बनती थी |

१६- फूलचंद्रजी से अनुरोध कोई आगम की भूल न हो जावे | जो भी सुधार बताते मान जाते थे | बहिनश्री को आरती बहुत पसंद थी, परन्तु बंद की एवं टोर्च-बेटरी का प्रचलन हुआ | द्विदल बंद, प्रतिमा की लाली एवं कीकी, ट्रस्ट डीड सुधरी मंदिर का नाम बदला | नीम का पेड़ हटना, घास हटाना |

१७- एक वैष्णव - करसनभाई राजकोट के घर पगल्या करने चले गये तो वह कट्टर मुमुक्षु हो गया | उनका पुत्र अमेरिका में भी घंटो व्यवस्थित स्वाध्याय करते हैं |

१८- राजकोट में वोहरा मुसलमान का परिवर्तन हुआ बाद में प्रवचन कार बना | वस्त्रापुर में २ भाई आज भी गुरुदेवश्री के सी डी प्रवचन में १५ किलोमीटर से आते हैं | हेदराबाद में एक मुसलमान कु. लड़की दिग जैन धर्म पालती हैं |

१९- फूलचन्द्रजी का पत्र जन्म जयंती न मनाने को भी था परन्तु भवितव्य था तार्किक नहीं, भक्त नहीं माने इस माध्यम से स्वाध्याय विधान ही तो होता है और प्रवचन –ग्रन्थ केसेट घर-२ पहुचती हैं | अतः चलती रहीं | लेकिन गुरुदेवश्री ने बहिनश्री की सम्यत्व जयंती की तरह अपनी समकित जयंती न मनाने दी |

२०- अपना नाम हटाने को – हिम्मतनगर, उदयपुर की दो प्रतिष्ठा में भी गुरुदेव ने विरोध देखते हुए अपना नाम प्रतिमा पर लिखने से सरलता से इनकार कर दिया |

२१- वचपन से विरक्त थे छल-बल न जाने | अल्पायु में दीक्षित हो गये | एक पंडित जी को डॉ साहब प्रवचन के योग्य नहीं मानते थे अतः निर्णय हुआ कि नहीं भेजना | वे स्वामीजी के पास जाकर बोले साहेब ! मेरा तो आत्म कल्याण करने का भाव हैं | मैं प्रवचन में नहीं जाऊँगा | गुरुदेवश्री प्रसन्न हुए | प्रवचन में बोल दिया | इन्हें प्रवचन में न भेजा करो आत्म कल्याण करने दो | डॉ साहब ने बाद में खुलासा किया कि साहेब ! ....| तब गुरुदेव को सत्यता का भान हुआ |

२२- राजकोट जेल में २५ डाकुओं को १५ अगस्त को संबोधन किया |

२३- ग्वाला हूँ प्रभु छुं गुरुदेवश्री ने प्रशंसा की सुबह -२ ग्वाला बोले हूँ ...

२४- दूसरी यात्रा समय एक गुजराती वृद्ध ने जयकारा किया – तीर्थंकर महाराज की जय गुरु- नहीं रे भाई ! अब मेरी आँख खुल गई हैं मैं तो अव्रती श्रावक ब्र. हूँ |

२५- रमेशभाई घाटकोपर – बालावस्था में बोले – साहेब तमे तो बहु रुपाड़ो छो | \

गुरु- राख थई जसे | नाराज होकर बालक चला गया |

२६- बाबुभाई, शांताबेन, नवनीत भाई की भरी सभा में आलोचना की |

२७- अंतरिक्ष पार्श्वनाथ पञ्चकल्याणक में गुरुदेवश्री की गद्दी से प.फूलचन्दजी ने प्रवचन किये तो लोगों ने विरोध किया | गुरुदेवश्री ने समता एवं प्रेम प्रदर्शित किया | गादी से प्रवचन करने वाले एक मात्र वे ही विद्वान् रहे |

२८- कलकत्ता जुलुश शांति से

२९- १९६४ में डॉ साहब पहले विद्वान जिन्होंने गुरुदेवश्री के आग्रह से धोबी तलाब पर रात्रि प्रवचन प्रारम्भ किये | पंचकल्याणक में |

३०- बीना में भक्तों ने बिना देव-दर्शन के दूध देना चाहा तो बाबूलालजी मधुर ने रोका तो गुरुदेवश्री तत्काल मंदिर गये दर्शन के बाद ही दूध लिया |

३१- समयसर प्रवचन में 'युग-प्रधान' लिखा तो गुरुदेवश्री ने मना किया यह तो बहुत बड़ा सम्बोधन हैं | मैं इस योग्य नहीं हूँ |

३२- ब्र.सुशीलाश्री – दीवाली आदि त्यौहार पर ग्राम के लोग गुरुदेवश्री का आशीर्वाद लेने आते थे | और महिमा करते थे | यहाँ तो पत्थर थे आपने चमन कर दिया, यहाँ तो ढोर बैठते थे आपने वसावट कर दी | गुरुदेवश्री बाद में कहते मुझे कर्तापने की गाली न दो |

३३- बोम्बे जन्म-जयंती के समय पांडाल में जाते समय बाहर एक बड़ा फ़िल्मी पोस्टर देख कर गुरुदेवश्री सडक पर ही आँखों पर हाथ लगाकर गौर से देखने लगे, प्रवचन में बिस्तार से वर्णन करने लगे | आ शुं छे ! कैसा कलिकाल पुरुष की गोद में स्त्री ..! अरे लाज कहाँ गयी |

३४- ८५ वी जन्म जयंती श्वे.भाई उपेन्द्र भाई ने राजुल नेमी संबाद किया तो पूरे समय बैठकर सुना | विरोधियों को भी पूरा आदर देते थे |

३५- लालूभाई गुरुदेवश्री के साथ घूम रहे थे | भाई को विचार आया की गुरुदेवश्री का चलोटा पुराना हो गया हैं पैर दिख रहे हैं | तभी गुरुदेवश्री स्वयं बोले – कोई सोचेगा की कोई गुरुदेवश्री को कोई चलोटा नहीं दे सकता |

३६- स्वयं की प्रशंसा सुनते ही उठ जाते या रोक देते परन्तु बोलियाँ लगे तो पूरे समय उत्साह से बठे रहते थे |

३७- पंकज जवेरी बोम्बे में कार से दिशा एवं ४-६ घरों में पगल्या के लिए ले जाते थे | ब्रिज पर से १० मिनिट का रास्ता रह गया था कि लोटते में पेट्रोल ख़त्म हो गया | वे घबरा गये | गुरुदेवश्री हंसे बोले – सोनगढ़ की कार बिना पेट्रोल के चलती हैं | यह कार बिना पेट्रोल के नहीं चल रही | तभी दुसरे सधर्मी की गाड़ी आ गयी गुरुदेवश्री उससे चले गये |

३८- ट्रस्ट डीड में लिखा था “कानजी मुनि की परम्परा के प्रचार प्रसार हेतु” इस बाक्य को पढ़ते ही पाटनीजी ने गुरुदेवश्री को कहा तो गुरुदेवश्री ने सही करा दिया |

३९- महावीरकीर्तिजी महाराज पधारे तो गुरुदेवश्री ने प्रवचन रोककर अगवानी की और पाट पर प्रवचन कराया था | अगले दिन केशर प्रक्षाल के लिये मांगी पुजारी दौढ़ता हुआ आया | गुरु. ने कहा जो मांगे दे दो | खूब केशर पीसकर भगवान पर लगाई अभिषेक किया | मुनिराज के जाने के बाद में गुरुदेवश्री ने कहा अब और आवश्यकता हो तो सफाई कर लो |

४०- मुनिराज बोले – गाड़ी नहीं आई अभी तक ? उनके साथ गाड़ी चलती थी |

राजस्थानी सेठों के यहाँ चोका लगवाया था | विरोध में गुरुदेवश्री ने कुछ न कहा |

४१- ९१ वी जन्म जयंती पर गुरुदेवश्री बोले- जब डॉ.भारिल्ल नहीं होंगे तब क्या होगा !

सन १९५८ श्रावण की कक्षा मे २२ वर्षीय डॉ.भारिल्ल पहली वार पहुंचे तब खेमजी भाई जैन सिद्धांत प्रश्नोत्तर माला पढ़ाते थे | उसमे अधूरा सूत्र लिखा था "योग्यता हि प्रतिनियतमर्थं व्यवस्थापयति" इसके पूर्व में "स्वावरण क्षयोपशम लक्षण" जुड़वाया | यह परीक्षा मुख का सूत्र ९ अध्याय २ हैं | निर्भीकता से बोले काट-छाँट क्यों की ? शिकायत रामजीभाई के पास गयी | समाधान – लोकी छीलकर बनाई जाती | अतः हमने काम का सूत्र ले लिया | आपत्ती – तो क्या आचार्य के सूत्र लोकी के समान काटे छांटे जा सकते हैं ? शिकायत गुरुदेवश्री श्री तक गयी – उन्होंने स्वीकार किया और अगले प्रकाशन में सुधार करने को कहा |

४२- बोर्डिंग में एक साँवले बच्चे से गुरुदेवश्री ने कहा कि वह भी मेरे जेसा जीव है सुनकर सारी दीनता भूल गया और बड़ा प्रसन्न हो गया | अहो में भी गुरुदेवश्री जैसा जीव हूँ |

४३- सन १९५० में मक्खनलालजी से डॉ साहब मोरेना में पढ़ते थे | परीक्षा के दिन फुल नहीं तोड़े तो धमकाया कि फ़ैल कर देंगे | डॉ. साहब निर्भीकता से बोले फ़ैल करने वाला कोई माई का लाल पैदा नहीं हुआ |

४४- शशिभाई खारा, विशाखापत्तनम वालों ने फोल्डिंग लेटरिंग बनवाई थी गुरुदेवश्री देखते से ही बोले मुझे इससे राहत मिली, घोर पीड़ा होती थी | इन्ही की पत्नी प्रमिला बेन खारा गुरुदेवश्री को पीढा होने पर भी नहीं ले जा

रहे थे क्योंकि बिना मेडिकल रिपोर्ट के ले जाना व्यर्थ है | तो चूड़ियाँ दिखा के बोली ये किस दिन काम आएँगी | आखिरकार ले जाना पड़ा |

४५- गुरुदेवश्री साधू दशा में दांत नहीं मांजते थे तो पीले पड़ गये थे पाटनी जी ने निवेदन किया तो मांजने लगे थे | अहो सरलता !

४६- वृषभसागर मुनिराज २ दिन सोनगढ़ रहे फिर ८ दिन भावनगर वे बोलते थे कि आप जैसा कोई भावलिंगी तो नहीं कोई द्रव्य लिंगी साधू भी नहीं है |

४७- नीग्रो –अफ्रीका ने प्रवचन सुने बोला समझ में तो नहीं आता परन्तु गहराई एवं गंभीरता से प्रवचन करते हैं यह समझ में आया |- डॉ॰उत्तमचंदजी सिवनी |

४८- महावीरकीर्ति जी महाराज पधारे तो गुरुदेवश्री ने प्रवचन रोककर अगवानी की और पाट पर प्रवचन कराया था | अगले दिन केशर प्रक्षाल के लिये मांगी पुजारी दौढ़ता हुआ आया | गुरु. ने कहा जो मांगे वह दे दो | खूब केशर पीसकर भगवान पर लगाई - अभिषेक किया | गुरुदेवश्री ने कहा अब और आवश्यकता हो सफाई कर लो |

४९- मुनिराज बोले – गाड़ी नहीं आई अभी तक ? उनके साथ गाड़ी चलती थी | राजस्थानी सेठों के यहाँ चोका लगवाया था | विरोध में गुरुदेवश्री ने कुछ न कहा |

५०- ध्यान मुद्रा वाला फोटो सोनगढ़ निवासी पू. शांताबेन के काका श्री नानचंद्र भाई खारा के सम्बन्धी फोटोग्राफर श्री हेमेन्द्र शाह अमदाबाद ने ८ दिन रहकर अनेक कोणों से फोटो खीचे |

५१- १९६२ में एक समय पू.गुरुदेवश्री अपने कक्ष में ध्यान में बैठे थे | उस कक्ष की खिड़की खुली थी वहां से वह प्रसिद्ध फोटो उतार ली गयी जो १९६७

में रूस में सारे देशों के संतों के ३-३ फोटो मंगाए गये थे | लगभग ५००० फोटो में से गुरुदेवश्री के फोटो को प्रथम स्थान मिला | रशिया, अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस व जर्मनी के जजों ने ५ दिनों में निर्णय किया था |

कुछ दिन बाद सोनगढ़ आने पर रामजी भाई बापूजी को वह फोटो एवं पुरुस्कार की बात बताई तो पू. गुरुदेवश्री को वह फोटो दिया तो देखकर एक तरफ रख दिया | वे तीर्थंकरों की वीतरागता एवं मुखमुद्रा की याद करने लगे | यह फोटोग्राफर दिस १२ को लगभग ७७ वर्ष का हो गया है |

५२- सन १९५८ श्रावण की कक्षा मे२२ वर्षीय डॉ.भारिल्ल पहली वार पहुंचे तब खेमजी भाई जैन सिद्धांत प्रश्नोत्तर माला पढ़ाते थे | उसमे अधूरा सूत्र लिखा था "योग्यता हि प्रतिनियतमर्थं व्यवस्थापयति" इसके पूर्व में "स्वावरण क्षयोपशम लक्षण" जुड़वाया | यह परीक्षा मुख का सूत्र ९ अध्याय २ हैं |

निर्भीकता से बोले काट-छाँट क्यों की ? शिकायत रामजी भाई के पास गयी | समाधान – लोकी छीलकर बनाई जाती | अतः हमने काम का सूत्र ले लिया | आपत्ती –तो क्या आचार्य के सूत्र लोकी के समान काटे छांटे जा सकते हैं ? शिकायत गुरुदेवश्री श्री तक गयी – उन्होंने स्वीकार किया और अगले प्रकाशन में सुधार करने को कहा |

५३- *एक चिमनभाई ठाकरसी सोनगढ़ मे रहते थे संस्था मे काम करते थे | पैसे की गोलमाल पाई गई गुरुदेव ने डाटकर भगा दिया- नोकरी से निकाल दिया था | वह बम्बई चला गया | वचनामृत छपने की खुशहाली थी गुरुदेव को | हिम्मतभाई ने कहा की वचनामृत की प्रशंसा करके आ सकते हो | और इसी विधि से गुरुदेव ने माफ कर दिया यही थी गुरुदेव श्री की सरलता |*

उत्तम क्षमा

१- बोर्डिंग में एक बालक ने खड़ेखड़े एक कुत्ते के पिल्लै को पटक दिया वह दर्द से कराहने–कूकने लगा | गुरुदेवश्री ने उसे प्रेम से समझाया बेटा ऐसा नहीं करते गंदी बात होती है | अब नहीं करना समझे | वह नाराज होकर चला गया | बाद में गुरुदेवश्री को दुःख लगा उन्होंने बच्चे को फिर बुलाया और कहा - बेटा बुरा लगा हो तो क्षमा करना | वह फिर भी नहीं बोला | तब बुजुर्गों ने कहा – अरे आढ़ा पड़ जा, चरणों में इतने बड़े महात्मा बोल रहे हैं और तू खडा हैं | फिर भी वह अकडा रहा | चला गया | गुरुदेवश्री ने उसका बुरा नहीं माना |

२- सं १९६५ में लाठी में श्रीप्रभुदास भायाणी स्थानक समाज प्रमुख, ने घोर विरोध किया था | अंतिम समय क्षमा मांगी | उसी समय गुरुदेवश्री पधारे और बोले एक समय नी पर्याय नी भूल हती भूलि जाओ ने | वह रो पड़ा दोनों हाथ पकड़ कर बोला नहीं पहले आप बोलो कि आपने मुझे माफ़ कर दिया | गुरुदेवश्री ने सरलता से बोला अच्छा क्षमा कर दिया अब प्रसन्न हो कर समाधि करो | और अल्पावधि में ही उनका देहावसान हो गया |

३- देहली वाले ज्ञानचंद्र जी दीपचन्द्रजी सेठिया के समर्थन में बहुत पत्र लिखते थे | निहाल भाई को न बढ़ाओ ऐसा लिखते थे | गलती का अहसास होने पर क्षमा मांगी | गुरुदेवश्री राजकोट में थे तो समाज के माध्यम से आने की अनुमति मांगी | गुरुदेवश्री ने सादर बुलाया | समाज को इन्हें भार न मानने को कहा |

४- इंदौर प्रवास में एरोड्रम से आते समय मध्य भारत के भूतपूर्व मुख्मंत्री मिश्रीलाल गंगवाल के साथ कार में आ रहे थे बाजू में ब्र.चंदुभाई ब्र. हरिभाई ने सुटकेश लगा दिया और कहा नीचे झुक जाओ | राजवाड़ा के पास कार धीमी होते ही डंडा मारा और कार का शीशा चूर-२ हो गया | पांव में कांच चुभा | पुलिस पर दया आती थी बोले "बैठ जाओ भैया कुछ नहीं होगा | कब तक खड़े रहोगे ! फोन कर जब तक अपराधी छूट न गये तब गुरुदेवश्री को चैन नहीं पड़ी | अरे ! जैन कहीं ऐसा करे ? कोई गरीब अजैन हो, भाड़े से लिया होगा, जेल जावे तो घर में सभी रोते होंगे |

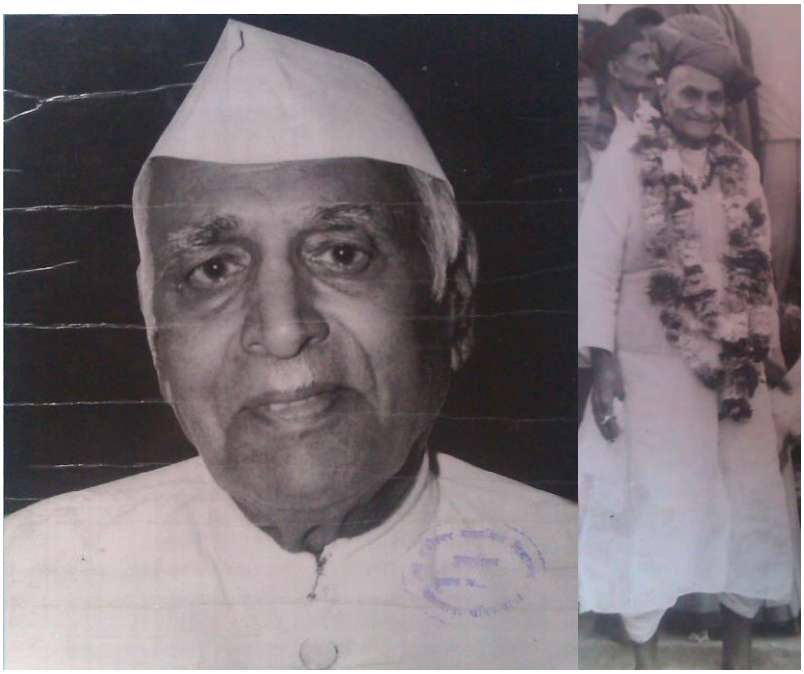

५- डॉ चंदूभाई इलाज से हटाने पर .....मन मलिन न करना मुझे तुझ पर यथावत प्रेम हैं |

६- भूलेला भगवान हैं पण छे तो भगवान ने |

७- पर्याय दृष्टी से देखा हो तो क्षमा करना |

८- फूलचन्दजी तम्बोली, जामनगर का नगर सेठ, गुरुदेवश्री का घोर विरोधी था परन्तु उसकी पत्नी सोनगढ़ प्रेमी थी सोनगढ़ मंदिर देखना चाहता था | रेलवे स्टेशन से गाजते-बाजते दर्शन कराये, भोजन प्रेम से कराया |

९- मूलशंकर देसाई राजकोट आदर-वात्सल्य देख दिग हुए परन्तु बाद में क्रियाकांड में अटक गये | आलोचना करने लगे अरे ! चांदी के वर्तन में भोजन करते हैं आदि-२ | अंतिम समय डॉ चंदुभाई के समझाने से प्रायश्चित्त हुआ | गुरुदेवश्री से प्रार्थना की तो गुरुदेवश्री तत्काल आ गये | वो क्षमा मांग रहे थे मुझे तो लज्जा आ रही थी |

१०- कपिल कोटडिया हिम्मतनगर ने विरोध में बुकलेट निकाली थी | मोरबी होकर जाना था अतः मु.मंडल को पत्र लिखा की मुझे दर्शन करना हैं |

११- लीलाधर पारिख राजकोट व्यवस्था कर घर गया और गुजर गया उसकी पत्नी उसी दिन नहा-धोकर प्रवचन में आ गयी |

१२- २३ अप्रैल १९५७ को जावाल आयोजक को समझाया कि मैं तो चला जाऊँगा, लेकिन विरोध कायमी रह जाएगा | अतः जिद न करो भोजन कर के चल दिए | ग्राम प्रधान ने कहा याद रखना इसका तो एक साधू लोटा हैं तुम्हारे अनेकों(वर्ष में २५०) साधू रोज आते हैं, आज से इस गाव में कोई आ न सकेगा | २४ अप्रेल १९५७ को वापिस आने पर अद्भुत स्वागत हुआ था |

१३- बम्बई के विरोधी ने समाचारपत्र में गुरुदेवश्री पर व्यभिचार का आरोप लगाया | रामजीभाई को गुस्सा आ गया वे कोर्ट में मानहानि का दावा करना चाहते थे | गुरुदेवश्री ने न कर दिया |

१४- चुन्नीलाल देसाई राजकोट भी घोर विरोधी थे |

१५- गुरुदेवश्री को मालुम पड़ा कि बजूभाई एवं ब्र.चंदुभाई बेनश्री को ऊचा दिखाने के लिए शांताबेन को नीचा दिखाने के लिए यह सब कर रहा है तब गुरुदेवश्री ने स्वाध्याय मंदिर में से शांताबेन को बुलाया एवं बोला कि बेन

मुझे सब मालुम हो गया है | क्षमा करना मैंने न जाने क्या-क्या कह दिया | और एक वार अस्पताल बोम्बे में क्षमा मांगी | शांता बेन बोले - साहेब ! आप मुझे शर्मिंदा न करें अरे ! आप तो गुरु हैं आप तो कह सकते हैं | मेरा ही कर्मोदय था आपका इसमें क्या दोष है | बेनश्री को बहुत ही बुरा लगा जब गुरुदेवश्री को ऐसा कहना पड़ा |

१६- उदयपुर में प्रथम विदा समय गुरुदेव को क्षमा मांगी कि जुलुश में पत्थर गिरे थे | गुरुदेव ने सरलता से कहा पत्थर गिरने की पर्याय बीत गयी अभी तक याद रख रहे हो | अरे भूल जाओ, अपना कितना समय बर्बाद कर लिया कर्म बंध करना है क्या !

साधर्मी वात्सल्य

१-1965-1966 मे अहमदाबाद मे रोमेश भाई बाबूभाई शाह के घर प्रायः गुरुदेव ठहरते थे | सामने उपाश्रय था | वहाँ श्वेतांबर देरावासी साधू ठहरते थे | एक वार गुरुदेव 4 दिन ठहरे थे | तीसरे दिन दोपहर को एक बीमार साधू विजयचंद सूरी को देखने को गए | देखते ही पहचान लिया हाथ पकड़ के गुरुदेव बोले अरे ! चुन्नीलाल तमे ....? ये पहले स्थानक वासी साधु थे बाद मे देरावासी साधू हो कर बड़े आचार्य हो गए थे | वे बोले – आप जो कर रहें हैं वह ही अच्छा है |

२-मलुकचंद जोबालिया (ब्रह्म.चंदू भाई के बड़े भाई) भोजनशाला सम्हालते थे | छात्रावास के बच्चे आते तो रोज पूछते आज क्या खाया ? ज्ञात हुआ शाम को रोज छाछ | दूध क्यों बंद किया ? दूध महंगा है | तो आज से मेरा दूध बंद |

अंदर चले गये | रामजी भाई ने बात सम्हाल ली | कल से दूध प्रारम्भ कराया जाय व्यवस्था कराई |

३-नरभैराय वकील का भाई दामोदर छगन लाल अजमेरा को टी.बी थी | पुष्पाबेन के काका लगते थे | कमलभाई दामाणीके यहाँ सोनगढ़ मे ठहरे थे, छगन॰ ने समाधिमरण की इच्छा प्रगट की तो बेनश्री प्रतिदिन भक्ति करानेजाती थी एवं गुरुदेवश्री प्रतिदिन दर्शन देने जाते थे | सभी से कहते थे की समाधि देखना हो तो इनकी देखो | वकील निर्भयता पूर्वक प्रश्न पूछ लिया करते थे | इन्हीं से खुशाल भाई कहते थे कि कानु को समझाओ की अभी दीक्षा न ले | आखिर २ साल बाद दीक्षा ली थी |

४-साधर्मी वात्सल्य – डॉ.उत्तमचन्द्र जी सिवनी - १९६९ में प्रथम दर्शन पाए सोनगढ़ में आने-जाने के किराया एवं साहित्य की राशि सिवनी पंहुचा दी थी | हिंदी में प्रवचन का आग्रह किया था | आत्म सिद्धि मिली पढ़ी और वहीं घूमते-२ प्रश्न पूछे थे | जाते समय १० घंटे बस से खड़े -२ सोनगढ़ गये थे |

५-स्वरूपचन्द मलकापुर को २५ वर्षकी उम्र मे पूरा मोक्षमार्ग प्रकाशक याद था | इनका मित्र २८ वर्षीय स्वस्थ थे परन्तु चर्चा करता-२ ही गुजर गया था |---श्लोक १४१-१४२ प्रवचन कर-२१९

६-रात्री २ बज कर ३० मिनिट पर वीरजी भाई को मिलने जामनगर जाने का भाव आया उसी समय ड्रायवर को जगाया | आश्चर्य हुआ कि अभी तो आधी रात है गुरुदेवश्री बोले मुझे मालुम है | ५ बजे जामनगर पहुंचे | वीरजी भाई बोले मुझे आप की याद आ रही थी मैं स्वयम प्रातः आने वाला था |

रात्री २ बज कर ३० मिनिट पर वीरजीभाई को मिलने जामनगर जाने का भाव आया उसी समय ड्रायवर को जगाया | आश्चर्य हुआ कि अभी तो आधी

रात है गुरुदेवश्री बोले मुझे मालुम है | ५ बजे जामनगर पहुंचे | वीरजी भाई बोले मुझे आप की याद आ रही थी मैं स्वयम प्रातः आने वाला था |

७-ज्ञानचक्षु पृ-६ स्मरणांजलि – प्रभुभाई मोहनजी भाई घीया (जन्म-२२-७-१९०९- मृत्यु- ४-१०-१९६७) गुरुदेवश्री अंतिम समय सोनगढ़ से राजकोट दर्शन देने पधारे | बेसुधी में भी गुरुदेवश्री को पहुचते ही जागृति आयी एवं भक्ति भाव से ३ वार हाथ जोड़कर प्रणाम किया |

८-गुलाबबेन ११-१२ वर्ष की वय में विधवा हो कर रहीं |

९-ब्र॰रमेश मलकापुर प्रातः काल स्वाध्याय मंदिर के पास टहल रहे थे | अचानक गुरुदेवश्री भी पधारे एवं कंधे पर हाथ रखकर पूछा – "और भगवान ! समझ मे आता है ? अरे भाई तुम स्वयं भगवान हो अपनी प्रभुता को देख | अनादिनाथ भगवान जयवंत वर्तता हैं |" आहा मैं तो गद-गद हो गया |

१०- छोटे बाबुभाई फतेपुर- बोर्डिंग मे 17 वर्ष की उम्र मे पढ़ते थे | टोयफाइड हो गया तो गुरुदेवश्री पधारे थे | अरे चिंता नहीं करना किसको बीमारी हुई ? तन मे रोग हो तो हम में तो रोग नहीं हैं | हाथ फेर केर प्रेम करके सहला के ८ दिन तक प्रति दिन शाम को आते थे | जो अपनत्व मिला वह उस बालक को अविस्मरणीय हो गया | बड़े होने पर भी सदा प्यार से बाबुभाई ही बोलते थे |

११- राजकोट में एक बहिन को सीने तक लकवा लग गया था | प्रतिदिन मिलने तत्व चर्चा करने जाते थे | उसका वैराग्य पूर्ण मरण हुआ था |

१२- टेप रिकॉर्डिंग जहाँ अब होती है वहां पहले कुछ समय तक ब्र. भाईओं के रहने की व्यवस्था की गयी थी | ब्र. चंदुभाई जैसे १८-२० वर्षीय ५-७ भाई वहां रहते थे | उस समय बोर्डिंग नहीं था | इन भाईओं ने अपनी मण्डली का

नाम रखा था सतधर्म प्रभावक मण्डली | ये लोग कार्यक्रम में बैंड भी बजाते थे |

१३- डॉ साहब एवं उनके पिताजी सोनगढ़ आते रहते थे | एक वार अकेले पिताजी ही रहे तब उन्हें चलने के लिए गुरुदेवश्री ने गुटैयाँ दे दी थी | उनका ध्यान रखते थे | उनके गले में हाथ डाल कर प्रेम से कहते थे की तुम्हारे बेटे ने तो कमाल कर दिया | वहां खेमजी भाई के यहाँ भोजन होता था | सभी लोग पिताजी का ध्यान रखते थे | पिताजी गाँव वापिस आकर वहां के वात्सल्य का स्मरण किया करते थे |

१४- आत्मधर्म में २ लेख विमलचंद्र जी ३२ वर्ष रांची के, छपे थे | धवलादि का मौखिक ज्ञान था, गुरुदेवश्री कुछ भी पूछे तो वह ग्रन्थ एवं पृष्ठ तत्काल बता देते थे | गुरुदेवश्री कहते थे ऐसा क्षयोपशमी नहीं देखा | गुरुदेवश्री उसके बड़े प्रशंसक थे परन्तु उन्हें गुरुदेवश्री से दृष्टी मिली थी | टीबी हो गई थी और छोटी उम्र में ही गुजर गए | उसके एक पत्नी एवं एक बच्चा था |

१५- स.२०१३ में इंदौर से धौलपुर जाते समय बहिनों की बस पानी में रखकर लाइ गई थीं | आयी या नहीं चिंता रखते थे | न.७ बस के प्रधान हिम्मतभाई जोबालिया अपनी बस निकाल ले गये आखिरी में ८ न. की बस में ब्र.बहिनें थी | गुरुदेवश्री ने पहले निकलने के लिये अच्छा नहीं कहा था | बच्छराज सेठ आदि सभी को बुरा लगा |

१६- जे हिम्मतलाल, भावनगर प्रमुख समर्पित भाव से मंदिर बनाया | किसी कारण विवाद हुआ तो गुरुदेवश्री ने लालुभाई राजकोट को भेजा था | समाधान कराया | बाद में समर्पित हो कर सोनगढ़ रहे थे |

१७- कान्तिलाल ईश्वरलाल कोटडिया, झेर हुमड बीसपंथी थे अत्यंत विरोधी थे, ईडर जाते समय मोरबी मंदिर देखने की इच्छा हुई | प्रधान ने बापुजी से सलाह मांगी तो उनने गुरुदेवश्री को पूछा तो गुरुदेवश्री फ़ौरन

बोले अरे एक समय की पर्याय विरोध करती हैं चली गई, अरे ! गाजते बाजते मंदिर के दर्शन कराओ | प्रभावित हुए फिर सोनगढ़ भी आये तो गुरुदेवश्री ने सभा में बुलाकर आगे बिठाया बोले "एमने ठमणी ने ग्रन्थ आपो |" गुरुदेवश्री के गुजरात विहार के समय झेर चलने का अनुरोध किया तो इन्फेक्शन न हो जाए क्योंकि कच्ची रस्ता थी अतः सभी ने निषेध किया परन्तु गुरुदेवश्री एवं बहिनश्री गये ओर एक दिन रुके भी | परन्तु गुरुदेवश्री के बाद सुर्यकीर्ती प्रकरण में फिर विरोधी हो गया था |

१८- कन्नड़ को अध्यात्मिक क्रांति लोटाने वाले पुरुष का नाम है एम.बी.पाटिल | सोनगढ़ एवं गुरुदेव को कर्नाटक में फेलाने का सर्वाधिक श्रेय आपको ही जाता हैं |गुरुदेव ने आपकी प्रतिभा से प्रसन्न होकर गले लगा लिया था क्योंकि आपने सबसे पहले मोक्षमार्ग प्रकाशक का अनुवाद किया था | सोनगढ़ में ही भभूतमल भंडारी जी ने कहा कि इसे छपाने का लाभ लेना चाहता हूँ | आपने ३० वर्षों तक कन्नड़ आत्म धर्म का निशुल्क सम्पादन किया | और आज उनकी बेटी धवलश्री शास्त्र, गुरुदेव के प्रवचनों के अनुवाद के साथ यही कार्य कर रही है |

१९- एक ग्राम में एक ब्र.थे उन्होंने समाज की आज्ञा लेकर प्रतिष्ठा कराई थी परन्तु "गुरुदेवश्री सदुपशाते" लिखा होने से मंदिर से बाहर निकाल दी | उसने गुरुदेवश्री के सामने अपनी प्रतिक्रिया रखी कि मैं मुकद्दमा करूँगा | गुरुदेवश्री ने कहा की जीवन थोड़ा हैं ब्र.को पुलिस – मुकद्दमा से बचना चाहिए |

२०- राजकोट जेल में वटुक को फांसी लगना थी | उससे अंतिम इच्छा पूछी तो उसने गुरुदेवश्री के दर्शन प्रवचन सुनने की अभिलाषा व्यक्त की | गुरुदेवश्री उसे दर्शन देने पधारे था | उसने प्रेम में असफल होने पर प्रेमिका की

निर्मम हत्या कर दी थी | वहीँ गुरुदेवश्री ने पढा था –"अज्ञान ते बचाव नथी" | जिसे प्रायः गुरुदेवश्री प्रवचन में याद करते थे |

२१- राजकोट – सूक्ष्म प्रवचन चल रहे थे तो गुरुदेवश्री बोले दोनों बेन तो नहीं आ सकती और बेन तो आ सकती हैं | तत्काल दुसरे दिन सारी बेनें आ गयी |---प्रकाश भाई कलकत्ता |

२२- रामजीभाई कुर्सी पर चलते थे कभी प्रवचन मे बिलंब नहीं होता था | परंतु कभी कोई उन्हे लाने वाला न हो तो ही बिलम्ब हो जाता तो गुरुदेवश्री उनके आने का इंतजार करते थे | तो सभी बापुजी का ध्यान रखने लगे थे | यदि गुरुदेवश्री पहले दिन ही प्रवचन मे उनकी प्रतीक्षा न करते तो सभी उनकी उपेक्षा ही करते रहते |

२३- गुरुदेवश्री जीथरी हॉस्पिटल प्रायः ही जाया करते थे | राजकोट की एक बहिन को लकवा लग गया था | गुरुदेवश्री जिसे देखने जावे तो डॉ स्वतः ही उसका अतिरिक्त ध्यान रखने लगता था |

२४- वडोदरा मे डॉ॰ भारिल्ल को भरी सभा मे नारियल दिया था |

२५- सूक्ष्म विषय चले तो 'बहिनों को समझ मे आता है कि नहीं ?-गुरुदेवश्री पूछते थे |

२६- कोई सेठ भोजन के लिए बुलाता तो कहते थे मैं अकेला नहीं हूँ | मेरी दीकरी ? (65 बहिनों की ओर इशारा करते थे |) सभी का ध्यान रखते थे |

२७- निर्मल भाई दमोह अंधे थे उनसे गुरुदेवश्री को बड़ा स्नेह था | साधर्मी उन्हें आर्थिक मदद देते थे | इससे कुछ लोगों(चेतन महाराज श्वे.से दिग हुए थे) को ईर्ष्या हुई तो उन्होने गुरुदेवश्री को उसके विरुद्ध कहा कि वे आपको

सम्यकदृष्टी नहीं मानते है | गुरुदेवश्री के जोरदार प्रवचन के बाद घूमते समय महाराज आये और बोले की यह निर्मल अभिमानी हैं आपको प्रणाम नहीं करता हैं | गुरुदेवश्री ने घूरते हुए कहा कि ये क्या बात करते हो चेतन महाराज ! इतनी दूर से कोई अपना देश यूं ही नहीं छोड़ कर आता हैं | विनय से २-३ घंटे प्रवचन सुनता है, अभ्यास करता है, क्या यह विनय नहीं हैं | आगे से मैं ऐसी बात कभी न सुनूँ | गुरुदेवश्री ने वात्सल्य नहीं छोड़ा | समय पाकर खुलासा हो गया था | वे तत्व की सूक्ष्म चर्चा किया करते थे |

२८- ब्र. जीवराज जी हर्निया के कारण पपीता लेते थे | उन्हे स्वास्थ के कारण लेना पड़ता था | कभी ज्यादा मात्रा या महंगा हो तो प्रेम से गुरुदेवश्री टोक देते थे | एटलु ....?

२९- एक हिम्मतभाई नाम के मेनेजर थे | रुपयों की हेरा फेरी पकड़ी गयी तो(पूजा आरती का पैसा लेता था, हिसाब-किताब नहीं रखता था, बिहार समय गुरुदेवश्री के आगे-२ जाकर व्यवस्था करता था) गुरुदेवश्री को बुरा लगा और अनुशासन वश निकाल ही दिया | बाद मे देवद्रव्य खाने के पाप मे उसे २ माह बाद क्षय रोग हो गया | जीथरी अस्पताल मे उसे कोई कमी न रहे उसके लिए आवश्यक धन- फल- दबा आदि की व्यवस्था की | दया वात्सल्य की मूर्ति थे गुरुदेवश्री |

३०- उपकारी का उपकार मानते थे | जिन्शासन की सेवा करने वालों के प्रति अपूर्व भाव आता था | पूनमचन्द गोदिकाजी के स्मारक बनाने एवं फूलचंद्र जी के खानिया तत्वचर्चा विजय के उपलक्ष में जोरदार गाजते बाजते स्वागत किया गया था सोनगढ़ में प्रवचन तक लेट कर दिया था |

३१- ५ भाई भी यात्रा करते-२ आ जावे ज्ञात हो जावे तो सारी गुजराती सभा को गौण कर हिंदी में प्रवचन करते थे | यात्री तो जिज्ञासावश उतरते या परीक्षा हेतु परन्तु सुंदर मंदिर पूजन प्रवचन की नियमित गतिविधि देखते ही यहीं ठहर जाते थे |

३२- एक चिमनभाई ठाकरसी सोनगढ़ मे रहते थे संस्था में काम करते थे | पैसे की गोलमाल पाई गई गुरुदेवश्री ने डाटकर भगा दिया- नोकरी से निकाल दिया था | वह बम्बई चला गया | वचनामृत छपने की खुशहाली थी गुरुदेवश्री को | हिम्मतभाई ने कहा की वचनामृत की प्रशंसा करके आ सकते हो | और इसी विधि से गुरुदेवश्री ने माफ कर दिया यही थी गुरुदेवश्री की सरलता |

३३- ब्र.बहिनों के प्रति उस समय ऐसा वात्सल्य आता था की 5 लाख रुपया का फंड बन जाये तो निश्चिंत हो जावें |

३४- 70000/- रु। का खर्च हुआ शिविर में - मुनीम ने बताया | लोग तो फोकट मे खा पी के चले जाते हैं | क्या फायदा ? गुरुदेवश्री बोले – अरे एक भी समयकदृष्टि/ भगवान हो गया तो सारा धन सार्थक हो जाएगा |

३५- आत्मानुभव करके क्रांति करे वह व्यक्ति महामानव है |

३६- साधर्मी वात्सल्य हेतु निशुल्क भोजन की परमपरा डाली |

३७- जैनेंद्र जैन उपन्यासकार भावनगर सम्मेलन मे आए थे डॉ भारिल्ल के अनुरोध से सोनगढ़ भी पधारे दोपहर का प्रवचन सुना | परंतु गुरुदेवश्री को कहा की बेनश्री की महिमा बताओ तो वे प्रभावित होंगे तो गुरुदेवश्री ने वैसा ही क्या | परिणामतया उन्हे यह सब भी तात्विक सभा के स्थान पर पोपड़म

ज्यादा लगा | डॉ साहब ने उन्हे समझाने की बहुत कौशिश की परंतु वे गुरुदेवश्री को समझ न सके |

३८- 103 डिग्री बुखार मे भी कारणवश प्रवचन कर देते थे | शरीर की परवाह नहीं करते थे | कलकत्ता भोपाल सोनगढ़ |

३९- सद्गुरु प्रवचन प्रसाद प्रतिदिन हाथ से लिखकर साईक्लोस्टाइल करके छपता था |

४०- फतेपुर मे आ.बड़े बाबूभाईजी को टोयफाइड हो गया था तो गुरुदेवश्री अनुरागवश सोनगढ़ से गाथा 320 के पाने छपा के ले गये थे उस पर 2 प्रवचन किए थे |

४१- डॉ.भरिल्लने बेनश्री की महिमा प्रवचन के बीच मे ना करने की सलाह दी | सुनकर महिमा रोकी तो नहीं परंतु डॉ साहब के प्रति प्रेम भी कम नहीं किया | पाटनी जी एवं बाबुभाई जी रोकते थे परन्तु आप पर पुत्रवत स्नेह था अतः आप जातिस्मरण की बातें न कहने को कहते परन्तु गुरुदेवश्री हंसकर रह जाते थे | संस्था प्रमुख आदि ने कहा था की हिंदी चमत्कार से ज्यादा प्रभावित होते हैं अतः कहो वे बेनश्री को प्रसिद्ध करना चाहते थे |

४२- स्वामीजी – बुंदेलखंड मे गली गली मे त्यागी है | तो डॉ॰ साहब कहते – सोनगढ़ मे गली गली मे समयकदृष्टि है |

४३- विमलचंद जी सोरया को गुरुदेवश्री ने स्वयं अपने हाथों से नव भव दिखाये थे |

४४- ब्र॰रवीन्द्र जी 'आत्मन' को भी गुरुदेवश्री ने स्वयं अपने हाथों से नौ भव दिखाये थे |

४५- गुरुदेवश्री सभी साधर्मी बलुभाई आदि के भोजन-आराम आदि के समय का ध्यान रखते थे |

४६- ६५ वर्षीय प्रभुलाल घीया मरनासन्न थे - बेभान थे | उन्हें देखने गुरुदेवश्री पधारे तो डॉ चंदुभाई जोर से बोले – गुरुदेवश्री पधारे हैं | इतने दिनों से आँख न खोली थी परन्तु दोनों हाथ उठाकर प्रणाम किया और प्राण निकल गये |

४७- हेमंत के प्रति प्रेम इससे प्रगट होता है कि जब नेरोबी चलने की बात आई तो गुरुदेवश्री बोले-"हेमंत चले तो नेरोबी आऊंगा |"

४८- प्रकाश भाई १० वर्ष के थे अकेले सोनगढ़ से कलकत्ता जा रहे थे वीरमगाम से ट्रेन भी बदलना पडती थी अतः दोनों बेनों ने २०-२५ सावचेतियां दी | गुरुदेवश्री बोले मोक्ष भी अकेले ही जाना हैं तो कलकत्ते की क्या बात हैं |

४९- १९३५ में परिवर्तन के कुछ समय बाद ही स्वतंत्रता संग्राम की गिरफ्तारी में गांधीजी ढेबर भाई, रामजी भाई , बेचरभाई गिरफ्तार हुए तो चिंता रहती थी |

५०- वजुभाई – ये हिंदी आये ....खाए ने जाए .....डालडा घी खिलाया तो गुरुदेवश्री शिविरर्थिओं से भोजन/ आवास के समाचार पूछते थे | मालूम पड़ गया तो गुरुदेवश्री ने भरी सभा में कहा कि ये क्या राग द्वेष हैं | कोई खाने आता हैं ? सेठ घर में शुद्ध एवं साधर्मिओं को डालडा ऐसा चले क्या ?

निस्पृह वृत्ति- स्पष्ट वादिता

१- निरभिमानता – रामजीभाई – गुरुदेवश्री ! सौराष्ट्र मा आपना प्रतापे मंदिर अने धर्म प्रचार छे | गुरुदेवश्री – बाहर मा थवाना योग्य थाय छे | आथी मने सूं लाभ |

२- ब्र॰यशपाल महीनों साथ रह जाते और जब भी जाने लगते तो गुरुदेवश्री को अनुमति लेकर जाते थे | एक वार वे स्वाध्याय कर रहे थे | जयपुर लोटने से पूर्व ३ वार जाने की अनुमति मांगी परन्तु गुरुदेवश्री कुछ न बोले | बिना मिले ही जाना पढ़ता परंतु वे अपनी स्वाध्याय छोडकर नहीं उठते थे | यह उनकी निर्लोभ/ निस्पृह वृत्ति थी |

३- निस्पृह वृत्ति- स्पष्टवादिता – बछराज जी ने गाड़ी दी थी परंतु वे नेमिचन्द्र जी एवं अन्य की टीका-टिप्पड़ी करें तो गुरुदेवश्री ने सोनागिरी मे प्रातः 4 बजे स्पष्ट कह दिया की नेमिचन्द तुम हमारे साथ गाड़ी मे बैठोगे | सेठ को नहीं बिठाउंगा | जबकि नेमिचंद पाटनी एवं बछराज जी दोनों मित्र थे |

४- पत्रकार राजेन्द्र बंसल को इंदौर प्रवास मे 2 मिनिट का समय मिला जिसमे उन्होने 2 प्रश्न पूछे

१- आप कौन है ?

उत्तर- मैं तो अविरती सामान्य श्रावक हूँ |

२- आप सभी से चर्चा क्यों नहीं करते ?

उत्तर- कषाय बढ़ाने का मैं कोई काम नहीं करना चाहता हूँ, समझने समझाने को मैं कभी इंकार नहीं करता |

५- जन्म जयंती समय ४-५ बक्ता को सुनकर उठ जाते थे परन्तु दान की बोली में पूरे समय बैठते थे | नवनीत भाई जवेरी सोनगढ़ के प्रधान बोलने खड़े हुए तो २ मिनिट बोलने को कह दिया |

६- पाट पर वितरण हेतु पुस्तक(द्रव्य दृष्टि प्रकाश) रखी थी, कुछ प्रति गुरुदेवश्री ने दे दी थी | दोपहर में आकर देखा २-३ पुस्तकें कम थी | गुरुदेवश्री ने प्रवचन करने से इनकार कर दिया | बाबुभाई जी एवं रामजीभाई को अपील करनी पड़ी कि किसी ने ली हो तो बता दो | आखिर किसी ने स्वीकार किया तब ही गुरुदेवश्री ने प्रवचन करने प्रारम्भ किये | बिना पूछे लेना अनैतिकता हैं |

७- २-४ बहिने ऊपर परमागम मंदिर की बोल्कनी में बैठकर प्रवचन सुन रहीं थी | गुरुदेवश्री ने असातना देखते ही प्रवचन रोक दिया | जिनवानी से ऊपर कैसे बैठ जाते हो !

८- एक बहिन एक वृक्ष के नीचे ध्यान करने बैठ जाती थी तो गुरुदेवश्री ने भरी सभा में कहा कि यह ध्यान नहीं मान हैं |

९- १७ लाख नूं हार मने पाथरा नी जेम लागे छे |-सर सेठ हुकमचन्द्रजी को बोला |

१०- भावनगर के राजा कृष्णदेवराय मद्रास के राज्यपाल बने थे उनके सामने प्रवचन में कहा कि जिसे २ पैसा चाहिए वह छोटा भिखारी एवं जिसे राज्य चाहिए वह बड़ा भिखारी हैं |

११- रजकण के रिद्धि वैमानिक देव नी अन्य लक्ष से अन्य कछु चाहूँ नहीं |

जो कहो सो तैयार परन्तु विरक्त, ख्याति लाभ से दूर |

१२- साध्वियों द्वारा परिवर्तन की आज्ञा मांगने पर वैराग्य व्यवस्था नहीं मांगता हैं | मेरे पास कोई व्यवस्था नहीं हैं छाछ रोटली मां गुजारो थई सके तो परिवर्तन करजो | लेखन नहीं किया, केसेट, ग्रन्थ प्रकाशन, प्रवचनप्रसार, निर्माण व्यवस्था, में रुची नहीं लेते थे |

१३- दोनों बेनों को परिवर्तन के समय घर रहने को कहा था |

१४- प्रारम्भ से अंत तक एक जैसी विरक्ति, सादा जीवन, निशंक परिणति, "मैं तो उदासीन ब्र. हूँ मुनि नहीं, कीचड़ उछालने के लिए किसी से चर्चा नही करता |"राजेन्द्र बंसल को जबाब दिया था |

१५- "सतत अनुभवामि शुद्ध चैतन्य चिन्ह्म" कौनसी अनुभूति की जयंती मानाओगे | नटुभाई एवं हंसमुख भाई के सम्यक्त्वजयंती मनाने की अनुमति मांगने पर गुरुदेवश्री का जवाव |

१६- तमे स्वाध्याय करो | इस तरह निस्पृहता/ स्वाधीनता बनाये रखते थे | हेमंत गांधीजी को कह देते थे |

आगम आग्रह

१-वीरजीभाई जामनगर – प्रथम वार रहस्यपूर्ण चिट्ठी पढ़ने को मिली तो इतनी अच्छी लगी कि हाथ से प्रति उतारना चाही | परंतु नहीं मिली उन्हें विश्वास दिलाने के लिए गले की कंठी उतारकर दी एवं सुरक्षित वापिस लोटाने पर ही वापिस मिली |

२-गुरुदेव श्री - जो अध्यात्म/ज्ञान का एक शब्द भी सिखाता है वह केवलज्ञान के निकट जाता है, और जो विद्वता को बेचता है उसके ज्ञान की हीनता होती जाति है |

३- भिखमंगे बनने की रजिस्ट्री मत कराओ - स्वामीजी के मार्ग दर्शन में दान की अद्भुत परंपरा कायम हुई | वहां लाखों की बोलियाँ २-३ मिनिट में समाप्त हो जाति थी | बोली का पैसा भी जमा हो जाता है | दान के लिए किसी को प्रेरणा भी नहीं दी | दान देने वाले को धूल पति कहते थे बदले में पुन्य-स्वर्ग की धूल मिल जायेगी | ऐसा कहकर मान का भूत भी उतार देते थे | दान बोलकर न - नुकुर करना , व्याज खाकर , कुछ समय बाद कमाकर देने वाला भिखमंगे पने की रजिस्ट्री कराता है | ऐसा करना भगवान के प्रति माया एवं लोभ का भाव अनन्तानुबन्धी माया एवं लोभ का भाव है |

४- ७५ वी जन्म जयंती में लालबहादुर शस्त्रीजी ग्रह मंत्री भारत पधारे थे तो अब ८० वी जयंती में किसे बुलाये ? कैसे मनावें ? सोचा क्यों न गुरुदेव को आचार्यकल्प की पदवी दें गुरुदेव को निवेदन किया लालूभई, रामजीभाई आदि ने | गुरुदेव - तुम में बुद्धि है क्या ! मेने क्या किया ! पंडित टोडरमल जी ने तो स्वतंत्र ग्रन्थ लिखा | मैंने तो मात्र स्वाध्याय किया है | भविष्य में भी कभी ऐसा विचार न करना | सब ने क्षमा मांगी |

५- गुरुदेव जिनवाणी का पन्ना फटना धूल पड़ना नहीं सह सकते थे | सभा मे ही बोल देते थे |

६- घाटकोपर में सर्वोदय होस्पिटल में दिग.जिनबिम्ब स्वतंत्र रूप से विराजमान किये गये हैं | श्वेताम्बर जैन, जैन ही नही हैं कहा था तब स्वतंत्र रूप से विराजमान कराये गये |

७-बनारस में श्वेताम्बर मंदिर में नीचे दिग. भगवान उपर श्वेताम्बर भगवान देख दुःख व्यक्त किया | कैलाशचंद जी बोले क्या फर्क पड़ता है | गुरुदेव – ये तुम बोल रहे हो ! अरे ! जमीन आसमान का अंतर है |

८-उज्जैन के एक साधू थे, यहाँ का वाचन बहुत किया | हमको गजपंथा में मिले थे | हमें मिलने को आये | काल नय अकाल नय की चर्चा हुई |

९-राग में अपनापन मानना बचपना है | सम्यक दर्शन जबानी है, मुनिदशा प्रोढ़ता है, अरहंत सिद्धदशा-वृद्धदशा है |

१०- समणसुत्तं के प्रकाशन पर टिप्पणी – "श्वेताम्बर शास्त्र कल्पित हैं, भगवान के कहे हुये नहीं है उनका आधार देना ठीक नहीं है |"

११- इंदौर – ५० पंडित इकठ्ठे हो कर बोले 'परद्रव्य का करता न माने तो वह दिगम्बर जैन नहीं |'

१२- एक बार चर्चा उठी थी कि सिद्ध में चारित्र नहीं है |

१३- बम्बई में एक विद्वान – आ. कुन्दकुन्द ने समयसार को वेदांत में ढाला हैं | अरे खबर नहीं वेदांत पर्याय को नहीं मानते |

१४- स्वरूप लक्ष्य से जिनाज्ञाधीन जब |

१-अविभागी प्रतिच्छेद –षटगुणी हानि वृद्धि |

२-गर्भ में अनुभव |

३-ज्ञान का अनंत गुणों में रूप केवलज्ञान गम्य हैं |

४-क्रमबद्ध/ क्रमसरपर्याय का भाव भासता था लेकिन जब तक आगम प्रमाण नहीं मिला तब तक बाहर न कहा |

१५- गुरुदेवश्री हाथ में मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं समयसार ऊर्ध्व करके/ लेकर निकले और विरोध दूर होता गया | वे दिगम्बरों के हृदय में समा गये |

जैसे – कृष्ण के अंगूठे को स्पर्श करती हुयी जमुना उतरती गयी – पूर कम हो गया |

१६- द्रव्यदृष्टिप्रकाश गुरुदेवश्री ने छपाने से मना कर दिया था कच्चा पारे जैसा हैं समाज को पचे नहीं | परन्तु लालुभाई के पिताजी अमरचन्द्रभाई मोदी एवं शशिभाई ने मिलकर ५०० प्रति छापा दी थी | जिन्हें वापिस लेना पड़ा था | बाद में गुरुदेवश्री पात्र जीवों को ही अपने हाथ से देते थे |

१७- व्यक्ति की महत्वाकांछा से तत्व प्रधान हैं | कलकत्ता ८४ वी जन्म जयंती के वाद एक दिन के लिए गोहाटी(हीरालाल जी कुचामन एवं पूनमचंद जी सेठी वहां रहते थे |) जाते समय फूलचन्दजी ने आचार्य कुन्दकुन्द की प्रतिमा बनाना आगम सम्मत कहा परन्तु लोग भविष्य में इसका दुरूपयोग कर सकते हैं, अतः स्वामीजी ने सम्मति का अनुकरण नहीं किया था |

१८- सेठ भोगीभाई अहमदावाद ९-१० इंची सफ़ेद पाषाण की प्रतिमा ले कर आये गुरुदेवश्री को दिखाई कि मैं सूर्यकीर्ति की प्रतिमा विराजना चाहता हूँ | गुरुदेवश्री नाराज हुए एक कपड़े में बंधवा के गुप्त स्थान पर रखवा दी थी | और दोनों बहिनों को भविष्य में भी नहीं करने की ताकीद कर दी थी |

१९- चाहते तो शिष्य संख्या बढा सकते थे परन्तु तत्वज्ञान पर बजन था | आश्रम एवं सुविधाएं नहीं दी |

२०- यात्रा छूटे तो छूटे परन्तु शीलादिक का नियम न टूटे |

२१- सर्व प्रथम स्वागत बोम्बे में "आ.कानजी स्वामी का स्वागत हैं" यह बेनर देख कर नाराज हुए बेनर उतराने के बाद ही मंडप में प्रवेश किया | आ.कोने केवाय ? खबर नथी ? केवी स्वाध्याय छे ...?

२२- बोम्बे में प.हीरालालजी सिद्धांतशास्त्री, बड़ामलहरा (संपादक धवला के) ने जन्म जयंती के समय गुरुदेवश्री की प्रशंसा में संस्कृत में तीर्थंकर लिखा गुरुदेवश्री ने डॉ साहब को पूछा ये कैसा पंडित हैं इसे तीर्थंकर का स्वरूप नहीं मालुम क्या ? आगम की खबर नहीं हैं | डॉ साहब ने कार्यक्रम के पहले ही आगाह किया था की जब हम हिंदी वाले ही कहेंगे तो गुजरातिओं को तो कैसे रोक सकेंगे | तथा हिंदी प्रान्तों में हम क्या जबाब देंगे | परन्तु वे न माने |

२३- हिम्मतभाई- एक जैसी कर्म स्थिति हो तो अगली समय में एक जैसी पर्याय होगी या नहीं ? नहीं, अकारण पारिणामिकत्व शक्ति के कारण |

२४- १९७६ में आ.कल्प कह कर पुकारा तो गुरुदेवश्री बोले कहाँ प.टोडरमलजी और कहाँ मैं ? बोलने को तत्काल रोका |

२५- समयसार कलश-२१८ के प्रवचन में गुरुदेवश्री ने फर्माया –"जेठालाल श्वेताम्बर खेडा, पोरबंदर – "कर्म से विकार मानो तो चर्चा करूं |" गुरुदेवश्री ने स्वीकार नहीं किया |"

२६- प.राजमलजी भोपाल – नवलभाई सोनगढ़ में प्रवचन करते थे रात्रि में पानी पीते थे मना करने पर कुतर्क करते कि ज्ञानी शराब पीता है, पर चढ़ती नहीं उसी प्रकार ज्ञानी को रात्रि में पानी पीने पर भी बंध नहीं होता हैं | राजमलजी ने स्वामीजी को पूछा गुरुदेवश्री- रात्रि पानी पीने वाले को सम्यकदर्शन नहीं हो सकता हैं | अव्रती दशा हैं कदाचित दोष लागे | अशक्य दशा जुदी बात हैं | समयसार जी सुनने लायक नहीं हैं |

२७- ब्र॰बहिनों की हर तरह से परीक्षा ली जाती थी जैसे भोजन, वस्त्र पहनना, शील का विवेक, वस्तु-जिनवाणी-पढ़ने आदि की लगन की सम्हाल आदि |

२८- गुरुदेवश्री की परीक्षा प्रधानता - चम्पाबहिन एवं शांताबहिन के समयकत्व की परीक्षा ली थी |

अध्यात्ममूर्ति युगसृष्टा परम पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने पूछे हुए ५ तात्विक प्रश्न

१-अगुरुलघू की व्याख्या किस तरह कर सकते हैं ?

२-ज्ञान सविकल्प है, तो अनुभव के समय सविकल्प किस प्रकार से हैं ?उसकी घटना किस प्रकार से हैं ?

३-सर्वज्ञ की व्याख्या आपकी भाषा से किस तरह हो सकती हैं ?

४-मान्यता में वेदान्तादी से मुख्य विषय सहित जिन मत का भिन्पना कैसे हैं ?(वेदान्त एवं जैन मत की मान्यता में क्या अंतर हैं ?)

५-आत्म आनंद और निर्विकल्पता में भेद या काल का अंतर क्या हैं ?

२९- चमत्कार – नेरोबी के भाई रजनीभाई संघराज को गुरुदेवश्री की श्रद्धा नहीं थी उनकी पत्नी (पुनीतबेन राजकोट की बहिन) का आपरेशन था अतः देवरक्षा का आशीर्वाद लेने आए थे, को गुरुदेवश्री ने अखरोट दिया और चंपाबेन की भानेजन कंचन बेन को बादाम दिया जो उन्होने खाया नहीं वह आज तक सुरक्षित रखा है उनका कहना है की वह अभी तक सड़ा नहीं |

३०- आशा बेन एवं ऊषा बेन दोनों प्रेम से रहती थी परन्तु ऊषा बेन वीडियो बनाती थी तब ही तत्वचर्चा प्रारम्भ होती थी | आशाबेन को यह सब पसंद न था | अतः दोनों प्रथक हो गयीं |

३१- ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती ७०० वर्ष की आयु | नरक में ३३ सागर की आयु अर्थात ११,५६,९७५ पल्योपम एक श्वास चक्रवर्ती पद की सजा भुगत रहे हैं |

३२- गुरुदेवश्री के प्रवचन में आया –

३३- २८-२-७७ भावनगर – ध्रुवधाम ना-ध्येय ना – ध्यान नी- धधकती धूणी धगस ने धीरज थी धकावती ते धर्म नो धारक धर्मी धन्य छे |

३४- २८-२-७७ भावनगर - चैतन्य धातु ने धरनार ध्रुव धणी नो धुनी धैर्यवान धर्मध्यानी धर्मी धन्य छे |

३५- १९-११-८०-मुंबई- सहजात्म सवरूप सर्वज्ञ देव परम गुरु |

गुरुदेवश्री का स्वास्थ्य

१-डॉ प्रकाश पंजाबी जीथरी हॉस्पिटल पधारता तो गुरुदेवश्री के चरण स्पर्श करता था |

२-फतेपुर मे खेतों की धूल उड़ने से गुरुदेवश्री को रिएक्शन – कफ होने लगा था | मध्य प्रदेश मैनपुरी आदि से लोटते समय भावनगर मे ६ दिन ठहरे थे | एक्सरे कराया तो प्लूरसी निकली थी | अभी तक गुरुदेवश्री ने अंग्रेजी दबाई नहीं ली थी | सलाह मिली की वैद्य की दबा लोगे तो कमजोर हो जाओगे | जीथरी अस्पताल से डॉ रजनी भाई रस्तोगी ने ३ माह की दवा दी एवं पूर्णतः आराम की सलाह दी | रामजीभाई संतुष्ट थे | परंतु वहनश्री के चाहने वाले

चंदुभाई आदि को ३ माह का आराम नापसंद था | ८ दिन रस्तोगी की दवा ली फिर डॉ चंदुभाई से कहकर और तेज दवा की डोज़ दिलाकर मात्र १५ दिन आराम कराया | बोले अरे ! प्रवचन तो आहार है | १५ दिन बाद प्रवचन प्रारंभ होने की खुशहाली मे प्रभावना बाँटी गयी |

३-सुरेन्द्र नगर के डॉ डी एम दोशी ने गुरुदेवश्री की आखों का मोतियाविन्द का इलाज किया था जबकि पारसी डॉ डग्गन ने सोनगढ़ मे मोतियाविन्द का ऑपरेशन किया था |

४-डायबिटीज़ के समय गुरुदेवश्री श्री का बजन १६० से १५० करना था | तब उनका भोजन मात्र २ रोटी मात्र रही | घी तेल बंद | गुरुदेवश्री की सरलता थी की जैसा भोजन दिया जाता प्रेम से ले लेते थे |

५-यही तेज दवा ही ब्लड केंसर का कारण बना | ७ वर्ष बाद भावनगर मे बेसुध हो गए थे | तब जाँच मे केंसर आया था |

६-केन्सर का गुरुदेवश्री को बताने की हिम्मत नहीं पड़ती थी | एक दिन सभी विद्वान डॉ साहब, जुगलजी, शशीभाई, डॉ॰ चंदुभाई, लालुभाई आदि एकत्रित होकर गुरुदेवश्री के पास गए | गुरुदेवश्री को आश्चर्य हुआ कि सभी अचानक कैसे आए ! धीरे से भूमिका बना के बोले की साहेब ! ज्यादा चिंता की बात नहीं हैं परंतु आपको केन्सर है | गुरुदेवश्री हंस के बोले मने तो काईं लागतु नथी | चलो प्रवचन का समय हो गया | दोपहर के प्रवचन मे गुरुदेवश्री की प्रसन्नता देखते ही बनती थी | किसी को गुरुदेवश्री के चेहरे पर केंसर की सूचना का असर दिखाई नहीं दिया |

७- भोपाल में १९७५ में पंचकल्याणक में गुरुदेव को १०३ डिग्री ताव था पहली वार इलाज किया था | यहीं पहली वार ३०००० जनता देखी थी |

८- 1976-77 मे बहुत दस्त लगे | कपड़े खराब हो गए थे | भावनगर से २५ मिनिट मे डॉ भीमाणी आया उसकी दबा से आधा घंटा मे आराम हुआ | परंतु २ घंटे बाद डॉ चंदुभाइ आए साहेब आपको कुछ नहीं है और दवा बदल दी | तो गुरुदेवश्री बोले – आ डॉ चंदू मंडल खोटी ऊहा पोह करे छे |

९- गुरुदेवश्री के बीमार होने पर भी सामने के कमरे मे ब्र चंदुभाई डॉ चंदुभाई आदि लोग हंसी मसकारी करते थे | यह बात ब्र॰ भद्राबेन ने शांतिभाई जवेरी को बतलाई थी उन्हे यह बात अच्छी नहीं लगती थी |

१०- शशीभाई खारा – गुरुदेवश्री के लिए डॉ रखूँगा |

ब्र॰ चंदुभाई – संस्था के पास डॉक्टर रखने के लिए पैसा नहीं है |

११- डॉक्टर चंदुभाइ की बी पी नापने की मशीन १० पॉइंट ज्यादा दिखाती थी | अतः गलत डोज़ देने मे आई | डॉ माधुरी वेन निजी चिकित्सक आज भी है उसने सही नापा था उसकी दबा से गुरुदेवश्री को लाभ मिला |

१२- रात को डॉ चंदुभाई को गुरुदेवश्री ने याद किया तो ब्र॰ चंदुभाई बोले आपको क्या ! उसे तो और भी काम है |

१३- १९७० में भावनगर में रक्त विकृति के कारण पहली वार बुखार आया था | रात ११ बजे डॉ चंदुभाई राजकोट को फोन पर समाचार मिला प्रातः ६ बजे उपस्थित हो गये थे |

१४- गुरुदेवश्री की प्रकृति सर्दी की होने से कमरे में सीमेंट की शीट बिछाई गयी थी ताकि पांब से सर्दी न बैठे | प्रवचन एवं कमरे में भी सर्द प्रकृति वाले को दूर रखते थे |

१५- शशीभाई खारा – गुरुदेवश्री के लिए डॉ रखूँगा |

ब्र॰ चंदुभाई – संस्था के पास डॉक्टर रखने के लिए पैसा नहीं है |

१६- डॉक्टर चंदुभाइ की बी पी नापने की मशीन १० पॉइंट ज्यादा दिखाती थी | अतः गलत डोज़ देने मे आई | डॉ माधुरी बेन निजी चिकित्सक आज भी है उसने सही नापा था उसकी दबा से गुरुदेवश्री को लाभ मिला |

१७- रात को डॉ चंदुभाई को गुरुदेवश्री ने याद किया तो ब्र॰ चंदुभाई बोले आपको क्या उसे और भी काम है |

गुरुदेवश्री श्री का स्वास्थ्य

१८- १९७० में भावनगर में रक्त विकृति के कारण पहली वार बुखार आया था | रात ११ बजे डॉ चंदुभाई राजकोट को फोन पर समाचार मिला प्रातः ६ बजे उपस्थित हो गये थे |

१९- गुरुदेवश्री श्री की प्रकृति सर्दी की होने से कमरे में सीमेंट की शीट बिछाई गयी थी ताकि पांब से सर्दी न बैठे | प्रवचन एवं कमरे में भी सर्द प्रकृति वाले को दूर रखते थे |

२०- डोक्टर जिन्होंने इलाज किया –

१- जीथरी के डॉ रस्तोगी एवं

२- डॉ प्रकाश

३- लेडी डॉ माधुरी

४- डॉ राजेन्द्र होम्योपेथी

५- डॉ ब्र.गांगुली कलकत्ता |

६- डॉ चंदुभाई राजकोटनवरंग भाई, प्रवीन भाई , छावील भाई राजकोट ने भी

समय	चर्या

इलाज किया |

७- १९७६-७७ भावनगर से डॉ भीमाणी |

दिनचर्या

प्रातः ४ बजे	स्वाध्याय-सामाईक
प्रातः ६ बजे	दिशा को जंगल
प्रातः ७ बजे	स्नान जिन दर्शन पूजन
प्रातः ८ बजे	गाय का दूध
प्रातः ८-१५ बजे	प्रवचन को जाना
८-३० से	प्रवचन
प्रातः १० से १०-३० बजे	भोजन
प्रातः १०-३० से १०-४५ बजे	स्वाध्याय मंदिर में टहलना
११ से ११-४५	आराम
११-४५ से १२-३० बजे	पात्र-पत्रिका सामूहिक पठन – रामजीभाई, ब्र.चंदुभाई. हिम्मत भाई, कोई अन्य उपलव्ध विद्वान जैसे डॉ भारिल्ल साहब, पाटनीजी, बबुभाइजी |
मध्यान्ह १२-३० से २	स्वाध्याय
२ से २-३०	बाल मिलन
२-३० से ३-३०	प्रवचन
३-३० से ४००	भक्ति
सायं ४-३०	सायं भोजन
सायं ५-१५	भ्रमण

सायं ७ से ७-३०	तत्व चर्चा
रात्रि ८ से ९	एकाकी तत्व चिंतन / स्वाध्याय
रात्रि ९ बजे	शयन

दिनचर्या

दूध पीने के बाद गाथा ३२० – "सकल निरावरण अखंड एक प्रत्यक्ष प्रतिभासमय अविनश्वर शुद्ध पारिणामिक परम भाव लक्षण निज परमात्म द्रव्य वह ही मैं हूँ"

प्रणव माहात्म्य, समवशरण स्तुति पृ-४४ और कुछ स्तवन |

प्रातः मौखिक स्वाध्याय के नियमित विषय

१- १ से १६ गाथा समयसार जी

२- ४७ शक्तियां व्याख्या सहित

३- ४७ नय प्रवचन सार

४- २० अलिंग ग्रहण के बोल (प्रवचन सार गाथा १७२)

५- अव्यक्त के बोल (समयसार गाथा ४९)

६- स्वद्रव्य अन्य द्रव्य भिन्न -२ देखो

७- स्वद्रव्य का रक्षक शीघ्रता से होओ

८- स्वद्रव्य का व्यापक शीघ्रता से होओ

९- स्वद्रव्य का धारक शीघ्रता से होओ

१०- स्वद्रव्य का रमक शीघ्रता से होओ

११- स्वद्रव्य का ग्राहक शीघ्रता से होओ

१२- द्रव्य का रक्षकता ऊपर लक्ष राखो

१३- परद्रव्य की धारकता शीघ्रता से तजो

१४- परद्रव्य की रमणता शीघ्रता से तजो

१५- परद्रव्य की ग्राहकता शीघ्रता से तजो

१६- परभाव से विरक्त होओं |

१७- २४ तीर्थंकरों के नाम

१८- ५ बालयतियों के नाम कुल १७५ बातों का स्मरण करते थे |

सादा जीवन-भोजन

1. गाम में उबला हुआ पानी नहिं मिले तो छाछ पीते थे |
2. नीरस आहारी अर्थात आहार के प्रति अलोलुप्ता, निस्पृहता

3. शक्कर नही लेते थे,फल भी नहीं,बीमारी कि दशा में डॉ द्वारा (अजैन) अत्यंत अपरिहार्य बतलाने पर लिया, गुरुदेवश्री श्री के अनुसार ब्र.को फल आदि नई लेना चाहिए. अनार, मोसंबी, आम, सेवफल |
4. ऊनोदरवृत्ति - शांतिभाई – भरपेट खाने से प्रमाद होता है |गुरुदेवश्री – २ चूरमा लाडू तो का सकूँ इतना तो भूखा रहता हूँ |
5. यात्रा में गुरुदेवश्री का भोजन बनाने हेतु ब्राह्मण सोनगढ का था परंतु वह मात्र भोजन सामग्री सम्हालता था | दो ब्र. बहिने भोजन बनाती थी | रास्ते मे भी

गुरुदेवश्री को रोज ५ पापड़ बनाए जाते थे | वरसात होने पर भी उबलते पानी के तपेला के ऊपर थाल रखकर पापड़ सुखाये जाते थे | गुरुदेवश्री को आश्चर्य होता था |

6. समभाव - गरीब-अमीर के यहाँ भोजन |
7. भोजन कथा निंदा प्रशंसा नहीं करते थे |
8. प्रात: भोजन – ४ फुल्का,१ कटोरी दाल, लो़की, टीन्डोडा, परवल, तोरइ, सब्जी बदल बदल कर एवं ३ पापड़ |
9. शाम – खिचड़ी,दाल-चावल बदल-२ के लोकी की साग एवं २ पापड़ |

10. सर सेठ हुकमचंदजी ने पात्र में भोजन देते समय आलू का साग दिखाया तोगुरुदेवश्री ने न कर दिया तब तो फिर सेठजी ने भी हमेशा के लिए त्याग दिया |

11. बेनश्री- जेम लकड़ा चावे छे गुरुदेवश्री इस तरह नीरसता पूर्वक आहार करते थे |
12. अँधेरे में सिगरी नहीं जलाने देते थे |
13. मंदिर से आने के बाद कुल्ला करके गर्म दूध पीते थे | पेट साफ हो जाता था | बेनश्री के यहाँ दूध तपता था ३ श्रावक ३-३ पाव दूध लेते सभी से गुरुदेवश्री बरावर-२ दूध लेते थे | कपड़ा बदल कर दूध पीते थे |
14. प्रवचन के ३० मिनिट बाद भोजन होता था | बहिनें आहार चखती थीं | ब्र. बहिनें ही बनाती थीं | चावल का एक-एक दाना अलग-२ करके देती-परोसती थी |
15. डायबिटीज़ के समय गुरुदेवश्री का बजन १६० से १५० करना था | तब उनका भोजन मात्र २ रोटी मात्र रही | घी तेल बंद | गुरुदेवश्री की सरलता थी की जैसा भोजन दिया जाता प्रेम से ले लेते थे |

भ्रान्ति निरसन

1- जादू की लकड़ी रखते हैं ?

समाधान – यह मात्र शास्त्र की विनय के लिए थी; ताकि हाथ के पसीना से असातना न हो परन्तु लोगों में वह चमत्कारी कहलाने लगी | कोई कहता कि जिस पर फिर जावे वह धनी हो जाता हैं | कोई कहता कि जिस पर फिर जावे फिर वह उन्हीं का हो जाता हैं | कई वार वह चोरी भी चली गई | असली जादू तो तत्वज्ञान का था | उसे विरल लोग ही समझ सके और निहाल हो गये | वस्तु स्वरूप स्वयं चमत्कारी हैं | चमत्कार से धर्म की प्रभावना नहीं होती वरन धर्म एवं व्यक्ति का व्यक्तित्व सिमटता हैं |

2- मानस्तम्भ में गुरुदेवश्री का अंकन ऊपर किया गया हैं जबकि एक तरफ गुरुदेव के चित्र के निचे सीमंधर भगवान् का समवशरण एवं एक स्थान पर नीचे गिरनार पर नेमिनाथ दीक्षा का चित्र हैं ?

समाधान - नाहटा जयपुर ने सोनगढ़ आकर बनाया था | इसकी प्रतिकृति फिरोजाबाद एवं खुरई में देखी जा सकती हैं | इस में बने चित्रों की काफी आलोचना हुई | जबकि वे अप्रतिष्ठित होते हैं इसके बाबजूद इन शिल्पों को बदलना शक्य नहीं था | बदलने के आदेश गुरुदेवश्री ने दे दिए थे परन्तु स्तम्भ कमजोर हो जाने का भय नाहटा ने व्यक्त किया तब विचार बदल दिए गये |

3- ये पूज्य क्यों ?

समाधान - मात्र लोक व्यवहार में बड़े होने से | न कि अष्ट द्रव्य से पूज्य हैं, न कभी किसी ने गुरुदेवश्री की पूजा की हैं |

4- गुरुदेवश्री क्यों कहते हो ?

समाधान - वे श्वेताम्बर में साधू थे और श्वेताम्बरों ने गुरुदेवश्री से प्रभावित हो कर मत परिवर्तन किया इसीलिए वे वहां स्वामीजी या गुरुदेवश्री कहते थे उसी प्रकार कहते रहें | परन्तु समझने तो लगे थे कि ये देव-शास्त्र-गुरु वाले गुरुदेवश्री नहीं हैं |

इस सन्दर्भ में डॉ भारिल्ल जी ने उनसे साक्षात्कार लिया था जो युगपुरुष कानजी स्वामी में पृ- ४२-४३ पर छपा था के अनुसार-

प्रश्न – आपको लोग गुरुदेव कहते हैं ,तो आप साधू हैं ? गुरु तो साधू को कहते हैं |

समाधान – साधू तो नग्न दिग,६-७वे गुण स्थान की भूमिका में झूलते भावलिंगीवीतरागी संत ही होते हैं | हम तो सामान्य श्रावक हैं साधू नहीं | हम तो साधुओं के दासानुदास है | देव शास्त्र गुरु वाले गुरु तो पञ्च परमेष्ठी में

आचार्य, उपाध्याय , साधू ही हैं | हमसे लोग अध्यात्म सुनते हैं, सीखते हैं , सो गुरुदेव कहते हैं | हम तो विद्या गुरु हैं |

प्रश्न – तो आपको गुरुदेव विद्यागुरु के अर्थ में कहा जाता है, देव शास्त्र गुरु के अर्थ में नहीं ?

समाधान – हाँ, हाँ यही बात हैं | भाई | हम तो कई बार कहते हैं कि वस्त्रादि रखे और अपने को देव-गुरु-शास्त्र वाला गुरु मनवावे, वह तो अज्ञानी है | अधिक हम क्या कहे ! सच्चे गुरु तो नग्न दिग. वीतरागी साधू ही होते हैं |

5- जय-जयकार क्यों करते हो ?

समाधान - रामजीभाई जी बोले जब वे श्वे.साधू थे तो वहां वे सर्वोत्कृष्ट थे तब तो वे गृहीत मिथ्यात्व में थे हम उनकी जयजयकार करते थे प्रणाम करते थे और यदि अब परिवर्तन के बाद वे सम्यक मार्ग में हैं, ज्ञानी पुरुष हैं हम उनको प्रणाम क्यों न करें, जय-जयकार न करें तो उनकी हीनता सिद्ध होती | जिससे श्वे. लोग दिग. जैन धर्म नहीं अपनाते |

6- संत क्यों कहते हो ?

समाधान - ग्रंथों में अविरति को संत संज्ञा लागू हो जाती हैं | महाविद्यालयों में भी संत साहित्य पढाया जता हैं वे सभी वस्त्र धारी थे/ हैं |

7- पैसे मिलते हैं प्रवचनकारों को अथवा शिविर–सोनगढ़ में जाने वालों को |

समाधान - असंभव हैं | इतना पैसा कहाँ से आएगा सोनगढ़ में ? श्वेताम्बर लोग इतना धन मात्र दिग धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु क्यों व्यय करेंगे ? मात्र स्वाध्याय का प्रचार ही तो किया हैं उन्होंने | देखिये रत्नकरंड श्रावकाचार में उत्तम त्याग के प्रकरण में कि जो जीव ज्ञान दान देता है उसे केवलज्ञान प्रगट होता हैं | अब बताइये कि लोग केवलज्ञान छोड़ कर पैसा लेना कौन पसंद करेगा ?

8- जैन समाज का श्वेताम्बरीकरण करना चाहते हैं ?

समाधान - वे स्वयं कहते हैं कि श्वेताम्बर जैन, जैन ज नथी | अभी तक तो कहीं श्वेताम्बर बनाने की घटना घटित हुई नहीं |

9- २५ वे तीर्थंकर हैं ?

समाधान - नहीं ! क्योंकि घातकी के भावि तीर्थंकर होने का मात्र जातिस्मरण के आधार से कहा है न कि यहाँ के अभी वे कोई तीर्थंकर हैं |

10- मुनिओं को क्यों नहीं मानते ?

समाधान - व्यक्ति को नहीं मानते या स्वरूप को नहीं मानते ? ज्ञानी तो सदा स्वरूप की श्रद्धा करते हैं | पांच पद हैं न कि व्यक्ति | व्यक्ति भ्रष्ट हो सकता है, पद कभी भ्रष्ट नहीं होता हैं | दीक्षा कल्याणक के प्रवचन, अपूर्व अवसर के प्रवचन, भक्तामर स्तोत्र, विषापहार स्तोत्र, श्रावक धर्म प्रकाश के प्रवचन पढने योग्य हैं, जो कि उनकी मुनि भक्ति के प्रमाण हैं |

11- धन्यावतार पुस्तिका में बेनश्री के तलुआ चाटने से सम्यक्दार्शन होना कहना /छापना | समाधान - यह तो एक कहावत हैं | जो कि भक्ति/ गुणानुवाद के अर्थ में हैं | आज तक किसी ने वेनश्री के तलुआ चाटें हो ऐसा एक भी नाम सामने नहीं आया हैं |

12- जसलोक से परलोक गये ?

समाधान - पापोदय से कोई पापी नहीं होते, पापभाव से पापी होते हैं | यदि ऐसा न हो तो पारसनाथ, गजकुमार, आदिनाथ भी पापी कहलायेंगे |

13- दाह संस्कार में बिलम्ब क्यों ?

समाधान - इसमें गुरुदेवश्री की गल्ती नहीं, भक्तों की भावुकता की गलती सिद्ध होती हैं |

14- कानजीमत की स्थापना कर रहें हैं ?

समाधान - यह तो विरोधियों का प्रचार मात्र हैं | मूलतः कुन्दकुन्द एवं टोडरमल जी, समन्तभद्र स्वामी आदि समस्त दिग ग्रंन्थों एवं १३ पंथाम्नाय

की प्रतिमाओं की स्थापना का ही तो प्रचार किया हैं | सोनगढ़ एक स्वाध्याय की परम्परा कही जा सकती हैं | इनमे एवं दिग मतानुयायिओं में तारण समाज जैसी भी दूरी नहीं हैं | पर्व एवं परंपरा में किंचित भी अंतर नहीं हैं | हाँ अज्ञान एवं ज्ञान में अंतर तो दिखेगा ही |

15- मंदिर में गुरुदेवश्री का फोटो क्यों लगाया जाता हैं ?

समाधान - यह तो एक मजबूरी हैं जब मंदिर एवं स्वाध्याय मंदिर बनाए गये तब उनमें फोटो नहीं लगाये गये थे, तब मुनिराजों ने आकर उन पर कब्जा कर लिया | सागर के दो मंदिर मुमुक्षु जीतकर भी कब्जा न ले सके | हमें स्वाध्याय करने की सुविधा से मंदिर में बंचित कर दिया जाता था जबलपुर, टीकमगढ़, बीना इसके जीते-जागते उदहारण हैं | ग्रन्थ निकाल दिए गये, गोहाटीमें नदी में बहा दिए गये | तब डीड बनानी पड़ी, फोटो लगानी पड़ी | मुमुक्षुओं के नए मंदिर, स्वाध्याय मंदिर बनने, फोटो लगने में मुमुक्षुओं से ज्यादा श्रेय विरोध करने वालों को जाता हैं |

16- पुण्य हेय क्यों कहते हो ?

समाधान - इसे समझने के लिए तो जैन दर्शन का गहरा अभ्यास करना चाहिये | जिसके आश्रय से आत्मा का अनुभव होता हैं वह उपादेय, शेष समस्त भाव जिनके आश्रय से निर्विकल्प दशा प्रगट नहीं होती उसे हेय कहा जाता हैं |

17- त्याग का उपदेश क्यों नहीं देते हो ?

समाधान - सच्चे त्याग को समझो पाप भाव का त्याग मिथ्यात्व का त्याग ही सच्चा त्याग हैं | इसके साथ बहिरंग त्याग भी होता ही हैं |

18- दीक्षा क्यों नहीं ली ?

समाधान - अपने को ईमानदारी से दीक्षा के अयोग्य माना | नाम बड़े और दर्शन छोटे का काम नहीं किया | ३ कषाय चोकड़ी टूटने पर प्रचुर स्वसम्बेदन का होना ही मुनि पद की योग्यता हैं |

सोनगढ़ के विरोध का कारण

19- जातिस्मरण तत्व – सोनगढ़ की प्रभावनार्थ गुरुदेवश्री के मुख से कहलाना | यह आत्म प्रशंसा नाम का दोष हैं | अपन एवं अपने वालों की प्रशंसा से बड़ी हानि हुई |

20- निशुल्क विद्वानों की परम्परा चलने से आजिबिका वाले पंडितों को आजीविका छूटने का भय हो गया था | अतः उन्होंने मुनियों को विपरीत बातें बताकर विरोध कराना प्रारम्भ करके तथा उन मुनिओं के ऐसे कृत्यों की प्रशंसा करके अपना प्रयोजन साधा |

21- अधूरा ज्ञान | दोनों ही तरफ के लिए हानिकारक होता हैं |

22- अव्यवस्थित विद्वानों द्वारा प्रतिपादन | चारों अनुयोगों का संतुलित ज्ञान एवं प्रतिपादन न होना |

23- गुरुदेवश्री के प्रति अतिश्योक्ति पूर्ण भक्ति के वचन |

24- धन्यावातार पुस्तक का प्रकाशन विवादस्पद रहा |

25- विद्वानों का शिथिल आचरण |

26- मुनिओं को अपनी स्वछंदता के उजागर होने का भय |

वचनामृत प्रसार योजना

27- वचनामृत की झूठी महिमा कराने के लिए शशिभाई एवं हिम्मतभाई की योजनानुसार भावनगर से अनेकों वचनामृत के प्रसंशा पत्र डाले जाते थे |

28- रसिकलाल डगली एवं छोटालाल रायचंद गांधी बच्चों के माध्यम से बेनश्री की महिमा कहलाते थे | स्वयं भी प्रवचन के मध्य में टोक कर बेनश्रीकी महिमा कहने को बाध्य कर देते थे | - कलश टीका १४२ के बीच मे टोककर बोलने को कहा था |

29- नेरोबी के प्रवचनों में भी स्वयं के भव एवं तीर्थंकर पना कहने को मजबूर किया गया |

30- प्रवचनसार गाथा लगभग 134 – छोटालाल रायचंद गांधी ने कहा है इसलिए वेनश्री के वारे मे बोलता हूँ |

31- सूर्यकीर्ति भगवान की प्रतिमा विराजमान करने का बेनश्रीको पूछे बिना घोषणा करने से रसिकलालभाई डगली एवं छोटालाल रायचंद गांधी दोनों नाराज हो गए थे |

पुण्य प्रभावना योग

समय एवं समाज के अनुसार ढल जावे वह मानव है परन्तु वस्तु स्वरूप के आलोक में अपने अनुसार समाज को ढाल देवे वह महामानव- महापुरुष हैं |

आ. शांतिसागर अभिनन्दन ग्रन्थ पृ ...१५७

एक बार कुछ व्यक्ति चारित्र चक्रवर्ती स्व. आचार्य श्री शान्ति सागर महाराज के पास गए और श्री कानजीस्वामी के समयसार की एकान्तिक प्ररूपणा से व्यवहार

धर्म के लोप होने का भय व्यक्त करते हुए उस प्ररूपणा को धर्म बाह्य घोषित करने का अनूरोध किया |

इस पर आचार्य श्री ने कहा - अगर मेरे सामने प्रवचन के लिए समयसार रखा जाएगा तो मैं भी क्या, और कोई भी क्या, वही तो मुझे कहना पड़ेगा | पुण्य पाप को हेय ही बताना होगा, यही समयसार की विशेषता है | उनका निषेध करने से क्या होगा ? कानजी का निषेध करके क्या कुन्दकुन्द का निषेध करना है ?

१-रतनलालजी गंगवाल – गुरुदेवश्री जब कलकत्ता पधारे उस समय आम का सीजन नहीं था परन्तु अचानक बाजार में आम बिकने को आये और हमने प्रसन्नता पूर्वक आम का रस बनाया |

२-खंडवा के वर्तमान (सन २००० में) अध्यक्ष हैं अशोक कुमार जो यहाँ बाहर गॉव से आकर वसे हैं | व्यापार छोड़कर एक दिन भी रुकना कठिन है परन्तु सोनगढ़ एक दिन की बजाय १ माह रुके | आपके घर पर गुरुदेवश्री सम्मेद शिखर से लोटते समय ठहरे | आपके घर का कुआ जो अभी तक सूखा था अचानक पानी से भर गया | मुंह से गुरुदेवश्री की जय-जयकार निकला | तो गुरुदेवश्री ने टोका क्या यही स्वाध्याय किया हैं ? इसमें मैंने किया ही क्या है ? भूल जाओ इन बातों को इन बातों में दम ही क्या हैं !

३-पौन्नूरमलई- ७०० वर्षों तक कोई इतना बड़ा संघ लेकर कभी यहाँ नहीं आया | गुरुदेवश्री के पधारने से यह क्षेत्र प्रकाश में आया | और आज इस क्षेत्र की उन्नति देखते ही बनती है |

४-विश्व रिकॉर्ड –

१-ग्रन्थ प्रकाशन के साथ बिक्री | ७ वर्ष में २५००० मोक्षमार्ग प्रकाशक बिक गए |

२-एक ही ग्राम में एक ही संत के ९००० घंटों के प्रवचन रिकॉर्ड हुये |

३-पंचकल्याणक/ वेदी प्रतिष्ठा पंचमकाल में एक ही व्यक्ति द्वारा प्रथम वार हुये |

४-जैन मत में ५ लाख व्यक्तिओं की सोच में परिवर्तन हुआ |

५-चर्चा, प्रवचन, धर्म का पठन-पाठन, प्रकाशन, बिक्री, साधर्मी वात्सल्य, ग्रुप बाल संस्कार शिविर, पर्वों का सोत्साह उत्सव सहित मानना,

६-दिनचर्या- नियमित एवं सजग आचरण |

७-अक्षर खोदने वाली मशीन इटली से २८०००/- रु में आयात की गयी सर्वप्रथम भारत में सोनगढ़ में आई | पोपटभाई ने रूचि लेकर काम कराया |

८-छोटी उम्र में विद्वान तैयार हो गए | जो स्वयं प्रवचन में अरुचि रखते/ हिचकते थे वे ही एक दिन आकर्षक प्रवचनकार बन गये |

९-गाथा ३२० पर प्रवचन की मुकुंदभाई खारा द्वारा सर्वप्रथम वीडियो रिकॉर्डिंग हुई |

१०- मंदिरों में छोटे-२ कार्यक्रम कराना भारी पड़ता था और आज ८-८ दिन के कार्यकरम देवलाली जयपुर आत्मार्थी ट्रस्ट जैसी ऐसी कोई संस्था नहीं हैं जहाँ २ से ५ वर्ष के कार्यकरम बुक न हों |

११- आज महावीर जयंती के कार्यक्रम से गुरुदेवश्री की जन्म जयंती प्रवचन आदि में अधिक भीड़ आती हैं | दान भी इन कार्यक्रमों में ज्यादा आता देखा जाता हैं | और गजब तो यह है कि दान को उपादेय कहने वाले सम्पूर्ण दान एकत्रित कर पाते हैं और यहाँ अज्ञात मुमुक्षु भी दान बोलते थे और सारा दान एकत्रित हो जाता है | दान राशि में समय कम लगता है और लोग प्रवचन में रूचि अधिक रखते हैं | पहले नाटक, विधान, सांस्कृतिक कार्यकरम यहाँ तक कि भीड़ जोड़ने के लिये विवाह सम्मलेन कराना पड़ते थे | और आज कोई भी कार्यकरम सफल करना हो तो जोरदार विद्वान बुलाकर जोरदार प्रवचन कराओ तो भीड़ एवं अर्थार्जन भी जोरदार होती है |

१२- गोपालदास बरैयाजी, गणेशप्रसाद वर्णीजी, मनोहर वर्णी 'सहजानंदजी', जिनेन्द्र वर्णीजी, आ.श्री विद्यासागर आदि सभी को अपनी

संस्था बनाने एवं अपने उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए आना जाना पड़ता हैं | गुरुदेवश्री ने कोई विकल्प नहीं किया | उनका उद्देश्य तो एक मात्र आत्म कल्याण ही था | आपके पुण्य योग से ही डॉ भारिल्लजी, दोनों बहिने, ब्र. हरिभाई, हिम्मतभाई, सेठ अनंतभाई बोम्बे, नेमीचन्द्र पाटनीजी, रामजीभाई, बाबुभाई जी जैसे जीव पके अतः सेठ घूमे |

१३- पृ-५२-५३ - जावाल यात्रा बैशाख सुदी १२ स.२०१४ शुक्रवार २३-४-१९५७

३६ कौम के ठाकुर सुमेर सिंग, श्री वनचंद, चवन्नीलाल, ठा जोरावरसिंह, ठा.उमेद सिंह आदि ५४ व्यक्तिओं के हस्ताक्षर से पत्र लेख –

सार- १- ऋषभचंद जी जावाल वालों के निमंत्रण पर पधारे | २- मंडप में ट्यूव लाईट लाउड स्पीकर का प्रबंध किया गया ३- प्रातः ७-३० बजे स्वागत जुलुस निकला ४- मंडप के पास आते ही ५-७ लोग अशांति फेलाने लगे-नारे लगाने लगे ५- स्वामीजी वापस चले गये ६- प्रवचन का आग्रह टाला वे नही चाहते थे कि उनके जाने के बाद ग्राम में अशांति एवं वैमनस्य फेल जाये ७- २ बजे मध्यान्ह भोजनोपरांत माउंट आबू गमन किया ८- रात्री ९ बजे स्थानीय नागरिकों ने निर्णय लिया कि समस्त ३६ जाति के लोग २ बस ४ कार से प्रातः ७-३० बजे लगभग १०० लोग गुरुदेवश्री को वापिस लेने गये | ९-२४-४-५७ को पुनः मंडप बनाकर भव्य स्वागत एवं प्रवचन कराया गया | २५ शामियाने ध्वज निशान ५००० आदमियों ने स्वागत किया १०- ठा.सुमेरसिंह ने २५ रु चरणों में चड़ाये ११- १ रुपया श्री फल प्रत्येक यात्री को भेंट किया | ११- १ बजे जावाल से विदा हुये |

उस दिन के प्रवचन का विषय –

१-आत्मधर्म प्राप्ति की प्रथम सीढ़ी कौनसी है ?

२-सुख का सच्चा सधन क्या है ?

३-पूर्ण एवं सच्चा ब्र. कौन पालन कर सकता है ?

४-आत्मा को पूर्ण शांति कैसे मिल सकती है ?

५-गृहस्थ धर्म के पालन का उपदेश |

जावाल के शांति भाई दादर हैं | ऋषभचंद जी जावाल के पुत्र परिवार के हैं |

१४- नेरोबी मे मकई एवं दूध की कमी थी, गुरुदेवश्री के पाहुचने पर दोनों चीजें अचानक खूब विकने आए |

१५- बीछिया मे पुनीतबेन राजकोट (उस समय बच्ची थी), के यहाँ मंदिर प्रतिष्ठा के समय आहार- गोचरी के लिए आए | माँ को एम सी थी उनके हाथ से सहज ही आहार नहीं लिया सभी को भ्रम हुआ की कहीं गरीब होने कारण ना लिया हो | एम सी का विचार स्थानक वासी संप्रदाय मे नहीं चलता है | गुरुदेवश्री विचक्षण ज्ञानी थे सो सहज ही नहीं लिया |

१६- पौन्नूर यात्रा मे एक गाड़ी पलटी थी यह सूचना पाते ही एक महिला रोने लगी | गुरुदेवश्री बोले चिंता नहीं करो सब ठीक होगा | हुआ यूँ की एक ड्राइवर एक 5 साल की बच्ची को लेकर अकेला कुंद्कुन्द्राद्री पर्वत पर चला गया 10 मिनिट की रास्ता बची थी की गाड़ी खाई मे गिर गई | वन इंस्पेक्टर के बंगले मे गुरुदेवश्री श्री ठहरे थे | उस ने स्वयं गाड़ी निकलाई कोई भी क्षति नहीं हुई | सब बोले की गुरुदेवश्री के वचन मात्र से मंगल होता है |

१७- नटुभाई अजमेरा पालीताणा व्यवसाय के लिए कलकत्ता जाना चाहते थे अंतिम समय गुरुदेव के पास आशीर्वाद लेने आये गुरुदेव ने एक वार मना किया तो जाना रद्द कर दिया | वापिस पालीताणा गये तो वहन एक वकील कनुभाई दामाणी के ऑफिस में ज्वाइन किया तभी कनुभाई पालीताणा से जज बन कर अहमदावाद गये और वे यहीं जम गये और अच्छा जम गया |

विनोद प्रियता

१- दीपावली आ ज मारो फटाको छे | सभी हंस पड़े |

२- भारिल्ल तुम्हारे थान गली-२ व्रती हैं |

३- बच्चों को मिठाई, पेन, मेवे, ग्रन्थ आदि बाटते और विनोद करते थे |

४- छोटे-२ बच्चे गुरुदेवश्री को चप्पल पहनाते, लाठी लाकर देते गुरुदेवश्री प्रसन्न होते थे |

५- मोतीलाल खेरागढ़ प्रेमचंद के बेटे १ साल का था, पर गुरुदेवश्री को बड़ा प्रेम आता था | उसकी ऊँगली पकड़ कर चलावें, पापड़ खिलावे, एक वार तो पापड़ के चक्कर में थाली ही गिर गई | यह बालक आज शास्त्री अभयकुमार खेरागढ़ हैं |

६- जीतुभाई एवं पुजारीजी के बच्चे भी आते थे |

७- प्रकाश कलकता से पूछा- देव दर्शन की विधि क्या हैं ?
देव दर्शन एवं निज दर्शन की विधि एकसी हैं | द्रव्य नो भाव कर्म से भिन्न देखो | चमड़े का बेल्ट एवं चमड़े की दृष्टी छोड़कर मंदिर में प्रवेश करो |

८- दादर जन्म जयंती के समय हितेषीजी का चश्मा प्रणाम करते समय गिर गया गुरुदेवश्री बोले हितेषी तमारी जूनी दृष्टी छूटी गई | सभी हंस पड़े |

दृढ़ता, निर्भीकता, स्पष्ट वादिता

१- स्वयं ध्यान नहीं स्वीकार किया मात्र कहते मैं सुबह चिंतन करता हूँ |

२- करसन भाई, राजकोट को (वैष्णव थे मंदिर में ध्यान लगाते थे) मना कर दो ध्यान नहीं ध्येय का निर्णय करो |

३- रजनी भाई हिम्मत नगर – एक वार एक पत्र में गालिलिखी आई कि कांजी स्वामी पापी है | गुरुदेव श्री ने दोपहर प्रवचन में इस पत्र को दिखाया और हर्ष प्रगट किया 'अध्यात्म रस पाया और पीने को कहते हैं अतः पापी सही है |' इस तरह के पत्र प्रायः आते ही रहते थे |

४- लीलाधर लीमडी – घना क्ष्योपशमी पंडित थे, को तुम मुझे सुनने लायक नहीं कहकर सभा में से उठा दिया था | वे पर्युषण में प्रवचन करने गये थे इनकी शैली के वारे में पत्र आया सभा में वांचा- मंदिर शमसान में कोई अंतर नहीं | मूर्ति एवं मुर्दा में कोई अंतर नहीं बोलते थे | जब तक नहीं निकलोगे मैं प्रवचन नहीं करूँगा |

५- प.नवलभाई २-४ वार प्रवचन को गये उन्हें भी पाबन्दी झेलनी पड़ी थी | प्रवचन में बोले – मंदिर हो या मस्जिद ज्ञेय हैं |

६- ब्र.गुलाबचंद जी प्रवचन में आगे बैठते थे तो नया ग्रन्थ विमोचन पर उन्हें भी देते थे इस तरह उनेके पास बहुत ग्रन्थ भेट में गुरुदेव से मिले, एकत्रित कर बेच दिये | पता लगने पर दुःख सहित गुरुदेव ने प्रवचन में बोला मैं प्रवचन न करूँगा | उठो बाहर जाओ | रामजी भाई ने बाहर किया |

७- अव्यक्त का बोल चल रहा था वर्षात हो रही थी पीछे एक बच्चा रो रहा था | सभी रोना सुनकर भी न उठे तो गुरुदेवश्री ने प्रवचन रोक दिया उस दिन प्रवचन नहीं किया | अनुशासन एवं विवेक तो होना ही चाहिए |

८- कामाणी ब्रदर्श बोम्बे – नर्भयराम कामाणी आधा जमशेद नगर उन्हीं का हैं | उनकी पत्नी शांताबेन के रिश्तेदार हैं, सिगार पीते थे गुरुदेवश्री को प्रणाम करने कक्ष में आये गुरुदेवश्री को गंध आई तो कक्ष से बाहर निकाल दिया | इन्हें ज्ञानी की विनय करना भी नहीं आता हैं |

९- १७ लाख का हार -17 लाख का हार पहने हुये थे सरसेठ हुकम चंद जी इंदौर गुरुदेवश्री बोले- "आ तमारु हार मने तो पाथरा नी जेम लागे छे |" गुरुदेवश्री की निष्पृह वृत्ति से सेठजी बड़े प्रभावित हुये थे |

१०- बापुजी एवं प. धन्नालाल जी को नींद आते देख प्रवचन में टोक दिया | विद्वान् के ३ काम जगाना, टोक कर दोष निकालना एवं समझाना हैं |

११- कलकत्ता में गजराज जी के घर साहू शांतिप्रसादजी वर्णी जी का लिफ़ाफ़ लाये की कर्मों से विकार होता है | थई गयी चर्चा तत्काल उठा दिया | मैंने ईशरी में वर्णी जी से चर्चा कर ली फिर अव प्रश्न क्यों उठाना ?

१२- डॉ चंदुभाई अत्यंत प्रिय थे प्रवचन सभा में दर्द होने से पैर के ऊपर पैर चढ़ाकर बैठे तो टोक दिया पहले पाँव नीचे फिर कुछ सफाई सुनेंगे |

१३- बेनश्री से कह देते थे | प्रवचन में बिलम्ब होने पर गुरुदेवश्री कहते की आज मैं भोजन नहीं करूंगा मेरे भोजन के चक्कर में ही प्रवचन में लेट होते हो नहीं चलेगा |

१४- ब्र.हरिभाई ने दर्शन करते हुए स्वयं का फोटो आत्मधर्म में छापा तो रोका अरे ! मान चढ़ गया हैं |

१५- पूनमचंदजी जोवालिया बांद्रा बोम्बे लाल कारपेट बिछाया एवं ज्यादा आधुनिक परिग्रह देख – एटलो वधु...!(परिग्रह) बापू ! देह छोडवो भारी पडसे " यह बात लोटते में लिफ्ट में कही थी |

१६- सं १९५० में वलुभाई (रंगून में बड़ा व्यापार था ८५ लाख का घाटा खाकर भी सोनगढ़ वसे बाद में देवलाली रहे एवं यहीं देह विलय हुआ) ने निर्जरा व्रत किया पारणा में राजकोट में वरसी तप के उपलक्ष में गुरुदेवश्री को बुलाया | आशीर्वाद माँगा तो गुरुदेवश्री स्पस्ट बोले – आ मिथ्यात्व छे |

वे यह बात न समझे बाद में स्वाध्याय करके समझे | और गुरुदेवश्री की महिमा समझने पर ही आई |

१७- हिम्मतभाई जोबालिया प्रवचन के समय स्त्री तरफ देखते थे | गुरुदेवश्री ने प्रवचन में ही टोका – त्यां सु जोवानु ? बुरा लग गया २ दिन प्रवचन में ही नहीं आये | गुरुदेवश्री बोले न आये तो न आये | जबकि इन्हीं के निमित्त से गोदिकाजी, पोपटभाई, नवनीतभाई, मीठालाल सेठी जयपुर, माणिकचंद लुहाड़िया, सुरेन्द्रकुमार देहली सोनगढ़ से जुड़े थे |

१८- पंचकल्याणक सोनगढ़ के बाद सेठों को स्वाध्याय की सीख | बे चार क्लोक स्वाध्याय करवो जोइये |

१९- ४०-५० ग्रन्थ बांटने को रखे थे परन्तु किसी ने बिना पूछे ही उठा लिया प्रवचन न किया आखिर ग्रन्थ उठाने वाले की कबूलात करने पर ही प्रवचन प्रारम्भ हुआ | अनीति है |

२०- शांति भाई जवेरी के घर पानी

२१- बम्बई – प्रश्न रात्री भोजन करें या नहीं ? पुण्य का विश्वास रखो नोकरी छोड़ दो |

२२- साहू शांतिप्रसादजी प्रांतिज शिविर से सोनगढ़ पधारे | गुरुदेवश्री के प्रवचन में चल रहा था – मैं कौन हूँ ? मेरा क्या स्वरूप हैं ? यह परिणति कैसी बन रही हैं ? वर्तमान में जो भव हो रहे हैं इनका क्या फल लगेगा ? निस्वार्थ करुणामयी हृदय से वाणी निसृत हो रहीं थी | सुनते ही आँखों में आंसू आये | प्रवचन के बाद भरी सभा में बोले – आपने तो मेरी आन्खें खोल दी आज तक सभी ने मुझे दानवीर, श्रावक शिरोमणि, तीर्थ भक्त कहा परन्तु धुलिया सेठ तो मात्र आपने ही कहा हैं | आज तक सभी ने मख्खन लगाया है | ऐ सेठ मरीने ढोर थशे | २ - ४ घंटे स्वाध्य करना चाहिए | गुरुदेवश्री - भाई !

थोडा सा जीवन हैं, विघ्न बाधाएं बहुत हैं, शरीर रोग मंदिर है, समय निकालकर आत्महित करना | अनंत वार कूकर-शूकर में गया |

२३- मुंबई में बोले थे – चोथे काल में भी मुनि बोलते नहीं थे, नियमित चर्चा की सुलभता भाग्य हो तो मिले |

२४- विरोध का जबाब मांगने आये तो सिद्धांत पक्ष रखने न कि विरोध करने को जैन पथ प्रदर्शक प्रारम्भ हुआ |

२५- कलोल निवासी दिग भाई सोमचंद्रभाई ने मोक्षमार्ग प्रकाशक का गुज अनुवाद किया था |

२६- महसाना के पास कलोल निवासी एक दिग गुज आत्मार्थी थे आत्माराम, घी के व्यापारी थे गुरुदेवश्री की खूब सेवा की हैं | बोम्बे में गुरुदेवश्री के साथ भोजन करने जाते थे | भोजन के बाद किसी न किसी बहाने ५००-१००० रु मांग कर रख लेते थे | वलुभाई ने गुरुदेवश्री को कहा | विश्वास नहीं हुआ | गुरुदेवश्री भोजन कर रहे थे आत्मारामजी एक स्लिप पैसे के लिए लिख रहे थे तो वलुभाई ने पकड़ी तो जल्दी से चबा गये | गुरुदेवश्री बोले वकरी है क्या ? निकल जाओ सुबह दिखना मत | आत्माराम जी खूब रोने लगे | अब क्या करें ? तब वलुभाई ने ही रास्ता बताया उस अनुसार सुबह गुरुदेवश्री दिशा को ५ बजे जा रहे थे तभी पाँव पकड़ लिए रोकर क्षमा मांगी तो क्षमा कर दिया | अब न करना |

२७- ब्र.हेमचन्द्रजी भोपाल – हेदराबाद के जयचंद्र डी लोखनिया महामंत्री भारत वर्षीय तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट कमेटी के घर पर रुके | शाम को चर्चा चल रही थी | इसमें बाबुभाईजी, प.ज्ञानचन्द्रजी विदिशा, डॉ हुकम चन्द्र भारिल्ल साहब, पद्मश्री सुमति वाई शाह, सोलापुर, जतीशभाईजी, श्रीचन्द्रजी ब्र.थे | एक भाई को पानी पीते देख कर गुरुदेवश्री ने तत्व चर्चा न करके यही चर्चा की कि देखो पूरुषार्थसिद्धिउपाय ७३ वी गाथा अष्ट मूलगुण रहित मनुष्य

जिनदेशना सुनने का पात्र नहीं हैं | जैन धर्म गंभीर मार्ग हैं | मोक्षमार्ग कोई हंसी मजाक नहीं हैं | बाबुभाई तमे तो सोनगढ़ नो मोटो स्तम्भ छो | मोक्षमार्ग प्रकाशक नो पाचमो अधिकार मां लख्यु छे के अजैन रात्रि पाणी ने खून बरावर माने छे तो जैन नी तो शुं बात छे | एम न चाले बापू ! पोपाबाई नो राज नथी |

विद्वानों का अभिमत एवं श्रद्धांजलि

काल खंड के मंगल मुहूर्त में दिग. प्रांगण पर पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी का अवतरण युग की एक क्रान्ति थी, सदियों से बंद जिनवाणी के विमोचक पूज्य गुरुदेव श्री के तत्व सम्पादन की एक स्पर्धाजनक खानी है, श्रुत रत्नाकर समयसार उन्हें मिला, जैसे सत्य का पिटारा ही पाया, अब वह पन्नों पर लिखा न रहा, बल्कि ज्ञान की अनुभूति में छप चुका था और उनके मन मन्दिर में उपास्य देव के रूप में प्रतिष्ठा पा चुका था | यही समयसार अभीष्ट मित्रवत जीवन के अंत तक उनके साथ रहा | दिग.संतों के ग्रन्थों का अपने स्वच्छ ज्ञान द्वारा दोहन कर उन्होंने शुद्ध आत्म तत्व की प्रतिष्ठा की | "पूज्य गुरुदेव से पूर्व आध्यात्मिक चिंतन का रिवाज तो था, पर चिंतन में अध्यात्म नहीं था |" सच कहा जाय तो पथ तो था पाथेय इस युग को आपसे मिला |- बाबू जुगल किशोर युगल कोटा

आ. शांतिसागर अभिनन्दन ग्रन्थ पृ ...१५७

एक बार कुछ व्यक्ति चारित्र चक्रवर्ती स्व. आचार्य श्री शान्ति सागर महाराज के पास गए और श्री कानजीस्वामी के समयसार की एकान्तिक प्ररूपणा से व्यवहार धर्म के लोप होने का भय व्यक्त करते हुए उस प्ररूपणा को धर्म बाह्य घोषित करने का अनूरोध किया |

इस पर आचार्य श्री ने कहा - अगर मेरे सामने प्रवचन के लिए समयसार रखा जाएगा तो मैं भी क्या, और कोई भी क्या, वही तो मुझे कहना पड़ेगा | पुण्य पाप को हेय ही बताना होगा, यही समयसार की विशेषता है | उनका निषेध करने से क्या होगा ? कानजी का निषेध करके क्या कुन्दकुन्द का निषेध करना है ? *इतिहास १ पृ ८१*

३-५७ डालमियानगर माघ वदी ११

सेठ साहू शान्ति प्रसाद (स्वागत समिति के अध्यक्ष) एवं श्रीमती रमा देवी गुरुदेव के दर्शन को पधारे | साथ ही मीठा नमकीन यात्रिओं के लिए लाये | साहू जि की और से समस्त संघ को भोजन था | पूज्य गुरुदेव श्री का भोजन भी उन्ही के यहाँ हुआ | शाम का भोजन प. भागचन्द्र जी के यहाँ हुआ | रात्री विश्राम विक्रमगंज में हुआ | भारत भूमि के भूषण स्वरूप गौरव गुण गरिमा से गरिष्ट पूज्य गुरुदेव श्री ....व्याकारनाचार्य पांडे जी|

-जहाँ बच्चे भी अध्यात्म की चर्चा करे वहीँ सोनगढ़ हैं | डॉ भागचन्द्र जि ने भी स्वागत किया |

प. अयोध्या प्रसाद गोयलीय भारतीय ज्ञान पीठ काशी के मंत्री हैं | ने गुरुदेव श्री को सन्मान पात्र अर्पण किया |

"जब सूर्य और चन्द्र हजारों वर्षों तक भटक -२ पृथ्वी की गोद में खोजते हैं तब कहीं हजारों वर्षों की तपस्या के फल में कोई कोई महान संत दिखाई देता हैं | उसी प्रकार भारत वर्ष में आज कोई पूर्व तपस्या के फल में यह विश्व वन्द्य विभूति के दर्शन जिसके लिए मैं सोनगढ़ जाना चाह रहा था वह आज स्वतः यहाँ विराजमान हो गई हैं | "

गोयलीय ने कहा - "किन शब्दों से आपका स्वागत करूँ ? अरे ! स्वामीजी की मोटर की धूल से भी अपने को पावन समझते हैं | "

मुनिश्री निर्वाण सागर – फर ९७ अशोक नगर –"हमारा डॉ भारिल्ल से बहुत पुराना परिचय है कई वार मिलान हुआ है, स्मारक भी गये हैं उन्होंने हमारे सम्मान पूर्वक प्रवचन भी कराये हैं | ...हमने उनकी छोटी बड़ी अनेकों पुस्तकें पढ़ी हैं | ....समयसार अनुशीलन के ३ भाग पढ़े हैं | हमें उनकी पुस्तकों में कोई आगम विरुद्ध बात दिखाई नहीं देती हैं | क्रमबद्धता क्रम नियमित दोनों दोनों एक ही बात हैं | उसमें वस्तु स्वरूप का यथार्थ कथन हैं | इससे तो सर्वज्ञता की सिद्धि होती हैं |"

मुनिश्री कैलाश सागर –२-४ ओक्टू १९९९ –"हमें तो कांजी स्वामी का बहुत बहुमान हैं | आचार्य कुन्दकुन्द एवं अन्य आचार्य महानुभावों की अपेक्षा गौण है, पर उन्होंने वर्तमान के इस पंचमकाल में वस्तु तत्व के सत्य निरूपण में अद्वितीय कार्य किया है | उन्होंने गत ५० वर्षों में जो तत्व ज्ञान दिया है; वह ५०० वाट के लट्टू के समान वस्तु तत्व को यथार्थतः स्पष्ट प्रकाशित करता है |" "ज्ञान तीर्थ जयपुर नगर , जग में बना विशाल |

हुक्म चन्द्र भारिल्ल ने , अद्भुत किया कमाल ||
देश विदेशों में सदा, करते तत्व प्रचार |

स्वानुभूति झट हो उन्हें , ये मेरे उदगार ||
क्रमबद्ध पर्याय में, जो कुछ भी हो हाल |
इंद्र, नरेंद्र , जिनेन्द्र तक, नहीं सकें वह टाल ||"

प्रख्यात लोककवि दूल्हाकाक – ने गुरुदेव श्री के ऊपर ४० दोहे लिखे थे |

श्री यु॰एन॰ढेबर भारतीय कांग्रेस प्रमुख पृ-२

....हमारा तो उनकी सेवा में प्रणाम भेजने का अधिकार है सो भेज रहे हैं |

उनके भाषण का सार –पृ ३३

...उनका (स्वामीजी का) जीवन एक सत्य दृष्टा का जीवन है और वे निर्भीक हैं जिस चीज में उनका विश्वास है, उसको वे निडरता से कह रहे हैं | .....नानालाल जसाणी भाई रामजीभाई मेरे बड़े भाई जैसे हैं .....वह भारत वर्ष की मूल चीज है, वह तत्व समझा रहें हैं | और आज भारतवर्ष की इस चीज की सारे विश्व को जरूरत है |

प.फूलचंद जी सिद्धांत शास्त्री वाराणसी पृ २

जैन समाज को अंतरंग से उनकी बात सुनना चाहिये | यह हमारी विनम्र सम्मति है | .....श्री कानजी स्वामी की भविष्यकाल में युगप्रवर्तक पुरुषों में परिगणना की जायेगी | इसलिए इस महापुरुष के प्रति जो भी आदर भाव प्रगट किया जायेगा वह अल्प ही होगा |

पृ 98 कहानगुरुदेव विशेषांक "आगम पथ"- मई 1976 – "कोई कुछ भी क्यों न कहे, मैं तो कहता हूँ की वर्तमान मे श्री कानजी स्वामी का उदय दिगंबर जैन परंपरा के लिए अभ्युदय रूप है, जिसके जीवन मे दिगंबर परंपरा का माहात्म्य समाया हुआ है वह श्री कानजी और समग्र सौराष्ट्र को आदर की दृष्टि से देखे बिना नहीं रह सकता है | "—खानीयां तत्वचर्चा पृ -१९

१-हजारीलाल 'काका' ------कहानगुरुदेव विशेषांक "आगम पथ"- मई 1976पृ-८८-

१-चौथा काल वर्तने लगता जहाँ, आपने किया वसेरा |

वह स्थल तीरथ बन जाता, जहाँ आपने डेरा डाला ||

तुमसे धर्मामृत रस पीकर, प्रमुदित हो जाता है जन -२ |

हे युग पुरुष तुम्हें तन मन से करता हूँ शत शत वंदन ||

a. दानियों को देखना तो तीर्थों पर जाइए |
संगमरमर पर खुदे हैं नाम खुद पढ़ आइये ||
धर्म ओर धर्मात्मा ऐसे बहुत मिल जायेंगे |
आत्मा को देखना हो तो सोनगढ़ को जाइए ||

१५- जिनके सतत प्रयत्नों से, चल रही धर्म की चर्चा घर-२ |
जिसने जन जीवन में फूंका, आत्मधर्म का मन्त्र मनोहर ||
समयसार के गणधर बनकर, किया जिन्होंने प्रवचन पावन |
हे युगपुरुष ! तुम्हे करता हूँ, तन मन से शत-२ अभिनन्दन ||आपने

२-प.चैनसुखदास न्यायतीर्थ जयपुर वनारस पृ २

इसमें कोई शक नहीं कि श्री कानजीस्वामी के उदय से अनेक अंशों में क्रांति उत्पन्न हुई हैं | पुराना पोपडम खत्म हो रहा है और लोगों को नइ दिशा मिल रही है | यह मानना गलत है कि वे एकांत निश्चय के पोषक है | हम सोंनगढ में सर्वत्र फेले हुये उनके अनुयायिओं में निश्चय तथा व्यवहार का संतुलन देख रहें हैं | सौराष्ट्र में अनेकों नवीन मंदिरों का निर्माण तथा उनकी प्रतिष्ठायें स्पष्ट

बतलाती हैं कि वे व्यवहार का अपलाप नहीं करते | भ.कुन्दकुन्द के वे सच्चे अनुयायी हैं | जो उनकी आलोचना करते हैं वे आपे में नहीं हैं व उन्होंने न निश्चय को समझा है और न व्यवहार को और सच तो यह है कि जैन, शास्त्रों का हार्द ही उन्होंने नहीं समझा | कानजीस्वामी विवाद में नहीं पड़ना चाहते, पर अपना काम करते जाते हैं | सोनगढ़ से जो धार्मिक साहित्य निकल रहा है, उससे स्वाध्याय का बहुत प्रचार हुआ है | कुछ लोग किसी भी विषय को आंदोलन का रूप दे देना चाहते हैं | श्री कानजीस्वामी के विषय में ऐसा ही हुआ है | निमित्त उपादान तथा क्रमबद्ध पर्याय आदि दार्शनिक चीजे हैं | विद्वानों के समझने की हैं | ऐसी चीजों को आन्दोलन का विषय बनाना समाज की शक्ति को क्षीण करना है | हमे प्रत्येक प्रसंग को निष्पक्ष दृष्टि से देखना चाहिये | आपका प्रयत्न प्रशंसनीय है |

पत्र कला विशारद

श्री प्रेमराज जी अजमेर को लिखे पत्र का अंश, दिनांक ९.१२.१९६६

वर्तमान में आगम के अर्थो में भी खीचातानी चल रही है | पण्डितो व साधुओ में भी गुटबंदी सी हो गयी है| कानजी के प्रति द्वेष भाव पैदा हो गया है | इसके दो कारण है: प्रथम तो यह कि वे लोगों की चालू धारणा-व्यव्हार के एकांत को खंडित करने के लिये निश्चय नय का द्रढता से प्रतिपादन कर रहे है जो व्यव्हार एकांतवादियो को निश्चय एकांत आभासित होता है | दूसरे विद्वानों को अपनी विद्वत्ता पर अभिमान है | वे चाहते है कि हमें गुरु मानकर कानजी समझे | दूसरा कारण यह है कि वर्तमान साधुओ में आगमोक्त मूलगुणों की कमी देखकर वे उनको मुनि नहीं मानते, अत: मुनि भी उनसे नाराज है | फलत: उसे समाज में गिराने की भावना सभी की है| सेठ तो ..... होते है उन्हें धर्म की समझदारी है ही नहीं | अत: उन्हें धर्म डूबा का नारा लगाकर धर्मभीरू होने से उनको बुद्धू बनाकर अपना मतलब दोनों साध लेते हैं|

हम लोग कुछ मध्यस्तता की बात करते है, तो समाज के सामने बदनाम करते है कि पंडित लोग वहां से रूपया पाते हैं, अत: उनकी पुष्टि करते है | यह है समाज की हालत |

यथार्थ में, मैं अभी प्रत्यक्ष देखकर आया हूँ वे व्यव्हार का निषेध करते है निश्चय द्रष्टि को सामने रखकर| इससे कि उनके पुराने अनुयायी अपने व्यवहार को छोड़ और निश्चय की बात को यथार्थ समझें| इसे समझने पर सम्यक व्यवहार उनमे आ जायेगा | आ भी जाता है | वे पूजा करते है, पञ्च कल्याणक कराते है, अपने को शुद्ध दिगंबर कहते हैं| उनके द्वारा शुद्ध तेरह पंथ की प्रव्रत्ति को स्वीकार करना भी बीस पंथियों को खटकता है | यह तीसरा कारण भी उनके विरोध का हैं|

वे प्रतिमाधारी नहीं, पर अत्यंत शुद्धाचारी ब्रम्हचारी हैं | सभी लोग दि.जैन धर्म के कट्टर अनुयायी हैं, हमसे भी ज्यादा कट्टर हैं | सदा स्वाध्याय चलता है | एक एक अक्षर सूक्षमता से पड़ते हैं| न कोई पंथ स्थापना की भावना है, न कोई आगम विरुद्ध मान्यता है | मंद कषायी हैं, विरोध से क्रोधित भी है, पर अपना काम करते हैं|

जैन पंडित परमपरा ; एक परिदृश्य
नंदलाल जैन गल्स कॉलेज रीवा

जैन जागरण के अग्रदूत

जैन संदेश ३० जुलाई ८७ अनुसार - एक विद्वान को ४० वर्ष से ७३ रूपये वेतन मिल रहा है | विद्वत परिषद के ३०० रू न्यूनतम वेतन का प्रस्ताव स्वीकृत |

१- अधिकाँश अच्छे विद्वान पारिवारिक जीवन कष्टमय रहा |

२- अधिकाँश अच्छे विद्वान ने अपनी आजीविका हेतु द्वीतियक स्रोत विभिन्न साहित्यिक सामायिक संस्थाओं को भी अपनी सेवायें दी |

३- व्यक्तिनिष्ठ हो गये | इनमे नए लोगों का प्रवेश असम्भव सा हो गया |

४- धनपतियों का वर्चस्व देख उनके अनुसार कथन एवं प्रवृत्तियां चलने लगी | ये लोग स्थिति स्थापकता एवं जड़ता के अनुयायी हो गये | इन्हें परिवर्तन या नवीनता के प्रति अरुचि दिखी |

५- पराश्रितता को अपनी नियति समझ बैठे | अपनी संतानों को इस मार्ग दूर रख जिससे वे अधिक नास्तिक व भौतिक वादी बन गये |इस कारण पंडित पीढ़ी के ह्रास का प्रमुख कारण है |

६- अपने अभाव एवं कुंठा ग्रस्त जीवन के अभिशाप को अनुभवा अतः किसी को इस मार्ग में आने के लिये प्रेरित नहीं किया |

फल-

१- किसी भी विद्वान को उत्तराधिकारी नहीं मिला |

२- अपने क्षेत्र में वर्चस्व तो रहा परन्तु भविष्य अंधकारमय हो गया | इसमें नयी पीढ़ी मध्यस्थ रह गई |

३- आजीविका के लिये बाह्य क्षेत्र का प्रचार बढता गया|

४- काशी बीना सागर की संस्थाओं का रंग बदलने लगा वे अन्य विषय पढाने लगे | धर्म क्षेत्र में विद्यार्थी मिलना बंद प्राय हो गये | अर्थात सूखने लगे |

५- इनमे कुछ अपवाद ही है जो प्रतिष्ठा प्राप्त कर सके |
उपरोक्त लेख से पूज्य गुरुदेव श्री का महत्व डॉ भारिल जी का महत्व समझा सकता है |

पृ-९५ –"सौराष्ट्र मे अनेकों नवीन मंदिरों का निर्माण तथा उनकी प्रतिष्ठायेँ स्पष्ट बतलाती हैं कि वे व्यवहार का अपलाप नहीं करते | वे दिग॰ आचार्य भगवान कुंद्कुंद के सच्चे अनुयायी हैं |"

१०५ क्षु.गणेश प्रसाद वर्णी - कानजी स्वामी से भेंट

स. २०१३ की फाल्गुन सुदी ५ को कांजी स्वामी मधुवन आ गये थे | जितने दिन रहे , प्रायः हमसे मिलते रहे | प्रसन्न मुख तथा वैचारिक व्यक्ति है | आप प्रारम्भ में स्थानकवासी श्वेताम्बर थे, परन्तु कुन्दकुन्द स्वामी के ग्रंथों का अवलोकन करने से आपकी दिगम्बर धर्म की दृढ़ श्रद्धा हो गई जिससे आपने दिग. धर्म धारण कर लिया

| न केवल आपने , किन्तु अपने उपदेश से सौरास्ट्र तथा गुजरात प्रान्त के हजारों व्यक्तिओं को भी दिग.जैन धर्म में परिवर्तित किया है | आपकी प्रेरणा से अनेक जगह दिग मंदिर का निर्माण हुआ है |-पृ ३६ प्रेरणा रसायन |

६-श्री पन्ना लाल साहित्याचार्य, मंत्री भा.व. विद्वत परिषद, सागर पृ ३

"समयसार से प्रभावित होकर ही श्री कानजी स्वामी ने शुद्ध वस्तु स्वरूप को समझा .....हम उनकी इस परीक्षा प्रधानता का अभिनंदन करते हैं |"

प.रतन लाल शास्त्री इन्द्रभवन इंदौर पृ ३७

लेख शीर्षक – "वर्तमान युग के अनुपम उदार चैतन्य रत्न जौहरी"

.....चैतन्य रत्न जौहरी श्री महिमा तो जो सच्चिदानन्द घन के अनुभव से सहजानंद पीयूष का पानकर चूका है,वही जान सकता है |.....पुण्यरूप कागज नौका से भवसागर तरने की भ्रान्ति दूर हुई | निमित्ताधीनदृष्टिविष को सम्यक प्रकार निवारण करना |.....

७-संहितासूरि श्री प.नाथूलाल शास्त्री इंदौर .....पृ ४९

श्री कानजी स्वामी के जितने भी प्रवचन हुये हैं, होते है और उनका प्रकाशन हुआ है, मध्यस्थभाव से देखने पर सबमें अविरोधिता ही मिलती है | वक्ता के अभिप्राय और प्रकरणगत संगति को न देखकर विरोध की दृष्टि से कुछ भी कहा जा सकता है |

सब ब्र.वहिनें अपने हाथ से पीसकर शुद्ध मर्यादित भोजन करती-कराती है और व्रतोपवास में सावधान रहती हैं |

समयसार को पढ़कर भी सोनगढ़ के भक्त हजारों भाइयों व बहिनों के आचरण में जो दृढ़ता पाई जाती है, वैसी हमारे अनेक व्रतिओं तक में

नहीं पाई जाती है | खान-पान की सात्विकता और शीलव्रत तथा नैतिकता वहाँ की अनुकरणीय है | हमारे प्रान्तों में तो बाजार का भोजन व रात्रि भोजन धीरे-२ चल निकला है, पर उधर रात्री को पानी तक नहीं पिया जाता व आलू जमीकंद का नाम तक नहीं है |

ii. मैंने बीछिया, लाटी, पोरबंदर, सोनगढ़, मोरबी, बांकानेर, लीम्बडी, और बम्बई में जिनबिम्ब प्रतिष्ठा कराई है |

iii. मैं १५ वर्ष से सोनगढ़ के सम्पर्क में हूँ | प्रारम्भ में मुझे भी स्वामीजी के प्रवचनों में विरोध का आभास हुआ | इसके फलस्वरूप में भी वादविवाद में उलझा, परन्तु धीरे-२ जब विचार किया और शास्त्रावालोकन किया तो वास्तविकता का ज्ञान हुआ | वर्तमान में अध्यात्म की ओर इस प्रकार का जनता का रुझान और स्वाध्याय प्रचार का श्रेय स्वामीजी को है |

८-प.हीरालाल, सिद्धान्तशास्त्री पृ ८३

i. अध्यात्म जैसे गहन, सूक्ष्म एवं रुक्ष विषय को आप जिस सरलता, सरसता और स्वाभाविकता के साथ समझाते हैं, उससे वह श्रोताजनों के मानस पटल पर सहज में ही अंकित होता जाता है | अध्यात्म तत्व की यह सुगम अभिव्यक्ति ही आपके प्रभावशाली अनोखे अनुपम व्यक्तित्व को व्यक्त करती है | जिसने कभी अध्यात्म की चर्चा भी नहीं सुनी, ऐसे अनेक जैनेतर व्यक्ति भी आपके अध्यात्मिक प्रवचन सुनकर अध्यात्म गंगा में गोते लगाने लगता है | मैने अपने जीवन में ऐसा प्रभावशाली अनोखा व्यक्तित्व अन्यत्र कहीं नहीं दिखा |

९-प. कैलाशचंदजी बुलन्दशहर पृ-७१

पूज्य श्री को मैंने कई बार स्वप्न में भावलिंगी संत के रूप में देखा है | वर्तमान में भावलिंगी संत का दर्शन दुर्लभ हो रहा है | लेकिन मैंने सतगुरु देव को भावलिंगी संत के रूप में धर्मोपदेशक जाना है और उनके आहारदान का निमित्त भी मैं ही बना हूँ | इसीलिए मैं उनको भाव लिंगी संत के रूप में बारम्बार नमस्कार करता हूँ |

....करीब एक वर्ष पूर्व मैंने स्वप्न में पूज्य श्री को तीर्थंकर के रूप में साक्षात् समोसरण में विराजमान देखा था |

१०- सर सेठ हुकमचंद इंदौर .....पृ-६१

१- व्यक्तिओं की पर्युषण सभा में कहा था) यदि हमें

११- पंडित रतनचंद भारिल्ल- पृ-93

"सोनगढ़ के संत युग पुरुष श्री कानजी स्वामी के अनुपम व्यक्तित्व ने धर्म एवं अध्यातम के क्षेत्र मे प्रायः सभी विशाल व्यक्तियों को प्रभावित किया है | ऐसा कोई भी नहीं बचा जो उनके व्यक्तित्व से अप्रभावित रहा हो | उन्होने तत्वज्ञान की ओर एक नया मोड़ दिया है जो युगों से विस्मृत थी | वे वर्तमान आध्यात्मिक क्रांति के सृष्टा हैं | उनका अधिकांश जीवन धर्म भावना से ओत प्रोत आत्मसाधक के रूप मे ही व्यतीत हुआ है एवं हो रहा है अतः वे सच्चे अर्थों मे संत व युगपुरुष हैं |"- सन्मति संदेश 7/5/27

१२- तत्वरसिक 105 क्षु जैनेंद्र वर्णी – पृ 94

"अत्यंत दुर्लभ तत्व की प्राप्ति में निमित्त भले ही वीतरागी देव हों या वीतरागी गुरु या श्रावक गृहस्थ हों सभी समान हैं | यद्यपि वैराग्य व चारित्र की भूमिकाओं की अपेक्षा उनमें आकाश पाताल का अन्तर है | काठियावाड स्थित सोनगढ़ ग्राम के सुप्रसिद्ध अध्यात्म योगी कानजीस्वामी उन्हीं मे से एक हैं |"

१३- वृषभसागर मुनिराज

आप २ दिन सोनगढ़ रहे फिर ८ दिन भावनगर, वे बोलते थे कि आप जैसा कोई भावलिंगी तो नहीं कोई द्रव्य लिंगी साधू भी नहीं है |

१४- फुलचन्द पुषपेंदु खुरई –

समयसार द्रव्यानुयोग में रमते-२, आप स्वयं प्रथमानुयोग बन गये |
नयचक्रों के सिद्धांतों में जमते-२, आप स्वयं दृष्टान्तों में छप गये ||
आप सरल थे समयसार तो बहुत कठिन हैं |
उसको पढ़ने के पहिले तो हमें आपको पढ़ना होगा ||
जीवन का इतिहास आपको चूँकि पुराणों से मिलता हैं |
इसीलिए तो हम सरल से कठिन ओर अब बढ़ना होगा ||
आप स्वयं चरणानुयोग के युग नायक थे |
निर्ग्रंथों के सद्ग्रंथों के गणधर से गायक थे ||

खरी कसौटी होती हैं करणानुयोग की |
उसने सिद्ध किया लघुनंदन चौथे के लायक थे ||

१५- श्री पन्ना लाल साहित्याचार्य, मंत्री भा.व.विद्वत परिषद, सागर पृ ३

a. "समयसार से प्रभावित होकर ही श्री कानजी स्वामी ने शुद्ध वस्तु स्वरूप को समझा .....हम उनकी इस परीक्षा प्रधानता का अभिनंदन करते हैं |"

१६- प.रतनलाल 'शास्त्री' इन्द्रभवन इंदौर पृ ३७

लेख शीर्षक – "वर्तमान युग के अनुपम उदार चैतन्यरत्न जौहरी"

.....चैतन्यरत्नजौहरीश्री महिमा तो जो सच्चिदानन्दघन के अनुभव से सहजानंद पीयूष का पानकर चुका है, वही जान सकता है |.....पुण्यरूप कागज नौका से भवसागर तरने की भ्रान्ति दूर हुई | निमित्ताधीन दृष्टिविष को सम्यक प्रकार निवारण करना |.....

१७- चारित्र चक्रवर्ती पृष्ठ ११६ – स्वामीजी गिरनारजी से लोटते हुए आ.शान्तिसागरजी को दूर तक लेने आये थे |

सर सेठ हुकमचन्द्र ने शंतिसागारजी से ब्रह्मचर्य लिया था उनके वारे में आ;श्री के विचार – पृ-२४० हमारी ८० वर्ष की आयु हो गयी हैं, हिन्दुस्थान के जैन समाज में हुकमचन्द जैसा वजनदार आदमी देखने में नहीं आया | राजा रजवाड़ों में इनकी बहुत मान्यता रहीं हैं | इनके निमित से जैन समाजके कई संकट टलें हैं | इनको हमारा आशीर्वाद हैं |

२४२- दिल्ली में सभा में लाऊड स्पीकर से प्रवचन दिए थे शान्तिसागर जी ने |

२५०- दूध सम्बन्धी समाधान |

३०२ – पुन जिले के ऐक नगर में एक मुनिराज का पंचामृत अभिषेक किया गया उन्हें सन्निपात होकर मरण हो गया |

३५४- स्वाध्याय का प्रचार –

आ. शांति सागर जी –पृ-

"अगर मेरे सामने प्रवचन के लिए समयसार रखा जायेगा तो मैं भी क्या ओर कोई भी क्या वही तो मुझे भी कहना पड़ेगा, पुण्य पाप को हे ही बताना होगा, यही समयसार की विशेषता हैं | अब रही बात व्यवहार की व्यवहार धर्म की जीवन में उपयोगिता कैसी हैं ? यह बात कानजी स्वामी को बतानी होगी | <u>उनका निषेध करने से क्या होगा ? कानजी का निषेध करके क्या कुन्दकुन्द का निषेध करना हैं |</u>"

१८- धर्मेन्द्र शेठ –खुरई के संस्मरण

a. मैं ११ वर्ष का था तब पू.गुरुदेव खुरई पधारे थे | एक किलो मीटर दूर फार्म हाउस पर ठहराया गया था | वे गृहस्थों के घर में नहीं ठहरते थे | अपार जनता को देखकर अध्यात्म का चमत्कार दिखलाई दिया था |
b. ९ वर्ष की उम्र में पहली वार पिताजी के साथ मुंबई से भावनगर २५७/- रु, के टिकिट से हवाई जहाज से गये थे साथ में भगवान दास शोभालाल जी सागर भी थे उन्ही के प्रस्ताव से जाना हुआ था | उन्होंने पहले टिकिट के पैसे ले लिये थे ताकि मन न बदल जावे | मैंने वहाँ जाने को प्रेरित किया क्योंकि मुझे हवाई जहाज में बैठने का मन था | क्योंकि समन्तभद्र आचार्य आदि लोग वहाँ जाने को निषेध करते थे |
c. दिनांक – २३-२-१३ बीना सिद्ध चक्र मंडल विधान के उपलक्ष में शाकाहार भाषण |

d. वास्तव में सत्य दिग. जैनधर्म का स्वरूप जानना है, तो इस युग के दिग. जैन धर्म के सच्चे प्रचारक सोनगढ़ के संत का प्रत्यक्ष साक्षात्कार करना चाहिये |

१९- प.हीराबाई जैन श्रविकाश्रम इंदौर

a. स्वामीजी का ज्ञान जितना अगाध और गम्भीर है, उसी प्रकार उनकी प्रवचन शैली भी चमत्कार से भारी हुई है | द्रव्यानुयोग जैसे कठिन और रुक्ष विषय को कितनी सरल भाषा और दृष्टांतों से कहते हैं कि श्रोता गण मन्त्र मुग्ध हो जाते हैं | अपने प्रान्तों में हम शास्त्र सभा, मंदिर आदि धार्मिक कार्यों में बड़े-बूढों की संख्या देखते हैं किन्तु सोनगढ़ इसका अपवाद है | वहाँ बड़े-२ डॉ॰,वकील व अंग्रेजी के उच्च शिक्षित एक बार पहुच जाने के बाद अपने जीवन को बदल लेते हैं | और गहरा अध्ययन करते हैं |

b. अजैन से जैन बनने की परम्परा

c. स. २००० बडनगर की बात है कुछ-करीब १२५ लोग नीमा लोग जैन धर्म पालते थे | एक बार खुल्ले पैसे की समस्या आई तो जीव दया कमिटी काम करती थी उसमें हजारीमलजी नीमा काम करते थे उन्होंने नीमा जैन के नाम से हस्ताक्षर किये तो नीमा समाज ने आपत्ति की और उनपर जुर्माना लगाया | कि तुमने सारे नीमा समाज को जैन बना दिया | तब जैन समाज ने आपत्ति की कि तुमने जैन समाज पर जुर्माना कैसे लगाया | तब ११ समाज की पंचायत बैठी और जुर्माना माफ हो गया | इस तरह नीमा समाज को बुरा लगा तो उन्होंने जैन नीमाओं से विवाह संबंध तोड़ दए | और जैनों ने गौत्र देकर उन्हें जैन बना लिया |

२०- २०- सुरेश 'सरल' जबलपुर (विद्याधर से विद्यासागर के लेखक)- "समूची समाज की चर्या विवाद ग्रस्त है, गुरुदेव की चर्या आत्मग्रस्त है | .....सफाई –ज्ञान का अमृतघोलने वाले गुरुदेव यदि गंदे दाँतों से घिरी जीभ द्वारा कड़ुबे माने जाएँ तो माने जाते रहें, वे कड़ुवाहट – सिद्धांत शिखा से जन जन का जीवन उज्जवल कर रहे हैं | इस पर जब जिसने ध्यान दिया, उसकी कड़ुवाहट समाप्त हो गई |.....खबर रहे संयक्दृष्टि कदाचित अकेला ही हो तो अकेला भी वह सुशोभित एवं प्रशंसनीय होगा |"..... "वह ऐसा प्राण है जो सुख मे स्थापित है, एक ऐसा प्राण जिसमें सुख स्थापित है | गुरुदेव का परिचय भी यही है | वे महान दृष्टा हैं |"

२१- प०श्री स्वतंत्र जैन – कहानगुरुदेव विशेषांक "आगम पथ"- मई 1976पृ-116 – "कानजी स्वामी की रचनात्मक कार्य प्रणाली एवं आध्यात्मिक क्रांति से भारत एवं भारतेतर अनेक देश भी परिचित हैं | आध्यात्मिक विषय से संबंधित जो कार्य किया वैसा कार्य आज के वर्तमान साधू समाज एवं पंडित वर्ग से न हो सका | यह कटु सत्य है |"

२२- १०५ क्षु चिदानंदजी - कहानगुरुदेव विशेषांक "आगम पथ"- मई 1976–पृ-९४ –

प्रथम वार मैं चातुर्मास हेतु सोनगढ़ गया एवं १४ माह रहा | वहाँ मैंने स्वामीजी की धर्म देशना श्रवण की और वहाँ का अपूर्व शांत वातावरण देखा तो जो आनंद आया उसको प्रगट करने मे असमर्थ हूँ | यही कारण है कि जो

वहाँ का वातावरण एक वार अवलोकन कर लेता है, वह दूसरे वक्त जाये बिना नहीं रह सकता हैं |

२३- साहू शांतिप्रसाद जैन – "स्वामीजी ने वीतराग धर्म का प्रचार प्रसार करके जैन धर्म व समाज का बहुत बड़ा उपकार किया हैं | वास्तव मे सम्यकदर्शन, ज्ञान व चारित्र धर्म की पुनर्स्थापना मे उनका बहुमूल्य स्थान रहा है जिसका जैन समाज सदैव ऋणी रहेगा |"--------- कहानगुरुदेव विशेषांक "आगम पथ"- मई 1976पृ-१३

२४- सेठ लालचन्द हीराचंद – "संत श्री कानजी स्वामीजी ने जैन समाज मे नयी जागृती और नव चेतना का निर्माण किया है |"-- कहानगुरुदेव विशेषांक "आगम पथ"- मई 1976पृ-१३

२५- साहू श्रेयांश प्रसाद जैन – "आज से लगभग २००० वर्ष पूर्व आ भगवान कुंद्कुंद ने जिस मोक्षमार्ग का उपदेश दिया, व मुक्तिमार्ग का मर्म समझाया उस मार्ग को वर्तमान युग मे स्वधर्मी भूले हुये थे, व अंधकार मे भटक रहे थे | अब २००० वर्ष पश्चात पू, स्वामीजी ने उसी मोक्षमार्ग का अनुसरण कर हमें मुक्ति का मार्ग दर्शाया है | जिसके लिए समस्त दिगंबर जैन समाज ऐसे महान संत का सदैव ऋणी रहेगा |....सौराष्ट्र मे जैन मंदिर एवं जैनी नहीं दिखते थे अब सेकड़ों मंदिर एवं जैनी दिखते हैं |.....जो ग्रंथ मुनियों के अध्ययन के लिए समझे जाते थे वे आज लाखों गृहस्थ पढ रहे हैं |"

२६- सरसेठ भागचंदजी सोनी – अजमेर - कहानगुरुदेव विशेषांक "आगम पथ"- मई 1976पृ-१४ "गत त्रिदशी मे स्वकुल क्रमागत परंपरा को छोडकर

वीतराग दिगंबर धर्म मे समागत श्री कानजी स्वामीजी की सम्यकदर्शन प्रधान प्रणाली वर्तमान भोगप्रधान भौतिक युग मे संतप्त प्राणीयों के लिए आकर्षण का केंद्र बनी हैं, यह प्रशंसनीय विषय है | "

२७- सेठ राजकुमारसिंह कासलीवाल, इंदौर - कहानगुरुदेव विशेषांक "आगम पथ"- मई 1976पृ-१५ – " यह निसंदेह कहा जा सकता है की सौराष्ट्र मे जैन मंदिर आदि के निर्माण और सहस्त्रों की संख्या मे दिग॰जैन धर्मानुयाइओं की वृद्धि तथा सौराष्ट्र के बाहर देश मे जमा जमा आधुनिक वातावरण मे भी आध्यात्मिक ग्रंथों के स्वाध्याय के प्रति विशेष रुचि की वृद्धि का श्रेय श्री कानजीस्वामीजी और उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व को है |"

२८- राय वहादुर हरख चंद पांड्या – रांची कहानगुरुदेव विशेषांक "आगम पथ"- मई 1976पृ-१५-१६ – "पू कानजी स्वामी वर्तमान जगत के आध्यात्मिक प्रवक्ता है उनकी वाणी मे ओज है प्रवचनों मे जैन तत्वों की निश्चयात्मक दृष्टि से विशेषताएँ अंतर्निहित होती है |"

२९- प॰पद्मश्री सुमतिबाई शाह सोलापुर - कहानगुरुदेव विशेषांक "आगम पथ"- मई 1976पृ- २२-"आध्यात्मिक संत श्री कानजीस्वामीजी के द्वारा वीतरागता प्राप्त करने हेतु दिग जैन समाज को वर्तमान समय मे जो मार्गदर्शन मिला हैं वह सेकड़ों वर्षों से ओझल हो रहा था |"

३०- भगतराम जैन - कहानगुरुदेव विशेषांक "आगम पथ"- मई 1976पृ- २२-"कभी भी जीव और पुद्गलो के संबंधों की जानकारी नहीं दी जाती थी | इस विषय को या तो छोड़ दिया जाता था या मात्र पढ़ दिया जाता था |"

३१- ब्र॰छोटेलाल उदासीन आश्रम इंदौर कहानगुरुदेव विशेषांक "आगम पथ"- मई 1976पृ-३१ – "मैंने अन्य अनुयोग के ग्रंथों के साथ साथ श्रीमद

कुंद्कुंद के समयसार आदिक अध्यात्म ग्रंथ का अनेक वार मनःयोग पूर्वक अध्ययन किया किन्तु मुझे तो श्री स्वामीजी के प्रवचनों मे रंच मात्र भी अन्तर नहीं दिखा | उन्होने कुंद्कुंद आचार्य एवं टीकाकार के हृदयों को खोला है, जो कि जैन सिद्धांत का मर्म हैं | "

३२- डॉ नेमिचन्द, संपादक तीर्थंकर - कहानगुरुदेव विशेषांक "आगम पथ"- मई 1976पृ- ३१ – "संत श्री कानजीस्वामी का स्वाध्याय के क्षेत्र मे बहुमूल्य प्रदेय है उन्होने लाखों-लाख लोगों को जो जैन दर्शन का क ख ग भी नहीं जानते थे उन्हें पंडित बनाया है | "

३३- खुशालचंद गोरावाला- कहानगुरुदेव विशेषांक "आगम पथ"- मई 1976पृ-३२ –"एक व्यक्ति की सदृष्टि कैसे सहस्त्रों व्यक्तिओं की सम्यक्दृष्टि खोलने मे निमित्त होती है | स्वामीजी की जीवनी इसका ज्वलंत निदर्शन हैं ".....निश्चित ही स्वामीजी और उनके निमित्त से बने जिनकल्पी साधर्मी हमारे द्वारा अभिनंदनीय है क्योंकि उनको निज घर को आना इस सदी की एक महत्वपूर्ण घटना हैं |

३४- प॰ जगनमोहनलालजी कटनी - कहानगुरुदेव विशेषांक "आगम पथ"- मई 1976पृ- ४७ "स्वामीजी प्रभावक हैं, देदीप्यमान हैं, उनकी वाणी ओज पूर्ण है चरित्र उज्ज्वल है इन सब बातों का भी जनता पर प्रभाव अंकित होता है |"

पृ-५२ –"स्वामीजी ने अपने जीवन मे वह कार्य किया है जो आज सहस्त्र वर्षोंसे जैन साधको द्वारा सम्पन्न नहीं हो सका |" .....दिग. जैनसमाज के कथित नेता उनका विरोध करने तथा उन्हें दिग. जैन न मानने की घोषणा करते हैं, वे तब उन्हे मान्यता देते थे जब वे भाई दिग. जैनी नहीं बने थे | दिग. जैन बन जाने पर ठुकराते

हैं, तिरस्कार व अपवाद करते हैं | इससे बड़ी भूल कोई हो ही नहीं सकती हैं | कहा जाता है "यह अपना नया पंथ बनाते हैं" पर यह बात सही नहीं है, जिस पंथ से ये आए हैं, उस पंथ से स्वत: अलग हो गए हैं | जिस पंथ में वे आए वे अपने मे शामिल नहीं करना चाहते हैं फलतः यह नया पंथ बनेगा पर बनेगा | दिग. जैन समाज की भूल से हम उनका नया पंथ बनने के कारण हैं, वे नहीं | वे अपने को कट्टर दिग. जैन घोषित करते हैं | .....सोराष्ट्र मे २० दिग जैन मंदिरों का निर्माण, उनकी पंचकल्याणक, समस्त दिग. जैन तीर्थों की सहस्त्रो व्यक्तिओ के संघ सहित वंदना, लाखों रुपए दिग. तीर्थोंकी रक्षा मे दान देना तथा उसकी पूर्ति का संकल्प यह सब उनकी कट्टरता दिग. जैन धर्म का प्रमाण है |.....स्वामीजी अत्यंत सरल निष्कपट, सहज स्नेही हंसमुख ओजस्वी व्यक्ति है | अध्यात्म के उच्चतम विद्वान हैं अध्यात्म का जीवनचर्या पर प्रभाव लक्षित होता है | प्रकारानतर से उनका कार्य एक मिसन का कार्य है |

.....उनके अनुयायी आधिकतर व्यक्ति रात्री भोजन नहीं करते, अभक्ष्य भक्षण नहीं करते कंद-मूल नहीं खाते, द्विदल नहीं खाते, व्रत रूप प्रतिज्ञा बद्ध न होते हुये भी इन श्रावकीय नियमों का पालन करते हैं | जबकि पुराने दिगम्बरों मे यह परंपरा टूटती जा रही हैं |

.....मेरी स्वयम की दृष्टि मे यह निर्णय है कि स्वामीजी का तत्वज्ञान यथार्थ है |

३५- प.कैलाशचन्दजी सिद्धांत शास्त्री बनारस – "हमने कुन्दकुन्द का नाम तो सुना था परन्तु समयसार का तो नाम भी नहीं सुना था, पढ़ने की तो बात ही दूर हैं |

जैन जागरण के अग्रदूत -पृ ९५-"प्रायः देखा जाता है कि साधुओ की सभा में वृद्ध जन आते हैं, परन्तु आपके व्याख्यान में शिक्षित जन वकील,डॉ,वगैरह भी आते हैं | जिस ग्राम में आप जाते हैं उस ग्राम में घर-२ में धार्मिक वायु मंडल छ जाता है | तथा जैन धर्म के प्रति अनन्य श्रद्धा , दृढ़ता और अनुभव के बलपर निकलने वाले आपके वचन नास्तिकों को भी विचाआर में दाल देते हैं और कितने ही आस्तिक बन जाते हैं |

इसमें संदेह नहीं हैं कि कांजी स्वामी का व्यक्तित्व बड़ा प्रभावक है और वक्तृत्व शैली अनुपम हैं | उनके प्रभाव से सोनगढ़ के जैनेतर अधिवासी भी अध्यात्म चर्चा प्रेमी बन गये है | अपने सोनगढ़ के प्रवास काल में हमे इसका अनुभव हुआ | एक दिन एक व्यक्ति विद्वानों के वस् स्थान पर आकर अध्यात्म की चर्चा करने लगा | पूछने पर उसने अपना परिचय देते हुए कहा कि मैं मुसलमान हूँ, पुलिस में कान्सेटेवुल हूँ और प्रतिदिन महाराज का उपदेश सुनने जाता हूँ |

दुसरे दिन एक विद्वान को ज्वर आया उन्हें देखने के लिए एक डॉ आया उसने भी एक घंटे खूब तत्व चर्चा की |

किम्ब दंती है कि मंडन मिश्र एक बहुत बड़े विद्वान थे |जब शंकराचार्य शास्त्रार्थ के लिए उनके ग्राम में पहुंचे तो उन्होंने ग्राम के बाहर कुए पर पानी भरने बाली एक स्त्री से मंडनमिश्र का पता पूछा तो वह बोली -

स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं कीरांगना यत्र गिरो गिरन्ति |

द्वारेपी नीडान्तःसन्निरुद्ध अवेहि तन्मंडन मिश्र धामः ||

जिसके द्वार पर पीन्जों में बंद मैनाएँ 'प्रमाण स्वतः होता अथवा परतः' इस प्रकार की चर्चा करती हों , उसे ही मंडन मिश्र का घर समझना | सोनगढ़

के विषय में भी ऐसा ही समझना चाहिए | जहाँ के वायु मंडल में अध्यात्म प्रवाहित हो वहीँ कांजी का निवास स्थान सोनगढ़ है |"

काठियावाड के रत्न -

"श्री कानजी महाराज प्रतिभा शाली व्यक्ति हैं | उनके परिचय में आने वालों पर उनकी प्रतिभा का अमिट प्रभाव पड़े विना रहता ही नहीं | उनकी स्मरण शक्ति वर्षों की बात को तिथि वार सहित याद् रख सकती है | उनकी कुशाग्र बुद्धि हरेक वस्तु की तह में प्रवेश करती है | उनका हृदय वज्र से भी कठिन और कुसुम से भी कोमल है | वे एक अध्यात्म रसिक पुरुष हैं | उनकी नस-नस में अध्यात्म रसिकता व्याप्त है | कानजी स्वामी काठिया वाड के रत्न है |" - काशी १ अकटु १९५१

३६- बंशीधर न्यायालंकार इंदौर- "हमारे तीर्थंकरों और आचार्यों ने सच्चे दिग. जैन धर्म को अर्थात मोक्षमार्ग को प्रकाशित करने वाला जो उपदेश दिया था वही इन कानजी स्वामी की वाणी में हम सबको आज सुनने मिल रहा हैं | आ.कुन्दकुन्द, आ.अमृतचंद के बाद समयसार के यथार्थ रहस्य को जानने और समझाने वाले आप ही हैं |"

३७- युगल जी – १- सत्य से दूर जन्म कर भी अनुसंधान कर पाया, गुरु बनाकर भी नहीं पा सकते थे | तत्व अभावग्रस्त था | रूटीन वर्क से निकालकर शुद्ध आत्मा- वस्तुस्वरूप की प्राण प्रतिष्ठा की |

३८- रमेश भाई 'कमल' घाटकोपर – "सभी का वक्ता परंतु मेरा तो श्रोता ही चला गया |"

३९- श्री प. ज्ञानचंद जैन 'स्वतंत्र ' सह सम्पादक जैन मित्र सूरत पृ ६५

४०- सन १९५१ रेलवे स्टेशन से तांगे से धर्मशाला आया, अठन्नी दी | तो तांगे वाले ने कहा मैं कानजीस्वामी का भक्त हूँ असत्य नहीं बोलता | आप मुझे

चार आने दे दीजिए | एक सवारी का यही किराया है | वह चवन्नी ले कर चला गया |

४१- २- दूसरा प्रसंग मंडप में से धर्मशाला आते हुये स्वामीजी के प्रवचन की चर्चा मैं अपने मित्रों से कर रहा था बीच में एक मित्र कह उठा कि व्यवहार सर्वथा अग्राह्य नहीं हैं | तब एक अज्ञात व्यक्ति ने कहा यदि व्यवहार ग्राह्य होता तो हमारे पूर्वज ऋषि मुनि व्यवहार को हेय न बतलाते | हम अनादि काल से व्यवहार को ही अपना मान रहे है इसलिए हमको तात्विक वस्तु हाथ में नहीं आती |

४२- वह अज्ञात व्यक्ति राजकोट जिले का अजैन पेंटर था जो २ वर्ष से वहाँ काम करता था | उसको भी इतना तो समझ में आ गया था | उस पर स्वामीजी का अध्यात्मवाद देखकर हम दंग रह गये |

४३- स्वामीजी की पृथ्वी जैसी क्षमा शीलता और समुद्र जैसी गम्भीरता, उदारता के समक्ष उनका विरोध एक नगण्य वस्तु है | वे किसी के वैर विरोध में पड़कर अपना समय और शक्ति नष्ट नहीं करते | उनका चाहे जितना विरोध होता रहे फिर भी वे सुमेरु के समान अटल एवं अडिग हैं यदि वे ओरों की तरह तू-२ मैं-२ में पड़ जाते तो उनका जो आज स्थान है वह नहीं होता | ....सचाई तो यह है कि विरोध ही प्रचार की कुंजी है स्वामीजी का जितना विरोध होगा उतना ही अधिक प्रकाश एवं प्रचार होगा | ....पू कानजीस्वामी जिस धुरी पर स्थित थे उसीपर आज भी स्थित हैं | आज से २००० वर्ष पूर्व कलिकाल सर्वज्ञ आ.कुन्दकुन्द स्वामी ने जिस अध्यात्म वाद की गंगा बहाई थी उसी गंगा को कानजी स्वामी बहा रहे हैं | ठीक ही तो है 'दिये से दिया जलाते चलो'

४४- कानजी स्वामी स्वयं कहते हैंकि मैं अव्रती हूँ पर वे अव्रती होते हुये भी उनका खानपान एवं दैनिक चर्या, दानी-व्रती, साधु संत से कम नहीं है

उने पास ढोंग आडम्बर पाखण्ड नहीं चल सकता | इस दृष्टि से वे (चारित्रिक दृष्टि से, विद्वता की दृष्टि से खानपान की दृष्टि से) लाख दफे अच्छे हैं | यह मैंने कटु सत्य लिखा है जो कि कुछ लोगों को रुचेगा नहीं

४५- कानजीस्वामी जो कुछ कहते हैं, वह उनके अंदर की निष्पक्ष एवं पवित्र आवाज होती है और कहते समय उनकी जो तन्मयता है, वही तन्मयता लोगों के ह्रदय पर चुम्बक का काम करती है | वे उपदेश करते समय एक रस एकाकार एवं तदाकार हो जाते है | और आध्यात्मिक विषय की उनकी जो अनुभूति है, वह मूकभाषा में लोगों को अपनी और वरवस खीच लेती है |

४६- "मैं प्रथम बार जब सोनगढ़ गया, तब वहाँ मंदिरजी में श्री जिनबिम्ब के दर्शन किये | प्रतिमाजी के ओंठ लाल थे, नेत्र में काला सफेद भाग था |....एक दिन साहस कर स्वामीजी से कहा – स्वामीजी ! सर्व मिथ्यात्व को छोड़कर थोडासा क्यों रहने दिया" वे समझ गये और प्रतिष्ठा मंडप में खुलासा कर हटवाने का रास्ता पूछा | तो अब न रंगना प्रक्षाल होते-२ स्वतः छूट जायेगा | और ऐसा ही किया गया |

४७- गुरुदेवश्री का प्रभावना योग महावीर भगवान से भी ज्यादा था | उनका तो ३० वर्ष रहा परन्तु एक अव्रती सामान्य पुरुष के रूप में रहकर इतना घोर प्रभाव छोड़ना कि सदियाँ याद रखें अद्भुत हैं - स्तुत्य हैं |

४८- श्री प. ज्ञानचंद जैन 'स्वतंत्र ' सह सम्पादक जैन मित्र सूरत पृ ६५

सन १९५१ रेलवे स्टेशन से तांगे से धर्मशाला आया, अठन्नी दी | तो तांगे वाले ने कहा मैं कानजीस्वामी का भक्त हूँ असत्य नहीं बोलता | आप मुझे चार आने दे दीजिए | एक सवारी का यही किराया है | वह चवन्नी ले कर चला गया |

२- दूसरा प्रसंग मंडप में से धर्मशाला आते हुये स्वामीजी के प्रवचन की चर्चा मैं अपने मित्रों से कर रहा था बीच में एक मित्र कह उठा कि

व्यवहार सर्वथा अग्राह्य नहीं हैं | तब एक अज्ञात व्यक्ति ने कहा यदि व्यवहार ग्राह्य होता तो हमारे पूर्वज ऋषि मुनि व्यवहार को हेय न बतलाते | हम अनादि काल से व्यवहार को ही अपना मान रहे है इसलिए हमको तात्विक वस्तु हाथ में नहीं आती |

वह अज्ञात व्यक्ति राजकोट जिले का अजैन पेंटर था जो २ वर्ष से वहाँ काम करता था | उसको भी इतना तो समझ में आ गया था | उस पर स्वामीजी का अध्यात्मवाद देखकर हम दंग रह गये |

स्वामीजी की पृथ्वी जैसी क्षमा शीलता और समुद्र जैसी गम्भीरता, उदारता के समक्ष उनका विरोध एक नगण्य वस्तु है | वे किसी के वैर विरोध में पड़कर अपना समय और शक्ति नष्ट नहीं करते | उनका चाहे जितना विरोध होता रहे फिर भी वे सुमेरु के समान अटल एवं अडिग हैं यदि वे ओरों की तरह तू-२ मैं-२ में पड़ जाते तो उनका जो आज स्थान है वह नहीं होता | ....सचाई तो यह है कि विरोध ही प्रचार की कुंजी है स्वामीजी का जितना विरोध होगा उतना ही अधिक प्रकाश एवं प्रचार होगा | ....पू कानजीस्वामी जिस धुरी पर स्थित थे उसीपर आज भी स्थित हैं | आज से २००० वर्ष पूर्व कलिकाल सर्वज्ञ आ.कुन्दकुन्द स्वामी ने जिस अध्यात्म वाद की गंगा बहाई थी उसी गंगा को कानजी स्वामी बहा रहे हैं | ठीक ही तो है 'दिये से दिया जलाते चलो'

कानजी स्वामी स्वयं कहते हैंकि मैं अव्रती हूँ पर वे अव्रती होते हुये भी उनका खानपान एवं दैनिक चर्या, दानी-व्रती, साधु संत से कम नहीं है उने पास ढोंग आडम्बर पाखण्ड नहीं चल सकता | इस दृष्टि से वे (चारित्रिक दृष्टि से, विद्वता की दृष्टि से खानपान की दृष्टि से) लाख दफे अच्छे हैं | यह मैंने कटु सत्य लिखा है जो कि कुछ लोगों को रुचेगा नहीं

कानजीस्वामी जो कुछ कहते हैं, वह उनके अंदर की निष्पक्ष एवं पवित्र आवाज होती है और कहते समय उनकी जो तन्मयता है, वही तन्मयता

लोगों के ह्रदय पर चुम्बक का काम करती है | वे उपदेश करते समय एक रस एकाकार एवं तदाकार हो जाते है | और आध्यात्मिक विषय की उनकी जो अनुभूति है, वह मूकभाषा में लोगों को अपनी और वरवस खीच लेती है |

"मैं प्रथम बार जब सोनगढ़ गया, तब वहाँ मंदिरजी में श्री जिनबिम्ब के दर्शन किये | प्रतिमाजी के ओंठ लाल थे, नेत्र में काला सफेद भाग था |....एक दिन साहस कर स्वामीजी से कहा – स्वामीजी ! सर्व मिथ्यात्व को छोड़कर थोडासा क्यों रहने दिया" वे समझ गये और प्रतिष्ठा मंडप में खुलासा कर हटवाने का रास्ता पूछा | तो अब न रंगना प्रक्षाल होते-२ स्वतः छूट जायेगा | और ऐसा ही किया गया |

श्रीमद रायचन्द्र
श्रीमद् जी एवं पू.गुरुदेवश्री में तुलना

श्रीमद् जी	पू.गुरुदेवश्री श्री
जन्म वैष्णव धर्म में ८.११.१८६७ में ववाणीया में |रात्रि २ बजे कार्तिक पूर्णिमा वि.स.१९२४		स्थानकवासी में २०-४-१८८९ रविवार को उमराला में	
निर्ग्रन्थ दशा पूर्वक मूल मार्ग का प्रचार		साहसी, पुरुषार्थी, प्रशंसनीय क्रांतिकारी सत्पुरुष	
कम उम्र ३३.५ वर्ष लगभग	अधिक आयु ९०.....
तात्कालिक परिस्थितियों में पात्रता की चर्चा की		तत्व निर्णय- अनुभव हेतु जोर दिया	
दीक्षा न ले सके		२४ वर्ष की उम्र में दीक्षा ली	
साहित्य लेखन-प्रकाशन कर उपकार किया		साहित्य प्रवचन-प्रकाशन कर ४५ वर्ष उपकार किया	

हिंदी में समयसार छपाया	गुजराती में समयसार छपाया
हूँ कोई गच्छ–सम्प्रदाय मां नही।	दिगम्बरत्व धारण किया-कराया।४५००० को जैन बनाया।

दोनों में समानता -

१- स्थानकवासी समाज का विरोध सहा, परन्तु उत्तर नही दिया। उत्तर नहीं देना ही उत्तर है, परिणति से उत्तर दिया।

२- शिष्य नहीं बनाये, बने तो।

३- शिष्यों ने आज्ञा उल्लंघि।

४- गाँधीजी दोनों से मिले थे। उनका कथन – "तुम्हारा आध्यात्मिक मार्ग सच्चा है, मुझे मुक्त होना होगा तब आपके द्वारा बताए मार्ग में ही चलूँगा।"राजकोट में २७-९-१९३९ को आत्मसिद्धि का ९ वां छंद चल रहा था। वह प्रवचन गाँधीजी ने सुना था।

५- समयसार पाकर दिग.धर्म का अन्तर्बाह्य निर्ग्रन्थ मार्ग सच्चा है। प्रतीति हुई। गुरुदेवश्री को तो समयसारजी पढ़ने पर समकित हुआ।
श्रीमद्जी –" दिगम्बरों के तीव्र वचनों को पढ़ने से कई रहस्य समझ में आ सकते हैं, श्वेताम्बरों की मोणास को लेकर रस ठंडा होता जाता है।" गोपालदास बरैयाजी ने श्रीमदजी के सामने प्रवचन किया था एवं आपने श्रीमदजी से गोम्मटसारजी शुद्ध करने का अनुरोध किया था परन्तु आपने विनम्रता से अस्वीकार कर दिया कि "हमने तो शास्त्र ज्ञान आत्मार्थे किया है।"

१- श्वेताम्बर ग्रंथों के अभ्यास से प्रारम्भ और समापन दिग. ग्रन्थों से हुआ और सर्वाधिक दिग. ग्रन्थ पढ़ने(२० में से १९) की प्रेरणा की।

स. १९५० (६८७) में दी गई सलाह अनुसार सन १८९४

वैराग्य शतक, इन्द्रिय पराजय शतक, शांत सुधारस, अध्यात्म कल्पद्रुम, योग दृष्टी समुच्चय, नव तत्व, मूल पद्धति कर्म ग्रन्थ, धर्म बिंदु, आत्मानुशासन , भावना बोध, मोक्षमार्ग प्रकाश, मोक्षमाला, उपमिति भव प्रपंच, अध्यात्म सार, श्री आनंद घन जी कृत २४ में १,३,५,७,८,९,१०. १३,१५,१६,१७,१९,२२ |

स.१९५६ सन १९०० में दी गई सलाह इन्द्रिय निग्रह के अभ्यासपूर्वक इस श्री सत्श्रुत–पठन –सेवन योग्य है – इसका फल अलौकिक है -अमृत हैं |

१-श्री पांडव पुराण

२-श्री प्रद्युम्न चारित्र

३-श्री पुरुषार्थ सिद्धि उपाय

४-श्री पद्मनंदी पञ्च विशंतिका

५-श्री गोम्माटसार

६-श्री रत्नकरंड श्रावकाचार

७-श्री आत्मानुशासन

८-श्री मोक्षमार्ग प्रकाशक

९-श्री कार्तिकेयानुप्रेक्षा

१०- श्री योगदृष्टि समुच्चय |(श्वेताम्बर ग्रन्थ)

११- श्री क्रियाकोश

१२- श्री क्षपणासार

१३- श्री लब्धिसार

१४- श्री त्रिलोकसार

१५- श्री तत्वसार

१६- श्री प्रवचनसार

१७- श्री समयसार

१८- श्री पंचास्तिकाय जी

१९- श्री अष्टप्राभृत

२०- श्री परमात्मप्रकाश

२१- श्री रयणसार

श्रीमद रायचन्द्र ग्रन्थ पृष्ट – ६६९ गुजराती प्रति प्रकाशन सन १९८३

२- दिग.प्रतिमा निःसंकोच स्वीकार्य थी |

३- प्रत्यक्ष गुरु योग नही था, पूर्व भव के संस्कार से अर्थ किया |

४- प्राथमिक शिक्षा मात्र हो सकी |

५- आनंदघन एवं श्रीमद् जी दोनों वैष्णव/ वेदान्ती में जन्मे थे, दोनों ने वेद का विस्तार जैन धर्म को माना, अतः वेद पढ़ने कि प्रेरणा भी करी | क्रिया का निषेध करने से समाज में जुनून चढता है अतः क्रिया विवाद में न पड़े | फूल चढ़ाने का तो निषेध किया परन्तु गर्भहरण व आंगी विवाद में नहीं पड़े |

६- श्रीमदजी को लीम्बडी में समयसारजी मिला था २ पृष्ठ पलटे और ग्रन्थ लाने वाले को एक थाली चांदी के नोट भर के दे दिये थे |

७- १७-२० वर्ष की उम्र में काशी में एक मात्र देवज्ञ था उससे वह विद्या सीखली | ज्योतिष ज्ञान परमार्थ में विघ्न रूप जान कल्पित गिन कर छोड़ दिया | अनिष्ट – दुखद समाचार कैसे दूँ ?

८- गाँधीजी का २ वर्ष परिचय रहा श्रीमद्जी से उनने कहा – " अक्षर ज्ञान दातार अपूर्ण शिक्षक से चला लो, परन्तु आत्मदर्शन कराने वाला अपूर्ण शिक्षक से नहीं चलेगा | गुरुपद तो सम्पूर्ण ज्ञानी को ही दिया जाय | और शिष्य की योग्यता प्रमाण ही गुरु मिलते हैं |"

९- अपनी अल्पता विचारने में वकरी जैसे रंक हो जाते हैं, अपने में विराजता चैतन्य का विचार करने से सिंह जैसा होने में जीवन की सार्थकता है |-- गाँधीजी

१०- कविठा के स्कूल में बच्चों से – घी एवं छाछ का लोटा हो और लड़खड़ाओ तो कौनसा लोटा सम्हालोगे ? घी का उसीप्रकार आत्मा घी का लोटा है शरीर छाछ का लोटा है |

११- जिज्ञासु पृथ्वी गोल है कि चपटी ? समाधान – वैज्ञानिक शक्तिशाली कि तीर्थंकर ?

१८-१०-१८९६ को नणियाद में छोटे कुम्भनाथ महादेव मंदिर के परिसर में ९० मिनिट में लेम्प की रौशनी में आत्मसिद्धि लिखा | वहाँ अम्बालाल भाई लेम्प लिये खड़े रहे थे | १४४ छंद लिखे | बाद में स्वयं ने २ छंद कम किये | ४२ प्रथम पदों में पात्रता की चर्चा की | सोभागभाई सायला की प्रेरणा से लिखा | बिना आज्ञा देने की मनाई थी, मात्र ४ कॉपी कराकर ४ लोगों को दी गयी |

१२- वि.स.१९७५ में प्रथम वार समयसार जी छपा था अगास से ५५ वर्ष बाद वि.स. २०३० में दूसरी बार छपा |

१३- "आतम भावना भावतां जीव लहे केवलज्ञान रे |" समाधि शतक पर लिखकर लल्लू मुनि को मुंबई में दिया था |

१४- सूत्रकृतांग की गाथा – देवकरण जी महाराज सा. को अशुद्ध लेख लगा | उसमे लिखा था – मिथ्यात्वी की क्रिया सफल हैं एवं सम्यक्त्वी की क्रिया अफल हैं | परन्तु श्रीमदजी ने सही सिद्ध किया | संसार होने को सफल कहते हैं |

१५- पृ-७८४ दिगंबर के तीव्र वचनों के कारण कुछ रहस्य समझा जा सकता हैं | श्वेताम्बर की शिथिलता के कारण रस ठंडा होता गया |

१६- वीतराग के वचन विषय का विरेचन कराने वाले हैं |-७७९

१७- वीतराग के वचन के असर से जिसे इन्द्रिय सुख नीरस न लगे तो उसने ज्ञानी के वचन सुने ही नहीं, ऐसा समझे |७७६

१८- ६७९- साहब चन्द्र सूरी महाराज आपसे मिलने आये हैं |श्रीमद- परिग्रह धारी यातिओं का सन्मान करने से मिथ्यात्व को पोषण मिलता हैं | मार्ग का विरोध होता हैं | सभ्यता को भी निभाना चाहिए ? चन्द्र सूरी हमारे लिए आये हैं परन्तु जीव को छोड़ना अच्छा नहीं लगता हैं | मिथ्या चतुराई की बातें करनी हैं, मां छोड़ना रुचता नहीं हैं | उससे आत्मार्थ सिद्ध नहीं होता | हेतु एवं कारण का विचार नहीं करता | मिथ्या दूषण खाली आरोप लगाने के लिए तैयार हैं |....ऐसे वर्तन के जाने से छुटकारा हैं |

१९- ओसवाल ओरपाक जाति के राजपूत हैं |

२०- हेमचंद्राचार्य धंधुका के मोढ़ वणिक थे | इनके गुरु देव चन्द्र सूरि हैं |

२१- श्रीमदजी- ज्ञानी के पास रहने वाले अधोगति तक चले जाते हैं |

२२- पत्रांक ९०१ – 'गुरु गणधर अधिक, प्रचुर परंपर और |

व्रत तप धर तनु नगन धर, वंदो वृषसिरमौर ||'-कार्तिकेयानुप्रेक्षा गाथा ३ की टीका

२३- सद देव गुरु शास्त्र भक्ति अप्रमत्त पाणे उपासनीय छे |- पत्रांक ८५७

२४- वीतराग वृत्ति नो अभ्यास राखशो | पत्रांक ८६२

२५- अकिंचन पणा थी विचरतां एकांत मौन थी जिन सदृश ध्यान थी तन्मयात्म स्वरूप एवो क्यारे थईश ?----------हाथ नोंध१, बोल ८७

२६- वक्ता थई एक पण जीव ने यथार्थ मार्ग पमाडवाथी तीर्थंकर गौत्र बन्धाय छे और इससे उल्टा करने से महा मोहनीय कर्म बंधता हैं |-व्याख्यान सार २,बोल १६

२७- पत्रांक ७१३- ...गच्छ के मत मतान्तर बहुत ही तुच्छ-२ विषयों में बलवान आग्रही होकर भिन्न -२ रूप से दर्शनमोहनीय के हेतु हो गये हैं | उसका समाधान करना बहुत विकट हैं | क्योंकि उन लोगों की मति विशेष आवरण को प्राप्त हुए बिना इतने अल्प कारणों में बलवान आग्रह नहीं होता |

२८- पत्रांक – ७१६- ...कुछ अंतर में चातुर्य आदि भाव से, सूक्ष्म परिणति से भी कुछ मिठास रखी हो, तो वह पूर्वापर विशेषता प्राप्त करती हैं | परन्तु वह जहर ही है, निश्चय जहर ही है, स्पष्ट कालकूट जहर हैं |

२९- ४९१- प्रायः किसी बात का खेद हमारे आत्मा में उत्पन्न नही होता, तथापि सत्संग के अन्तराय का खेद प्रायः अहोरात्र रहा करता हैं | सर्व भूमि, सर्व मनुष्य, सर्व काम, सर्व बातचीत, आदि प्रसंग अपरिचित जैसे एकदम पराये, उदासीन जैसे अरमणीय अमोहकर, और रस रहित स्वभावतः भासित होते हैं | पृ-हिंदी राजचंद्र ४००

३०- पृ-६७६ उपदेश नोंध-कीरतभाई को – जिनमन्दिर में पूजा करने की प्रेरणा की हैं | समय क्यों नहीं मिलता ? चाहे तो समय मिल सकता है, प्रमाद बाधक हैं | हो सके तो पूजा करने जाना |

३१- मोरबी चैत्र वद १४, १९५५ पढने योग्य है हेमचन्द्र आचार्य एवं आनंद घन जी का इतिहास दिया हैं | पृ-६७८

३२- पृ- ६७९ पर भोई वाडे में श्रीशांतिनाथ दिग. जैन मंदिर में दर्शन स्पर्शन का वर्णन किया गोम्म्टेश्वर बाहुबली का वर्णन किया |

३३- आप जैसे समर्थ पुरुष से लोकोपकार हो ऐसी इच्छा रहे यह स्वभाविक हैं ?

लोकानुग्रह अच्छा और आवश्यक अथवा आत्महित ?
साहब दोनों की जरुरत हैं |
श्रीमद- श्री हेमचंद्राचार्य जी १९५५ स. में ८०० वर्ष पहले हो गये वे महा प्रभावक बलवान क्षयोपषम वाले पुरुष थे | उन जैसा उपकार भाग्यवान, महात्म्यवान, क्षयोपषम वान ही कर सकता हैं | उन्होंने ३०००० घर अर्थात ढेड़ लाख लोगों को मुमुक्षु श्रावक बनाया था | वे चाहते तो अपना नया पंथ बना सकते थे | उनको लगता था कि सम्पूर्ण वीतराग सर्वज्ञ तीर्थंकर ही धर्म प्रवर्तक हो सकते हैं | हम तो उन्ही की आज्ञा से चलकर उनके परमार्थ मार्ग का प्रकाश करने के लिए प्रयत्न करने वाले हैं | सहजानंदजी ने १ लाख लोगों से अपना सम्प्रदाय बनाया (सहजानंदजी सम्प्रदाय की स्थापना की अयोध्या के पास छपैया में वि.स. १८३७ रामनवमी को घनश्याम नाम से जन्म हुआ, १८४९ में गृह त्याग, १८५७ में रामानंद स्वामी सहजानंद नाम से प्रसिद्ध, १८८६ में देहावसान)| आनंदघन जी २०० वर्ष पहले चाहते अपना पंथ बना सकते थे उन्होंने यदि नेमिनाथ की स्तुति में चूर्णी, भाष्य, सूत्र,निर्युक्ति वृत्ति परमपर अनुभव रे न लिखा होता तो दिग श्वेता. पहचानना कठिन हो जाता | आपको सिद्धान्तबोध तीव्र था | परन्तु आनंदघन जी अप्रगत रहकर अपना हित करके चले गये | उन्हें लगा था कि प्रबल विषमता के योग में लोकोपकार ,पर्मार्थिप्रकाश कारगर नहीं होता और आत्म हित गौण होकर उसमे बाधा आती हैं | लोग उन्हें पहचान कर आदर न कर सके | अब तो आनंदघन के समय से भी अधिक विषमता, वीतराग मार्ग विमुखता व्याप्त हैं | 'जिन थाई जिनवर ने आराधे, ते सही जिनवर होवे रे |"-आनंद घन

३४- वल्लभाचार्य ने श्रुंगार युक्त धर्म का निरूपण किया | इससे वीतराग धर्म विमुखता बढती चली | अनादी से जीव श्रुंगार आदि विभव में तो मूर्छा प्राप्त कर रहा हैं, उसे वैराग्य के सन्मुख होना मुश्किल हैं | वहां यदि श्रुंगार को ही धर्म रूप से रखा जाय तो वह वैराग्य की ओर कैसे मुड़ सता हैं ? यों वीतराग मार्ग विमुखता बढ़ी | -६७७

३५- वहां फिर प्रतिमा पक्ष सम्प्रदाय जैन में ही खड़ा हो गया | ध्यान का कार्य और स्वरूप का कारण ऐसी जिन प्रतिमा के प्रति लाखों लोग दृष्टी विमुख हो गये, वीतराग शास्त्र कल्पित अर्थ से विराधित हुए, कितने तो समूल ही खंडित किये गये |

३६- पृ- ६७८ १० वा अंक ज्यों का त्यों छपाने जैसा हैं | महिपतराम ईसाई स्कूल में पढ़े थे उन्होंने आक्षेप किया था की भारत वर्ष की अधो गति जैन धर्म से हुई हैं | बाद में उन्होंने क्षमा मांगी |

३७- पृ-६८६ – बम्बई- १९४९ श्री सूय गडांग सूत्र अध्ययन ८ गाथा २२-२३ में मिथ्यादृष्टि की क्रिया सफल एवं सम्यक दृष्टी की क्रिया अफल लिखी हैं |

३८- ६९४- १- मोम का गोला-२- लाख का गोला ३- काष्ठ का गोला ४- मिटटी का गोला |

३९- ६९५- आधुनिक समय में मनुष्यों की आयु कुछ बचपन में, कुछ स्त्री के पास, कुछ निद्रा, कुछ धंधे में, और थोड़ी जो रहती है वह कुगुरू लूट लेते है आशय यह है कि मनुष्य भव निरर्थक चला जाता है |

४०- पृ-६९६ – शुष्क ज्ञानी की सोच |

४१- पृ-३२१- हमे जो निर्विकल्प नामकी समाधि है वह तो आत्मा की स्वरूप परिणति रहने के कारण है | आत्मा के स्वरूप सम्बन्धी तो हमे प्रायः

निर्विकल्पता ही रहना सम्भव है, क्योंकि अन्य भाव में मुख्यतः हमारी प्रवृत्ति ही नहीं हैं ....और आज इस क्षेत्र में भी तीर्थंकर देव का आंतरिक आशय प्रायः मुख्यता से यदि किसी में हों तो वे हम होंगे ऐसा हमे दृनता पूर्वक भासित होता है |

.....वन और घर ये दोनों किसी प्रकार से हमे समान है; तथापि पूर्ण वीतराग भाव के लिए वन में रहना अधिक रुचिकर लगता हैं | सुख की इच्छा नहीं हैं परन्तु वीतरागता की इच्छा है |

.....भीख मांगकर गुजारा कर लेंगे परन्तु खेद नहीं करेंगे | ज्ञान के अनंत आनंद के आगे वह दुःख तृण मात्र है | इस भावार्थ का जो वचन लिखा है उस वचन को हमारा नमस्कार हो ! ऐसा वचन सच्ची योग्यता के बिना निकलना सम्भव नहीं है |-पत्रांक - ३२२

४२- चैत्र सुदी ११ शुक्र –सोभाग को लिखे पात्र में .....परन्तु अभी प्रश्न का समाधान करने में मौन रहा जाए उतना उपकारी है, ऐसा चित्त में रहता है | बाकी के प्रश्नों का समाधान समागम में कीजियेगा |

४३- पत्रांक – ६८० जिसकी मोक्ष के सिवाय किसी भी वस्तु की इच्छा या स्पृहा नहीं थी और अखंड स्वरूप में रमन्ताहोने से मोक्ष की इच्छा भी निवृत्त हो गयी है, उसे है नाथ ! तू तुष्टमान होकर भी और क्या देने वाला था ?

हे कृपालु ! तेरे अभेद स्वरूप में ही मेरा निवास है वहां अब तो लेने देने की भी झंझट से छुट गये हैं और यही हमारा परमानन्द है |

कल्याण के मार्ग को और परमार्थ स्वरूप को यथार्थतः नहीं समझने वाले अज्ञानी जीव, अपनी मतिकल्पना से मोक्षमार्ग की कल्पना करके विविध उपायों में प्रवृत्ति करते हैं फिर भी मोक्ष पाने के बदले संसार में भटकते है; यह जानकार हमारा निष्कारण करुणाशील ह्रदय रोता है |

वर्तमान में विद्यमान वीर को भूलकर, भूतकाल की भ्रान्ति में वीर को खोजने के लिए भटकते जीवों को श्री महावीर के दर्शन कहाँ से हों ?

हे दुषम काल के दुर्भागी जीवों ! भूतकाल की भ्रान्ति को छोड़कर वर्तमान में विद्यमान महावीर की शरण में आओ तो तुम्हारा श्रेय ही है | ....हम अमृतसागर हैं, हम कल्पवृक्ष हैं ....हम दुसरे श्री राम है ...दुसरे महावीर है | क्योंकि हम परमात्म स्वरूप हुए हैं |

....यह अंतर अनुभव परमात्मस्वरूप की मान्यता के अभिमान से उद्‌भूत हुआ नहीं लिखा है , परन्तु कर्मबंधन से दुखी होते जगत के जोवों पर परम करुना भाव आने से उनका कल्याण करने की तथा उनका उद्धार करने की निष्कारण करुना ही यह हृदय चित्र प्रदर्शित करने की प्रेरणा करती है | बम्बई चैत्र सुदी १३, १९५२ २९ वर्ष की आयु में लिखा (निजी)

४४- चैत्र वदी १, १९५२ - ....यदि उन वचनों को पढने विचारने का आपको प्रशंग प्राप्त हो तो जितनी हो सके उतनी चित्त स्थिरता से पढियेगा और उन वचनों को अभी तो स्व उपकार के लिए उपयोग में लीजियेगा, प्रचलित न कीजिएगा | यही विनती |

४५- पृ-५९१ जिन दर्शन में दिगम्बर और श्वेताम्बर ये दो भेद मुख्य है | मत दृष्टी से इनमे बड़ा अंतर देखने में आता है | तत्व दृष्टी से जिन दर्शन में वैसा विशेष भेद मुख्यतः परोक्ष है; जो प्रत्यक्ष कार्यभूत हो सकें वैसा भेद उनमे नहीं हैं | इसलिए दोनों सम्प्रदाय में उत्पन्न होने वाले गुण वाँ पुरुष सम्यक्दृष्टि स देखते हैं; और जैसे तत्व प्रतीति का अन्तराय कम हो वैसे प्रवृत्ति करते हैं |

....जैनाभास से प्रवर्तित दुसरे अनेक मतान्तर हैं; उनके स्वरूप का निरूपण करते हुए भी वृत्ति संकुचित होती हैं | जिनमे मूल प्रयोजन का भान नही है, इतना ही नहीं परन्तु मूल प्रयोजन से विरुद्ध पद्धति का अवलम्बन रहा है उन्हें मुनित्व का स्वप्न भी कहाँ से हो ? क्योंकि मूल प्रयोजन को भूल कर कलेश में

पड़े हैं, और अपनी पूज्यता आदि के लिए जीवों को परमार्थ मार्ग में अन्तराय करते हैं |

....वे मुनि का लिंग भी धारण किये हुए नहीं हैं, क्योंकि सव कपोल रचना से उनकी सारी प्रवृत्ति है | जिनागम अथवा आचार्य की परम्परा का नाम मात्र उनके पास है, वस्तुतः तो वे उससे परान्मुख ही है | ....एक तूम्बे जैसी और डोरे जैसी अत्यंत अल्प वस्तु के ग्रहण त्याग के आग्रह से भिन्न मार्ग खड़ा करके प्रवृत्ति करते हैं, और तीर्थ का भेद करते हैं, ऐसे महामोह मूढ़ जीव लिंगाभास से भी आज वीतराग के दर्शन को घेर बैठे हैं, यही असंयती पूजा नामका आश्चर्य लगता है | ....महात्मा पुरुषों की अल्प भी प्रवृत्ति स्व-पर को मोक्षमार्ग सन्मुख करने की होती है | लिंगाभासी जीव मोक्षमार्ग से परांग मुख करने में अपने बल का प्रवरतन देखकर हर्षित होते हैं, और यह सब कर्म्प्रकृति में बढ़ते हुए अनुभाग और स्थिति बंध के स्थानक हैं, ऐसा मैं मानता हूँ | - स.१९५३ – ३० वर्ष

४६- वचनामृत वीतराग ना, परम शांति रस मूल |

औषध जे भव रोग ना, कायर ने प्रतिकूल ||

४७- पृ १७१-पढने योग्य पात्र २१ वर्ष की आयु में भी श्वेताम्बर का विरोध प्रारम्भ हो गया था | परन्तु आपका समता पत्र पढने योग्य हैं | पत्रांक ३६ – प्रतिमा के कारण यहाँ समागम में आने वाले लोग बहुत प्रतिकूल रहते हैं | यों ही, मतभेद से अनंत काल और अनंत जन्म में आत्मा ने धर्म नहीं पाया | इसलिए सत्पुरुष उसे नहीं चाहते, परन्तु स्वरूप श्रेणी को चाहते हैं |,,,,पत्रांक ३७ पत्रांक ३२ गुप्त बात कही | प्रतिकूल परिश्थिति – पत्रांक ३९९

४८- पृ-६८३ – देव कौन ? वीतराग | दर्शन योग्य मुद्रा कौनसी ? जो वीतरागता सूचित करे |...स्वामी कार्तिकेय मद्रास भूमि में बहुत विचरे हैं |

उनका ग्रन्थ कार्तिकेयानुप्रेक्षा वैराग्य का अपूर्व ग्रन्थ है मैं कब से इसकी राह देखता था | इस तरफ के नग्न भव्य ऊँचे अडोल वृत्ति से खड़े पहाड़ देखकर स्वामी कार्तिकेय की आदि की अडोल वैराग्यमय दिगंबर वृत्ति याद आती है | नमस्कार उन स्वामी कारतीकेय आदि को | स. १९५६ मोरबी

४९- गीता अ.२ श्लोक ६९ – जगत जिसमे सोता है उसमे ज्ञानी जागते हैं |

५०- आनंद घन जी – जिनेन्द्र होकर जिनेन्द्र को आराधे वह जिनवर बन जाता है |पृ -३४४

५१- पृ ३५४-३५५ पत्रांक ३९९ सत्संग की चाह प्रेरणा |

५२- पत्रांक २१३- त्रिलोक के नाथ जिसके वश हुए है, ऐसा होने पर भी वह ऐसी अटपटी दश में रहता है कि जिसकी सामान्य मनुष्य को पहचान होना दुर्लभ है; ऐसे सत्पुरुष की हम पुनः-२ स्तुति करते हैं |..... पूर्णतयः पढने योग्य पात्र ध्रुव स्वभाव का जोर देने वाला है | हे पुराण पुरुष ! हम तेरे में और सत्पुरुष में कोई भेद ही नहीं समझते; तेरी अपेक्षा हमे तो सत्पुरुष ही विशेष लगता है कारण कि तू भी उसके आधीन ही रहा है और हम सत्पुरुष को पहचाने बिना तुझे पहचान नही सके, यही तेरी दुर्घटता हममे सत्पुरुष के प्रति प्रेम उत्पन्न करती है\ क्योंकि तू वश में होने पर भी वे उन्मत्त नहीं है और तेरे से भी सरल है, इसलिए अब तू जैसा कहे वैसा करे |

५३- हे नाथ ! तू बुरा न मानना कि हम तेरी अपेक्षा भी सत्पुरुष की विशेष स्तुति करते हैं, सारा जगत तेरी स्तुति करता है; तो फिर हम एक तुझसे विमुख बैठे रहेंगे तो उससे कहाँ तुझे न्यूनता भी है और उनको (सत्पुरुष, त्रिकाली ध्रुव, ज्ञायक भाव) कहाँ स्तुति की आकांछा है |...लघुता – हम तो कुछ वैसा ज्ञान नहीं रखते है कि जिससे त्रिकाल सर्वथा मालुम हो, और हमे ऐसे ज्ञान का कुछ विशेष ध्यान भी नहीं हैं, हमे तो वास्तविक जो स्वरूप उसकी भक्ति और असंगता ही प्रिय है | पृ-२७१

५४- पत्रांक – आप सब अभी तो हमें एक प्रकार का बंधन करने लगे हैं, इसके लिए हम क्या करे ? यह कुछ सूझता नहीं है | 'सजीवन मूर्ति' से मार्ग मिलता है ऐसा उपदेश करते हुए हमने स्वयं अपने आपको बंधन में डाल लिया है कि जिस उपदेश का लक्ष्य आप हमको ही बना बेठे हैं | हम तो उस सजीवन मूर्ति के दास है, चरणरज हैं | हमारी ऐसी अलौकिक दशा भी कहाँ हैं कि जिस दशा में केवल असंगता ही रहती हैं ? हमारा उपाधि योग तो, आप प्रत्यक्ष देख सकें, ऐसा है |.....ये अंतिम २ बातें तो हमने आप सबके लिए लिखी हैं | हमे अब कम बंधन हो ऐसा करने के लिए आप सबसे विनती हैं | दूसरी एक बात यह बतानी है कि आप हमारे लिए अब किसी से कुछ न कहें | आप उदय काल जानते हैं |

५५- पत्रांक २११- सत कुछ दूर नहीं हैं, परन्तु दूर लगता है यही मोह हैं | सत जो कुछ है, वह सत ही है ; सरल है, सुगम है और उसकी प्राप्ति सर्वत्र होती है | भ्रान्ति आवरण वाले जीव को प्राप्ति कैसे हो ? अन्धकार के प्रकार में से कोई प्रकाश नाम का भेद नहीं निकलता है |

५६- पत्रांक २१०- सत्स्वरूप को अभेद भाव से नमोनमः |

५७- पत्रांक २०९- ध्रुव स्वभाव को हरि, सिद्ध, ईश्वर, परम तत्व, निरंजन, अलख, परब्रह्म, परमात्मा, भगवत, परमेश्वर, पुरषोत्तम, परमसत, परमज्ञान, आत्मा, सर्वात्मा, सत-चित-आनंद कहो सब एक अभेद पारिणामिक भाव ही है |

५८- पत्रांक २०६ –पारमार्थिक विषय में अभी मौन रहने का कारण परमात्मा की इच्छा है | जब तक असंग नहीं होंगे और उसके बाद उसकी इच्छा नहीं होगी तब तक प्रगट रूप से मार्ग नहीं, कहेंगे, और ऐसा सभी महात्माओं का रिवाज है | <u>हम तो दीन मात्र है |</u>

५९- पत्रांक २००- वचनावली अवश्य पढने योग्य |

६०- विवेक धर्म नूं मूल छे |, पवित्रता नूं मूल सदाचार छे |, सत्संग ऐ सर्व सुख नूं मूल छे |, परिग्रह नी मूर्च्छा पाप नूं मूल छे |, क्षमा एज मोक्ष नो सर्वोत्कृष्ट दरवाजो छे | सर्वोत्कृष्ट शुद्धि सर्वोत्कृष्ट सिद्धि |

संक्षिप्त परिचय

श्रीमद् राजचंद्र

जन्म नाम लक्ष्मी नन्दन |

माता- देव वाई जैन स्थानकवासी |

पिता – रवजी भाई वेदान्ती |

जन्म- वैष्णव धर्म में कार्तिक पूर्णिमा वि.स.१९२४, ८.११.१८६७ को वावाणिया(मोरबी) में रात्रि २ बजे |

१८७३- ६ वर्ष की वय में पढने गये | २ वर्ष में कक्षा ७ की पढ़ाई की | अमी भाई के दाहसंस्कार समय जातिस्मरण ज्ञान हुआ |

१८७४- ७ वर्ष में जूनागढ़ किला देखने पर जातिस्मरण ९०० भवों तक बढ़ गया |

१८७५- ८ वर्ष में कविता लिखने लगे | ५००० छंद लिखे |

१८७६- ९ वर्ष में रामायण/ महाभारत की रचना की |

१८७७- १० वर्ष में सुंदर लेखन के कारण राज दरबार के गोपनीय द्स्ताबेज लिखते थे |

१८७८- ११ वर्ष में पढ़ाई छोड़ दी,समाचार पत्रों में लेख – कविता छपने लगी | पुरुष्कार मिले |

१८७९- १२ वर्ष में घड़ी के ऊपर ३०० कड़ी की रचना एक दिन में लिखी | इसी वर्ष कच्छ के - दीवान मणिभाई के साथ कच्छ आकर पहला प्रवचन दिया | प्रशन्सा मिली |

१८८०- १३ वर्ष में धर्म ग्रंथों का ज्ञान महापुरुषों का अध्ययन |
१८८२- १५ वर्ष में ६ दर्शनों का अध्ययन | जैन धर्म की श्रद्धा हुई |
१८८३-८५- १६-१८ वर्ष में मोरबी में सर्व प्रथम मोक्षमाला १०८ पाठ ३ दिन में लिखे | यहीं ८ अवधान दिखाए | फिर जामनगर एबं बोटाद में १२,१६,५२ अवधान किये | " हिंद का हीरा " से सम्मानित किया गया | १६ वर्ष की उम्र में विनयभाई दफ्तरी के घर ३ दिन रहे |
१८८६- १९ वर्ष में मुंबई में १०० अवधान किये | स्वर्ण पदक मिला एवं साक्षात् सरस्वती की उपाधि | ११-११-१८८६ इंडियन स्पेक्टेटर एवं २४-१-१८८७ द टाइम्स ऑफ़ इंडिया में समाचार छपा | जैन समाज ने सरस्वती पदवी एवं स्वर्ण चंद्रक भेट किया | अध्यक्षता की थी सर चाल्स सार्जेंट एवं डॉ पीटरसन स्थान था – फारम जी कावसजी इंस्टिट्यूट बम्बई |
१८८८ में २० वर्ष में जवेरी पोपटलाल की बेटी झवकवाई() से शादि | धारशीभाई मोरबी के जज छाता खोलकर इनके ऊपर कर के चले |
१८८९ - २ पुत्र हुए १- छगन शास्त्री जो १९ वर्ष की वय में गुजर गये |
१८९०-२२ वर्ष में लल्लूजी मुनि जो १४ वर्ष बड़े थे परन्तु ३ प्रणाम किये, सोभाग्य भाई, अम्बालाल का परिचय |
१८९०- में २३ वर्ष में शुद्ध समकित | ईडर, काविठा, उत्तरसंडा, राणज, वडवा, बसों में प्रवास | सायला वासी सोभाग्य भाई बीज मन्त्र देने आये | परन्तु उन्हें पहले से ज्ञात था |
१८९१- २- रतिलाल भाई बचपन में गुजर गये | ज्योतिष ज्ञान छोड़ा |
१८९१ में २१ वर्ष में रेवाशंकर एवं माणेकलाल के साथ साझेदारी में २ वर्ष तक व्यवसाय - मुंबई में जेवरात का व्यापार | २३ वर्षीय गाँधीजी से पहला परिचय हुआ एवं २ वर्ष तक परिचय रहा | गांधीजी ने ३५ वर्ष की उम्र में ब्रह्मचर्य लिया था | गांधीजी के २७ प्रश्नों के जबाब दक्षिण अफ्रीका भेजे थे |-

(shrimad Raj chandr's reply to Gandhiji's Questions-a.d.2001 vikram s.2057 Published by Manubhaai B Mody president shrimad rajchandr aashram Agas post Boria Via Anand guj 388130)

१८९२- पुत्री का जन्म १- जवलबेन (१८९२-१९७८)

१८९४- पुत्री का जन्म – सबसे छोटी काशी बेन (१८९४-१९२२)

१८९५ में मुनि बनने की भावना | २६ वर्ष में संसार से उदास, जरूर कोई प्रमाद, छूट न सके |

१८९६ में महावीर जयन्ती जवेरी बाजार में सम्बोधन किया | उस दिन के एक पत्रांत में ॐ श्री महावीराय लिखा |

१८९७ में अपूर्व अवसर रचा माँ के विस्तर पर |

१८९८- ३० वर्ष में पंचास्तिकाय गाथा का अनुवाद | धारसी भाई को भी पढ़ने को मूल ग्रन्थ दिया |

१८९९ में ब्रह्मचर्य लिया | ७ श्वेताम्बर साधुओ को ईडर में तत्व ज्ञान दिया |

१९०० में धर्मपुर में निवृत्ति ली |

९ अप्रैल १९०१- ३३.५ वर्ष में सम्वत १९५७ चैत्र वदी ५, दोप २ बजे राजकोट में मृत्यु ९ अप्रैल १९०१ | बजन १३२ पोंड से घटकर ४३ पोंड रह गया था |

उपदेश नोंध -१५ मुबई कार्तिक वद ११, १९५६

प्रव.सार प्रवचन न.१२३ दि ८-७-७९ बी साइड ६ मिनिट

"गुरुदेवश्री - श्रीमदजी को किसी जिज्ञासु ने पूछा कि आपके पवित्र तत्व का प्रचार कब होगा ? उत्तर- अमारा निर्वाण पछि ५० वर्षे आ पवित्र ज्ञान नुं प्रचारक निकणसे |"

अगास में ५० समयसार का आर्डर मिले तो समझ लेना कि प्रभावना काल आ गया |

अगास से ६००-७०० समयसार रामजी भाई ने मंगा लिये थे |

सत्धर्म प्रसारक पू.गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के शुभ हस्ते हुई

वेदीप्रतिष्ठा

क्रमांक	स्थल	गुज तिथि	दिनांक	मूल नायक
१	वढवाण	२०१०,चैत्र वदी,८	२६-०४-१९५४,	श्री सीमंधरभगवान
२	सुरेन्द्र नगर	२०१०,वैशाख सु ३	०५-०५-५४	शांति नाथ
३	राणपुर	२०१०,वैशाख सु १३	१५-०५-५४	महावीर
४	बोटाद	२०१०,वैशाख वदी ८	२६-०५-५४	श्रेयांश नाथ
५	उमराला	२०१०,जेठ सुदी ५	०५-०६-५४	श्री सीमंधरभगवान
६	सोनगढ़	2013कार्तिक,सुदी १२	१५-११-५६	नेमीनाथ
७	पालेज	2013मगशिर सु ११	१३-१२-५६	अनंत नाथ
८	खेरागढ़	२०१५ चैत्र सु १	०९-०४-५९	शांति नाथ
९	बड़ीया	२०१६ मगशिर सु ६	०६-१२-५९	नेमीनाथ
१०	जेतपुर	२०१६ मगशिर सु ११	११-१२-५९	श्रेयांश नाथ
११	गोंडल	२०१६ मगशिर सु १५	१५-१२-५९	शांतिनाथ
१२	सावरकुंडला	२०१७ फागुन सु १२	२७-०२-६१	शांतिनाथ
१३	देहगाम	२०१९ बैशाख वदी ८	१६-०५-६३	महावीर
१४	भोपाल	२०१९ जेठ सु ५	२७-०५-६३	शांतिनाथ
१५	रखियाल	२०२० फागुन वदी ३	०१-०३-६४	नेमीनाथ
१६	बोटाद	२०२० चैत्र सु ८	२१-०३-६४	
१७	उज्जैन	२०२१ माघ वदी ६	२४-१२-६४	श्री सीमंधरभगवान

१८	भोपाल टी टी नगर	२०२१		ऋषभनाथ
१९	जसदण	२०२३ पूष वदी ८	०२-०२-६७	महावीर
२०	जयपुर	२०२३ फागुन सु २	१३-०३-६७	श्री सीमंधरभगवान
२१	उदयपुर	२०२३ चैत्र वदी ८	०१-०५-६७	चन्द्रप्रभ
२२	इंदौर	२०२५ बैशाख वदी ५	०६-०५-६९	
२३	मक्शी पारसनाथ	२०२५ बैशाख वदी ७	०८-०५-६९	पारसनाथ
२४	जलगाव	२०२६ फागुन सु ६	१३-०३-७०	ऋषभनाथ
२५	कानातलाब	२०२६ चैत्र वदी ८	२०-०४-७०	धर्मनाथ
२६	अमरेली	२०२८ फागुन सु ५	१९-०२-७२	शांतिनाथ
२७	रामपुरा	२०२८ बैशाख सु ५	१७-०५-७२	ऋषभनाथ
२८	बामण वाडा	२०२८ बैशाख सु ६	१८-०५-७२	ऋषभनाथ
२९	जाम्बुडी	२०३० कार्तिक सुदी१३	०८-११-७३	
३०	गढडा	२०३० बैशाख वदी २	०८-०५-७४	पारसनाथ
३१	जूनागढ़ मानस्तंभ	२०३१ माघ सु ५	१८-१२-७४	नेमीनाथ
३२	खुरई	२०३१ माघ वदी ७	०४-०१-७५	ऋषभनाथ
३३	सनावद -समोशरण	२०३१ माघ वद ११	०८-०१-७५	श्री सीमंधरभगवान

पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं

क्रमांक	स्थल	गुज तिथि	दिनांक	मूलनायक
१	सोनगढ़-सीमंधर	१९९७,फागुन सु २	२८-२-४१,शुक्रवार	श्री सीमंधरभगवान
२	सोनगढ़ समवशरण	१९९८,बैशाख वदी ६	६-५-४३,बुधवार	श्री सीमंधरभगवान
३	बीछिया	२००५,फागुन सु ७	७-३-	चन्द्रप्रभ

			४९,सोम	
४	लाठी	२००५, जेठ सु ५	१-६-४९,सोम	श्री सीमंधरभगवान
५	राजकोट	२००६फागुनसु १२	१-३-५०,बुध	श्री सीमंधरभगवान
६	सोनगढ़ मां स्तम्भ	२००९,चैत्र सु १०	२५-३-५३,बुध	श्री सीमंधरभगवान
७	पोरबंदर	२०१०,फागुन सु ३	७-३-५४,बुध	पारसनाथ
८	मोरबी	२०१०,चैत्र सुदी २	५-४-५४,बुध	महावीर
९	बांकानेर	२०१०,चैत्र सुदी १३	१६-४-५४, बुध	महावीर
१०	लीमडी	२०१४,बैशाख सु १३	१-५-५८,गुरु	पारसनाथ
११	मुंबई	२०१५ माघ सु ६	१६-१२-५८	श्री सीमंधरभगवान
१२	जामनगर	२०१७ , माघ सु ७	२५-११-६०	महावीर
१३	जोरावरनगर	२०१९, बैशाख सुदी १३	०६-०५-६३	आदिनाथ
१४	दादर समोशरण	२०२० वैशाख सु ११	२२-०५-६४	महावीर-सीमंधर
१५	राजकोट समो-मान.	2021-बैशाख सु १२	१२-०५-६५	सीमंधर
१६	आकडीया	२०२३ माघ सु १	१३-१२-६६	सीमंधर
१७	हिम्मतनगर	२०२३ माघ सु ११	२३-१२-६६	महावीर
१८	अमदावाद	२०२५, फागुन सु ५	२१-०२-६९	पारसनाथ
१९	रणासन	२०२५, फागुन वदी २	०५-०३-६९	आदिनाथ
२०	मलाड -२० तीर्थ.	२०२५, बैशाख सु ७	२३-०४-६९	पारसनाथ
२१	घाटकोपर -२४ तीर्थ.	२०२५, बैशाख सु ८	२४-०४-६९	सीमंधर
२२	अंतरीक्ष पारसनाथ	२०२६,फागुन सु २	०९-०३-७०	पारसनाथ
२३	भावनागर	२०२६,फागुन सु ३	१०-०३-७०	सीमंधर
२४	घाटकोपर सर्वोदय होस	२०२८बैशाख वदी ३	०३-०३-७२	आदिनाथ

२५	फतेपुर –समो	२०२८ बैशाख सुदी ३	१५-०५-७२	सीमंधर
२६	सोनगढ़ परमागम	२०३०,फागुन सु १३	०६-०३-७४	महावीर
२७	भोपाल पिपलानी	२०३१,माघ वदी ३	०१-०१-७५	महावीर
२८	बेंगलोर समो	२०३१,चैत्र सु १३	२४-०४-७५	महावीर
२९	बढ़बाण	२०३२, फागुन सु ८	०९-०३-७६	महावीर
३०	मद्रास	२०३४,फागुन सु ३	११-०३-७८	महावीर
३१	कुरावर	२०३४,बैशाख सु १	०८-०५-७८	सीमंधर
३२	नेरोबी अफ्रीका	२०३६,माघ सु २	२१-११-७९	महावीर
३३	वडोदरा	२०३६,फागुन सुदी १३	२८-०२-८०	आदिनाथ

मेरी अंतिम भावना

मेरी भावना

१-जीने – मरने में साथ हैं तो मंदिर स्वाध्याय में साथ होना ही चाहिए |

२-अखंड मुमुक्षु मंडल रहे |

३-गुरुदेवश्री सर्वोच्च रहें | अन्य किसी का व्यक्तिवाद न हो | गुरुदेवश्री जितना पुण्य एवं पवित्रता अन्य के नहीं दिखती हैं - किसी का नहीं हैं अतः अपना नाम ख्याति समेट लेनी चाहिए |

४-सम्पूर्ण प्रवचन इंटरनेट पर डाल दिए जाएँ |

५-गुरुदेवश्री के प्रवचन इंग्लिश में अनुवादित किये जाएँ |

६-विदेशों में गुरुदेवश्री के प्रवचन भेजे एवं समझाए जाएँ |

७-आ.कुन्दकुन्द की रक्षार्थ पू॰ गुरुदेवश्री की रक्षा १८५०० वर्ष तक करने का भार हम पर हैं |

८-गुरुदेवश्री के जीवन पर कहान चरित, उपन्यास, काब्य लिखे जाए, एनिमेशन, फिल्म, इ-नेट पर कथा–चारित्र डाला जाए | जीवन पर शोध किया जावे |

९-अनुद्दिष्ट प्रभावना हुई |

गुरुदेवश्री को रोना आया

१-ब्र.चंदुभाई का खोटा भवितव्य विचार कर भविष्य उन्हें एवं सभा में बताया था | गुरुदेवश्री ने एक स्वप्न देखा था की घूमने जाते समय पीछे मुड़ कर देखा तो ब्र.चंदूभाई अँधेरे में खो गये |

२-डॉ चंदु भाई को इलाज करने से रोकने पे

३-वजुभाई के षड्यंत्र से दोनों वेनों में विच्छेद हुआ |-प्रकाश कोलकाता

४-खुशाल भाई के गुजरने पर | जो परिवर्तन के बाद एक वर्ष तक जिए | सोनगढ़ मुख्यतः रहे | इनके गुजरने पर |

५-जयंती भाई (भीखू भाई – जिसे ५ वर्ष तक भीख के वस्त्रों एवं भोजन से पाला था | क्योंकि दीपचन्द्र भाई की अनेक संतान गुजर जाती थी अतः ग्राम वालों की सलाह से उसे

इस तरह से पाला गया परन्तु यह २० वर्ष में गुजर गया |) के गुजरने पर |

६- धीरेन्द्र भाई सडक दुर्घटना में गुजर गया | बहुत लायकात वाला जीव था गुरुदेव स्नान नहीं करते थे मात्र स्पंच करते थे | बहुत गर्म पानी से यह स्नान धीरेन्द्र कराता था |

७- परमागम मंदिर बनने में बिलम्ब होने पर |

ॐ चैत्र सुदी १३, बनी जिन्हें धन्य तेरस ॐ

परिवर्तन- धन्य दिगंबर पंथ गुरु को भा गया

क्या आप जानते हैं पूज्य गुरुदेवश्री श्री का परिवर्तन कैसे हुआ ?

आइये .....हम सिल-सिलेवार देखते हैं .....

क्या हुआ ? कब हुआ ? कैसे हुआ ? कहाँ हुआ ?.....

सर्व प्रथम निमित्त देखते हैं .....

अन्तरंग परिवर्तन हुआ –

सन १९२१ में बोटाद में समयसार मिला लेकिन संयोग वश वांचा नहीं | सन १९२२ में दामनगर में श्रो दामोदर सेठ ने श्री समयसार जी ग्रन्थ भेट किया (यह ग्रन्थ १९१८ में अगास से प्रकाशित मनोहरलाल जी कृत हिंदी ग्रन्थ था)

गुरुदेवश्री बोले – "सेठ आ अशरीरी थवानुं शास्त्र छे | अशरीरी एवो सिद्धपना नो मार्ग आमां बताव्यो छे | अहा ! जे शोधी रह्यो हतो ते मड़ी गयु |"

- बोटाद में प्रवचनसार मिला | अष्ट पाहुड एवं सम्यकज्ञान- दीपिका भी यहीं मिली | आत्मानुभव क्या चीज हैं ज्ञान नेत्र से खूब अमृत पिया | सर्व शंका का समाधान पा लिया |
- १९२६ स. १९८२ चातुर्मास पूर्व राजकोट में दामोदर सेठ लखाणी ने मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रन्थ दिया | इसे पढ़ते ही अपने मन के अनेक बातों के समाधान इस में मिलने लगे फिर क्या था सब खाने पीने सोने की सुध बुध भूलकर पठन में लग गये | आद्योपांत पढने के बाद लगा की मत परिवर्तन करना चाहिए |
- १९२८-स.१९८४ अमरेली में एक माह रहे यहाँ <u>रहस्यपूर्ण चिट्ठी</u> मिली | २ साल पढने के बाद हाथ से लिख लिया था |

वगसरा ग्राम – में <u>मोक्षमार्ग प्रकाशक का ७ वा अधिकार अपने हाथों से कच्ची पेन्सिल से लिख लिया | जो आज तक सोनगढ़ में सुरक्षित रखा हुआ हैं |</u>

१९३०स. १९८६

- अमरेली – चातुर्मास में समयसार जी प्राप्ति के ८ वर्ष बाद पहली वार जाहिर सभा में प्रवचन हुए | अतः अच्छी चर्चा रही |

  अमृत वरसारे पंचम काल मा, ऐ गुनवंता ज्ञानी ..... अमृत वरसारे पंचम

  - जे जे समुद्र उलसियो, पाणी तणां न जाय |

    ऐ भाग्य शाली कर बाबरे, एनी मूठी मोती भराय ||१ अमृत वरसारे

- जे जे समुद्र उलसियो, पाणी तणां न जाय |

  ऐ भाग्यहीन कर बाबरे, एनी मूठी काकरी भराय ||२ अमृत वरसारे

- गगन मंडल में गौआ ब्यानी, वसुधा दूध जमाया |

  विरला था सो माखन पाया, जगत छाछ भरमाया ||३ अमृत

- गगन मंडल में अधबीच कुआ, जामें अमी का वासा |

  सुगुरा हो सो भर-२ पीवे, निगुरा जावे प्यासा ||४ अमृत

- जेना पागल्ये -२ चाले, मुक्ति नी मणझार |

  मोक्षगामी जीवों नो, तूं साँचो सरदार ||५ अमृत

  - १९३१-स.१९८७

  - बीछिया – सर्व प्रथम परिवर्तन का भाव यहीं आया | इस वेश में सच्ची बात खुलकर नहीं कह सकते हैं | घुटन प्रारम्भ हो गई | बड़े भाई खुशाल भाई को मन की बात कही – "आ साचो मार्ग नथी आ साधु पणु खोटु छे, हूँ हवे आमां रहेवानो नथी |"

    सुनते ही खुशाल भाई गंभीर हो कर बोले – धीरे-२ छोड़ना |

- एक स्थानक वासी साधू- मूर्छा परिग्रह छे, वस्त्र नहीं |

  गुरुदेवश्री - परन्तु वस्त्र ग्रहण का भाव ही मूर्छा है |भाई ! विचार नी एकता बिना भाव वर्तन नी एकता न थाय |

- १९३३--- स. १९८९ चेलागाँव में मगशिर सुदी १०, २६-११-३३ सोमवार को गुरुदेवश्री ने एक स्वप्न देखा – एक बड़ी रकम की हुंडी आकाश से गुरुदेवश्री की गोद में गिरी जो इस दुकान में भजी नहीं | दुसरे बड़े साहूकार की पेड़ी पर भजेगी | उसे खोजनी पड़ रही है | आखिर जो तत्वज्ञान स्थानक वासी सम्प्रदाय में न मिला वह स. १९९१ सन १९३५ भावलिंगी संतों की दिगंबर पेड़ी पर अमाप फल – तत्व ज्ञान के रूप में फली | जिससे स्वयं एवं लाखों जीवों को निहाल कर दिया |

१९३४- स. १९९०

- अंतिम चातुर्मास राजकोट में हुआ | स्वयं ने निर्णय किया की इस सम्प्रदाय में मुझे रहना नहीं | यह तो मायाचारी हैं अंदर कुछ बाहर कुछ | सिंहवृत्ति नहीं हैं | निडरता से मुझे घोषणा करना चाहिए | यहाँ के श्रावक विचारशील हैं | पढ़े लिखे एवं सत्य के जिज्ञासु हैं | अतः यहीं परिवर्तन का अभिप्राय प्रगट करना चाहिए | रामजी भाई को कहा मने चेन-नींद आवती नथी | हूँ शुं करूँ | तमे कहो ते करूँ | परन्तु रामजी भाई भी सहमती न दे सके | समाज में खलबली मच गयी |
- परिवर्तन पूर्व राजकोट में समयसार पर १ से ९९ गाथा तक प्रवचन किये थे |
- यहीं गुरुदेवश्री ने फरमाया था कि – पूर्णता के लक्ष्य से शुरुवात वही सच्ची शुरुवात हैं |

- यहाँ से संग-२ प्रेमचन्द भाई बिहार में गुरुदेवश्री के साथ जामनगर गये, यहाँ १०० न. की गाथा पर प्रवचन हुआ | परिवर्तन की तीव्र अभिलाषा होने से निर्णय किया ऐसे स्थान पर परिवर्तन करूँ जहाँ कोई जैन समाज का घर न हो | किसी को भी कषाय न हो |
- यहाँ से बिहार करते हुए ध्रुवाण वहां से गढ़डा वहां से उमराला गये संग में हीराभाई दामाणी एवं हरिभाई भायाणी भी हो गये थे | स्थान की तलाश में विचरण हो रहा था |
- दामोदर सेठ को ज्ञात हुआ तो हर कीमत पर इस परिवर्तन को रोकने का प्रयास किया | उन्होंने कहा साहेब ! आप गमे ते वाँचो तेनो संघ ने कोई बांधो नथी. पण आप आ वेश ने सम्प्रदाय न छोड़ो.

  गुरुदेवश्री – भाई ! अंतर मां काईक बीजू राखवुं ने बाह्य मां काईंक बीजू कहेवु ऐ अमारो स्वभाव नथी | सेठ निराश होकर चला गया |

  आवी दृढता जोई एटले लोको ऐ भय पण बताव्यो |

दामोदर सेठ- ध्यान राखजो ! के जो परिवर्तन करशो, तो पछी कोई तमारे पासे आवशे पण नहीं, तथा तमे ज्यां जशो त्यां पण लोकों नहीं आवे, लोको तमारी बात सांभणसे नहीं .....अरे ! लोकों आहार पाणी पण आपशे नहीं, परिणाम विचारी ल्यो |

गुरुदेवश्री – साँचु शुं छे अने शुं नथी ऐ अमे जाणिये छिए | रही बात परिणाम नी, तो जे वात तमे विचारी रह्या छो तेनी तो अमे कोई दिवस चिंता करी ज नथी | पण अमे जे करी रिया छिए, तेना फल मां तो अनंत संसार नो अभाव थवानो छे | अमारो आ भव, भव ना अभाव करवा माटे छे | कोई पण पक्ष के सम्प्रदाय ना पोषण हेतु नथी ....नथीज |

छबीलदास बापू-(व्यंग्य से) भव तो छूटशे कारण के रोटला न मड़शे !

गुरुदेवश्री श्री - बापू ! अमे रोटला खावा माटे घर नथी छोड़यु रोटला नी चिंता करवा वाला घर नथी छोड़ता | अमारे घरे पण क्या कमी छे | आ सत्य पंथ ने माटे तो अमे चकरवर्ती नी संपदा पण त्यजिये एम छीये | कारण के हवे अमने अशरीरी थवानो रास्तो मड़ी गयो छे | मोक्ष नो मार्ग मड़ी गयो छे |

खुशाल भाई – "आप लोग रोटली की चिंता छोड दो, अपने भाई के सारी जीवन की व्यवस्था मैं कर दूंगा |" उमराला में हालात अनुकूल न लगने से योग्य स्थान की तलाश में हरि भाई भायाणी के साथ विहार करते रहे |

- सोनगढ़ में ३ वैष्णव भाई हरगोविंद भाई मोदी, नागर भाई, जेठाभाई रहते थे इनकी बहन दुधी बहेन स्थानक वासियों में उमराला में विवाहि गई थीं, उन्हें ज्ञात हुआ की गुरुदेवश्री को परिवर्तन करना हैं, और सम्प्रदाय में विरोध की तीव्र लहर हैं | तो उन्हें गुरुदेवश्री के प्राणों को खतरा सा लगने लगा | उन्होंने अपने भाई हरगोविंद भाई मोदी को सन्देश पहुचाया की तुम गुरुदेवश्री को आमंत्रित कर अपने घर में सुरक्षित रखो | हरगोविंदभाइ की पत्नी विजया बहेन ने भी आदर सहित पूर्ण सुरक्षा सहित लाने का आग्रह किया |

  इनने और हीराभाई दामाणी ने आगे बढ़ कर गुरुदेवश्री को आमंत्रित किया, तो पहली बार देखा था गुरुदेवश्री को परन्तु देखते ही लगा कि आ कोई मोटो महात्मा छे | सहज अंतर से निकल पड़ा कि – पधारो ! अमारा मकान मा विराजो |

- भावनगर से १० किलो मीटर पहले एक वर्तेज नाम का ग्राम है | वहां परिवर्तन का मन था अतः हरिभाई भायाणी ने एक किराये का कमरा वहां ले लिया था, वहाँ के लिए जाते समय ही रास्ते में सोनगढ़ के हीराभाई दामाणी का निमंत्रण मिलने से विचार किया की यहाँ स्थानक वासी समाज नही हैं

देरावासी समाज तो हैं | अतः यहाँ रुकने एवं परिवर्तन करने में दिक्कत न होगी |

- दामाणी स्वयं दूध निकला के लाते थे | (संयुक्त परिवार था आर्थिक स्थिति सामान्य थी बाद में बहुत संपन्न हो गये |) बाद में तो गुरुदेवश्री के परिवर्तन की तिथि को आजीवन जितने भी लोग सोनगढ़ आवेंगे सबको आपकी ओर से निशुल्क भोजन कराया जायेगा |
- घर में कोलाहल रहने से - बाजार का कोलाहल रहने से आराधना में विघ्न लगता था | अतः विचार किया गया कि जिस घर में हरगोविंद भाई मोदी किराये से रहते हैं वे उसे खाली कर रहे थे अभी तक अनेक बार कहने पर भी खाली नहीं हो रहा था | अतः गुरुदेवश्री को वहीँ विराजा जाए | वहां आसपास मात्र एक घर दूर से दीखता था, शेष जंगल था | नाम था स्टार ऑफ़ इंडिया (यह मकान पुष्पा बेन जयंती भाई रवाड़ी का था, जो की कमला बाई दामाणी की बहिन हैं |) यहाँ गुरुदेवश्री फागुन वदी ३(५ गुरु प्रसाद १३????????), स. १९९१ शनिवार २३ मार्च १९३५ को यहाँ पधारे | जहाँ गुरुदेवश्री २२-५-१९३८ तक ३ वर्ष २ माह रहे | यहाँ आते ही लगा मानो युग-२ के घर की राह देख ली हो, अपूर्व शांति लागी |
- दामोदर सेठ, दामनगर (जिसकी वार्षिक आय उस समय १० लाख रु थी) को ज्ञात हुआ तो वे दोढ़े चले आये, समाज के लोगों को भी लाये, साथ में खुशाल भाई भी थे |

  दामोदर सेठ- साहेब ! आप सम्प्रदाय न छोड़ो | अमारी विनंती ने मान आपो |

गुरुदेवश्री – (मुस्करा कर) आ पट्टी (मुख पट्टी) नानी होवा छतां पण गृहीत मिथ्यात्व जेवा घोर पापनी घोषणा करे छे | भाई बात आ पट्टी नी नथी पण तेनी

पाछड़ छुपाइल खोटी मान्यता नी छे | आ सामान्य लागती पट्टी राखवी के छोडवी ऐ मां तमने कोई मोटी बात लागती नथी पण भाई, एमां तो ऊगमणो आथमणो फेर छे |

१९३५ - परिस्थिती

- स्थानकवासी समाज के तूफान का भय था | हरिभाई भायाणी २४ घंटे पहरा देते थे |
- भोजन में विष मिलाने का भय था | बिना परीक्षण के भोजन नहीं दिया जाता था |
- समाचार पत्रों में निंदात्मक लेख लिखे जा रहे थे | प्रतिकार किये जाने को उद्वेलित किया जा रहा था | विरोध की झड़ी लगी हुई थी | कायर, मूर्ख, भावुक, आगम विरोधी, तीव्र पाप का उदय, खोटा भवितव्य, कायर का बच्चा | सिद्ध करने में लोग शक्ति लगा रहे थे | लोग तमाम समाचार, समाज की प्रतिक्रियाएं सुनाते थे | गुरुदेवश्री स्वीकार करते परन्तु निर्णय कभी बदलने के वारे में नहीं सोचा | वे कभी भयभीत नही हुए |

  सरलता से कहते – सच है, मैं शेर का बच्चा नहीं हूँ |

  - चारों ओर जंगल था विद्युत् प्रकाश नहीं था मात्र एक घर कच्चा-पक्का दिखता था | लेट्रिंग-बाथरूम, पानी आदि सारी सामग्री बाहर से ही लाना पडती थी | २-४ सर्प एवं ४-६ बिच्छू प्रतिदिन खपरेल से गिरते एवं रेंगते दीखते थे |
  - राजमल जी महाराज साहेब एवं जीवन लाल जी महाराज साहेब साथ ही थे | एक दम सरल थे निर्भय थे | कहते थे - साहेब ! जो आपकी गति सो हमारी गति |

- राजमलजी महाराज स्टार ऑफ़ इंडिया में गुजर गए |
- कसणचन्द्र जी एवं जीवराज जी महाराज बाद में यहाँ आये | उन्होंने बाद में मुह पट्टी छोड़ी |
- २ वैष्णव घर थे महाराज साहेब ३ थे एक प्रति दिन उपवास करते थे | दो साधू आधा पेट भोजन करते थे | इस तरह तीनों ने ३ साल २ माह तक एक व्यक्ति के भोजन की मात्रा से काम चलाया |
- गुरुदेवश्री कहते थे ३ 'ह' की हाँ मिली तो काम (परिवर्तन की हाँ) हो गया | अर्थात हीरालाल दामाणी, हर गोविन्द भाई मोदी, हरी भाई भायाणी (२५ वर्ष तक व्यापारी संघ के अध्यक्ष/ प्रधान रहे, जो व्यापारिओं की समस्याओं के समाधान करते थे - निर्णय करते थे |)
- गुरुदेवश्री - हरि भाई ! हवे आ स्थानक वासी नूं चिन्ह मुंह पट्टी छोडी देवी छे अने ते माटे आवती चैत्र सुदी १३ नक्की राखी छे | कोई दिगम्बर भगवान नी फ़ोटो लावो ने !
- दोनों बहेनो के भाइयों को कुछ समय तक दूर रहने के निर्देश दिए | कभी कभी आते जाते रहें |
- चैत्र सुदी १३ स. १९९१ मंगलवार १६ अप्रेल १९३५ आज गुरुदेवश्री निर्लोभता, निर्भयता एवं धगस की मूर्ति दिख रहे थे | सोनगढ़ आने के २४ दिन बाद महावीर जयन्ती के मांगलीक दिवस मध्यान्ह १.१५ बजे हरिभाई भायाणी के परिवार की उपस्थिति एवं भगवान पार्श्वनाथ की फोटो (हरिभाई यह फोटो लेकर आये थे | यह फोटो श्रवणवेळ गोला के पास जिननाथपुरम की धवल ५ फुट उतुंग प्रतिमा का है |) के सामने स्वामीजी ने मुंह पट्टी का त्याग किया | नवकार मन्त्र एवं चत्तारी दंडक पढ़ते हुए चेत्य वंदना का पाठ पढ़ा व कायोत्सर्ग किया | आज खुली वायु

में सिद्धों को नमन किया | गुरुदेवश्री को नया नक्कासीदार आसन दिया जो गुरुदेवश्री ने न कर दिया फिर दूसरा साधारण बनवाया था | मिस्त्री को दुःख लगता था कि इतना सुंदर आसन को काटकर साधारण बनना पड़ रहा हैं |

- गुरुदेवश्री बोले- हरिलाल ! हवे थी हूँ स्थानक वासी साधू नथी , हूँ जैन श्रावक छुं |

  हरिभाई- "साहेब ! दुनिया फरे तो भले फरे पण हूँ आजीवन आपना साथेज रहवानुं वचन आपू छुं |"

- हरिभाई का परिवार डिप्टी गवर्नर के बंगले में ठहरा था |
- सम्प्रदाय में लगा कि हमने हीरा खो दिया |
- ४५ वी जन्म जयंती ४ मई ३५ को एकाकी जंगल में मनी | नया जन्म जो हो चुका था | आज दिगम्बर में जन्म हुआ था अर्थात पहला जन्म दिन मना रहे थे |
- वैशाख वदी ८, १९९१ प्रातः गुरुदेवश्री को निर्मल सम्यकत्व की प्राप्ति हुई आज ही स्वाध्याय मंदिर में आवास हेतु पधारे थे जिसका निर्माण नान चन्द भाई खारा ने कराया था | – सद्गुरु प्रवचन प्रसाद ओक्टू २००१
- देरावासी साधू रामविजयसूरी एवं स्थानक वासी साधू पूनमचंद्रजी महाराज साहेब ने सौराष्ट्र के झालावाड, लीमडी, बोटाद, दामनगर, बीछिया, अमरेली, बढ़बाढ़ में घोर विरोध किया था | गुरुदेवश्री की रक्षा हेतु रात में प्रेमचन्द भाई एवं दिन में रामजी भाई पहरा देते थे |
- बढ़बाड में एक भाई विरोध कर घर गया, और गुजर गया तो गाम में चर्चा होने लगी, कि विरोध मत करो जिसे मानना हो तो मानो, नहीं मानना हो तो न मानो पर विरोध तो मत करो |

- लाठी में मंडप में आग लगाने की चेष्ठा की गइ |
- समाचार पत्रों में निंदा का वातावरण बना हुआ था |
- चन्द्र शेखर मुनि चर्चा की जिद में था वह बोला चश्मे से दीखता है कि नहीं गुरुदेवश्री उसका मुख देखते रह गये कुछ न बोले | बाद में बोले- थई गई चर्चा |
- आसौ वदी ४, १९९१ १५-१०-३५ मंगलवार रात्री १० बजे शांता बहेन को समकित की प्राप्ति हुई | उस समय उनकी उम्र २५ वर्ष थी |
- कुंवरजी भाई के पुत्र नटु भाई ने पालेज में जन्म सन १९३५ लिया |
- चैत्र सुदी १३ स. १९९१ मंगलवार १६ अप्रेल १९३५ स्वहस्ते परिवर्तन के बाद १-४५ बजे निवेदन लिखा |

ॐ शांति निवेदन ॐ शांति

श्री परम सहज स्वरूप जिनेन्द्र वीतरागायनमः

वर्तमान स्थिति नूं परिवर्तन

आमां मारा आत्म हितनी विशेष वृद्धि ना कारणों मने न लागता . स. १९८९ ना पर्युषण मां थी फेरफार करवानी विशेष वृत्ति जणाई, जो के ८७ थी ते सामान्य पणे विचारों आवता हता . तेना कारणों मां धर्म नी विशालता नूं स्वरूप बाहर मूकतां अचकावुं पडतूं ते चित्त मा आघात रूप लागवुं तेमज बाहर नी केटलीक मत नी संकुचितता ना लीधे जे स्थिति मां छुं ते मां विरुद्धता न थायतो ठीक तेम थई, केटलाक बखत वीत्यो . ८७ नी साल थी निवृत्ति लेवी, प्रतिबन्ध ओछा करवा तेम बारम्बार विचारो आव्या करता हता . तेमां ८९ पछि तुरतज निवृत्ति लई कयांक विशेष रोकावुं तेवा घणाज विचारों आवता . पण कयां रहेवुं ते नक्की थतु नहीं . पछी तेम विचारो थयाके ९० नी साल राजकोट रहेवुं . पछी निर्णय ऊपर आववुं . हवे मारूं हित वर्तमान स्थिति मां विशेष वृद्धि रूप न लागतां आ परिवर्तन थाय छे . मने आ सम्प्रदाय मां दीक्षित थया २१

वरस थया . तेमां मारी यथा शक्ति सूत्रों ग्रंथों वाची – विचारी – जाणीने मने आ रीते हवे अनुकूलता जणाई ते माटे आ परिवर्तन छे .

परमार्थ बिंशती- गुरुदेवश्री के साहस को दर्शाता भाव ----

सुखदायक गुरुदेवश्री वचन जो, मेरे मन में करें प्रकाश |
फिर मुझको यह विश्व शत्रु बन, भले सतत दे नाना त्रास ||
दे न जगत भोजन तक मुझको, हो ना पास में मेरे वित्त |
देख नग्न उपहास करें, जन तो भी दुखी नहीं हो चित्त ||

१९३६- स. १९९२ में लोग आने बढ़ने लगे और

- प्राणभाई जो पोरबंदर के नगर सेठ थे उन्होंने १ पैसे वार (३ फुट) जहाँ मंदिर एवं समिति है के बाजू में | यहाँ सबसे पहले गृहस्थों के लिए आवास बने | ६ बड़े कमरों की चाली बनाई | ३ कमरे में १२ बेन रहीं | लेट्रिंग के लिए खुले में बाड़ा बनाया गया था | पहले घरों में ऐसी सुविधाएँ नहीं होती थी |
- रामजी भाई दोशी ने ४ पैसे प्रति वार जगह मंदिर से बोर्डिंग तक कि खरीदी थी |
- लोग कहने लगे कि इतनी जगह का क्या करोगे ?
  खुशाल भाई बोले – (विश्वास के साथ) देखना यहाँ कीड़ियों कि तरह लोग आयेंगें | लेकिन वे स्वयं यह सब देख ना सके |

  क्या आप इस से अधिक कुछ जानते है या जान सकते हैं तो अपने बुजुर्गों या परिचितों से पूछ कर कोई भी अविस्मरणीय प्रसंग, तस्वीर हैं, तो कृपया हम तक पहुचाइए, इसे हम विश्व तक सत्य एवं उपयोगी प्रमाणित होने पर अवश्य भेजने का प्रयास करेंगे | कीजिये..... मेल या इमेल

हमारी आई.डी. एवं भक्ति आपके मेल का इन्तजार कर रही हैं |

nickshah12@gmail.com

सुधार एवं सुझाब आमंत्रित हैं |

१९२५ में डोलर का मूल्य १० पैसे थी – दैनिक भास्कर दि-९-७-१३ आज की दर ६१ रु हैं |

१९४७-डोलर का मूल्य १ रुपया था	८० रु प्रति १० ग्राम २४ केरेट सोना
१९६०	१११
१९७३	२७८
१९८०	१३३०
१९८५	२१३०
१९९०	३२०९
१९९५	४२७५
२००२	५५८०
२००५	६३०५
२००६	७६९०
२००७	१४०५०
२००८	१३८६५
२००९	१५८८५
२०१०	१८३००
२०११	२७९००
२०१२	३१७००

दैनिक जागरण १५-४-१३

अद्भुत बातें

१-नटुभाई अजमेरा पालीताणा वकिलात का व्यवसाय के लिए कलकत्ता जाना चाहते थे अंतिम समय गुरुदेव के पास आशीर्वाद लेने आये गुरुदेव ने एक वार मना किया तो जाना रद्द कर दिया | वापिस पालीताणा गये तो वहाँ एक वकील कनुभाई दामाणी के ऑफिस में ज्वाइन किया तभी कनुभाई पालीताणा से जज बन कर अहमदावाद गये और वे यहीं जम गये और अच्छा जम गया |

२- कुंवरजी जादव भाई १९७२ में लगभग १.३० बजे गुजर गये तार भेजा गुरुदेव श्री पालेज मंदिर बनने के १० वर्ष बाद गुजरे प्रवचनोंपरान्त स्वयमेव ही कहा "कुंवरजी भाई गुजरी गया" |

३-नीग्रो –अफ्रीका ने प्रवचन सुने बोला समझ में तो नहीं आता परन्तु गहराई एवं गंभीरता से प्रवचन करते हैं यह समझ में आया |- डॉ उत्तम चंद जी सिवनी |

४-उज्जैन के चान्दमलजी ने (२००० सन में ८७ वर्ष) खंडवा में गुरुदेवश्री से उस समय ब्रह्मचर्य लिया था जब पहला पुत्र मात्र १८ माह का था |

५-आत्मार्थी को कभी हुन्डावसर्पिनी नहीं होता है |

६-रवाणी– गुरुदेव श्री ! तमे तो भावी तीर्थंकर छो ने ?

गुरु- मुझे तो गाली सी लगती है |

७-परमागम मंदिर में आ.कुंद-२ एवं पू.गुरुदेवश्री की फोटो लगी है |(शुद्धि पत्र)

८-तीर्थ यात्रा में तीर्थ रक्षा की बात नहीं आई थी |(शुद्धि पत्र)

९-जन्म जयंती बोम्बे की राशि से सस्ते शास्त्र छपाने का प्रस्ताव हुआ था न कि तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट में जमा हुआ |(शुद्धि पत्र)

१०- "श्रीमती शांताबेन, सोनगढ़ "जुगमंदर लाल जैन वकील, खंडवा ने लिखा है मंगल तीर्थयात्रा, विदिशा पृ-१७

अद्‌भुत बातें –

११- इतिहास एवं जैन इतिहास का स्वर्ण युग था – सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य का शासनकाल था |

१२- पू. गुरुदेवश्री को जिन्हों ने तत्व से पहचाना वे नहीं भटके, या टूटे परन्तु जिन्होंने पुण्योदय से पहचाना वे टूट गए |

१३- हंसमुख भाई (१९५९) – १९६२ में मुख देखते ही भान आ गया कि बड़ा होकर खूब पैसा वाला होगा | और उनकी बात आज सच हो गई | आज भी वह बालक बड़ा होकर बोम्बे में रहता है |

धन्यावतार की प्रतिक्रिया

–इस प्रकरण ने सारे मुमुक्षु मंडल को झकझोर कर रख दिया, आदरणीय युगलजी, ज्ञान चन्दजी विदिशा, डॉ भारिल्ल जी, प. जवाहर लाल जी विदिशा, राजमल जी भोपाल, राजमलजी पवैया, प. उत्तम चन्द जी सिवनी आदि समस्त महत्व पूर्ण हिंदी एवं बाबुभाईजी, जम्बुभाई रवाणी आदि कई गुजराती विद्वानों ने इस प्रतिष्ठा का विरोध किया और अंततः पत्रिका अलग होकर वीतरागविज्ञान बनी और कई मामलों में नीतिगत भिन्नता होती चली गयी | जम्मू भाई रवाणी ने धरना तक दिया | ब्र. वहन नारे लगा रही थी कि हिंदी पंडित वापस जाओ | प्रतिक्रिया –

१- सूर्यकीर्ती तीर्थंकर का आगम आधार नहीं हैं जाती स्मरण मति ज्ञान की पर्याय हैं उसे प्रमाण नहीं माना जा सकता हैं |

२- यदि मुनि पक्ष में भी जातिस्मरण के आधार से अपने दिग.गुरु की कोई भावी तीर्थंकर की प्रतिमा बनाए तो क्या आप उसे नमस्कार करेंगे ?,

३- छोटी सी महत्वाकान्छा अहम की पूर्ति के लिए कोर्ट तक में अनर्गल बयान दिए गये | जिनशासन की गौरवशाली समृद्ध परम्पराओं को ताक पर रख दिया जिन पर गुरुदेवश्री को गौरव था |

४- इस किप्रतिक्रिया स्वरूप उत्तर भारत में अनेकों स्थानों पर गुरुदेवश्री के फोटो फाड़े गये |

५- सोनगढ़ से प्रकाशित साहित्य को नदी में डुबोया गया, मंदिर से बाहर निकाला गया, मंदिरों में बोर्ड लगा दिए गए कि जयपुर एवं सोनाढ़ साहित्य न रखा पढ़ा जाए |

६- जो साधू सोनगढ़ समर्थन में थे उन्हें आहार-बिहार-आवास व्यवस्था देना बंद कर दिया गया |

७- मुमुक्षुओं किसभाएं बंद करदी गयीं |

८- भिंड उज्जैन में गोलियां तक चली, अलग से मंदिर बनना पड़ा |

९- सागर में २ मंदिर मुमुक्षुओं से छीन लिए गये मुकदमा जीतने पर भी अधिकार न ले सके |

१०- टीकमगढ़, बीना, शिवपुरी आदि कई नगरों में कठिनाइओं का सामना करना पड़ा |)

११- गुरुदेवश्री के अनुसार सत्य के लिए संघर्ष की नहीं समर्पण की जरुरत हैं | हमें याद रखना चाहिए कि ज्ञानी के भी आगमानुकूल वचन ही प्रमाण हैं न कि ज्ञानी के वचन मात्र |

१२- नई प्रतिमा विराजने से सम्यक्त्व में क्या फर्क पड़ा, परन्तु प्रत्येक सोनगढ़ वासी एवं समस्त ग्रुप दुखी अवश्य हैं | देखादेखी और तीर्थंकर/ गणधर खड़े हुए भंग हुए | भविष्य में तीर्थंकर गौण हो जायेंगे और मुनिओं की और जिससे हम प्रभावित होंगे उसकी प्रतिमा विराजमान हो जायेंगी | आगरा में ५ प्रतिमा – यथा शशिप्रभु, गुरुदेवश्री, श्रीमद, वेनश्री, सोगानी जी की प्रतिमा विराजमान हो गयीं हैं |

१३- अन्य लोगों का तीर्थंकर एवं गणधरपना समय पाकर हास्यास्पद सिद्ध हो गया उसी प्रकार गुरुदेवश्री के प्रति विश्वास भी हास्यास्पद हो अविश्वास के खंडहर में बदल जाएगा | अन्य लोगों के पास विश्वास का आधार अंध विश्वास नहीं हो सकता हैं | हाँ तत्व ज्ञान को हम ठोक बजाकर सिद्ध कर सकते थे और कर सकते हैं | इसमें किसी को शंका नहीं होती हैं | उसी विश्वास ने लाखों लोगों को बदल दिया था न कि अंध विश्वास ने |

१४- प. फूलचंद जी ने पत्र लिखकर वचनामृत भवन का निषेध किया था यह पत्र बापूजी एवं गुरुदेवश्री को नहीं दिखाया गया | बाद में हिम्मतभाई ने गलती मानी थी |

१५- फूलचन्द जी को प्रवचन पाट पर बैठकर महिला-बेन की प्रशंसा करने वाले गुरुदेवश्री के प्रति अच्छा नहीं लगता था | उन्होंने केसेट से बेनश्री की प्रसंशा सुनकर कहा था कि मैं गुरुदेवश्री को समकिती नहीं मानता |(भावुकता पूर्ण विचार/प्रतिक्रिया मात्र) |

१६- बजुभाई अदि ग्रुप ने सोनगढ़ में हिंदी साहित्य छूने को मना किया | ज्ञानानंद स्वभावी गाने से रोका |

१७- विचित्रता – शांता बेन को एक प्रणाम तथा चंपा बेन को ३ प्रणाम करते थे | कुछ चमत्कार मानने वाले मूर्ख लोग चम्पाबेन के स्नान के जल को गंधोदक की तरह लगाते थे |

१८- गुरुदेवश्री के समय मीठा पानी था हेंड पंप का अब वह बंद हो गया हैं |

विचक्षणता-स्वप्न

१-स्वप्न में वलदेव वासुदेव का झगडा देखा |

२-१९१४ बेजलका ग्राम- स्वप्न – सारा आकाश शास्त्र के सूत्रों से लिखे पाटिओं से भर गया देखा | सुबह मूलजी महाराज को बताया | तो उन्होंने धर्म प्रभावना – परमागम प्रभावना का संकेत किया |

३-धागन्द्रा में भूरा मगन भाई ने स्वप्न में गुरुदेवश्री को नग्न मुनि रूप में देखा | वीरमगाम से अगले दिन आकर वर्णन किया तो आश्चर्य हुआ कि मैं तो स्थानक वासी साधू हूँ | फिर ऐसा स्वप्न क्योंआहार दान |

४-वगसरा में एक देरावासी को भी यहीं रूप स्वप्न में दिखा |

५-१९१६ स्वप्न – 'बिना डोर की पतंग' गुरुदेवश्री का जीवन बिना डोर का पतंग जैसा था | कहाँ जा के बीतेगा जीवन पता नहीं था |

६-बांकानेर सर्व प्रथम ॐकार आया |

७-स्वप्न में एकहरा वदन का राजकुमार जरीवाले कपडे पहने हुए (साधू होते हुए भी यह स्वप्न ३५-४० वार) आया |

८-सामायिक में तीर्थंकर का भास् आया |

९-बैशाख वदी १, १२ मई १९२२ शुक्रवार को बीछिया में ॐकार ध्वनिसुनाई दी, १२.५ करोड़ बाजे के स्वर सुनाई दिए | आश्चर्य हुआ नारायण भाई को बताया | वे बोले – तमे भगवान पासे थी भगवान नी वाणी साम्भणी ने आव्या लागो छो |

१०- उमराला में ॐकार का भन्कार फिर मिला |

११- चेलागाँव में मगशिर सुदी १०, २६-११-३३ सोमवार को गुरुदेवश्री ने एक स्वप्न देखा – एक बड़ी रकम की हुंडी आकाश से गुरुदेवश्री की गोद में गिरी जो इस दुकान में भजी नहीं | दुसरे बड़े साहूकार की पेड़ी पर भजेगी | उसे खोजना पड़ रही है | आखिर जो तत्व ज्ञान स्थानक वासी सम्प्रदाय में न मिला वह स. १९९१ सन १९३५ भावलिंगी संतों की दिगंबर पेड़ी पर अमाप फल – तत्व ज्ञान के रूप में फली | जिससे स्वयं एवं लाखों जीवों को निहाल कर दिया |

१२- मगषर सुदी १, १८ नव ५२ मंगलवार को स्वप्न में सीमंधर स्वामी का देदीप्यमान स्वरूप देखा | उसी दिन मानस्तम्भ में सीमंधर स्वामी की स्थापना हुई |

१३- स्वप्न – जेठ सुदी ८ बुध २१ जून १९१७ को रात्रि के १०-४५ के पहले स्वप्न में देखा – आ.कुन्दकुन्द जंगल में पधारे हैं सभी प्रसन्न होकर उनके दर्शन करने जा रहें हैं बड़ा कोलाहल हो रहा हैं | मन में शंका हो रही है कि यहाँ कैसे पधार सकते हैं ? बड़ा वन जो विदेह क्षेत्र का हैं एक पास ही बड़ा नगर भी हैं | उस समय तो आ. कुन्दकुन्द के बारे में विचार तक नहीं था | स्वप्न ने गुरुदेवश्री को रोमांचित कर दिया |

१४- पोष सुदी १०, २५ दिस ६४ बुध को प्रातः स्वप्न में बाहुबली भगवान का दर्शन किया |

१५- स्वप्न में बड़ी नदी देखी पास में जाने में जाने पर नदी के दो भाग हो गये बीच में एक बड़ा रास्ता बन गया |

१६- १९६४ में सोनगढ़ में स्वप्न- छठ-सातम का चान्द देखा | इस कलिकाल में जस गुणस्थान से अधिक प्रभावना न हो सकेगी |

१७- आकाश से एक बंद कवर गुरुदेवश्री की गोद में गिरा जिज्ञासा वश खोलकर पढने से पूर्व ही आंख खुल गई | लगा की कहीं सीमंधर भगवान का संदेश तो नहीं था |

१८- स्वप्न- डॉ॰चंदुभाईको लेने को स्वर्गसे विमान आता/ भेजते है परंतु वे उसमे बैठ नहीं पाते हैं |

१९- ॐ सहज स्वरूप परम सद्गुरुवे नमः सुना |

२०- आसो सु ५- रात्रि में श्रीमदजी मेरे पास बैठ कर मुझे देख रहे थे |

२१- आसो सु ९ मंगलवार १-१५ बजे अमृत चोघडिया में श्रीमदजी ने मेरे मुंह में ३ चम्मच पानी डाला जो मैंने मुंह में इकठ्ठा कर पी लिया | तुरंत नींद खुली तो अद्भुतता लगी |

२२- देव हीरा हाथ में देकर जाने लगा अरे ! हम तो ब्र. हैं वापिस ले जाओ | डॉ गांगुली को आते देख उसे दे दिया | उसी सुबह गांगुली कलकत्ता से आये तो स्वप्न की बात बताई तो वह बोला मैं भी तो ब्र. हूँ मुझे परमार्थ-मोक्ष हीरा दो |

२३- १९६६ में स्वप्न- में वीरजीभाई को देखा | इधर वीरजीभाई को मिलने का भाव आया | गुरुदेवश्री दर्शन देने जामनगर गये |

२४- माघ सुदी १, १० फर ६७ शुक्रवार गुरुदेवश्री स्वयं गारुडी सर्प के बिल के पास ऐसी कोई वनस्पति–औषधि जड़ी रखते हैं की सर्प बाहर आवे और विष छोड़ देता हैं | अध्यात्म जड़ी मिथ्यात्व विष उगलता है |

२५- शरद पूर्णिमा २८-१०-६७ बुध खडगासन भगवान के दर्शन हुए | स्फटिक जैसी स्वच्छ जैसे की शकर के पहाड़ में से बनाई गयी हैं |

२६- बेजलका- सारे आकाश में ग्रन्थ लिखे पाटियों से भरा देखा | परमागम मंदिर बनने की सुचना जैसा लगा | इससे पूर्व पालीताणा में आगम मंदिर देखा हुआ था अतः ऐसा विचार आया |

२७- मने स्वप्न आव्युं के समयसार नी छठी गाथा ना स्वर्ण लिखित पाटिया पूर्व थी उदित थई ने आखा आकाश में फेलाई गया |

२८- स्वप्न – फागुन वदी १३ शनिवार १५-३-८० को सुरेन्द्र नगर में पिछली रात्री स्वप्न में देखा की गुरुदेवश्री श्री स्वाध्याय मंदिर के समयसार जी का गोखला के सामने खड़े हैं और उसमें से ३ वार आवाज आई कि जिनवाणी जयवंत वर्तो | इधर सोनगढ़ में चांदी का समयसार पत्र चोरी चला गया | जिसे दुबारा लिखाकर विराजा गया | जो आज तक विराजमान हैं |

२९- स्वप्न में सूत्रों का पाटिया देखा | जिसके फल में षटखंडागम छप कर प्रगटा |

३०- १९७१ में स्व.नारणदास करसन भाई राणपुर अहमदाबाद में गुरुदेव को स्वप्न में आये गुरुदेव ने पूछा मरण पछि कैसे आये बोले आपका दर्शन करने आये | देवों के संघ में कहीं के दर्शन करने को निकले थे |

३१- १९७३ में स्वप्न में बलदेव एवं वसुदेव को देखा था | आश्चर्य सहित दुःख भी हुआ | क्योंकि एक को नरक जाना होता हैं | वह अपने में से कौन होगा ?.....

३२- मई ७८- उदयपुर हवाई अड्डा पर (कुरावर पंचकल्याणक के बाद) डॉ साहब, बाबूभाईजी और डॉ सुदीप शास्त्री गुरुदेवश्री हवाई जहाज की प्रतीक्षा में थे | गुरुदेवश्री बोले- बाबुभाई ! मने स्वप्न आव्युं के समयसार नी छठी गाथा ना स्वर्ण लिखित पाटिया पूर्व थी उदित थई ने आखा आकाश में फेलाई गया | बाबुभाई जी – सम्पूर्ण भारत वर्ष में दृष्टी का विषय एवं समयसार जी का प्रभाव होगा ऐसा लगता है |

३३- स्वप्न – फागुन वदी १३ शनिवार १५-३-८० को सुरेन्द्र नगर में पिछली रात्री स्वप्न में देखा की गुरुदेवश्री स्वाध्याय मंदिर के समयसार जी का गोखला के सामने खड़े हैं और उसमे से ३ वार आवाज आई जी जिनवाणी जयवंत वर्तो | इधर सोनगढ़ में चांदी का समयसार पत्र चोरी चला गया | जिसे दुबारा लिखाकर विराजा गया | जो आज तक विराजमान हैं |

३४-

विचक्षणता-

१-कोई विदेशी आया – गुरुदेवश्री ने पूछा कितनी पगार है ? वह बोला ३०००-४००० डॉलर गुरुदेवश्री बोले दोनों मे तो बहुत अन्तर है | इतना स्पष्ट ज्ञान ना हो तो सम्यक दर्शन कैसे हो |

२-जयपुर में महेंद्र कुमार सेठी की गाड़ी में बैठकर जाते समय एक भिखारी को देखकर कहा यह असली भिखारी नहीं हैं कोई ऊंचे खानदान का दीखता हैं | ड्रायवर बोला – ये मोरबी के सेठ जवेरी का पुत्र है बाढ़ में सब कुछ तबाह हो जाने से दिमागी संतुलन खो दिया है | उस दिन गुरुदेवश्री का प्रवचन बड़ा ही वैराग्य मई हुआ था |

३-जुगराजजी कासलीवाल कलकत्ता अपने परिवार सहित गिरनार जी की यात्रा के लिये निकले थे | सोनगढ़ में आपके पिताजी को गुरुदेवश्री से मिलबाया गया था | सो वे हाथ पीछे कर के खड़े हो गए | उन्होंने प्रश्न पूछा कि – आप कौन हो ? गुरुदेवश्री – अरे ! कभी मुझे देखने वाले को देखा है ? उसे देखो जीवन बदल जाएगा | और सुनते ही चमत्कार हुआ हाथ जुड़ गए और जीवन बदल गया |

४-लब्धि बहुत थी जो जाने अनजाने में प्रगट होती थी पालेज से शादी-मृत्यु की पहली पत्रिका गुरुदेवश्री को लिखते थे | एक वार तार आया, बिना पढ़े ही बोले कुवंर जी गुजर गए क्या ?

५-पूना वाले मोहनभाई जसाणी बम्बई जाना नहीं चाहते थे, वे स्वस्थ थे परन्तु गुरुदेवश्री ने रामजी भाई से कहकर उनके लड़के को मुंबई से बुलाया ओर उन्हें भेजा गुरुदेवश्री ने रामजीभाई को बोला कि मुंबई पहुचेंगे कि नहीं ! लोनावाला-खंडाला के बीच में ह्रदयाघात आ गया, जाने के ३ घंटे बाद तार आ गया की मोहनभाई गुजर गये |

६-हिम्मतलाल जेठालाल शाह – "कानजीस्वामी महाप्रतिभाशाली विभूति हैं | उनके परिचय में आने वाला व्यक्ति अप्रभावित नहीं रहता हैं | कुशाग्रबुद्धि होने से प्रत्येक विषय के हार्द में उतर जाते हैं | स्मरणशक्ति ऐसी कि वर्षों पुरानी बातें तारीख वार सहित याद हैं | इनका ह्रदय वज्र से कठोर एवं कुसुम से कोमल हैं | अध्यात्म मस्ती उनके रोम रोम में भरी हैं | आत्मानुभव उनके शब्द शब्द में झलकता हैं | उनके श्वास-२ में वीतराग वीतराग की पुकार उठती हैं | कानजी स्वामी काठियावाड़ का रत्न हैं | काठियावाड़ कानजी स्वामी से गौरववंत हैं |"-आत्मधर्म २४-४-४४

७-बचपन से वैरागी –प्रमाणिक बुद्धि चातुर्यवंत तथा खूब ही धीर गंभीर थे |

ब्र.हरिभाई की डायरी

के कुछ महत्व पूर्ण अंश

१-१२-११-८० आसो सुदी १ मंगलवार से गुरुदेवश्री के प्रवचन बंद हो गये | बीच में प्रवचन का प्रयास किया, परन्तु पाट पर ही वमन हो जाने से बंद ही हो गये |

२-आसो वदी १४, मुश्किल से प्रवचन किया परन्तु तत्काल ही शरीर में प्रतिकूलता होने लगी | मुख्यता पेशाव न उतरने की थी तथा १०२ डिग्री बुखार था |

३-बुधवार को वचनामृत भवन का शिलान्यास होना था | प्रातः ४-५ बजे गुरुदेवश्री को तकलीफ थी | कहीं पेशाब बंद न हो जावे ऐसी चिंता होने लगी | तुरंत डॉ चंदूभाई राजकोट को बुलाया तथा आपरेशन हेतु मुंबई ले जाने को घबराहट एवं उतावली से कहा | परन्तु १ घंटे में तैयारी करनी बड़ी मुश्किल थी तथा गुरुदेवश्रीको पेशाब उतराने का प्रयास चल रहा था | अतः डॉ साहब ने समझाया की कल चलेंगे |

४-वचनामृत भवन का खात मुहूर्त हो गया | एक दिन व्यतीत हो गया | १००० लोग

आये | गुरुदेवश्री के दर्शन मात्र कर चिंता करते हुए लोट गये |

५-दोपहर में चम्पाबेन मिलने आईं | वे स्वयं बीमार थी अतः गुरुदेवश्री के साथ मुंबई न जा सकी इसका उन्हें बहुत दुःख रहा |

६-शांतिभाई जवेरी ने तत्काल सवेरे मुंबई जाकर हॉस्पिटल में पूर्ण तयारी कराई |

७-सारा दिन एवं रात खास विघ्न बिना बीती पर उद्विग्नता बहुत थी | जाने कब क्या हो जाए !

८-१३-११-८० – कार्तिक सुदी ५ गुरुवार प्रातः ५-४५ बजे गुरुदेवश्री जागे और मंदिर में सीमंधर भगवानके दर्शन किये | एक माह से चेन न थी | शरीर में बैचेनी खूब लगती थी | दर्शन स्तुति के बाद प्रस्थान किया | ७ बजे हवाई अड्डा पर दूध लिया | रनवे पर दौढ़ते हवाई जहाज के झटकों से दर्द हुआ | सीधे विमानतल से हरकिशन हॉस्पिटल ले गये |

९-नये-२ लोगों को टकटकी लगाकर देखते थे | किसी-२ से कहते "भाई ! तुम इसमें मेरा ध्यान रखना .....यह जोखिमी काम है इसलिए तुम बराबर ध्यान रखना |" ऐसा सुनने पर लोगों को आंसू आ जाते थे | काश हम गुरुदेवश्री के कष्ट बाँट सकते होते |

१०- ४ बजे डॉ कामठ को आना था | खूब इंतजार किया परन्तु नहीं आया किसी बड़े आपरेशन में व्यस्त था गुरुदेवश्री को निराशा हो रही थी बैचेनी बढ़ रही थी |

११- प्राणभाई गोग, शांतिभाई जवेरी, बलूभाई शाह, घारुभाई श्रोफ, हंसमुखभाई वोरा सभी को जोखमी का भय एवं सावधानी, ख्याल रखने को कहा |

१२- सायं ६ बजे ब्र. हरिभाई ने गाथाएं सुनाई, अपूर्व अवसर सुनाया, गाथा ३१, ३६, ३७, २०६, २०९ सुनाई |

१३- सादि अनंत अनंत समाधि सुख मा ....सुनाया |

१४- रक्त के टेस्ट अनेक प्रकार के चल रहे थे | २०-२५ तोला रक्त ले लिया गया होगा | रात्री में नींद न आई |

१५- १४-११-८० कार्तिक सुदी ७ गुरुवार – नींद न आने से काफी बेचेनी रही | कातर स्वर में बोले "अरे आ लोको ने कोई खबर नथी के आ व्यक्ति कोण छे !" सुनकर आंसू आ गये | परन्तु कोई यह भी बोला की "अरे कहाँ आ मरा !" लिखने में दुःख लगता है |

१६- बहनश्री होती तो, जरुरत है जिनकी मीठी-२ वाणी शांति देने वाली है |

१७- आज फिर ब्लड टेस्ट, एक्सरे, ठण्ड, पेशाब, कार्डियोग्राम टेस्ट आदि चल रहें थे | भोजन में ३ रोटी आदि ले रहे थे |

१८- ४ से ४-३० तक डॉ कामठ को आना था खूब इन्तजार करने के बाद गुरुदेवश्री "अरे रे आवु होय | आवी खबर न हती के आवु लांबू करे " सभी प्रयत्न कर रहे थे .....४-३० पर डॉ॰ आया अच्छे तरीके से परिक्षण किया | आपरेशन की आवश्यकत एक माह पहले भी यही कहा था | सभी चाहते थे की शीघ्रता से आपरेशन हो जाए एवं छुटकारा मिल जाए | परन्तु केंसर बढ़ गया था | पहले उसके विशेषज्ञ डॉ॰ से सला होगी | इस चक्कर में एक दिन फिर बीत गया | विशेषज्ञ डॉ॰ ने फिर चेक अप आदि किय

९- डॉ॰ कामठ की इंतजारी से बड़ा कष्ट होता था | कोई भी सफ़ेद ड्रेस पहन कर आवे तो गुरुदेवश्री उसे डॉ॰ समझने लगते और उससे निवेदन करते फिर असलीयत ज्ञात होने पर हतास गुरुदेवश्री बोले – "आ मा कदाच देह छूटी जाय तो कोई पर्वाह नहीं |" बड़ी शूरवीरता से बोले थे | सुनने पर वेवसी के आँसू आ जाते थे |

२०- १५-११-८० शुक्रवार- आज फिर खून टेस्ट हुआ | एक तरफ कमजोरी दूसरी ओर बात-२ में टेस्ट हेतु खून लेना | इस चिकित्सा की मजबूरी हैं कोई क्या करे | गुरुदेवश्री रिपोर्ट एवं आपरेशन के लिए आतुर थे | रिपोर्ट चिंताजनक (अणधार्यो) थी सच बात गुरुदेवश्री को कैसे बतावें ! परिश्थिति विचित्र थी भय न.१- पेशाब सतत भरते रहने से रक्त में इतना दूषण हो गया है कि आपरेशन में बिलम्ब करने से जहर फेल जायेगा | और बेभान होकर गुरुदेवश्री खलाश-शांत हो जायेंगे | २- रक्त केंसर होने से आपरेशन में भी पूर्ण खतरा है | ८४% ब्लड यूरिया ई.एल. ?... १.५ लाख थी | जिससे किडनी आधी असमर्थ हो गई थी | आपरेशन योग्य शक्ति गुरुदेवश्री में न थी |

२१- सोनगढ़ वजुभाई को तार दिया | गुरुदेवश्री के आपरेशन में निश्चित रूप से रिस्क हैं | अतः आपकी उपस्थिति जरुरी है | ऐसी स्थिति में निर्णय लेने की ताकत किसी में नहीं हैं | मीटिंग बुलाई गई | करे तो क्या करे ? गुरुदेवश्री बारम्बार पूछते थे | गोलमोल जबाब देने से दिलासा कब तक दी जा सकती थी | सभी परेशान एवं गुरुदेवश्री बैचेन थे | आज रात ही डॉ॰ मिलेगा अतः निर्णय शीघ्र ही लेना था |

२२- अस्पताल में एक नइ मशीन आई थी जिसमें पेशाब मार्ग, किडनी सब देखी जा सकती थी | दोपहर २ बजे का समय चेकअप का था | उसमें भी आधा घंटा लेट हो गये | गुरुदेवश्री को लगता यहाँ समय से कोई काम नहीं होता हैं | समय एवं मेरी कोई कीमत नहीं हैं | डॉ चंदूभाई समय से नहीं आया तो दुःख, मशीन खाली न थी |

गुरुदेवश्री – "अरे ! आटली वधी उपाधि " शरीर केवो उपाधि नूं घर छे | आटली उम्रे आवो रोग मने कयाथी आवे |" पेट के नीचे गोल डब्बा जैसी वस्तु के ऊपर उल्टा लिटाया और पेट को नीचे की ओर दबाया | गुरुदेवश्री से सहन नहीं होता था | परन्तु डॉ तो सीख रहे थे | गुरुदेवश्री की तकलीफ से सभी बेभान थे | लोटने पर लगभग रोते-२ कहा "अरे ! रे आटली उपाधि | मने केटली मुश्केली पड़े छे | हजी तो आपरेशन पहेलां आटलू वधु करो छो तो आपरेशन बखते तो शुं कर्शो |" गला भर आया था | चार बड़े लोगों को गुरुदेवश्री ने फिर चेताया | - सावधानी रखना मोटो जोखिम छे | अभी रात में ११ बजे तक मीटिंग चली | रिस्क है सफलता की ५०% सम्भावना | ९-३० बजे रविवार को हरकिशन ले जाने का निर्णय हुआ | रूम न. ७/४ था | उपरोक्त किडनी टेस्ट में पेशाब देखने हेतु कितनी भराती हैं ? १२ बजे से पेशाब रुकाई हर १५ मिनिट में पीढ़ा होती परन्तु ४ बजे तक रोको | अरे ! रे घोर पीढ़ा | अरे ! रे आवु धार्यु न हतो | आँखों में आंसू थे | अब डॉ चंदु मस्करी करता कि – "अही क्यां आवी मराणा |" अकल्पित दृश्य देख वैराग्य आ जाता है | ह्रदय फटता है | डॉ शीशा के पार से गुरुदेवश्री के फल मेवा की मजा उढावे था | कैसा संसार हैं !

२३- ग्राम -२ गुरुदेवश्री की बीमारी की खबर फेलने लगी | बेनश्रीकी याद आ रही हैं | गुरुदेवश्री देखते ही प्रसन्न हो जाते, ज्ञायक की चर्चा सुनते ही प्रसन्न हो जाते | परन्तु ज्यादा अवसर नहीं मिलता है | सभी को संशय था अब क्या होगा ? संयोग की अध्रुवता व पराधीनता अरे ! रे बेनश्री न मिल सके |

२४- १६-११-८० – शनिवार – अरबों की लागत वाली अस्पताल रोगिओं का चारो तरफ ढेर | पैसा वालों का प्रवेश | ५४००० रु की जमा राशी | शांत वातावरण | पेशाब में नाली २४ घंटे के लिए डाल दी गयी | अटपटी लगती है | ब्लड यूरिया की कमी होने की सम्भावना जगी | नये-२ उपाय चल रहे थे | घड़ी-२ में रक्त भर ले जाते, इंजेक्सन लगे, ऊंचाई, बजन, निदान हेतु १५ माला से नीचे ले जाते थे | पेशाब की जाँच, न जाने क्या-२ जांच चलती रहती थी | यहाँ सख्त व्यवस्था होने से लोग कम आ पाते थे | गुरुदेवश्री के सेवक हम लोग तक प्रयोजन भर के लिए पास में जा सकते थे | शेष समय पास के कमरे में रहकर गुरुदेवश्री का ध्यान रखते थे | धर्म चर्चा न दे सके | कोई के साथ बात भी न कर सके | मौन एकांत जैसा वातावरण था | शांतिभाई जवेरी के घर लालुभाई से अच्छी चर्चा चली | लोग गुरुदेवश्री के दर्शन के लिए न आवें ऐसी जाहिरात करना थी |

२५- १७-११-८० रविवार – पीढ़ा थोड़ी कम | टेस्ट चल रहे थे | क्रम से न. आने पर ही टेस्ट हो इन्तजार से अकुला कर गुरुदेवश्री बोल्या- "पहेलां मारू करवुं जोइये | ने व्यक्ति कोण छे तेनुं कोइने भान नथी |" डॉ चंदू बोले – यहाँ तो अपनी नहीं चलती है | बधा दर्दी सरखा छे | ४ रोगी पहले से बैठे हैं क्रम से ही काम होगा |

२६- रक्त जांच में ९४% से ३७ % तक सुधार देख वातावरण हल्का हुआ परन्तु वह डॉ का भ्रम मात्र था |

२७- डॉ चंदू १० मिनिट स्वाध्याय भक्ति बोले तो गुरुदेवश्री को अच्छा लगा |

२८- यहाँ दिक्कत तो बहुत है मान-अपमान कुछ भी हो सेवा तो करनी ही है |

२९- गुरुदेवश्री ने देखते ही पूछा – हरिभाई ! तमें आव्या ?
हरिभाई - जी हाँ साहेब !
गुरुदेवश्री - क्यारे आव्या ?
हरीभाई - आजे ज | आपनी साथे ज हतो |
गुरुदेवश्री - एम ! प्लेन मा साथै ज आव्या | आटलो बधो खर्च करीने ?
हरीभाई -(गला भर आया) साहेब आपनी सेवा माटे पैसा नी शुं बात – गणतरी होय | आखी जिंदगी मा आपनी साथै ज रह्यो छुं ने आ कटोकटी न प्रसंगों मा मारा थी छुट्टा केम रहेवाय |

३०- १८-११-८० सोमवार- अपूर्व अवसर गाया हाथ से प्रमोद व्यक्त किया | दूध लिया | नर्स इंजेक्सन दे गयी |

३१- भोजन के समय -पू शांताबेन आईं बोली - मैं बेनश्रीकी आज्ञा ले कर आयी हूँ | मोटर में आये होओगे ? गुरुदेवश्री ने पूछा |
शान्ताबेनश्री - ट्रेन में ?
गुरुदेवश्री - बेन की तबीयत कैसी हैं ?
ठीक है |
गुरु- एमनूं शरीर घनुं नवणुं एटले तेयो आवी न सकाय |
(दोनों को सुनने की समस्या थी | ज्यादा बात नहीं हो सकी | जितना बोलते धीमें बोलने से दोनों सुन नहीं सकते थे | कुछ कहते कुछ समझते थे |)

३२- १९-११-८०-मंगलवार प्रातः ८-३० आपरेशन हुआ | गुरुदेवश्री को संतोष एवं भय दोनों दीखते थे |

डॉ चंदू- केम साहेब ? आपरेशन नूं सांभणी ने तेमने काई बीक जेवुं लागे छे | गुरुदेवश्री - (ढिलास से) न न एवुं तो कांई नहि पण जुओ हवे शुं थाय छे | फिर ब्लड टेस्ट हुआ | आपरेशन स्थान से बाल साफ़ किये | स्वाध्याय चिंतन चलता रहा | अपूर्व अवसर पढ़ा | अंत समय त्यां पूर्ण स्वरूप वीतराग हो .....|

३३- गुरुदेवश्री का ब्लड ग्रुप ओ पोजिटिव था | ब्र. हरिभाई का भी यही था | अंतर में हरिभाई को बड़ी भक्ति थी कि गुरुदेवश्री की सेवा में मेरा शरीर काम आये | आपरेशन के बाद हेमन्त एवं मेरे हाथ का सहारा लेकर घूमते थे | परन्तु आज डॉ चंदू का सहारा लेकर घूम रहे थे | डॉ आस-पास के लोगों से जोर से बात कर रहे थे | कि दुर्गन्ध आवे छे | गुरुदेवश्री ने उनका तत्काल हाथ छोड़ दिया एवं मेरा हाथ पकड लिया था |

३४- डॉ चंदूभाई ने गुरुदेवश्री को कहा कि लोगों से ब्लड टेस्ट का कहना ओपरेशन का न कहना | बुलेटिन में गंभीर बातें छिपाई जाती थी | पहले भी कई वर्षों तक गुरुदेवश्री से गंभीर बातें छिपाई जाती थी | ९९.५ डिग्री बुखार को गिनते ही नहीं थे | विवेकहीन भक्त गुरुदेवश्री के तत्व की मजाक उड़ाते थे | दवा के लिए अंदर अंदर झगड़ा ऐसा कहें की गुरुदेवश्री के देह भिन्न चैतन्य आत्मा की बात कहाँ खो गई |

३५- हरिभाई को नींद नहीं आ रही हैं, भोजन नहीं भा रहा हैं | कल आपरेशन होना है | माला फेरते रहे | ॐ शांति जय शांतिनाथ, तथा सहजात्म स्वरूप..... जयवंत वर्तो गुरुदेवश्री जयवंत वर्तो ॐ |

३६- १९-११-८०-बुधवार – सुबह ४ बजे ब्र.हरी भाई ने स्वप्न में बेनश्री एवं एक उज्जवल कल्प वृक्ष देखा | बालक पुरुष आदि सभी बेनश्रीके पास गये | बेनश्री गीत गा रही हैं उत्सव हो रहा है | ६ बजे गुरुदेवश्री के पास जाकर देखा गुरुदेवश्री को एनिमा दिया गया | ३ इंजेक्सन दिये गये | मैंने जाकर एक भावना बोली- "सहज शुद्ध ज्ञानानंद एक स्वभाव" |

३७- ४०-५० लोगों को ही मिलने की अनुमति मिली | बहुत सारे लोग अस्पताल के बाहर ही खड़े रह जाते हैं | आज रात्रि में थोड़ी तकलीफ रही थी | २-३ वार डॉ व नर्स को बुलाना पड़ा था | डॉ कामठ से टेलीफोन पर पूछना पड़ा | ७-३० सुबह स्ट्रेचर पर ओ.टी. में ले गये | उस समय होश था | सहजात्म स्वरूप सर्वज्ञ देव परम गुरु बोलते हुए गये | हरिभाई ने चरण स्पर्श किये | सुख की सहेली है अकेली उदासीनता | ११ बजे तक आपरेशन की सम्भावना थी | डॉ कामठ ने सफलता का विश्वास दिलाया

| शांताबेनश्री एवं हरीभाई को याद आया की आप मंगल रूप छो |

३८- १० बजे से पहले गुरुदेवश्री ओ.टी. से आ गये | ओप्रेसन का स्थान शून्य किया था पूरा बेहोश नहीं किया था | होश में थे अभी दर्द नहीं था | बीच-२ में बातें कर रहे थे | सभी जगह समाचार पहुँच गये, फिर खुशहाली छा गयी | शांता बेन देखने आयीँ | ग्लूकोज की बोतल लग रही थी | खून की जरुरत नहीं पड़ी | डॉ कामठ आदि वार-वार पूछते थे की स्वास्थ कैसा हैं | गुरुदेवश्री बोले – ठीक है | दोनों हाथ जोड़कर बोले क्षमा करना डॉ आपको कष्ट दिया | अब २४ घंटे सोना था | १ बजे आधा ग्लास रस पिया | १ ग्लास से ज्यादा रस कभी लिया नहीं | ४-५ बोटल ग्लूकोज चढ़ना थी | बम्बई में ३-४ परिचित लोगों-स्नेही जनों से मिलने गए | किसी को फुर्सत नहीं धर्मी की कीमत एवं परवाह नहीं | ३ बजे गुरुदेवश्री बोले आज बेचेनी नहीं हैं | मात्र कमजोरी लगती हैं | पेशाब की नली लटकने से खटकती थी एवं थोड़ी-२ देर में उसका विकल्प आ जाता है | इस डॉ ने आपरेशन सब ठीक प्रकार से किया हैं | शाम को २ खाखरा नीरस मन से खाए | बेनश्रीको याद किया – "तेमने भाव तो घणां थाय पण आवी न शके |"

३९- 20-11-80 गुरुवार को बुखार १००.४ डिग्री हो गया | ठण्ड जैसी लग रही थी | ब्लड टेस्ट हुआ | बुलेटिन में एकंदर सारु छे कहा गया था | सायं तक १०२.४ डिग्री ताप हो गया | उकाली एवं रस मात्र पिया | उठने की ताकत नहीं थी | ३-४ दिन में ही स्वास्थ की सही खबर पड़ेगी | ब्लड टेस्ट हुआ | कामथ ३ वार देखने आया | ग्लूकोस की २ बोतल चढ़ाई | खुराक नहीं, ओपरेशन एवं बुखार से काफी कमजोरी थी | अतः दिमाग में गरमी चढ़ गयी | गुरुदेवश्री धारावाही डॉ को प्रवचन करने लगे | "आत्मा परमात्मा स्वरूप छे आ देह तो परमाणु जड़ छे पछि कहे पालेज मा मोटी दुकान छे, ४० लाख नी मुड़ी-पूंजी छे ४ लाख की पैदास छे | ३०,००,००० पुस्तक छपाई गया छे | अफ्रीका जई आव्या छिए करोड़ो रूपये नखाई गया छे | डॉ साहव एक डॉ घंटा घूमने चले गये | भावनगर में गुरुदेवश्री प्रातः बेभान हो गये थे तो भी डॉ चंदूभाई शाम को घूमने चले गये | थे सोनगढ़ से आते समय भी गुरुदेवश्री ५ बजे तैयार हो गये थे परन्तु डॉ घूमने को चले गये थे | रोज आते जाते थे पर डॉ आस पास न होने से दरवाजे पर १५-२० मिनिट के लिए रोक लिया गया | बड़ा दुःख हुआ | "

४०- २१-११-८० शुक्रवार – १००.५ डिग्री ताप-बुखार था | दिगंबर शरीर जोताएम थतु के अरे ! शरीर ना हाल केवा थई गयो छे | नए नए उपचार, इंजेक्सन से

परेशान, दवा न भाती थी | आधा घंटे की सोची थी उसके बदले में इतना लंबा हो गया | शांताबेन दर्शन कर गयीं | गुरुदेवश्री सो रहे थे | बेनश्रीकी याद आ रही थी | "मने आ शुं धार्यु तने शुं थई गयो | आवुं तो धार्युं न हतु | एम बोलता-२ धुज-२ के रोने लगे | ऐसे रोते कभी न देखा था | खुल्ली रीते रो पड़े | "यह तो शरीर है इसका ठीक न होना – होना अरे ! परन्तु कितनी उपाधि, - पराधीनता / दंड पेशाब की हाथ में बोतल, इंजेक्शन की पराधीनता, निरंतर लेटा रहना पड़े "

४१- सवेरे पेशाब की नली निकालने से राहत लगी | परन्तु पेशाब ४ घंटे तक न हुई | ग्लूकोस की चौथी बोतल लगी | ९८.४ डिग्री ताप हो गया | अनार का रस, नारियल का पानी दिया गया | ५० % स्वास्थ ठीक लगा | कल शाम चंदू डॉ ने थोड़ी गाथा सुनाई | उपयोग न लगा | १०.३० बजे रात्री को डॉ कामथ आयेंगे | पेशाब खुलकर नहीं आ रही हैं | ग्लूकोज चढाते समय नश नहीं मिल रहीं थी | गुरुदेवश्री को घनी पीढ़ा चित्त में अशांति |

४२- २२-११-८० शनिवार – १००-१०१ ताप हो गया | गुरुदेवश्री को ९९.४ बताया | झूठ बोलते हैं | डॉ चंदूभाई ने ११.३० का समय होने पर भी १२ का समय बताया | मैंने सही बताया तो नाराज हो गये | अब गुरुदेवश्री दुखी हो गये कि १२ बज गयी ओर यह बोतल पूरी न हुई | मने बेचेनी छे ठीक नथी, मजा नथी, आ वधु रज नो गज थई गयो | ११.३० बजे बेन दर्शन को आंई | ४-५ लोग ओर थे |
गुरुदेवश्री बोले - जराय ठीक नथी, लगभग रोते-२ बोले | मने तो एवो विचार आवे छे कि पानी पण छोडि दइये ने संथारो करी नाखूं | अभी बहिनश्री सुन न पाती थी अतः प्रतिक्रिया कुछ न हो सकी | गुरुदेवश्री की पीढ़ा कोई न समझे | सब दवा की धुन में रहते थे | विशेष स्वजन की जरूरत है | दोपहर में पेशाब की घणी तकलीफ, डॉ को बुलाने को कहते .....परंतु .....|
एक मोटर तैयार राख्वी जोइये जेथी डॉ ने तुरंत बुलावी शकाय | डॉ चंदू भाई को दोपहर में सोने में खलल न पड़े गुरुदेवश्री की चिंता नहीं |

४३- बलूभाई आये, गुरुदेवश्री ने मोटर रखने को कहा | बलूभाई बोले – मेरी मोटर यहीं रहती हैं अभी भी यहीं ही है | गुरुदेवश्री – एम ! तो जाओ तो अभी के अभी डॉ को बुला लाओ | डॉ मेरे पास हाजिर रहना चाहिए | बलूभाई ने डॉ चंदुभाई के सामने देखा उनकी इच्छा न थी | गुरुदेवश्री ने फिर जोर से कहा | - तुम जाओ झट डॉ ने

बुलाबी लाओ | अने डॉ ने फोन कर्यो ने लगभग एक घंटे में आव्या | अरे रे ! गुरुदेवश्री – अपामा जीवों ने योग बच्चे बंधाया था | मुंबई के मुमुक्षु तो अँधेरे में थे | गुरुदेवश्री नी खबर कोइने नथी | डॉ चंदू की बाहर से खबर-गप्पे सुनकर चले जाते हैं | अंदर आने नहीं देते थे | गुरुदेवश्री का मुख देख नहीं सकते थे | दोपहर में लालुभाई, बाबुभाई, पाटनी जी आये | संथारा का विकल्प बाहर जा चुका था | खलबली मच गयी | दोपहर में महाजन एक होकर गुरुदेवश्री के पास आये | बोले- गुरुदेवश्री ! संथारा नी बात सांभणी ने अमने बधाने बहुत दुःख थयु छे | आप एवा कोई विचार न करशो | वास्तव में तो गुरुदेवश्री के वैराग्य भाव की अनुमोदना करने लायक था | परन्तु शरीर को गुरुदेवश्री देखने वालों से यह उम्मीद कैसे होती | लालुभाई – आजे आपने अणु बम नो धडाको कर्यो | पंडितजी कहे छे के खराब दिन बीत चुके हैं अब अच्छे दिन आयेंगे | किडनी काम नहीं कर रही थी | पेशाब पूरी न निकलती थी | एक बजे तक ठण्ड लगी | गुरुदेवश्री परेशान थे | कष्ट असह्य बारम्बार कहते – अभी के अभी डॉक्टर बुलाओ | चंदूभाई कहते – फोन बिगड़ गये | कभी सो जावे | गुरुदेवश्री – "अरे ! डॉ मेरे लिए आया है तो मेरे पास रहना चाहिए | डॉ मेरे क्या काम आया | मेरा ध्यान रखना चाहिए |" डॉ चंदू – ऐसी तकलीफ छोटी -मोटी तो होती ही रहेगी | गुरुदेवश्री के आर्तनाद पर ध्यान न देता था | अपना छोटा बापा की नली निकलने का अनुभव सुनाया की वह नली निकालने से हेरान हो गये थे | कहा डॉ कामठ और कहाँ छोटा बापा और कहाँ गुरुदेवश्री | गुरुदेवश्री २ घंटे परेशान हुए | तभी अचानक कामठ आ गया | रविवार होने पर भी आ गया | कल्पना न थी |

२ मिनिट में पूरी बात समझ कर स्वयं नर्स को साधन सहित लाया, हाथ में मोजा पहन कर नइ नली दवा लगाकर लगा दी | पेशाब आराम से उतार दी | २ मिनिट में १.५ सेर पेशाब निकली | गुरुदेवश्री को आराम मिला | डॉ चंदुभाई – बाहर खड़े टाइम वरावर पहुच गया | डॉ प्रसन्न एवं संतुष्ट था | कि अचानक डॉ आ गया था | गुरुदेवश्री खुशीपूर्वक डॉ माफ़ करना गुरुदेवश्री ने २ वार कहा | डॉ शर्मा गया | अब डॉ - अरे ! आप आवा मोटो पुरुष अमने कहो छो ? डॉ चला गया | गुरुदेवश्री – डॉ को १००/- रु देना | नर्स को १०/- रु देना | सभी को रूपये देना | सभी को पीछे से इनाम देंगे अभी कोई लेता नहीं हैं | अस्पताल का खर्च १००० रु हैं | डॉ का बिल अलग से | सायं शांति भाई जवेरी आये | गुरुदेवश्री तत्काल आकर कोई बोले |

शांतिभाई (गलाभर आया) आपके लिए मैं खड़े पग तैयार हूँ | एक मोटर राखूँगा | कैसी दशा ! एक पुस्तक के लिए न कहने वाला आज सेठ से मोटर को कह रहा हैं | ५-६ बोटल ग्लूकोस की रोज चढती थी | सो एक हाथ तो जकड़ा रहता था | शरीर में कितनी ही सुई बिन्धाई गयी | गुरुदेवश्री के मन में घनी वेदना थी | अरे रे ! मारे आ शुं थयुं | मैं आवुं धार्युं न हतु | किसे कहें मन की बात | बेनश्री उढ़कर यहाँ आ जावे तो रंग जम जावे |

संथारा का सुन कर दुखी हो गयीं होंगी | तीर्थंकर - गणधर की बात याद करी, गुणों-विरक्ति, उदासीनता की प्रसंशा करी | आराम मिला | बुखार कम, ठण्ड कम, नींद आयी | गुरुदेवश्री का हाथ पकड़कर ३-४ घंटे तक ब्र. हरिभाई बेठे रहे |

एक नर्स ने धर्म की काफी बात करी थी |

४४- २३-११-८० रविवार रात के १ बजे के बाद हम लोग सोये | सुबह ३-४ घंटा गाथा पाठ सुनाया |" ध्यान बडे अभ्यन्तरे देखे जो अशरीर, शरम जनक जन्मो न धरे, पीये न जननी क्षीर |" ठण्ड का अन्तराय आ गया |

आज कामठ सहित ३ डॉ. आये उत्साह जनक रिपोर्ट दी जिससे गुरुदेवश्री प्रसन्न हो गए | गुरुदेवश्री को प्रसन्न करने के लिए पुछा कोई धर्म की बात करो न | गुरुदेवश्री तुरंत कहयुं- (कई दिन से प्रवचन नही किये थे तो उत्साह से धारावाही बोले "आ देह तो जड़ छे अन्तर आत्मा जुदी छे चेतन्य भगवान छे अेनी ओणखाण वगर वधु थोथां छे अंतर चेतन्य नी लक्ष्मी पोतामा भरी छे तेने वदले बाहर नी लक्ष्मी मा सुख मानी ने तेनी पाछळ जिन्दगी गुमावे छे ते तो भिखारी छे अमारे पालेज माँ मोटी दुकान छे अत्यारे चाले छे ४० लाख नी मुड़ी छे ४ लाख न पैदास छे | डॉ. हूँ क्यां हतो ने क्यां जवानो छुं ते ने खबर छे | डॉ. के जाने के बाद – ने प्रश्न बहु सारो पुछ्यो | डॉ. पण चकित थई गयेला के अरे आ बाबाजी मा आवी शक्ति क्यां थी आवी गई |" थोड़ी देर बाद शांता बेन आईं | गुरुदेवश्री को स्वजनसा लगा सो प्रसन्न हुए | डॉ. की चर्चा की बात बताई | गुरुदेवश्री ने पूरा प्रवचन बाबत बताया | परुन्तु बेन सुन न सके सो अनुमान से टेव प्रमाण हात हिलाकर कहें कि "सब सारु थइ जसे" बेन क्या बोले गुरुदेवश्री न सुन सके | दोनों अपनी अपनी बात कहते रहे |

२४-११-८० सोमवार- रात को ठीक से आराम हुआ, दिन अच्छा गया | शरीर में स्पंच करी, रस पीया, एक घंटा बेठे धार्मिक चर्चा की | गाथा ३२० वांची १०० तापमान था | मानो खतरा गया सभी मुमुक्षु प्रसन्न | १ खाखरा, दही, नारियल पानी,

दो बार, केला का रस खाया पीया | बिना पास वालों को रात्री ७ बजे अस्पताल से निकाल दिया तो शांतिभाई जवेरी के घर गये अच्छी चर्चा चली |

२५.११.८० मंगलवार- दरवान की कृपा से प्रवेश मिल सका | शुद्धि बाद आधा घंटा स्वाध्याय हुआ | स्वाध्याय में गुरुदेवश्री का मन कम लगा क्योंकि कमजोरी घणी थी | इतनी कभी देखी ना थी, हाथ पाँव तक न हिलते थे | मलमूत्र विस्तर में ही कराई गयी | सवेरे आधी रोटी का घोल बनाकर लिया एवं ९ बजे १ नारियल का पानी पिलाया गया | डॉ कामथ की मदद से एक सेर पेशाब निकाली गयी | कमजोरी एवं उदासी घणी छा रही हैं |

१० बजे शांता बेन आयीं | गुरुदेवश्री बोले – वरावर नथी | हूँ घेराइ गयो छुं | मुजवण पूर्वक बोलता हता – बेन बढ़ा कोर थी घेराई गयो छुं |

तीन जगह के लोगों ने विनत हो कहा- साहेब ! आप स्वस्थ होकर हमारे यहाँ चलकर आराम करना | गुरुदेवश्री – पहले स्वस्थ होने का ठिकाना तो हो | पछि आराम नी बात छे | निराशा साफ़ झलक रही थी | रामजीभाई एवं बेनश्रीकी याद की | आज भोजन में २ खाखरे दही शाग एवं २-३ पापड के टुकड़े खाए | भाता न था | इतनी उम्र में पहली वार ऐसा हुआ | जीवन भर का संयम आज मिट गया | इस तरह मुंबई में आना पहली-२ वार हुआ |

दोपहर बाद गुरुदेवश्री को सर्दी – कफ ताव एवं पेशाब की तकलीफ फिर होने लगी | २ घंटे तक लगातार डॉ को बुलाने को कहते रहें | बारम्बार दवा लेने से उकताकर गुरुदेवश्री दवा नहीं लेना चाहते थे | इतनी दवा लेने से भी कोई फायदा तो होता नहीं हैं | मारु शरीर पाछा पड़ता जाय छे | दोपहर में अनार एवं केला का रस दिया गया | डॉ चंदूभाई रस दूध पीते अचकातु नथी मजा करे छे | शाम तक डॉ की व्यवस्था न हुई | गुरुदेवश्री बोले अरे रे ! आवी दशा थई | आ तकलीफ हवे सहन नहीं थाय | चंदू डॉ मारी बात ऊपर ध्यान देतो नथी | पोतानुं अभिप्राय थी चाले छे | कहता है पेशाब इकठ्ठी होने पर निकलेगी | परन्तु मुझे तो तकलीफ बहुत हैं | ५-३० बजे पहले पेशाब निकले तो भोजन करूँ | बड़ी मुश्किल से भात का घोल पिलाया | डॉ ने १ लिटर पेशाब निकाली | तब शान्ति हुई | थोडा घुमाया | रोग की छोर न आने से सभी उदास थे | कुछ सूझे तो दादाओं से दरकार कुछ कर नहीं सकते थे | डॉ चंदुभाई खूब

मिज्वानी कर रहा हैं, रात्री भोजी बन गया हैं |

२८-११-८०-शुक्रवार – सवेरे ६ बजे गुरुदेवश्री के पास पहुंचा | आज स्पंज न कराई | दूध पीने की ताकत न बची थी | इतनी बेभान दशा पहली वार देखी थी | परन्तु पीने का प्रयास कर रहे थे | लालचंदभाई आये डॉ चंदूभाई ने उन्हें बाहर कर दिया | मैं एवं डॉ चंदुभाई दोनों ही रह गये | ग्लूकोज चढ़ रहा था | गुरुदेवश्री को न्युमोनिया एवं कफ के प्रकोप ने घेर लिया था | ५-५ सेकंड के अंतर से हजारों वार कफ निकला परन्तु चेन ना था | फेफड़े काम न कर रहे थे | कफ निकालने में काफी श्रम करना पड़ रहा था | कमजोरी के कारण कष्ट कई गुना बढ़ गया था | कफ जीभ पर आकर रुक जाता था उंगली डालकर निकालना पड़ता था | मशीन एवं नली से कफ निकालने की व्यवस्था की गयी | गुरुदेवश्री जागृत थे | श्वास लेने की कहो तो लेते थे | ब्र. चंदूभाई ब्र. हरिभाई सावधान हो गये सुनाने का काम आरम्भ कर दिया | स्पष्ट कर दिया कि गुरुदेवश्री को "आप शूरवीर हो पुरुषार्थी हो जीवन में पुरुषार्थ ही आपका मन्त्र था | " बेनश्रीने कहा की तुझे काहीं न रुचता हो तो आत्मा में उपयोग लगा, तुझे वहां रुचे ऐसा हैं.....अनंत गुणों का देश हमारा स्वदेश .....सुखधाम अनन्त सुसंत चाही .....अवश्य कर्म नो भोग छे भोगववो अवशेष रे | .....तेथी देह एकज धारिने ....जाशुं स्वरूप स्वदेश रे | (हाथ ऊंच किया) ९ से १२- ३ घंटे संबोधा तुमतो तीर्थंकर का द्रव्य हो | गुरुदेवश्री ने आँख उघाड़ी हुंकार भरा, २५ से ३० % सुधारों लागतो हतो | १२ बजे गुरुदेवश्री ने स्वयं ने आहार का याद किया | रोज याद दिलाना पड़ता था | २ खाखरा शाक पापड़ का घोल पिलाया गया | यह ठीक से पी सके थे | हरिभाई भोजन करने नहीं गये | यहीं मंगा कर किया | २ घंटे गुरुदेवश्री शान्ति से सोये | दोपहर में तबीयत तेजी से बिगड़ने लगी | हाथ पाँव काम करते ना थे | ४ बजे पाणी पीने को पूछा तो हाँ करी | परन्तु उपद्रव कफ का बढ़ न जाए सो दिया नहीं | एक गोली पीसकर प्रवाहित की | स्वयं ने मुख खोलकर गले उतारी | यह आखरी आहार था | ४-३० बजे के बाद ओक्सिजन पर रखा गया | डॉ.चंदुभाई हताश हो बाहर जाकर रो पड़े | मैं और ब्र.चंदुभाई सुनाते रहे | शान्तावेन आखिरी दर्शन कर गयी | बात चीत का अवकाश समाप्त हो चूका था | मैं गुरुदेवश्री का हाथ, हाथ में लिए हुए था |

४५- आखिरी ५ बजे फिर एक नया प्रयोग किया गया | वांह से कंणु पाणी ने मेनेजैटिस की तपास माटे पाणी खेचा | ये बहुत दुखदायक रहा | दोनों ब्र. भाई बाहर खड़े थे | थोड़ी देर में परिश्थिति बिगड़ गई थी | सभी अशरण से खड़े थे | डॉ ने हाथ

धो लिए रतनलाल गंगवाल समझ गये | सुनाने को कहा सभी णमोकार मन्त्र सुनाने लगे | श्वास की तकलीफ बढती गई | गुरुदेवश्री निष्क्रिय जैसे हो गये | नाड़ी व्यवस्थित नहीं चल रही थी | थोड़ी देर बाद डॉ ने नाड़ी तपासी .....सहायक डॉ को बीपी नापने को कहा | डॉ – अब क्या नापे ! नब्ज कमजोर पड़ गयी | बेनश्रीको अन्दर बुला लिया | सारे मुमुक्षु अन्दर आ गये | १५-२० नब्ज और चली .....फिर सब कुछ .....देखते ही देखते ५ मिनिट में सब खलाश हो गया | उनका एक हाथ मेरे हाथ में दूसरा हाथ पेट पर रखा रह गया | छाती पत्थर जैसी हो गयी | हाहाकार.....शांति ...गंभीर शांति | सारे यंत्र हटाये गए | शरीर की सफाई करके पद्मासन बिठाया गया | वहां से गुरुदेवश्री के शव को शांतिभाई जवेरी के घर नीलाम्बर में लाये जहाँ २५००० लोगों ने दर्शन किये एवं लभग १०००० लोग संग सोनगढ़ चले |

ग्रन्थ मिले

1. १९२१ में बोटाद में समयसार ग्रन्थ मिला पर वाँचा नहीं था | बोटाद में प्रवचनसार मिला | अष्टपाहुड एवं सम्यकज्ञानदीपिका भी यहीं मिली | यहीं आदिपुराण, समयसार, तत्वार्थवार्तिक पढ़ा था | क्रमबद्धपर्याय का भान भी यहीं आया |
2. १९२२ - दामनगर में श्रो दामोदर सेठ ने श्रीसमयसारजी ग्रन्थ दिया |(यह ग्रन्थ १९१८ में प्रकाशित मनोहरलाल जी कृत था) ग्राम के बाहर तलाब के पास गहरे गड्डे में बैठकर पढ़ने लगे | १२-१३ वर्ष स्थानक में ही वांचा |
3. १९२७- दामनगर में गुरुदेवश्री का चातुर्मास हुआ वीरजी भाई ने रहस्य पूर्ण चिट्ठी दामोदर सेठ के हाथ से भेजी पर मिली नहीं |
4. अमरेली में एक माह रहे यहाँ रहस्यपूर्ण चिट्ठी मिली | २ साल पढ़ने के बाद हाथ से लिख लिया था |
5. १९२८ दामनगर - यहीं द्रव्य संग्रह ग्रन्थ मिला एवं उसे वांचा | राजकोट में मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रन्थ मिला | पढने में मग्न हो गये, खाने-पीने की सुधि भूल गये | पूरा पढ़ा परन्तु लिखकर न रखा | संग ग्रन्थ लेकर नहीं चलते थे |

6. १९२८- वगसरा ग्राम – में मोक्षमार्ग प्रकाशक का ७ वा अधिकार अपने हाथों से कच्ची पेन्सिल से लिख लिया | जो आज तक सोनगढ़ में सुरक्षित रखा हुआ हैं |
7. सन १९३० अमरेली – चातुर्मास में समयसार जी प्राप्ति के ८ वर्ष बाद पहली वार जाहिर सभा में प्रवचन हुए |
8. सन १९४४ में षटखंडागम में जयधवल का पहला भाग मिला |

9. जिन खोजा तिन पाइयां, गहरे पानी पेठ |
   किसका वचन उस तत्व की उपलब्धि में शिवभूत है |
   निर्दोष नर का वचन रे वह स्वानुभूति प्रसूत है ||
   १०- पंचाध्यायी ग्रन्थ मिल चुका था -१९३७ में |

जन्म जयंती

जन्म दिन – बेशाख सुदी दूज दिनांक २१ अप्रेल १८९० सोमवार

आयु	संवत	तिथि/ दिन	स्थान	आयु	संवत	तिथि/ दिन	स्थान
४५	१९९०	१५-४-५-३४ रवि-मंगल	मनाई नहीं	६९	२०१४	२१-४-५८ सोम	सु नगर
४६	१९९१	४-५-३५ शनि	मनाई नहीं	७०	२०१५	९-५-५९ शनि	फतेपुर
४७	१९९२	२३-४-३६ गुरु	मनाई नहीं	७१	२०१६	२७-४-६० बुध	उमराला
४८	१९९३	१२-५-३७ बुध	मनाई नहीं	७२	२०१७	१७-४-६१ सोम	सोनगढ़
४९	१९९४	२-८-३८ सोम	मनाई नहीं	७३	२०१८	६-५-६२ रवि	राजकोट
५०	१९९५	२१-४-३९ शुक्र	मनाई नहीं	७४	२०१९	२५-४-६३ गुरु	लाठी
५१	१९९६	९-५-४० गुरु	मनाई नहीं	७५	२०२०	१३-५-६४ बुध	मुंबई

५२	१९९७	२८-४-४१ सोम	मनाई नहीं	७६	२०२१	३-५-६५ सोम	राजकोट
५३	१९९८	१७-४-४२ शुक्र	मनाई नहीं	७७	२०२२	२२-४-६६ शुक्र	सोनगढ़
५४	१९९९	६-५-४३ गुरु	मनाई नहीं	७८	२०२३	११-५-६७ गुरु	बोटाद
५५	२०००	२४-४-४४ सोम	मनाई नहीं	७९	२०२४	२९-४-६८ सोम	बीछिया
५६	२००१	१३-५-४५रवि	मनाई नहीं	८०	२०२५	१८-४-६९ शुक्र	मुंबई
५७	२००२	३-५-४६ शुक्र	मनाई नहीं	८१	२०२६	७-५-७० गुरु	भावनगर
५८	२००३	२३-४-४७ बुध	मनाई नहीं	८२	२०२७	२७-४-७१मगल	पो.बंदर
५९	२००४	११-५-४८ मंगल	सोनगढ़	८३	२०२८	१५-४,३०-५-७२ शनि, मंगल	फतेपुर
६०	२००५	३०-४-४९ शनि	राजकोट	८४	२०२९	४-५-७३ शुक्र	कलकत्ता
६१	२००६	१९-४-५० बुध	सोनगढ़	८५	२०३०	२४-४-७४ बुध	मुंबई
६२	२००७	८-५-५१ मंगल	सोनगढ़	८६	२०३१	१३-५-७५ मंगल	अहमदावाद
६३	२००८	२८-४-५२ शनि	सोनगढ़	८७	२०३२	१-५-७६ शनि	दादर
६४	२००९	१-१५-५-५३ शुक्र	सोनगढ़	८८	२०३३	२०-४-७७ बुध	जामनगर
६५	२०१०	४-५-५४ मंगल	सुरेन्द्रन.	८९	२०३४	९-५-७८ मंगल	घाटकोपर
६६	२०११	२४-४-५५ रवि	सोनगढ़	९०	२०३५	२८-४-७९ शनि	मुंबई
६७	२०१२	१२-५-५६ शनि	सोनगढ़	९१	२०३६	१७-४-८० गुरु	मलाड
६८	२०१३	१-५-५७ बुध	अहमदावाद				

अधिक मास का व्योरा

१-१८९६,१९१५ (१६-४-१५ शुक्र एवं १६-५-१५ रवि), १९३४, १९५३, १९७२।

२-जन्म जयंती को कितने ग्राम में कितनी जयंती मनाने का अवसर मिला

स्थान /ग्राम का नाम	जन्म जयंती की

	संख्या
सोनगढ़	९
मुंबई	७
अहमदाबाद	२
सुरेंद्रनगर	२
फतेपुर	२
लाठी	१
बिछिया	१
राजकोट	३
कलकत्ता	१
पोरबंदर	१
उमराला	१
बोटाद	१
भावनगर	१
पालेज अधिक मॉस वाली ३४ जन्म जयंती मानाने का अवसर मिला	१

कुल ९६ जन्म जयंती मनाने का अवसर मिला |

विशेषताएं

१-पहली वार जन्मजयंती मनाने का सोभाग्य मिला सोनगढ़ को ही ५९ वी जन्म जयंती ११-५-४८ मंगलवार के दिन रात्री को ५९ फानूस-लालटेन स्वाध्याय मंदिर में चारो ओर टांगी गई | दीपावली जैसा दृश्य देख कर सभी को आनंद हो रहा था |

२-सोनगढ़ में स्वामीजी की ६१ वी जन्म जयंती १९-४-५० बुधवार को मनाई गई | इस समय बिजली का प्रकाश आ गया था | सारा सोनगढ़ जगमग हो रहा था |

३-२८-४-५२ शनिवार को ६३ वी जन्म जयन्ती सोनगढ़ में मनाई गई | ६३ फुट ऊंचा मान स्तम्भ बनाने का निर्णय लिया गया |

४-पालेज में ६४ वी जन्म जयंती १-५-५३ शुक्रवार को मनाई गयी | इस वर्ष २ वार जन्म जयंती मनाई गई क्योंकि अधिक मास होने से १५-५-५३ को सोनगढ़ में भी मनाई गई |

५-६६ वी जन्म जयंती सोनगढ़ में २४-४-५५ रविवार को मनाइ गई | सीमंधर जिनालय का विस्तार कर दूसरी मंजिल बनाने का फेसला किया गया |

६-२५-४-१९६३ गुरुवर को लाठी में पूरे ग्राम का श्रृंगार कर धूम-धाम से ७४ वि जन्मजयंती मनाई गई थी विशेष यह था कि ७४ बैलगाड़ियों का जुलूश निकला गया था | लाठी में जिनमन्दिर में नया शिखर भी बनाया गया था |

७-७६ वी जन्म जयंती ३-५-६५ सोमवार को राजकोट में मनाई गई ७६ मंगल कलशों से भव्य स्वागत किया गया |

८-२२-४-६६ शुक्रवार को ७७ वी जन्म जयंती पर बेनश्री ने सोनगढ़ में गाया था –

"आज मारे आंगडे सोना समो रे सूरज ऊगियो रे |"

इसे सुनकर गुरुदेवश्री को स्वानुभूति सूरज की याद आई वे प्रवचन में गाने लगे –

मारा अंतर मा स्वसम्वेदन थी, समकित सूरज ऊगियो रे |

चेतन ना अंतर मा स्वसम्वेदन थी, समकित सूरज ऊगियो रे |

सारी सभा गद-२ - रोमांचित हो गई | बेनश्री ने अपने व्यय से एक तरफ सिद्धचक्र विधान रचाया तो दूसरी तरफ ७७ सिंहासन, ७७ ध्वज ७७ चंवर,

स्वस्तिक, ७७ दीपक, ७७ आम से पूरा पांडाल सजाया गये | ठीक जन्म समय पर प्रातः ५ बजे बाजे बजने लगे | सभी को आश्चर्य हुआ |
१९६१ में रिकॉर्डिंग प्रारम्भ हुआ | १९६६ से माइक आया | अभी तक रिकॉर्डिंग बिना माइक के हुए थे |

९-७९ वी जन्म जयंती मुंबई रत्न चिंतामणि महोत्सव |

१०- २९-४-६८ सोमवार को गुरुदेवश्री श्री की ७९ वी जन्म जयंती बीछिया में मनाई गई |

११- १८-४-६९ शुकरवार ८० वी जन्म जयंती मुंबई रत्न चिंतामणि महोत्सव मनाया गया | ८० फुट ऊंचा परमागम मंदिर बनाने का निर्णय लिया गया |

१२- २७-४-१९७१ मंगलवार को ८२ वी जन्म जयंती पोरबंदर में मनाई गई | इसी वर्ष ज्योतिषी द्वारा गुरुदेवश्री की आयु ८४ या ९० वर्ष घोषित की गई थी |

१३- पृ- ८७ बोल २६१- मलाड में ९१ वी जन्म जयंती समय.. जाने पूज्य गुरुदेव समवसरण में बेठे हों | देवी विमान लटकता हता | जाने के देवी विमान में और समवशरण में जाना होय ! वे सब बातें मानो स्वर्ग जाने समवशरण में जाने की पूर्व सुचना ही दे रहा हो |

१४- ८७ वे दादर जन्मोत्सव अवसर पर चांदी के सिंहासन पर विराजे सभी को चांदी की कटोरी एवं पैड़ा दिया था | ८७ कमल पर से गुरुदेव श्री पधारे मंडप में | कमल आकार का मंडप बनाया था ट्रेफिक के आबाज सुनाई न दे ऐसा प्रबंध किया गया था |

१५- ९-५-७८, ८९ वी जन्म जयन्ती मुंबई घाटकोपर में मनाई गई | २ दिन का कार्यक्रम था परन्तु पांडाल जल गया | फिर यह कार्यक्रम सर्वोदय हॉस्पिटल के हाल में किया गया |

१६- २८-४-७९ को ९० वी जन्म जयंती मुंबई में मनाई गयी | परमागमों पर हुए प्रवचनों को प्रकाशित कराने का निर्णय लिया गया |

१७-

१८- पृ- ५९ बोल १५८- भजन

सूनां ते मंदिर, सूनां ते माणियां
मारा सूनां स्वाध्याय मंदिर, सूनां जिनेन्द्र दरबार ||
वांचन सूनां, पूजन सूनां
सुनूं देखे मने सोनगढ़ गाम रे ||
सूनां स्वाध्याय मंदिर सूना अभ्यास धाम ||
मारी भक्ति सूनी, भजन सूनां
सूनां मारा हृदय नां धाम रे
गुरुदेव विना सोनगढ़ गाम सूनां देश परदेश सूनां
शिविर नां धाम सूनां अभ्यास धाम सूनां
वधूं सुनूं ...हिन्दुस्तान नां सूनां धाम ||

पृ- २६ बोल ५८- अमृत वरस्या रे पंचम काल मां यह गाते हैं न हम लोग इसे बदल कर गाते थे अमृत वरस्या रे रवि ना प्रभात मां | रविवार रात्री अमरेली के उपाश्रय में ॐ नाद आया था दिव्य ध्वनी सुनाई दी थी | बाजे बजते थे वगेरह -२ | गुरु गुण संभारणां से साभार - बहिन श्री के मुख से निकले वचनों का संग्रह

१९- १९५३ से गुरुदेवश्री स्टील का पात्र रखने लगे थे | ब्र.हीराबेन इंदौर ब्र.दुलीचंद जी ने उत्तर एवं पूर्वी भारत में गुरुदेवश्री यदि पात्र में आहार करेंगे तो दिग समाज में घोर विरोध होगा एवं तत्व-प्रचार न हो सकेगा | अतः थाली में भोजन लेने का आग्रह किया | गुरुदेवश्री ने तत्काल सहजता से स्वीकार कर लिया | और उन्हीं के घर से भोजन प्रारम्भ कर दिया | जैन तत्व

प्रचार- आ.कुंदकुंद की वाणी एवं महावीर शासन की प्रभावना करने के लिए उन्हें सर्व शर्तें मंजूर थी |

२०- श्रावण सुद १ की सायं गुरुदेवश्री से प्रथम यात्रा की स्वीकृति मिली |

२१- परिवर्तन के १८ वर्ष बाद – ब्र. छोटेलाल अधिष्ठाता इंदौर आश्रम ने लकड़ी के पात्रा छुड़ाकर स्टील के वर्तन दिए |

२२- भारत में संभवतः सर्व प्रथम मगशिर वदी ८ को आ.कुन्दकुन्द स्वामी की आचार्य पदारोहण जयंती सोनगढ़ में मनाई गई | सभी मुमुक्षुओं एवं गुरुदेवश्री का आनंद देखते ही बनता था |

जयपुर स्मारक खुलने का इतिहास

1970 से पहले परमागम मंदिर बनाने की बात चल रही थी गुरुदेव श्री अधिक धन खर्च करने को उत्सुक नहीं रहते थे | अतः ३ लाख में बन जाएगा ऐसा कह कर अनुमति ली | लोगों ने आपत्ति ली की इतनी कम राशी छोड़ २५लाख में भी नहीं बनेगा | बाद में कितना ही लग जाए परन्तु पहले इतना ही बताना चाहिए |

तब डॉ साहब ने चिमन भाई ठाकरसी से कहा ३ लाख दे दो तो मैं तुम्हें जीवंत परमागम मंदिर दे दूंगा | बात आई गई हो गोई | जयपुर में बात चली कि यदि विद्यालय खोलना है तो स्थान आदि का क्या होगा ? गोदिका जी बोले मैं जगह दे दूंगा | पैसे का क्या होगा ? बाबुभाई जी फतेपुर बोले इसकी जिम्मेदारी मेरी है | "पढाने मैं तैयार हूँ |"- डॉ साहब बोले |

अब गुरुदेव को कैसे तैयार किया जावे इसकी किसी को गंध भी नहीं मिलना चाहिए | गुरुदेव पहले सुनी बात का विशवास ज्यादा करते थे | शशिभाई ओर डॉ साहब हवाई जहाज से भावनगर पहुंचे | और गुरुदेव को विद्यालय का प्लान बताया | वह जयपुर में ही खुल सकता है | कारण कि इसकी शिक्षा की सुविधा मात्र राजस्थान में ही हैं |

प.फूलचंदजी सिद्धान्त शास्त्री, बीना म.प्र.

१- इंदौर में रमेश चंद जी बांझल जी बीमार हुये ज्ञात हुआ तो तत्काल देखने अस्पताल गये | लोगों ने रोकने की कौशिस की, आप थक जायेंगे शाम को भोजन भी करना है | बोले भैया बीमार हो तो मैं कैसे रुक सकता हूँ | वहाँ बोले – गृहस्थ हो खींच न करना, दवा ले लेना |

२- प. रतनचंद जी एवं आश्रम के ब्र. ने सहयोग न दिया | बनारस से ले ठे इन्हें यह कह कर कि बुजुर्ग अंधी पत्नी और वे एक संग रखेंगे परन्तु यहाँ अलग अलग रखा | फिर संग भी रखा परन्तु चले गये | पत्नी के साथ जबानी भोगी अब उसे कैसे छोड़ सकते है |

३- प. उत्तम चंद जी सिवनी – आर्थिक स्थिति ठीक न होने पर रिश्तेदार था सामाजिक सहयोग से पढाई पूरी की शादी के समय कोई ४०००० नगद दे रहा था परन्तु नही लिये दूसरी जगह ५०००रु लेकर शादि के बाद ज्ञात हुआ कि शिक्षक ने सोना मकान गिरबी रखकर शादि की थी तो वे भी लोटा दिये /-प. राजेन्द्र कुमार जी जबलपुर /

डॉ हुकमचंद भारिल्ल

१-अमेरिका में तत्व प्रचार पत्थर में बीज बोने जैसा साहस है /

२- सं १९७० में सारे बाल बोध आदि भागों की रचना पढकर सुनाये थे गुरुदेवश्री को /

३-सन १९७१ में ७ वा अधिकार गृहीत मिथ्यात्व का वर्णन है डॉ साहब ने कहा तो गुरुदेवश्री ने प्रसंशा की थी / बोले "मुझे भी खबर नहीं थी" /

१- शास्त्र छपाने वाला थकेगा कि जलाने वाला / हम अपना कार्य करते रहें /
२- कार्य करने वालों की हीरक जयंती मनने की परम्परा चले इसमें गलत क्या है /
३- मैंने समाज के लिये नहीं भगवान बनने के लिये पण्डित तैयार किये है /
४- छोटी मम्मी श्रीमती गुणमाला भामती जैसी सहयोगीनि हैं /
५- संस्था चलाना लोहे के चने चबाना है – सहनशीलता, मान की मंदता /
६- डॉ सा. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी हैं आठ अंग का पालन सहज हैं / शुद्ध प्रकाशन, नियमित चर्या, आत्मसात करके लिखना / 'शास्त्री' पद को अपनी प्रतिष्ठा से प्रतिष्ठित किया /
७- एक कर्मचारी जोअभी भी कार्यरत है ने डॉ सा. के खिलाफ बोला, पाटनी जी ने नोकरी से निकल दिया परन्तु डॉ सा ने उसकी इमानदारी कार्य क्षमता का मान रखते हुये उसे पुनः रख लिया / मान नहीं प्रयोजन पर दृष्टि रखने लायक है /
८- स्वयं की सन्तान को मार्गदर्शन – परमात्मप्रकाश अध्यात्म प्रकाश १६-१४ वर्ष के हुये तो कहा छिपकर कोई कार्य न करना / "तुम कहोगे तो भंगन से शादि करा दूँगा /" ऐसा कहकर समझाने का अंतिम अवसर हाथ में रखा /
९- आज भी बोम्बे में ५० सदस्य किसी न किसी के घर पर रविवार को मिलते हैं / हेल मेल पूर्वक रहते हैं /
१०- सारे परिवार को शास्त्री पढ़ने की प्रेरणा दी / अद्वितीय परिवार है /
११- अध्यात्म प्रकाश जी भी अपनी बच्चियों में शील के संस्कार दे रहे हैं /

१२- संस्था- त्रिमूर्ति – पाटनी जी बाबूभाई जी, डॉ साहब |

१३- परम्परा- बाबुभैजी एवं खेमजी भाई प्रवचन करके लोटते समय आने जाने का किराया नहीं लेते थे | तो डॉ सा. ने कहा जो विद्वान किराया लेंगे उन्हें हीनता का अनुभव होगा सभी परिस्थितिओं के विद्वान होते हैं सभी का ध्यान रखना चाहिये | जो असमर्थ होंगे वे प्रवचन में जाने से कतराएंगे इससे जी शासन की प्रभावना की व्यापकता में कमी आएगी | किराया लो फिर भले ही दान दे देना | दोनों ने किराया लेना प्रारम्भ किया |

१४- प्रेरक प्रसंग – न्याय प्रथम पास करने पर वर्णीजी को हाथी पर निकाला गया था | तब विद्वान बनने का लोभ जागा था | पिताजी ने भी ठाना था कि ऐसा ही विद्वान बनाऊंगा अपने पुत्रों को | डॉ साहब के बाद कोई न्याय तीर्थ नहीं हुआ |

१५- लोभ – रामचन्द्र शुक्ल का निबन्ध "अच्छी बात की प्रशंसा करने का लोभ नहीं करना |"

१६- सन १९८५ में ६०००० रु की थैली देवलाली में भेट की गयी थी ३ लाख रु परिवार ने जोड़कर विद्वान का सम्मान करने का फंड बनाया था | डॉ सा. ने ११०००/- रु एवं प्रशस्ति शाल भेट करते हैं |

१७- भोपाल में २५०००/- रु सम्मान राशि लोटाई तो अन्य विद्वान भी सम्मान राशि लोटाने लगे, डॉ. साहब यह नहीं चाहते हैं |

१८- सर्व श्रेष्ठ माँ जीजाबाई, रामदास जैसे गुरु साहूजी जैसा समाजसेवक अपना सर्वस्व दे दिया |

१९- गजपंथा प्रतिष्ठा समय ३२ पल्स होने पर भी प्रवचन दिये थे |

२०- साल मे ६ माह घूमते हैं एवं १२ से १५ घंटा प्रवचन सम्पादन/अनुशीलन लिखते हैं |

२१- क्षयोपशम की इतनी महिमा तो क्षायिक भाव की कितनी होगी |

२२- छात्र जीवन में डॉ. साहब रात्रि ८ बजे सो जाते और रतनचंद जी २ बजे रात तक पढते थे | ये तेज पढ़ाकू था लड़ाकू भी माँ के कहने से पकड़ने दोड़कर पकड़ लेता तो मुझे काट लेता था | चाचाजी कहते थे कि इनकी भी जरुरत हैं |- रतन चंद जी भारिल्ल

२३- मेरा जन्म पहले इस लिये हुआ कि मैं छोटे भाई के लिये गर्भ शुद्धि कर सकूँ |

२४- हुकम न होता तो मैं बडोदा स्वामी में ही रह जाता |देवलाली में रतनचंद्र जी भारिल्ल |

२५- पू. गुरुदेव श्री ने दशलक्षण पुस्तक में उत्तम त्याग प्रकरण में संप्रदान शक्ति अगले संस्करण में जोड़ने की सलाह दी थी |

डॉ साहब के संस्मरण

मेरे विचार

१- डॉ साहब की नीति मात्र गुरुदेव को जीवित रखने की नहीं है वे गुरुदेव को महावीर भग. के शासन के रूप में समग्र जगत के लिए बनाए रखना चाहते है | वे संकीर्ण विचार के खिलाफ हैं |

२- वे कभी तोड़ते नहीं की वहाँ मत जाओ / वे जोड़ते हैं, चाहे मुनि पक्ष हो या कोई भी अन्य ग्रुप / इसीलिए अनेकों मंच पर मुनियों या मुनि पक्ष के साथ फोटो आदि दिखाई देते है जिसे आलोचक ख्याति लोभ का आरोप लगाते हैं / उन्हें लगता है की उन्हें ख्याति की कोई कमी नहीं है / कई बार मुनि पक्ष को जोड़ने के लिए पू.गुरुदेव के फोटो भी ग्रन्थ से हटा कर बेचते हैं / क्योंकि मात्र फोटो के आग्रह से यदि कोई पढेगा ही नहीं तो वह इस तत्व एवं प्रकारांतर से पू. गुरु.श्री से दूर ही रह जायेगा / स्वयम के फोटो छापने का भी यही कारण है कि वे विख्यात हैं / आरोप लगाया जाता है कि वे गुरुदेव को मिटाकर अपना नाम जमाना चाहते हैं /

३- हीरक जयंती – पुण्योदय वश मनाई गयी / इसके माध्यम से भी सारे भारत में तत्व प्रचार करना चाहते हैं / उन्होंने कोई भी राशि नहीं ली /

४- दूसरों (विद्वानों) का साहित्य नहीं छपाते हैं और ना ही बेचने की जिम्मेदारी लेते हैं / वे अपने पुत्री-पुत्र का साहित्य भी स्वयम नहीं पढ़ते, संपादन विक्रय की जिम्मेदारी नहीं लेते /

५- भोजन के लिए सब्जी भी आती है तो उसका प्रतिदिन बिल संस्था में चुकाया जाता है / लड़के भी कोई साहित्य मंगाते हैं तो उसका बिल जमा होता है / सबसे महत्वपूर्ण पद पर होकर भी सबसे ज्यादा लेखन प्रकाशन करने पर भी उनका वेतन २५००० से भी नीचे हैं / रतन चन्द्र जी भारिल्ल का वेतन और भी कम है /

६- केंची वाले भाव लवण समुद्र में कहीं समा जाएँ सभी के चित में सुई धागे वाले भाव ही मात्र सदा वर्तमान रहें / इसी भावना से शुभम भूयात /

७- बीटो पावर का स्वभाव – संस्था की छत पर खुली त्रिमूर्ति का विराजमान होना / ऐसे ही प्रचार-प्रसार की नीति में बदलाव मंजूर नहीं किया, बड़े से बड़े दानी, विद्वान से वे दबे नहीं / परिवार, बड़े भाई, शिक्षक से भी युवावस्था में नहीं दबे तो अब तो वृद्धावस्था में दबने का कोई काम ही नहीं हैं / उनकी सबसे बड़ी खूबी है खूब विचार कर निर्णय करना और फिर सारी प्रतिक्रियाओं का सामना करते हुए भी नहीं झुकना / उन्होंने किसी से समझोता नहीं किया / ऐसा पू.गुरुदेव के समय भी होता रहा /

८- <u>जीव आकाश में स्थाई रूप से रहता है संसार – मोक्ष में ठहरता है / आकाश का निमित्त स्थाई है जबकि धर्म अधर्म का निमित्त अस्थाई होता है / रहना = स्थाई / ठहरना = अस्थाई /</u>

९- जगदीश शास्त्री पद्मावती पोरवाल डॉ साहब के सहपाठी थे ईशरी में हेड मास्टर थे आकाशगामी विद्या सिद्ध करने के चक्कर में शेर ने खा लिया था /

१०- अयाचक वृत्ति - स्मारक में काम करते हुए प्रथम ६ माह तक वेतन ही न मिला / फिर भी कार्य में सुस्ती नहीं दिखाई, स्वयं ने स्टाफ के आभाव में सारे काम किये / संघर्ष शीलता की निशानी है /

११- <u>जयसेनाचार्य ने व्यवहार आचरण के वर्णन को पाप अधिकार सिद्ध किया है , क्योंकि स्वभाव से पतित करता है /</u>

१२- अनुशीलन = रसोईवत है एक ही स्थान पर सारे सन्दर्भों का स्वाद चखा जा सकता है / डॉ साहब सूत्र धार की तरह दिखाई देते हैं और सारे सन्दर्भ नृत्य करते से दीखते हैं /

१३- समयसार = सोनगढ़ = स्वामीजी = डॉ साहब स्वतः याद आते हैं /

१४- आप में बनारसी दास जी जैसे कवि एवं जय चन्द्र जी जैसे टीकाकार के एक साथ दर्शन होते हैं /

१५- १७ साल की वय में पश्चाताप लिखा और ७१ में छपा / अद्भुत संयोग है /

१६- हमारे परिचित होने से उनकी कीमत नहीं भासती है परन्तु समय उनका मूल्यांकन अवश्य करेगा / हमारा शोभाग्य है कि हम उनके समय में हैं /

१७- लेखन कर्तत्व – उपन्यास, पद्य,गद्य, यात्रा वृतांत, कथा, टीका, जीवनी, पी.एच.डी., बालबोध लेखन, ३२ एकाकी, पत्रकारिता, संस्मरण, संपादन, खंड काव्य, पूजा, अप्रकाशित-वैराग्य नेमी स्तुति, अनुबाद, नयचक्र, दशलक्षण, क्रमबद्धपर्याय, -मौलिक ग्रन्थ, ३ ग्रंथों पर अनुशीलन, (सब और से स्पष्टीकरण देने के लिए समयसार अनुशीलन में ३५५५ प्रश्न उत्तर दिए ।) गुरुदेव के मंतव्य स्पष्ट करने का काम, देश-विदेश में मुमुक्षु मंडल की अंतर-बाहर की कठिनाइओं का सर्वमान्य समाधान खोजना / 'गोली का जबाब गाली से भी नहीं' पुस्तक ने उनकी रीति–नीति को स्पष्ट कर दिया है / नागपुर की एवं हस्तिनापुर के प्रसंग में आपका धैर्य एवं स्थिरता देखते बनती थी /

१८- 'दशलक्षण' विरोधियों द्वारा सर्वाधिक पढ़े जाने वाला ग्रन्थ है /

१९- क्रमबद्ध पर्याय २१ वर्ष की उम्र में चर्चा में मिल गया था, गुरुदेव एवं सोनगढ़ से उस समय तक अपरिचित थे / २३ वर्ष चिंतन करने के बाद इस विषय पर लेख लिख क्र स्वामीजी को दिखाया एवं आत्म धर्म में छपाया /

२०- डॉ साहब के अनुसार- अष्ट सहस्त्री में सब कुछ है जो यहाँ नहीं है वो कहीं भी नहीं मिलेगा /

२१- उनकी तत्वार्थसुत्र की टीका की इच्छा है /

नटू भाई बडोदा

की जबानी .....संस्मरण –देवलाली दि.जून १२१०

२६- पालेज में ३० सदस्यों का भोजन एक साथ बनता था / ५ परिवार साथ -२ रहते थे /

१- रतिभाई नागरदास(मियांगाम अनाज का व्यापार करने चले गये/गुरुदेव के मित्र थे साथ ही दीक्षा लेना चाहते थे परन्तु उनको कमरे में बंद कर दिया गया था),

२- हरगोविंद नागरदास(वर्तन की दुकान) (दोनों भाईओं का परिवार)

३- सूरत के फवा भाई मनहर भाई के पिता /भविष्य के विकास के लिये फावाभाई सूरत चले गये कबाड़े का व्यापार /

४- कुबर जी भाई /

५- मोतीचन्द भाई अफीम केस के आघात से चाल वसे /

६- बोम्बे का केशर व्यापारी अपनी इकलोती कन्या गुरुदेव को देना चाहते थे /पालेज में आश्चर्य छा गया था /

७- ७ मामा थे सबही के घर के मकान थे परन्तु किसी के भी सन्तान न थी /

८- गुरुदेव की स्मृति अद्भुत थी – कर प्रसंग का विवरण वर्ष सहित याद था |

९- कुंवर जी भाई १.३० बजे गुजर गये तार भेजा गुरुदेव श्री प्रवचनोंपरान्त स्वयमेव ही कहा "कुंवरजी भाई गुजरी गया" |

१०- परिवार के प्रत्येक प्रसंग का तार गरुदेव श्री को अवश्य दिया जाता था |

११- २० रु तोला सोना तथा ४ रु टीन तेल था |

१२- फाइवा का नाम ज्ञात नहीं है |

१३-

जादव जी भाई जी की २ संतान

कुंबरजी भाई एवं शिवलाल भाई (सन्तान रहित) २ भाई

(जन्म)१८८६

१- कांताबेन

२- कंचन बेन -८१ की उम्र में गुजरीं , साल में ४ माह सोनगढ़ जाती थी |

३- मनसुख भाई (मई २०१० में मृत्यु)

४- सरस्वती

५- हंसमुख भाई – मेट्रिक, मेडिकल स्टोर्स,अनाज की दुकान की, ७८ की उम्र में गुजरे |

६- नटु भाई इंटर पास ७५ की आयु २०१० में इनके २ पुत्र १- धीरज एम् कॉम बडोदरा २- प्रशांत न्यूयार्क अमेरिका कंप्यूटर जॉब |

पालेज में १०० रु की पूंजी एवं दुकान कुंवरजी भाई ने लगाया था |
१३ वर्षीय कानू पिताजी के साथ व्यापार में लगे थे |
खुशालभाई एवं उनकी श्रीमतीजी भी आई थी, अनाज का व्यापार करते थे कुंवरजी भाई १५-१६ सालके थे |

७- प्रो .मनुभाई कामदार कोचिंग क्लास से २ लाख रु कमाते थे वे तो मुफत भाई के घर शांति सदन में ठहरते भोजन करते थे

८- पालेज दुकान दीपचंद जी का पुत्र जयंती भाई की पुत्री सविता वेन ने केस किया पू गुरुदेव ने नटु भाई को कहकर केस समाप्त कराया था १०००० /- रु सविता वेन को दिये , वह दुकान गंगावेहन ने पूर्व में नटू भाई के नाम कर दी थी

९- घाटकोपर – रमेश भाई मणिकांत भाई भूपत भाई रमेश भाई तुर्खिया ध्यान मंडली के रूप में प्रसिद्ध थे , गुरुदेव श्री ने प्रवचन में प्रसंशा की , बाबूभाई जवेरी जवेरी ने बुराई की , गुरु. – छोकरा स्वछन्द हो

गये है सबही ने क्षमा मांगी खुलासा किया कि सिद्ध भगवान अतृप्त हैं तब ही तो स्वरूप से नहीं खिसकते /-परमात्म प्रकाश गाथा दोहा ५३ सिद्धों को शून्य –जड़ भी कहा

१०- द्रव्य संग्रह टीका सिद्ध जड़ हैं ब्रह्मदेव सूरी कृत टीका पुद्गल कि तरह विषय सेवन से रहित है /गाथा १० पृ ३३

११- स्वामीजी के समय दान परम्परा – छावडा जी ने छावडा जी ने अपेक्षित दान आने का वाद लेने से मना कर दिया देना हो तो सत साहित्य की कीमत कम कराने में डॉ /

१२- राजकोट में स्थानकवासी संम्प्रदाय के अग्रणी गुरुदेव के कट्टर विरोधी रामजी शामजी विराणी थे जो समाचार पत्र में भी विरोधी लेख लिखते थे /

१३- बम्बई में मस्जिद बंदर पर जनता आई क्लिनिक थी उसमे पारसी डॉ प्रतिदिन २ बजे आता था परंतु गुरु की सेवा में प्रातः ६-३० पर आता था / गुरु. का नम्बर अधिक था / खोने –टूटने का डर रहता था क्योंकि पढ़ न सकेंगे / अतः एक अतिरिक्त चश्मा ब्र.चंदुभाई के पास रख दिया गुरुदेव अतिरिक्त वस्तु किसी भी कीमत पर स्वीकार न करते थे / एक दिन सच में चश्मा टूट गया गुरुदेव पढ़ने में अशक्य हो गये तो वह चश्मा काम आया / ब्र.चंदुभाई ने कहा बोले कल बम्बई से कोई आया है वह लाया है /

१४- श्री सम्मेदशिखर जी की प्रथम टोंक पर सर्व प्रथम बताया कि तीर्थंकर का द्रव्य त्रिकाल मंगल है भले ही निगोद में रहे /

१५- औदायिक भाव को मंगल नहीं कहा अंदर जो क्षयोपशामिक भाव है जो सम्यक्त्व ले वह मंगल है /

१६- अपूर्व करण से जिन संज्ञा प्रारम्भ हो जाती है / मिथ्यादृष्टि हो जाते तो भी /

१७- स. १९८४ गुरु देव श्री ने वीरजी भाई को पूछा – " निगोद से जीव कैसे निकले यदि कर्म हेरान करे तो ?"

उत्तर – परिणाम की स्वतंत्रता अन्यथा सभी की स्थीति एकसी रह जायेगी / द्रव्य लिंगी को स्वर्ग , स्वर्ग से निगोद स्वतंत्र परिणाम की मिशाल है /

१८- बच्छराज जी ने स्वयं के बंगले में भी लेटरिंग बाथरुम नही बनाया था / ब्र.महिलाश्रम में भी खुला लेट बाथ कवर्ड बनाया था /

१९- निर्दोष ध्रुव स्वभाव में रागादिक देखना अनंतानुबन्धी राग है /

२०- ब्र.रमावेन शांतावेन के दाह संस्कार के समय अपेक्षा वश पानी तक की व्यवस्था न की थी / समाधि हेतु जगह नही दी कचरे के ढेर पर रखो / चम्पाबेहन से नहीं मिलने दिया था / ग्राम वासियों ने साथ दिया बोले भविष्य में ओरों को भी मरना है ध्यान रखना / महिलाओं ने घास हटाई / मुकुंद भाई संस्कार के बाद चम्पा बहिन के पास गये तो कोई सहानुभूति न दी / सभी का मत था कि राजकोट में हीं संस्कार कर देना चाहिये था यहाँ क्यों लाये /

२१- प्रतिष्ठा पाठ की गाथा २७९ – पीछी कमंडल न रखे /

२२- शांतिभाई की जवेरी की पत्नी की मृत अवस्था में पास ही संध्या बहिन ने प्रवचन किये /

२३- लालूभाई को जामनगर समोशरण बिठाकर नाची /

२४- वेन को अन्तराय आया तो पंकज जवेरी आदि सभी रोये |

२५- हीरे के गहने दिये |

२६- मालती वाहिन एमसी में निकले तो नाराज जबकि नीलम बहिन निकल जावे |

२७- स्वयं के विस्तर पर लालू भाई को बिठाकर हाथ पैर दबाबे |

२८- नकली बिल का व्यापार लालू भाई के |

२९- लालू भाई का सट्टे का व्यापार था हानि होने पर व्यापारार्थ मुंबई जाना पड़ा तो गुरुदेव बोले राजकोट वालों ने निभाया नहीं (साधर्मी वात्सल्य) | बम्बई बालों ने वली में फ्लेट दिया जिसे बेचकर पैसे न लोटाये तथा सहयोग राशि भी न लोटाई |

३०- गुरुदेव ने पूछा – सभा में – लालूभाई नही आये (प्रति रविवार आते थे) उत्तर – कश्मीर गये | गुरु- कश्मीर में कौनसा तीर्थ है ? मंदिर नहीं अरे रे रे वहाँ ...प्रवचन छोडकर कैसे गये ?....मेरे यात्रा में तो आया नहीं ..?--------सुशीला वेहन पुष्प वेहन कांता वेहन के भाई बम्बई

३१- सीमंधर स्तुति १९५१

आवो -२ सीमंधर नाथ अम घेर आवो रे |
रुडा भक्ति वत्सल भगवंत नाथ पधारो रे ||
हूँ कई विधि पूजूं नाथ कई विधि वंदु रे |
मारे आंगने विदेही नाथ जोई -२ हर्खुं रे ||
कहान प्रभु प्रतापे आज, जिनवर मणीया रे |
मारा आतम ना ऐ दुःख सर्वे टणीया रे ||

धर्मेन्द्र शेठ –खुरई के संस्मरण

मैं ११ वर्ष का था तब पू.गुरुदेव खुरई पधारे थे | एक किलो मीटर दूर फार्म होउसपर ठहराया गया था | वे गृहस्थों के घर में नहीं ठहरते थे | अपार जनता को देखकर अध्यात्म का चमत्कार दिखलाई दिया था |

९ वर्ष की उम्र में पहली वार पिताजी के साथ मुंबई से भावनगर २५७/- रु, के टिकिट से हवाई जहाज से गये थे साथ में भगवान दास शोभालाल जी सागर भी थे उन्ही के प्रस्ताव से जाना हुआ था | उन्होंने पहले टिकिट के पैसे ले लिये थे ताकि मन न बदल जावे | मैंने वहाँ जाने को प्रेरित किया क्योंकि मुझे हवाई जहाज में बैठने का मन था | क्योंकि समन्तभद्र आचार्य आदि लोग वहाँ जाने को निषेध करते थे |

दिनांक – २३-२-१३ बीना सिद्ध चक्र मंडल विधान के उपलक्ष में शाकाहार भाषण |

१- १९६९ में भावी तीर्थंकर की चर्चा निकली / १५ पेज गुजराती भाषा में सायक्लोस्टाइल में निकला था जिसकी फोटो कॉपी नेरोबी से लाये थे /

२- १९८५ में राजकोट पंच कल्याणक में लालूभाई ने स्वयं के तीर्थंकर एवं संध्यावे न के गणधर पने की सुचना दी थी तत्काल डॉ. साहब ने निषेध कर दिया था /

३- सूर्यकीरति तीर्थंकर प्रतिमा प्रतिष्ठा के विरोध में १० लेटर पंजी.पोस्ट से सोनगढ़ भेजे थे /

४- साधर्मी वात्सल्य – १९६९ में प्रथम दर्शन पाए सोनगढ़ में आने-जाने के किराया एवं साहित्य की राशि सिवनी पंहुचा दी थी / हिंदी में प्रवचन का आग्रह किया था / आत्म सिद्धि मिली पढ़ी और वही घूमते-२ प्रश्न पूछे थे / जाते समय १० घंटे बस से खड़े -२ सोनगढ़ गये थे /

५- गुरुदेव से मिलने से पहले आलू, भटा, प्याज खाते थे /

६- इटली से अक्षर खोदने की मशीन २८०००/- रु में आयी थी /

७- कांतिभाई कामदार (गढडा) मद्रास ८ लाख खर्च कर गुरुदेव श्री पर एनीमेशन बना रहे हैं /

८- कांतिभाई भायानी ११ वर्ष सोनगढ़ में मेनेजर रहे / शिविर खर्च व्योरा ७८०००/- बताया / गुरु. एक भी भगवान बन गया तो शिविर सफल हो जायगा /

९- सेठ बाबूलाल जमादार कलकत्ता में वर्णी जी के पक्ष का प्रश्न लाये तो गुरु. ने उठा दिया / प्रश्न – कर्म विकार कराते हैं / वर्णी जी से चर्चा करने के बाद कलकत्ता में गुरुदेव श्री गजराज जी गंगवाल कलकत्ता के घर ठहरे थे /

१०- परिवर्तन के कुछ समय वाद- सोनगढ़ में सर्व प्रथम गौरीशंकर रसोइया नियुक्त किया था हरिभाई भायानी ने एवं रसिकलाल लेखापाल रखा था / हरी भाई भायानी २५वर्ष व्यापार मंडल के प्रधान रहे थे /

११- २८-४-७९ के प्रवचन का अंश – पृ-१२५ स्वामीजी " सर्व प्रथम ६३ वर्ष फागुन सुदी १४ को यह भाव आया था / शब्द नहीं थे वाचन नही था /"

संस्मरण

श्री प. ज्ञान चंद जैन 'स्वतंत्र ' सह सम्पादक जैन मित्र सूरत पृ ६५

सन १९५१ रेलवे स्टेशन से तागे से धर्मशाला आया, अठन्नी दी / तो तांगे वाले ने कहा मैं कानजी स्वामी का भक्त हूँ असत्य नहीं बोलता / आप मुझे चार आने दे दीजिए / एक सवारी का यही किराया है / वह चवन्नी ले कर चला गया /

२- दूसरा प्रसंग मंडप में से धर्मशाला आते हुये स्वामीजी के प्रवचन की चर्चा मैं अपने मित्रों से कर रहा था बीच में एक मित्र कह उठा कि व्यवहार सर्वथा अग्राह्य नहीं हैं / तब एक अज्ञात व्यक्ति ने कहा यदि व्यवहार ग्राह्य होता तो हमारे पूर्वज ऋषि मुनि व्यवहार हो हेय न बतलाते / हम अनादि काल से व्यवहार को ही अपना मान रहे है इसलिए हमको तात्विक वस्तु हाथ में नहीं आती /

वह अज्ञात व्यक्ति राजकोट जिले का अजें पेंटर था जो २ वर्ष से वहाँ काम करता था / उसको भी इतना तो समझ में आ गया / उस पर स्वामीजी का अध्यात्मवाद देखकर हम दंग रह गये /

स्वामीजी की पृथ्वी जैसी क्षमा शीलता और समुद्र जैसी गम्भीरता,उदारता के समक्ष उनका विरोध एक नगण्य वस्तु है | वे किसी के वैर विरोध में पड़कर अपना समय और शक्ति नष्ट नहीं करते | उनका चाहे जितना विरोध होता रहे फिर भी वे सुमेरु के समान अटल एवं अडिग हैं यदि वे ओरों की तरह तू -२ मैं-२ में पड़ जाते तो उनका जो आज स्थान है वह नहीं होता | ....सचाई तो यह है कि विरोध ही प्रचार की कुंजी है स्वामीजी का जितना विरोध होगा उतना ही अधिक प्रकाश एवं प्रचार होगा | ....पू कानजी स्वामी जिस धुरी पर स्थित थे उसीपर आज भी स्थित हैं | **आज से २००० वर्ष पूर्व कलिकाल सर्वग्य आ.कुन्दकुन्द स्वामी ने जिस अध्यात्म वाद की गंगा बहाई थी उसी गंगा को कानजी स्वामी बहा रहे हैं** |ठीक ही तो है 'दिये से दिया जलाते चलो'

कानजी स्वामी स्वयं कहते हैंकि मैं अव्रती हूँ पर वे अव्रती होते हुये भी उनका खानपान एवं दैनिक चर्या, दानी-व्रती,साधु संत से कम नहीं है उने पास ढोंग आडम्बर पाखण्ड नहीं चाल सकता | इस दृष्टि से वे (चारित्रिक दृष्टि से, विद्वता की दृष्टि से खानपान की दृष्टि से) लाख दफे अच्छे हैं | यह मैंने कटु सत्य लिखा है जो कि कुछ लोगों को रुचेगा नहीं

कानजी स्वामी जो कुछ कहते हैं,वह उनके अंदर की निष्पक्ष एवं पवित्र आवाज होती है और कहते समय उनकी जो तन्मयता है, वही तन्मयता लोगों के हिरदय पर चुम्बक का कम करती है | वे उपदेश करते समय एक रस एकाकार एवं तदाकार हो जाते है | और आध्यात्मिक विषय की उनकी जो अनुभूति है ,वह मूकभाषा में लोगों को अपनी और वरवस खीच लेती है |

" मैं प्रथम बार जब सोनगढ़ गया, तब वहाँ मंदिरजी में श्री जिनबिम्ब के दर्शन किये | प्रतिमाजी के ओंठ लाल थे , नेत्र में काला सफेद भाग था |....एक दिन साहस कर स्वामीजी से कहा – स्वामीजी ! सर्व मिथ्यात्व को छोडकर थोडासा क्यों रहने दिया " वे समझ गये और प्रतिष्ठा मंडप में खुलासा कर हटवा ने का रास्ता पूछा | तो अब न रंगना प्रक्षाल होते-२ स्वतः छूट जायेगा | और ऐसा ही किया गया |

प. जगन्मोहन लाल शस्त्री कटनी आभार सन्मति सन्देश १९५५-२००५ वी.नि.स.२४८८ कानजी स्वामी जयंती विशेषांक मई १९६२ सम्पादक प्रकाश हितेषी | सन्स्थापक – सहजानंद जी वर्णी

पृ-४२.....२९ – जो भाई अपने गाँव-नगर में भी प्रवचन का लाभ उठाना चाहते हैं, उनको रिकॉर्डिंग मशीन मधुकर भाई के हाथ भेज दी जाती है |

पृ-५२-५३

जावाल यात्रा बैशाख सुदी १२ स.२०१४ शुक्रवार २३-४-१९५७

३६ कौम के ठाकुर सुमेर सिंग, श्री वन चंद, चावान्नीलाल, ठा जोरावर सिंह, ठा. उमेद सिंह आदि ५४ व्यक्तिओं के हस्ताक्षर से पात्र लेख –

सार- १- ऋषभ चंद जी जावाल वालों के निमंत्रण पर पधारे | २- मंडप में ट्यूब लाईट लाउड स्पीकर का प्रबंध किया गया ३- प्रातः ७-३० बजे स्वागत जुलुस निकला ४- मंडप के पास आते ही

५-७ लोग अशांति फेलाने लगे-नारे लगाने लगे ५- स्वामीजी वापस चले गये ६- प्रवचन का आग्रह टाला वे नही चाहते थे कि उनके जाने के बाद ग्राम में अशांति एवं वैमनस्य फेल जाये ७- २ बजे मध्यान्ह भोजनोपरांत माउंट आबू गमन किया ८- रात्री ९ बजे स्थानीय नागरिकों ने निर्णय कि समस्त ३६ जाति के लोग २ बस ४ कार से प्रातः ७-३० बजे लगभग १०० लोग गुरुदेव को वापिस लेने गये |

९-२४-४-५७ को पुनः मंडप बनाकर भव्य स्वागत एवं प्रवचन कराया गया | २५ शामियाने ध्वज निशान ५००० आदमियों ने स्वागत किया १०- ठा. सुमेरसिंह ने २५ रु चरणों में चड़ाये ११- १ रुपया श्री फल प्रत्येक यात्री को भेंट किया | ११- १ बजे जावाल से विदा हुये |

उस दिन के प्रवचन का विषय –

६- आत्मधर्म प्राप्ति की प्रथम सीढ़ी कौनसी है ?

७- सुख का सच्चा सधन क्या है ?

८- पूर्ण एवं सच्चा ब्र. कौं पालन कर सकता है ?

९- आत्मा को पूर्ण शांति कैसे मिल सकती है ?

१०- गृहस्थ धर्म के पालन का उपदेश |

श्रद्धांजलि

१- श्री यु एन ढेबर भारतीय कांग्रेस प्रमुख पृ-२

....हमारा तो उनकी सेवा में प्रणाम भेजने का अधिकार है सो भेज रहे हैं |

उनके भाषण का सार –पृ ३३

...उनका (स्वामीजी का) जीवन एक सत्य दृष्टा का जीवन है और वे निर्भीक हैं जिस चीज में उनका विश्वास है, उसको वे निडरता से कह रहे हैं | .....नानालाल जसानी भाई रामजी भाई मेरे बड़े भाई जैसे हैं .....वह भारत वर्ष की मूल चीज है वह तत्व समझा रहें हैं | और आज भारत वर्ष की इस चीज की सारे विश्व को जरूरत है |

२- प.फूलचंद जी सिद्धांत शास्त्री वाराणसी पृ २

जैन समाज को अंतरंग से उनकी बात सुनना चाहिये | यह हमारी विनम्र सम्मति है | .....श्री कानजी स्वामी की भविष्यकाल में युगप्रवर्तक पुरुषों में परिगणना की जायेगी | इसलिए इस महापुरुष के प्रति जो भी आदर भाव प्रगट किया जायेगा वह अल्प ही होगा |

३- प.चैनसुखादास न्यायतीर्थ जयपुर वनारस पृ २

इसमें कोई शक नहीं कि श्री कानजी स्वामी के उदय से अनेक अंशों में क्रांति उत्पन्न हुई हैं | पुराना पोपडम खत्म हो रहा है और लोगों को नै दिशा मिल रही है | यह मानना गलत है कि वे एकांत निश्चय के पोषक है | हम सोंनगढ मर सर्वत्र फेले हुये उनके अनुयायिओं में निश्चय तथा व्यवहार का संतुलन देख रहें हैं | सौराष्ट्र में अनेकों नवीन मंदिरों का निर्माण तथा उनकी प्रतिष्ठा यें स्पष्ट बतलाती हैं कि वे व्यवहार का अपलाप नहीं करते | भ.कुन्दकुन्द के वे सच्चे अनुयायी हैं | जो उनकी आलोचना करते हैं वे

आपे में नहीं हैं व उन्होंने न निश्चय कि समझा है और न व्यवहार को और सच तो यह है कि जैन,शास्त्रों का हार्द ही उन्होंने नहीं समझा | कानजी स्वामी विवाद में नहीं पड़ना चाहते, पर अपना काम करते जाते हैं | सोनगढ़ से जो धार्मिक साहित्य निकल रहा है, उससे स्वाध्याय का बहुत प्रचार हुआ है | कुछ लोग किसी भी विषय को आंदोलन का रूप दे देना चाहते हैं | श्री कानजी स्वामी के विषय में ऐसा ही हुआ है | निमित्त उपादान तथा क्रमबद्ध पर्याय आदि दार्शनिक चीजे हैं | विद्वानों के समझने की हैं | ऐसी चीजों को आन्दोलन का विषय बनाना समाज की शक्ति को क्षीण करना है | हमे प्रत्येक प्रसंग को निष्पक्ष दृष्टि से देखना चाहिये | आपका प्रयत्न प्रशंसनीय है |

श्री पन्ना लाल साहित्याचार्य, मंत्री भा.व. विद्वत परिषद, सागर पृ ३

"समयसार से प्रभावित होकर ही श्री कानजी स्वामी ने शुद्ध वस्तु स्वरूप को समझा .....हम उनकी इस परीक्षा प्रधानता का अभिनंदन करते हैं |"

प.रतन लाल शास्त्री इन्द्रभवन इंदौर पृ ३७

लेख शीर्षक – "वर्तमान युग के अनुपम उदार चैतन्य रत्न जौहरी"

.....चैतन्य रत्न जौहरी श्री महिमा तो जो सच्चिदानन्द घन के अनुभव से सहजानंद पीयूष का पानकर चूका है,वही जान सकता है |.....पुण्यरूप कागज नौका से भवसागर तरने की भ्रान्ति दूर हुई | निमित्ताधीनदृष्टिविष को सम्यक प्रकार निवारण करना |.....

संहिता सूरी श्री प.नाथूलाल शास्त्री इंदौर .....पृ ४९

श्री कानजी स्वामी के जितने भी प्रवचन हुये हैं, होते है और उनका प्रकाशन हुआ है, माध्यस्थ भाव से देखने पर सबमे अविरोधिता ही मिलती है | वक्ता के अभिप्राय और प्रकरण गत संगति को न देखकर विरोध की दृष्टि से कुछ भी कहा जा सकता है |

सब ब्र. वहिनें अपने हाथ से पीसकर शुद्ध मर्यादित भोजन करती है और व्रतोपवास में सावधान रहती हैं |

समयसार को पढकर भी सोनगढ़ के भक्त हजारों भाइयों व वहिनो के आचरण में जो दृढ़ता पाई जाती है, वैसी हमारे अनेक व्रतिओं तक में नहीं पाई जाती है | खानपान की सात्विकता और शीलव्रत तथा नैतिकता वहाँ की अनुकरणीय है | हमारे प्रान्तों में तो बाजार का भोजन व रात्रि भोजन धीरे -२ चल निकला है,पर उधर रात्री को पानी तक नहीं पिया जाता व आलू जमीकंद का नाम तक नहीं है |

मैंने बीछिया, लाटी, पोरबंदर, सोनगढ़, मोरबी, बांकानेर, लीम्बडी, और बम्बई में जिनबिम्ब प्रतिष्ठा कराई है |

मैं १५ वर्ष से सोनगढ़ के सम्पर्क में हूँ | प्रारम्भ में मुझे भी स्वामीजी के प्रवचनों में विरोध का आभास हुआ | इसके फलस्वरूप में भी वादविवाद में उलझा , परन्तु धीरे-२ जब विचार किया और शास्त्रावालोकन किया तो वास्तविकता का ज्ञान हुआ | वर्तमान में अध्यात्म की ओर इस प्रकार का जनता का सुझाव और स्वाध्याय प्रचार का श्रेय स्वामीजी को है |

प.हीरालाल,सिद्धान्तशास्त्री पृ ८३

अध्यात्म जैसे गहन,सूक्ष्म एवं रुक्ष विषय को आप जिस सरलता, सरसता और स्वाभाविकता के साथ समझते हैं, उससे वह श्रोताजनों के मानस पटल पर सहज में ही अंकित होता जाता है | अध्यात्म तत्व की यह सुगम अभिव्यक्ति ही आपके प्रभावशाली अनोखे अनुपम व्यक्तित्व को व्यक्त करती है | जिसने कभी अध्यात्म की चर्चा भी नहीं सुनी, ऐसे अनेक जैनेतर व्यक्ति भी आपके अध्यात्मिक प्रवचन सुनकर अध्यात्म गंगा में गोते लगाने लगता है | मैने अपने जीवन में ऐसा प्रभावशाली अनोखा व्यक्तित्व अन्यत्र कहीं नहीं दिखा |

प. कैलाश चंद जी बुलन्दशहर पृ-७१

पूज्य श्री को मैंने कई बार स्वप्न में भावलिंगी संत के रूप में देखा है | वर्तमान में भावलिंगी संत का दर्शन दुर्लभ हो रहा है | लेकिन मैंने सतगुरु देव को भावलिंगी संत के रूप में धर्मोपदेशक जाना है और उनके आहारदान का निमित्त भी मैं ही बना हूँ | इसीए मैं उनको भाव लिंगी संत के रूप में बारम्बार नमस्कार करता हूँ |

करीब एक वर्ष पूर्व मैंने स्वप्न में पूज्य श्री को तीर्थंकर के रूप में साक्षात् समोसरण में विराजमान देखा था |

सर सेठ हुकमचंद इंदौर .....पृ-६१

(१०००० व्यक्तिओं की पर्युषण सभा में कहा था) यदि हमें वास्तव में सत्य दिग. जैनधर्म का स्वरूप जानना है, तो इस युग के दिग. जैन धर्म के सच्चे प्रचारक सोनगढ़ के संत का प्रत्यक्ष साक्षात्कार करना चाहिये |

प.हीराबाई जैन श्रविकाश्रम इंदौर

स्वामीजी का ज्ञान जितना अगाध और गम्भीर है, उसी प्रकार उनकी प्रवचन शैली भी चमत्कार से भारी हुई है | द्रव्यानुयोग जैसे कठिन और रुक्ष विषय को कितनी सरल भाषा और दृष्टांतों से कहते हैं कि श्रोता गण मन्त्र मुग्ध हो जाते हैं | अपने प्रान्तों में हम शास्त्र सभा , मंदिर आदि धार्मिक कार्यों में बड़े-बूढों की संख्या देखते हैं किन्तु सोनगढ़ इसका अपवाद है | वहाँ बड़े -२ डॉ वकील व अंग्रेजी के उच्च शिक्षित एक बार पहुच जाने के अपने जीवन को बदल लेते हैं | और गहरा अध्ययन करते हैं |

अजैन से जैन बनने की परम्परा

स. २००० बडनगर की बात है कुछ-करीब १२५ लोग नीमा लोग जैन धर्म पालते थे | एक बार खुल्ले पैसे की समस्या आई तो जीव दया कमिटी कम करती थी उसमे हजारीमल जी नीमा काम करते थे उन्होंने नीमा जैन के नाम से हस्ताक्षर किये तो नीमा समाज ने आपत्ति कीई और उनपर जुर्माना लगाया | कि तुमने सारे नीमा समाज को जैन बना दिया | तब जैन समाज ने आपत्ति की कि तुमने जैन

समाज पर जुर्माना कैसे लगाया | तब ११ समाज की पंचायत बैठी और जुर्माना माफ हो गया | इस तरह नीमा समाज को बुरा लगा तो उन्होंने जैन नीमाओं से विवाह संबंध तोड़ दए | और जैनों ने गौत्र देकर उन्हें जैन बना लिया |

गुरुदेव के समय प्रसिद्ध गुजराती विद्वान

१-खेमजीभाई राजकोट- सदा चर्चा के लिए दरबाजे खुले रहते थे | रोज सागर वालो के बंगले पर शाम को कक्षा लेते थे |

२-रामजीभाई बापुजी, राजकोट – जतीश भाई हमारा मूक केवली हैं | वे परमागम मंदिर की प्रतिष्ठा में काफी काम सम्हाल लेते थे |

३-बाबुभाईजी फतेहपुर

४-चिमनभाईजी

५-नेमीचंद्रजी 'काका' रखियाल

६-लालचन्द्रभाई राजकोट

७-कनुभाई दाहोद

८-कैलाशचन्द्र बुलन्दशहर - सदा चर्चा के लिए दरबाजे खुले रहते थे |

९-नवलभाई - सदा चर्चा के लिए दरबाजे खुले रहते थे |

जामनगर में २००२ अप्रेल में भूकंप के बाद मान स्तंभ का पुनरुद्धार कराने में अविरति सम्किती के स्थान पर 'अध्यात्म मूर्ति' प्रशस्ति में लिखाया गया | ब्र. बजुभाई बढबाढ़, ब्र. चंदुभाई, सुभाष भाई, भोगी भाई, भूपेंद्र बम्बई, प्रकाश भाई के समर्थन से |

जयपुर वालों ने ४ प्रतिमा पर अविरत सम्यकदृष्टी लिखना जामनगर से प्रारम्भ किया था | शेष ९ पर अध्यात्म मूर्ति लिखा था | आ. कुन्दकुन्द की प्रतिमा पर गुरुदेव का नाम नहीं लिखा जतीश भाईजी ने | ??

सन २००० के बाद से जैन मीडिया लाइव.कॉम पर ३ चेनल अमेरिका से राजेश भाई चला रहे हैं | जहाँ से केनेडा, अमेरिका, भारत के लिए २४ घंटे गुरुदेव के प्रवचन एवं महत्त्व पूर्ण प्रवचनकारों के प्रवचन पूजन, भक्ति आदि प्रसारित होते हैं |४-

साभार –

१-श्री कानजी स्वामी के प्रवचन साहित्य का अनुशीलन – डॉ ममता जैन |
२-आगम पथ मई १९७६ युगपुरुष कानजी स्वामी
३-स्वर्ण भानु
४-सन्मति सन्देश वर्ष ७ अंक ५
५-शासन प्रभाव
६-परिचय पुस्तिका (कानजी स्वामी)
७-अध्यात्म प्रणेता खानिया तत्व चर्चा पृष्ठ १९
८-आत्म धर्म – प्रकाशन वीर नी.स. २५२२ से
९-कहान कथा महान कथा
१०- अध्यात्म मूर्ति कानजी स्वामी अवसान और कर्तव्य
११- व्यक्तित्व और कर्तत्व
१२- परम पूज्य गुरुदेव श्री का सम्प्रदाय परिवर्तन
१३- आत्मधर्म मार्च १९७७ विशेषांक
१४- अध्यात्म युग दृष्टा-कानजी स्वामी
१५- रत्न चिंतामणि महोत्सव
१६- आत्म प्रतीति विशेषांक

१७- श्री कानजी स्वामी

१८- युगपुरुष कानजी स्वामी

१९- आत्म धर्म जन्म जयंती विशेषांक

२०- मोक्षमार्ग प्रकाशक

२१- आत्म्धर्म (सातिशय प्रभावना योग)

२२- जन्म भूमि पंचांग

२३- पूज्य बहिन श्री चम्पाबेन के आत्म साधना प्रेरक पत्र

२४- चैतन्य बिहार –युगल किशोर जी बाबूजी कोटा

२५- पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी जन्म शताब्दी विशेषांक (आत्मधर्म-स. २०४५ /१९९०)

२६- पूज्य बहिन श्री चम्पाबेनके आत्म साधना प्रेरक पत्र |

नटू भाई बडोदा

की जबानी .....संस्मरण –देवलाली दि.जून २०१०

२७- पालेज में ३० सदस्यों का भोजन एक साथ बनता था | ५ परिवार साथ -२ रहते थे |

१४- रतिभाई नागरदास(मियांगाम अनाज का व्यापार करने चले गये | गुरुदेवश्री के मित्र थे साथ ही दीक्षा लेना चाहते थे परन्तु उनको कमरे में बंद कर दिया गया था),

१५- हरगोविंद नागरदास(वर्तन की दुकान) मियांगाम (दोनों भाईओं का परिवार)

१६- सूरत के मनहरभाई धीरजलाल (फवाभाई) गांडालाल के पुत्र | भविष्य के विकास के लिये फावाभाई सूरत चले गये वहां कबाड़े का व्यापार करने लगे थे |

१७- कुँबरजी भाई |

१८- मोतीचन्दभाई अफीम केस के आघात से चल वसे |

१९- बोम्बे का केशर व्यापारी अपनी इकलोती कन्या गुरुदेवश्री को देना चाहते थे | पालेज में आश्चर्य छा गया था |

२०- ७ मामा थे सबही के घर के मकान थे परन्तु किसी के भी सन्तान न थी |

२१- गुरुदेवश्री की स्मृति अद्भुत थी – कर प्रसंग का विवरण वर्ष सहित याद था |

२२- कुंवरजीभाई १.३० बजे गुजर गये तार भेजा गुरुदेवश्री प्रवचनों के मध्य ३-३० पर तार मिला रामजी भाई को गुरुदेवश्री ने स्वयमेव ही कहा "कुंवरजी भाई गुजरी गया" |

२३- परिवार के प्रत्येक प्रसंग का तार गरुदेवश्री को अवश्य दिया जाता था |

२४- पालेज के समय २० रु तोला सोना तथा ४ रु टीन तेल था |

२५- मुद्रा मान – १ रु में १६ आना = ६४ पैसे, १ पैसे में ३ पाई, १ पाई में २ धेला, ४ पैसे का १ आना |

जादवजी भाईजी (गुरुदेवश्री के फूफाजी हैं) की २ संतान

१-कुंबरजी भाई, (जन्म सन १८८६) (गुरुदेवश्री से ३ वर्ष बड़े थे) एवं

२-शिवलाल भाई (सन्तान रहित)

कुंबरजी भाई की पत्नी गोदावरी वेन एवं उनकी संतान

३२- कांताबेन - ८१ की उम्र में गुजरीं, साल में ४ माह सोनगढ़ रहती थी |

३३- मनसुख भाई (मई २०१० में मृत्यु)

३४- सरस्वती – कोचीन निवासी ८१ वर्ष में गुजरीं |

३५- हंसमुख भाई – मिंयादाद निवासी, मेट्रिक, मेडिकल स्टोर्स, अनाज की दुकान की |

३६- नटवर भाई (नटुभाई) इंटर पास (जन्म सन १४-३-१९३६) में इनके २ पुत्र १- वीराज एम कॉम बडोदरा २- प्रशांत न्यूयार्क अमेरिका में कंप्यूटर कम्पनी में जॉब | हंसमुख भाई एवं नटुभाई दोनों वड़ोदरा में व्यवसाय हेतु वस गये | यहीं गुरुदेवश्री को दोनों भाइयों ने गुरुदेवश्री से सम्यक्त्व जयन्ती मनाने की अनुमति चाही थी | गुरुदेवश्री ने ना पाड़ दी | नटुभाई ग्रुप में स्वाध्याय करते हैं एवं देवलाली में उनका आना होता रहता हैं | उनसे लेखक की मुलाकात सोनगढ़ एवं देवलाली दोनों जगह हुई | उन्हीं से प्राप्त कुटुम्बी जानकारी प्राप्त हुई उनका आभार |

३७- प्रवचन के बाद रतिलाल मियांगाव- गुरुदेवश्री के प्रति वहुत भक्तिमान थे | "एक अद्भुत वाणिया, जेने आत्मा जाणिया" तब वेन श्री ने कहा की वाणिया अच्छा नहीं लगता है | तो बदल कर लिखा- "एक अद्भुत आत्मा, जिन नो मार्ग जानता" भजन बनाकर गाते थे |

३८- रतिलाल का बेटा कनुभाई की पत्नी ताराबेन की २ लडकियां बोम्बे में जीवित हैं | सुरेशभाई मियांदाद अनाज का व्यापारी |

३९- मनहरभाई सूरत में सपरिवार (१ पुत्र दिनेशभाई २- शिरीषभाई शाह) रहते हैं | परमागम प्रतिष्ठा में ईशान इंद्र बने थे ८०००० /- रु में |
पालेज में १०० रु की पूंजी एवं दुकान कुंवरजीभाई ने लगायी थी |

४ वर्ष गारियाधार में व्यतीत हुए | १ वर्ष ६ माह संस्कृत सीखी |
१७ से २२ वर्ष पालेज में व्यापार किया |

पालेज आने वाले सदस्य – मोतीचन्द्र भाई, दीपचन्द्र, सर्व प्रथम खुशालभाई एवं उनकी श्रीमतीजी गंगावेन भी आईं थी, कानू अनाज का व्यापार करते थे कुंवरजी भाई १५-१६ सालके थे |

४०- प्रो.मनुभाई कामदार बहु शास्त्रभ्यासी थे गुरुदेवश्री आपके घर ठहरते थे | कोचिंग क्लास से २ लाख रु कमाते थे | मुफतभाई प्रवचन सुनने आये तो मनुभाई से बदले |

४१- पालेज दुकान दीपचंदजी का पुत्र जयंती भाई की पुत्री सविता बेन ने केस किया पू गुरुदेवश्री ने नटुभाई को कहकर केस समाप्त कराया था १०००००/- रु सविता बेन को दिये, वह दुकान गंगावेहन ने पूर्व में नटूभाई के नाम कर दी थी |

४२- जन्म के समय ज्योतिषी ने महापुरुष/ धर्म प्रभावक, लोक पूज्य होने की भविष्यवाणी /सुचना दी थी |

४३- बाललीला – घुटनों के बल चलना, ग्राम/ परिजनों की गोद में खेलना, पिता को पकड़ के खड़े होने |

४४- नटुभाई गुरुदेवश्री के कौटुंबी हाल सोनगढ (१२/२००९) के अनुसार - ७ मामा १- भुवन मामा शेष अज्ञात भानेज भाई कहकर लाड़ से रखते थे |

४५- पालेज में ५०००/- वार्षिक लाभ गुरुदेवश्री श्री ने बताया था |

४६- उमराला में मामा के ६ मकान थे |

४७- २ दुकाने थी १- कुवर जादव जी कं. जिस में कुंवरजीभाई एवं खुशालभाई भागीदार थे |

४८- मोतीचन्द्र गीगाभाई फर्म – अनाज, किराना का व्यापार होता था | जिस पर कहानभाई (गुरुदेवश्री) एवं शिवलाल जादव (जो कि नटुभाई के चाचा एवं मंदबुद्धि थे, बैठते थे) |

४९- कुंवर जादव जी उमराला रहते थे, सूरत वाले रिश्तेदार गांडाभाई मनहरभाई के पिता के यहाँ २ वर्ष १५/- प्रतिमाह पर नोकरी की फिर चुन्नी भाई की विधवा माँ ने पैसे एवं दुकान की मदद की, उनके साथ व्यापार करते-करते पालेज में व्यापार बढ़ गया, फिर २ पेढ़ी खुली, बड़ा व्यापार होने से खुशाल भाई को पालेज बुलाया था |

५०- पालेज का मंदिर कुंवरजीभाई ने खड़े रहकर बनवाया था | गुरुदेवश्री बोले पालेज में रहते हो वहाँ दर्शन-पूजन है नही तो फिर पालेज में भी मंदिर बनाया |

१-परमानंद एवं उनकी पत्नी तथा गंगाबेन की प्रकृति तेज थी अतः उनके प्रति गुरुदेवश्री को कोई भाव नहीं आता था |

३६- मोतीचन्द्र गीगाभाई (१८५५-१९०७=५३ वर्ष) मोतीचन्दभाई अफीम केस के आघात से चल वसे |

३७- उजमबा- माँ(१८५५-१९०३) १८७१ में विवाह हुआ | प्लेग के रोग में ४८ वर्ष की उम्र में काल धर्म को प्राप्त हो गयी |

३८- दीपचन्द्रभाई – २८ वर्ष (१८७२-१९०१ सायं) १९०१-स. १९५७ - कानु की ११ वर्ष की उम्र थी तब दीपचंद भाईका विवाह अनुमानतः १८८८ में हुआ होगा | दीपचंदजी का पुत्र जयंतीभाई (१८९५-१९३२) था | पिता के गुजरने के बाद मां को लेकर जयंती भाई मामा के यहाँ सूरत आकर रहने लगे थे वहीँ उनका विवाह हुआ उनकी संतान जीबित नहीं

बचती थी अंतिम संतान पुत्र को ५ वर्ष तक ग्राम से लाकर खिलाते एवं मांग कर ही कपड़े पहनाते थे अतः उसका नाम भीखूभाई प्रसिद्ध हो गया था | जयंतीभाई की पुत्री सविताबेन थी इनकी शादी पालेज में ही हुई थी | इनका पुत्र राजेश सूरत में रहते हैं |

३९- हरिबेन(१८७४) गुरुदेवश्री की उम्र जब २॥ वर्ष थी तब हरिबेन का विवाह(१८९३ में) हो गया था | गुरुदेवश्री हरि बहिन की गोद में बैठकर खिड़की में से माँ को पानी लेकर आते देखते थे |

४०- खुशालभाई (२४-९-१८८४ - १९३७) - ५३ आयु पत्नी बीछिया की रहने वाली गंगाबेन से विवाह हुआ | सबसे पहले पालेज अपनी पत्नी सहित आये व्यापार जमने पर ५ -७ वर्ष बाद पिताजी एवं कानू को बुलाया था |

४१- मगनभाई –(१८९२-१९१६ अवसान) | १९१४ में मगनभाई की शादी बहुत सुंदर नर्वदाबेन से हुई थी एवं १९१६ में निधन हो गया, ६ माह बाद नर्मदा बेन झुर-२ के मर गयी |

४२- कुंवरजीभाई,८० वर्ष इनकी २ शादियाँ हुई थी दूसरी पत्नी गोदावरीबेन थी (नटवरभाई (नटुभाई) इंटर पास (जन्म सन १४-३-१९३६) इनकी पत्नी मंजुलाबेन) | इनके छोटे भाई शिवलालभाई ८१ वर्ष की आयु में निसंतान गुजरे |

४३- मनसुख भाई ७५ वर्ष २०१० में गुजरे | नाटुभाई के भाई कान्ताबेन ८१ आयु १९०३ में गुजरी |

दीक्षा पूर्व अनुमति मांगते समय आयु

1	कानू (कानजी स्वामी)	20 वर्ष	–	मुख्य पात्र (नायक)
2	खुषाल भाई	२६ वर्ष	–	कानू के बड़े भाई
3	मनहर भाई	45 वर्ष	–	कानू के मामा
4	कुँवर भाई	23 वर्ष	–	कानू के फाबा भाई (बुआ के पुत्र)

5	आनंद भाई	28 वर्ष	–	कानू के फाबा भाई (बुआ के पुत्र)
6	धीरज भाई	18 वर्ष	–	कानू के मामा का पुत्र
7	बसुमति बेन	60 वर्ष	–	कानू की बुआजी
8	हरिबेन	३१ वर्ष	–	कानू की गारियाधार वाली बहिन (विवाहित)
9	हिम्मत **दीपचन्द्र** बेन	वर्ष	–	कानू की भाभी (विधवा)
10	गंगा बेन **खुशाल भाई**	18 वर्ष	–	कानू की भाभी (खुषाल भाई की पत्नी)
11	**गोदावरी** बेन	25 वर्ष	–	कानू की भाभी (कुँवर भाई की पत्नी)
12	जयंति **भाई**	१५ वर्ष	–	कानू का भतीजा (दीपचंद भाई का पुत्र)
13	मनसुख भाई	0६ वर्ष	–	कानू का भतीजा (कुँवर भाई का पुत्र)
१४	**जादव जी भाई**			**गुरुदेवश्री के फूफाजी**
१५	**शिवलाल जादव**		**मंदबुद्धि थे।**	**जादवजी के छोटे भाई**

१-बम्बई में मस्जिद बंदर पर जनता आई क्लिनिक थी उसमे पारसी डॉ प्रतिदिन २ बजे आता था परंतु गुरु की सेवा में प्रातः ६-३० पर आता था। गुरु. का नम्बर अधिक था। खोने –टूटने का डर रहता था क्योंकि पढ़ न सकेंगे। अतः एक अतिरिक्त चश्मा ब्र.चंदुभाई के पास रख दिया गुरुदेव अतिरिक्त वस्तु किसी भी कीमत पर स्वीकार न करते थे। एक दिन सच में चश्मा टूट गया गुरुदेव पढ़ने में अशक्य हो गये तो वह चश्मा काम आया। ब्र.चंदुभाई ने कहा बोले कल बम्बई से कोई आया है वह लाया है।

२-श्री सम्मेदशिखर जी की प्रथम टोंक पर सर्व प्रथम बताया कि तीर्थंकर का द्रव्य त्रिकाल मंगल है भले ही निगोद में रहे।

३-औदायिक भाव को मंगल नहीं कहा अंदर जो क्षयोपशामिक भाव है जो सम्यक्त्व ले वह मंगल है।

४-अपूर्व करण से जिन संज्ञा प्रारम्भ हो जाती है। मिथ्यादृष्टि हो जाते तो भी।

५-घाटकोपर – रमेश भाई मणिकांत भाई भूपत भाई रमेश भाई तुर्खिया ध्यान मंडली के रूप में प्रसिद्ध थे , गुरुदेव श्री ने प्रवचन में प्रसंशा की , बाबूभाई जवेरी जवेरी ने बुराई की , गुरु. – छोकरा स्वछन्द हो गये है सबही ने क्षमा

मांगी खुलासा किया कि सिद्ध भगवान अतृप्त हैं तब ही तो स्वरूप से नहीं खिसकते /-परमात्म प्रकाश गाथा दोहा ५३ सिद्धों को शून्य –जड़ भी कहा

६- द्रव्य संग्रह टीका सिद्ध जड़ हैं ब्रह्मदेव सूरी कृत टीका पुद्गल कि तरह विषय सेवन से रहित है /गाथा १० पृ ३३

७- स्वामीजी के समय दान परम्परा – छावडा जी ने छावडा जी ने अपेक्षित दान आने का वाद लेने से मना कर दिया देना हो तो सत साहित्य की कीमत कम कराने में डॉ /

८- राजकोट में स्थानकवासी संम्प्रदाय के अग्रणी गुरुदेव के कट्टर विरोधी रामजी शामजी विराणी थे जो समाचार पत्र में भी विरोधी लेख लिखते थे /

सादा जीवन

गाम में उबला हुआ पानी नई मिले तो छाछ पीते थे

नीरस आहारी अर्थात आहार के प्रति अलोलुपता,निस्पृहता

शक्कर नही लेते थे,फल भी नहीं,बीमारी कि दशा में डॉ द्वारा (अजैन) अत्यंत अपरिहार्य बतलाने पर लिया,गुरुदेवश्री के अनुसार ब्र.को फल आदि नई लेना चाहिए.अनार,मोसंबी,आम,सेवफल

गरीब आमिर के यहाँ भोजन

भोजन कथा निंदा प्रशंसा नहीं

प्रात: भोजन – ४ फुल्का,१ कटोरी दाल,लोकी,सब्जी बदल बदल के टीन्डोडा,परवल , तोरइ ३ पापड

शाम – खिचड़ी , दालचावल बदल -२ के लोकी २ पापड़

ऊनोदर मैं चाहूँ तो २ मोती चूर के लाडू कहा सकूँ इतना पेट तो खाली छोड़ता हूँ |

सर सेठ हुक्म चंद ने पात्र में भोजन देते समय आलू का साग दिखाया तोगुरुदेव ने न् क्र दिय सेठ ने भीछोदा |

वेन श्री- जेम लकड़ा चावे छेगुरुदेव इस तरह नीरसता पूर्वक आहार करते थे

अँधेरे में सिगरी नहीं जलाने देते थे |

मंदिर से आने के बाद कुल्लाकर्के गर्म दूध पीते थे | पेट साफ हो जाता था | वेन श्री के यहाँ दूध तपता था ३ श्रावक ३ -३ पाव दूध लेते सभी से गुरुदेव बरावर -२ दूध लेते थे | कपड़ा बदल क्र दूध पिटे थे |

प्रवचन के ३० मिनिट बाद भोजन होता था | बहिनें आहार चखती थी | ब. बहिन ही बनाती थी | चावल का एक एक दाना अलग-२ करके देती-परोसती थी |

अत्मार्थिओं को मार्गदर्शक जीवन ----------ब्रह्मचर्य

१- पात्र बिना वस्तु न् रहें पात्रे आत्मीक ज्ञान , पात्र थवा सेवो सदा ब्र.मतिमान ||

२- कपड़े बदल कर लघु शंका करते थे |

३- प्रासुक जल का सेवन करते थे |

४- जीवराज स्वामी को आधा ग्लास रस मोसम्बी का दिया रोगी दशा में | स्वयं नहीं लेते थे | ६ माह सीने में दर्द रहने पर डॉ की सलाह पर मुश्किल से लिया केंसर की गरमी सर पर चडती थी |

५- ४५ दिन की बच्ची ८ वर्ष की कन्या अकेले नहीं आ सकती

६-प्रवचन सभा में डेविडडर लगाना / श्रोता की नजर स्त्री ---टोकते नियम सार ७९ कलश कह दृष्टी मा खोट छे सा माटे त्यांजोवे छे /...भगा देते ...गुरु के कहने पर भी स्त्री एवं साध्वियों को नही पढाया /

७- ६-३० केबाद आश्रम से बाहर नहीं .....प्रवचन नहीं कर/सुन सकती .... भाई-बहिनों का आश्रम एक साथ नहीं बनने दिया /

८-स्त्रिओं की कक्षा स्त्री ले /

९-शिविरार्थी भी ब्र. पालते थे /

१०- ठहरने की व्यवस्था अलग-२ /

११- विधवाओं कभी स्थिकरण

१२- २१ वर्षसे पहले बहनों को ब्र. नहीं /

१३- परीक्षा लेकर अनुशासन देखकर दोनों बहनों की आज्ञा से ब्र.मिलता था /

१४- वैद्य को हाथ नहीं दिखाना /

१५- शील रक्षणार्थ चाकू, तांगे में अकेले नहीं यात्रा में सावधानी /

१६- ९० वर्ष की उम्र में भी बुखार नापकर लेडी डॉ को नहीं दिया/

१७- ३५ वर्ष दोनों वेन पडाति थी / ब्र. पात्रता प्रगट करने के लिये दिया हैं ब्र. धर्म नहीं हैं प्रतिया पूर्व गुरुदेव कहते थे / स्वाध्याय कर अनुभव कर ब्र. सार्थक करो /

१८- ब्र सूरज वेन बाल विधवा थी हर तरह से मदद की /

१९- ब्र. हेम चंद बोपाल – २ माह वाला विद्यार्थिओं के शिविर में गुरुदेव को बुखार आया तो लेडी डॉ से इन्जेक्टिन् लेने से मना कर दिया तब राजकोट से डॉ चंद भाई आये उन्होंने इलाज्किया /

२०- विमला वेन – थाली में रोटी पोस्ट समय थाली में छोटी गिर गयी | अन्तराय माना |

२१- वेन श्री स्वास्थ्य पूछने आवें तो बीच में ब्र. चंदू भाई खड़े रहते थे |

२२- आकडिया पंचकल्याणक २०२३ में – एक महिलापैर छू गयी | प्रायश्चित लिया |

२३- सरलता----------फतेपुर पञ्चकल्याणक तक टोडरमलजी को व्रती मानते थे परन्तु डॉ साहब के कहने पर अव्रती सम्किती मान लिया | ब्र.रायमल जी ने उन्हें अव्रती लिखा हैं | गुरुदेव ने चिट्ठी के आधार से 'यथायोग्य विनय अवधारना' से अनुमान लगाते थे |

शांतावेन ----------रीढ़ की हड्डी में दर्द होने पर प्रवचन में नीचे बैठते न् बने तो गुरुदेव के कहने से एक दिन कुर्सी पर बेठी | फिर नीचे ही |

संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर

पृ- १२२- जैनों ने दक्षिण में बहुत सी पाठशालाएं खोलीं थी आज भी कन्नड़ इलाके में बच्चोको अक्षरारंभ कराते समय "ॐ नमः सिद्धम" यह पहला वाक्य पढ़ाया जाता हैं | जो जैनों के नमस्कार वाक्य हैं | दक्षिण में जोइन धर्म का जो प्रचार हुआ , उससे भारत की एकता में और भी वृद्धि हुई | जैन मुनिओं और साहित्य के साथ संस्कृत के बहुत से शब्द दक्षिण पहुंचे और वे मलयालम , तेलगु, और कन्नड़ भाषाओँ में मिल गये |

पृ-१२१- शैव एवं वैष्णव धर्म का उत्थान जैन और बौद्ध धर्म के बाद हुआ | शायद यही कारण हैं इन दोनों मतों में विशेषतः वैष्णव मत में अहिंसा का ऊँचा स्थान हैं | दुर्गा के सामने कुष्मांड की बलि चढाने की प्रथा जैन और बौद्ध मतों के अहिंसावाद से ही निकली होगी | यद्यपी वेद में भी एक स्थान

पर कहा गया हैं की यज्ञ का सार मनुष्य में था, फिर वह अश्व में चला गया, फिर गौ में, फिर भेंड में, फिर अजा में | जब अज की बलि दी जाने लगी तब यह सार पृथ्वी में समा गया जिससे यव एवं तंदुल उत्पन्न होते हैं | जिससे रोटी या पीठी भी यज्ञ की पवित्र बलि हैं | इस पर से पंडितों ने यह अनुमान लगाया है की हिंसा की भयंकरता का अनुभव वैदिक ऋषियों को भी होने लगा था | इसीलिए उन्होंने कल्पना के इस घुमाव के द्वारा जनता के सामने यह बात रखी की पशुओं के बदले यव एवं तंदुल की भी बलि दी जा सकती हैं | .....इसी अहिंसावाद का फल हैं की जैनी लोग व्यापारी हैं कृषि में होने वाली हिंसा को त्यागकर उन्होंने व्यापार अपनाया | .....पृ १२० चूकि जैन धर्मावलम्बी बहुत ही शांति प्रिय होते थे, इसलिए मुसलमानों के शासन काल में उन पर अधिक जुल्म नहीं हुए बल्कि अकबर ने उनकी थोड़ी बहुत सहायता ही की थी | .....१०-१२ लाख जैनों के होने पर भी इस देश में दान धर्म के अनेक निशान –धर्मशाला, विद्यालय, मठ मंदिर आदि इस सम्प्रदाय वालों के बनवाये हुए हैं |

नास्तिको वेद – निन्दकः = वेद निंदक नास्तिक हैं | जैनों के पूर्व भी वेदों की निंदा उपनिषदों में होने लगी थी, बृहस्पति एवं चार्वाक कटु निंदक थे परन्तु समाज पर महावीर एवं बुद्ध का असर पड़ा | ब्राह्मण के प्रति लोगों का मोह भंग होने लगा था | वे मांसाहारी होते जा रहे थे | अतः बोद्ध एवं जैनों के महानायक क्षत्रियों में जन्मे |

पाणिनि का सूत्र(७ वि सदी ई.पूर्व) – अस्ति-नास्ति दिष्टं मतिः = परलोक की सत्ता मानने वाला आस्तिक एवं न मानने वाला नास्तिक हैं | महेंद्र कुमार न्यायाचार्य कृत जैन दर्शन में डॉ मंगल देव शास्त्री का मत |

पृ-६६ श्री कृष्ण ऐतिहासिक पुरुष हैं इसमें संदेह नहीं उनका सम्बन्ध फसल और गाय से था, प्राचीन ग्रंथों में उनके साथ प्रेम की कथाएं नहीं मिलती हैं |....गोपाल लीला रास और चीरहरण की कथाएं तथा उनका रसिक रूप बाद के भ्रांत कवियों और आचार च्युत भक्तों की कल्पनाये हैं जिन्हें इन लोगों ने कृष्ण चरित में जबरदस्ती ठूंस दिया | “शकों के ह्रास काल में जिस प्रकार

महादेव का रूपान्तर लिंग में हुए, उसी प्रकार गुप्तों के अवनति काल में वासुदेव का रूपान्तर व्यभिचारी गोपाल में हुआ।"

राधा - पृ-६७ – वैष्णवों के तीन प्रसिद्ध पुराण हरिवंश, विष्णु पुराण, और भागवत हैं लेकिन इनमें से किसी में राधा नाम का उल्लेख नहीं हैं। भागवत में कथा आई हैं कि कृष्ण ने सभी गोपिओं को छोड़कर एक गोपी से अलग मुलाकात की। बस भक्तगण इसे ले उड़े और उसी गोपी को राधा मानने लगे। "भागवत का सार रास है परन्तु उसमे भी गोपी शब्द नहीं आया हैं। ...ब्रह्म वैवर्त पुराण १६ वी शदी में पश्चिम बंगाल में लिखा गया इसकी प्रमुख गोपी राधा का नाम है।"-(मध्यकालीन धर्मसाधना में प. हजारी प्रसाद द्वेदी)। ... बहुत सम्भव है कि कृष्ण की बाललीला एवं राधा की प्रेम कल्पना किसी आर्येतर जाती से आई हो। राधावाद के प्रचारक निम्बार्क महाराज दक्षिण के ही हैं। दक्षिण की भक्तिन ओंदाल अपने को मीरा से पहले राधा कहती थी।

गणेश – पृ-६२

इनकी कल्पना पहले विघ्नेश के रूप में चलती थी और जैसा कि मनुष्य की देह पर हाथी का मस्तक लगाये हुए भयानक रूप है, वैसे ही, लोग उन्हें डरकर ही उन्हें पूजते थे। कहते हैं, जब बौद्ध धर्म की महायान शाखा का जन्म हुआ, ये विघ्नेश ज्यों के त्यों उसमे आ विराजे और प्रत्येक अनुष्ठान के आरम्भ में उनकी प्रसन्नता के लिए पूजा की जाने लगी। किन्तु धीरे-२ ब्राह्मणों ने उन्हें विघ्नहर बना डाला और विघ्न हर रूप में ही वे हमारे पौराणिक धर्म के साथ रहे हैं। दक्षिण में गणेश ब्र.हैं परन्तु महाराष्ट्र में शारदा उनकी पत्नी मानी जाती हैं। डॉ संपूर्णानंद ने सिद्ध किया हैं कि गणेश आर्येतर देवता हैं। .....आर्य लोग गणेश का अस्तित्व नहीं जानते थे। जब वे पूर्व की ओर बढ़े तो उनका अनार्यों से संपर्क बढा और बहुत से अनार्य आर्य वस्तिओं में आ बसे। विद्वानों के विरोध के बाबजूद निम्न कोटि के लोगों ने कुछ नए देव देविओं को अपनाया। ऐसे देव देवी असभ्य जंगली लोगों में सर्वत्र पूज्य हैं। इनकी आकृति पशु पक्षियों की सी होती हैं या प्रेत पिशाच जैसे मुंह और दांत होते हैं। आज भी बहुत से ग्राम में ऐसे ग्राम देवों की मिटटी या लकड़ी की मूर्तियाँ दीख पड़ती हैं। प्रायः सभी क्रूर कर्मा होते हैं। भांति-२ की पूजा करके इनको शांत किया जाता हैं अपने अनार्य पड़ोसी आर्यों ने नाग, गधे पर सवार

होने वाली शीतला और कुत्ते पर चढने वाले भेरव के साथ मूषक वाहन हस्ती मुख विनायक को भी लिया / विनायक विघ्न करता था अच्छे कामों में भी बाधा डालते थे इसलिए प्रत्येक शुभ कर्म के आरम्भ में उन्हें मनाना पड़ता था / जब आर्यों ने उन्हें ग्रहण किया उनका रूप बदलने लगा / और विघ्नेश से विघ्नहर बन गये /

प्रस्ताव न २

बम्बई पञ्च कल्याणक प्रतिष्ठा एवं श्री कानजी महाराज की ७५ वी हीरक जयन्ती के सुअवसर पर पधारे हुए विद्वानों का यह सम्मेलन दि. जैन परंपरा के परम श्रद्धालु एवं प्रवक्ता एवं अध्यात्मिक सत्पुरुष आत्मार्थी श्री कांजी महाराज के प्रति हार्दिक अभिनन्दन एवं श्रद्धा व्यक्त करता है और कामना करता है कि श्री आ कांजी महाराज अनेकांत सम्मत आगमानुकूल प्रवचनों से जैन शासन की जो सेवा कर रहे हैं उसे निरंतर बल मिले और जन कल्याण के हेतु उसको अधिकाधिक व्यापकता प्राप्त हो /

प्रस्तावक – प. भगवान् दास जी न्यायतीर्थ, काव्यतीर्थ रायपुर

समर्थक – प. अभयचन्द्र जी जैन दर्शनाचार्य विदिशा 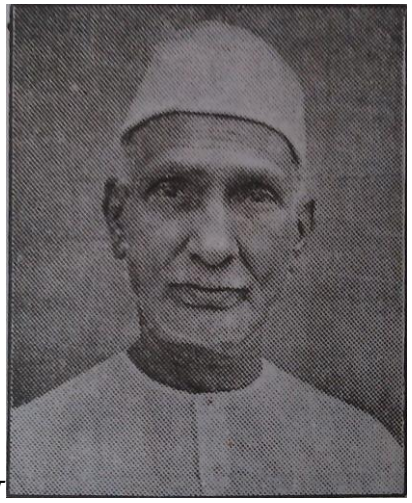 mantri abhy chndr jain vidisha

सर्व सम्मति से पास

८-३-१९४७

प्रस्ताव न १

बम्बई पञ्च कल्याणक महा महोत्सव पर एकत्रित दि. जैन विद्वानों का यह सम्मेलन वर्त्तमान समय में सत्पुरुष श्री कानजी महाराज के सैद्धांतिक प्रवचनों को आधार बनाकर अखबारों तथा ट्रेक्टो द्वारा व्यक्तिगत अनुचित आक्षेप तथा आरोपात्मक अनुचित शब्दों का प्रयोग किया जाता है जिससे समाज का वातावरण दूषित हो रहा है, इसे समाज व धर्म के लिए घातक मानता है / सम्मेलन विद्वानों

तथा समाज के नेताओं से अनुरोध करता है कि इस निन्द्य पद्धती को तत्काल बंद किया जाय तथा पारस्परिक धर्म वात्सल्यभाव से चर्चायें करे ताकि धर्म की प्रभावना हो और समाज में सोहार्द बड़े |

प्रस्तावक – प. मुन्नालाल जी समगोरया सागर MP

समर्थक – प. देवचन्द्र जी साहित्याचार्य सहारनपुर

सर्व सम्मति से पास

दी २०-४-६४

सोनगढ़ प्रस्ताव न. ११

सभापति – प.कैलाश चन्द्र जी बनारस

आत्मार्थी श्री कानजी महाराज द्वारा जो दिगम्बर जैन धर्म का संरक्षण और सम्बर्धन हो रहा है, उसका श्रद्धा पूर्वक अभिनन्दन करती है तथा अपने सौराष्ट्र के साधर्मी बहिनों-भाइयो के सद्धर्म प्रेम से प्रमुदित होती हुई उनका हृदय से स्वागत करती है | वह इसे परम सौभाग्य और गौरव का विषय मानती है कि आज दो हजार वर्ष बाद भी महाराज ने श्री १००८ वीरप्रभु के शासन के मूर्तिमान प्रतिनिधि भगवान कुन्दकुन्द की वाणी को समझ कर अपने को ही नहीं पहचाना है, अपितु हजारों और लाखों मनुष्यों को 'एक जीव उद्धार' के सत्य मार्ग पर चलने की सुविधाये जुटा दी हैं |

परिषद् का दृढ़ विशवास है कि महाराज के प्रवचन, चिंतन तथा मनन द्वारा होनेवाला दिगम्बर जैन धर्म की मान्यताओं का विश्लेषण तथा विवेचन न केवल सधर्मियों की दृष्टी को अंतर्मुख करेगा अथवा सतत ज्ञानाराधको को अप्रमतता के साक्षात् परिणाम आचरण के प्रति तथैव प्रयत्नशील बनाएगा, अपितु वे मनुष्य मात्र को अंतर तथा बाह्य पराधीनता से छुड़ानेवाले रत्नत्रय की प्राप्ति कराने वाले वातावरण को सहज ही उत्पन्न कर देगा | अतएव इस अवसर पर अभिनन्दन और स्वागत के साथ -२ परिषद् यह भी घोषित करती है कि यतः आपका कर्तव्य हमारा है; अतः इस प्रवृत्ति में हम आपके साथ हैं |

प्रस्तावक – प्रो.खुशालचन्द्र गोरावाला

समर्थक – प. महेंद्र कुमार न्यायाचार्य, प. राजेन्द्र कुमार, प. परमेष्ठी दास जैन

दिनांक – ८-३-१९४७

४- १९५७-५८ के समय कानजी स्वामी को लेकर समाज में सोनगढ़ को लेकर चर्चा चलने लगी थी | उसके उत्तर स्वरूप ईशरी सम्मेलन हुआ परन्तु कोई निष्कर्ष न निकला तब जैन तत्व मीमांसा नामकी पुस्तक लिखी एवं बीना समाज ने विद्वानों का सम्मेलन बुलाया और कलकत्ता मुमुक्षु मंडल ने प्रकाशित की | प.मख्खन लाल जी ने आपको चेलेंज किया तो आपने 'जैन दर्शन' पत्रिका में दोनों के विचार छापने का प्रस्ताव दिया तब मख्खन लाल जी ने सोनगढ़ के विचार फेल-प्रसिद्ध हो जायेंगे इस भी से अनुमति न दी |

ब्र.लाडमल जी का पत्र आया खानिया में सभी विद्वानों को आमंत्रित किया | उस समय आप कारंजा में थे | ब्र. श्री प. माणिक चन्द्र जी चवरे की सलाह से चर्चा के नियम लिखकर भेजे | जिसे जगंमोहंलाल जी प. वन्शीधरजी व्याकरणाचार्य बीना प. मख्खन लाल जी मुरेना ने

नियम देख लिए और स्वीकृत किये तब आप जयपुर एक मंदिर में पहुंचे | यहाँ आपके न आने के भ्रम से कोई नहीं आया | तब आप प. चैन सुख दास जी के घर पहुंचे | अगले दिन प. नेमी चन्द्र जी पाटनी आये और सोनगढ़ का चर्चा से इनकार तथा कहीं और चले जाने को कहा हैं | तब आप तो अड़ गये और बोले मुझे तो इन विद्वानों के बीच सदा रहना हैं अतः चर्चा मैं तो करूँ गा | तब पाटनीजी ने साथ देने का निर्णय किया और प. जी के साथ प. टोडरमल जी के मंदिर गये जहाँ वे टीका लिखा करते थे | वहां की गादी की धूल मस्तक पर चढ़ाई | और परोक्ष निवेदन किया कि "हम आपके नगर में आये हैं आपका बल मिलने पर ही इस कार्य में सफलता मिलेगी |" यहाँ से आप पाटनी जी के निवास पर रहे |

२१-१०-६३ को खानिया आयें परन्तु सारे विद्वान न आ पाने से अगले दिन

२२ को आये वहां आ. शिवसागर विराजमान थे उन्हीं के सामने फूल चन्द्र जी ने निवेदन किया कि मख्खन लाल जी ने निम्न नियमों के तत्वचर्चा स्वीकार की है | मख्खन लाल जी इनकार किया तो ब्र. लाड मल जी ने उनका पत्र दिखाया तब स्वीकार किया | मध्यस्थ के नाम पर प. चैन सुखदास जी का नाम पर सहमती न बन सकी |

फिर अगले दिन २३ ता. को प. वंशीधर जी न्यायालन्कार को मध्यस्थ स्वीकार किया | प. मख्खन लाल जी ने ६ प्रश्न मध्यस्थ के माध्यम से दिए जिस पर हस्ताक्षर न थे तब फूल चन्द्र जी ने स्वीकार न किये फिर वापिस आने पर हस्ताक्षर किये मख्खन लाल जी | विपक्ष के प्रतिनिधि विद्वान थे प. माणिकचन्द्र जी न्यायाचार्य, प. मख्खन लाल जी न्यायालान्कार स्व. श्री प. जीवन्धर जी न्याय तीर्थ, प. पन्नालाल जी साहित्यआचार्य और प. वंशीधर जी व्याकरणाचार्य और पक्ष से प. जगंमोहनलाल जी कटनी, तथा प. नेमीचन्द्र जी पाटनी |

२४ ता. को उत्तर जगन्मोहन लाल जी पढ़ के सुनाये और विपक्ष को दिए |

२५ ता. को उन्होंने कहा कि वे प्रश्न साधारण हैं उन्हें प्रश्न न मानकर आज के प्रश्न को उत्तर पक्ष माना जाए | तब फूल चन्द्र जी ने प्रश्न देखने को कहा एवं उन्हें ही पूर्व पक्ष स्वीकार किया गया एवं फुल चन्द्र जी के उत्तर को उत्तर पक्ष माना गया | और आज के प्रश्नो को प्रतिशंका माना गया | यह क्रम ७-८ दिन दो दौर तक चला |

२९ ता. को स्व. प. माणिकचन्द्र जी न्यायाचार्य , और प. वंशीधर जी व्याकरणाचार्य सबसे पहले पधार गये अन्य विद्वान न होने से फूल चन्द्र जी ने दोनों विद्वानों को प्रणाम किया | माणिक चन्द्र जी बोले "प. जी आपने अपने निबंधों द्वारा अपूर्व प्रमेय उपस्थित किया है |" यह सुनकर पिताजी बोले "गुरूजी आपने हमे जैसा पढ़ाया है वैसा हमने लिखा है |" इस पर वे बोले "प. जी आज भी आप हमें उसी रूप में मानते हो तो यह मानकर चलना कि यह प. फूलचन्द्र नहीं बल्कि प. माणिकचन्द्र लिख रहा है |" जबकि विपक्ष के विद्वान होने पर भी उन्होंने प्रसंशा की |

तीसरा दौर अपने-२ स्थान से होना तय हुआ | परन्तु मोतिअबिंद हो जाने से सम्भव न हो सका |

१- पांडवों ने कौरवों से बागपत तिलपत इन्द्रप्रस्थ पानीपत और सोनीपत ५ ग्राम मांगे थे |

२- राजा नैनसिंह अकारण ही जैन मंदिर विरोधी था, १ लाख मुद्रा समय पर शाही खजाने में जमा न कराने पर राजा हर्सुखराय बादशाह शाह आलम के खजांची थे, ने जमा करा दिये थे | उसी राजा ने मुख्य मंदिर का शिलान्यास किया था | स. १८६३ में प्रतिष्ठा हुई | बिना फण वाली पार्श्वनाथ भ. की प्रतिमा दिल्ली से लाकर यहाँ विराजी गई थी |

सुरेश पारेख वड़ोदरा - फोटो खीचने का श्रेय प्राप्त हुआ

हेमेन्द्र शाह अहमदाबाद के फोटो ने रूस का इनाम जीता था |

तुलसीदासजी – रामायण में लिखते हैं –

रावण कहता हैं मंदोदरी से- जो मैं रूप धरूँ धनुधारी, मात सामान लगे सब नारी ||

जादूगर केलाल स्वामी जी से मिलने आया था – एक जीबित बेन के दो टुकड़े कर देता हैं | स्वामीजी अरे इसमें क्या आश्चर्य हैं आश्चर्य तो इसमें हैं की ज्ञान अवम राग को जुदा जान ले |

स्वामीजी के कपड़े जमीन पर बिछाकर सुखाये जाते थे |

विमल दादा झांजरी विरोध करने सोनगढ़ गये थे |

मुस्लिम परिवार पर मरणोपरांत प्रभाव

रफीक बहादुर उर्फ़ राजू भाई एवं विराग माखाणी

जन्म तिथि	**नया नाम विराग बहादुर भाई शाह**
माता-पिता का नाम	बहादुर हुसेन माखाणी जुबेदा बाई बहादुर भाई माखाणी
शिक्षा	१२ पास
परिवार	हीना बेन विराग भाई शाह २४ वर्ष १० पास | भाई शीराज (नया नाम राजू भाई) बहादुर शाह ३६ वर्ष १२ पास १० वर्ष अफ्रीका रहे | शिल्पा बेन राजुभाई ३१ वर्ष ग्रेजुएट
व्यवसाय	*फोन न. ९८७९७४७४९३, ९७१२९०३०३०*
रचनात्मक कार्य	*२०१० में धर्मांतरण रात्री भोजन माह में ५ दिन की छूट, मांस मदिरा, नशा जमीकंद का आजीवन त्याग / गुरुदेवश्री के प्रवचन के नियमित अभ्यासी /*
प्रेरक प्रसंग	कच्छी श्वे.वीरेनसुखलाल भाई मोरबीया ९८२५२३६४९४ गांधी धाम के सहवास में स्वाध्याय का रस जागा | अहमदाबाद आने के बाद धर्म परिवर्तन कर लिया |

परिशिष्ट - साभार

i. **श्री कानजी स्वामी के प्रवचन साहित्य का अनुशीलन – डॉ ममता राजकुमार जैन \|**
ii. **आगम पथ मई १९७६ युगपुरुष कानजी स्वामी**
iii. **स्वर्ण भानु**
iv. **सन्मति सन्देश वर्ष ७ अंक ५**
v. **शासन प्रभाव**
vi. **परिचय पुस्तिका (कानजी स्वामी)**
vii. **अध्यात्म प्रणेता खानिया तत्व चर्चा पृष्ठ १९**
viii. **आत्म धर्म – प्रकाशन वीर नी.स. २५२२ से**

ix. कहान कथा महान कथा
x. अध्यात्म मूर्ति कानजी स्वामी अवसान और कर्तव्य
xi. व्यक्तित्व और कर्तत्व
xii. परम पूज्य गुरुदेव श्री का सम्प्रदाय परिवर्तन
xiii. आत्मधर्म मार्च १९७७ विशेषांक
xiv. अध्यात्म युग दृष्टा-कानजी स्वामी
xv. रत्न चिंतामणि महोत्सव
xvi. आत्म प्रतीति विशेषांक
xvii. श्री कानजी स्वामी
xviii. युगपुरुष कानजी स्वामी
xix. आत्म धर्म जन्म जयंती विशेषांक
xx. मोक्षमार्ग प्रकाशक
xxi. आत्मधर्म (सातिशय प्रभावना योग)
xxii. जन्म भूमि पंचांग
xxiii. पूज्य बहिन श्री चम्पाबेन के आत्म साधना प्रेरक पत्र
xxiv. चैतन्य बिहार –युगल किशोर जी बाबूजी कोटा
xxv. पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी जन्म शताब्दी विशेषांक (आत्मधर्म-स. २०४५ /१९९०)
xxvi. पूज्य बहिन श्री चम्पाबेनके आत्म साधना प्रेरक पत्र |
xxvii. तत्व बोध चिंतवन –वडोदरा
xxviii. जिनवाणी का बालक –एमबी पाटिल का जीवन परिचय (कन्नड़ प्रति), बेलगाँव के साधर्मी बन्धु |
xxix. प्रेरणा रसायन -प्रकाशक श्री पार्श्व नाथ दिग.जैन चैत्यालय २६-a कुम्भानगर चित्तोड़ गढ़ राज ०१४७२-२४०२८२ सम्पादक राजेन्द्र जैन ०१४७२-२४९५७५

xxx. स्व.श्री भैया मिश्री लाल गंगवाल इंदौर स्मृति ग्रन्थ ७ अक्टु १९९८ से साभार

xxxi. रतनदीप

xxxii. तत्ववेत्ता डॉ हुकमचन्द्र भारिल्ल प्रकाशन ६ अप्रेल २००१

xxxiii. वीतराग विज्ञान नव १९८३

xxxiv. आत्म दर्शन मई २०१४

करो सदा ऐसे ही काम जिसके सुंदर हो परिणाम |

अधिकारों का वह हकदार कर्तव्यों से जिसको प्यार |

पंडित कैलाश चन्द्र सिद्धांत शास्त्री - बनारस आत्म धर्म जन १९८१
बनारस में भेलूपुर के दर्शन कराने ले गये वहां जिसमें श्वे.प्रतिमा एवं एक कोने में नीचे दिग प्रतिमा विराजमान हैं तब गुरुदेव बोले सरागी ऊपर बेठा है, वीतरागी नीचे तब मैंने उन्हें सब स्थिति बताई | दूसरे दिन गुरुदेव श्री स्यादवाद विद्यालय पधारे वार्षिकोत्सव में आपके साथ यातिहीरानंद जी विराजे थे | यति जी ने स्वामीजी ओ अपने यहाँ पधारें को आमंत्रित किया स्वामीजी चुप रहे | पुनः अनुरोध करने पर बोले आपके मंदिर वहां होंगे मैं तो नमस्कार नहीं करूंगा तब आपको कष्ट होगा | यति बोले आप तो अध्यात्मिक संत हैं आपक लिए सब एक हैं |
स्वामीजी बोले - ऐसा नहीं है | मैं उनका स्पस्ट उत्तर सुन कर स्तब्ध रह गया |

डॉ देवेन्द्र कुमार शास्त्री नीमच आत्मधर्म फर १९८१

यद्यपि मैं कभी सोनगढ नहीं गया न कभी उनक विद्वानों के साथ बैठकर स्वामी जी केसम्बन्ध में चर्चा की | एक बार जब स्वामीजी उदयपुर पधारे थे तभी प्रत्यक्ष चर्चा हुई थी | साहित्य में झाँक कर तो कई बार देखा था | आ बात दिग मत माँ छे बीजे क्यांय नथी | मैंने पूछा और श्वे. मत में ? गुरुदेव श्री फिर बोले - आ बात त्यां नथी | मैंने पूछा - आपने आगम ग्रन्थ तो बांचे होंगे ? बोले ६० बार कल्प सूत्र का बाचन तो अनेकों बार किया पर सब मिलाबट हैं मिलाबट | ऐसी शुद्ध बात तो दिग मत में ही है | इसकी वहां चर्चा ही नहीं हैं |

भले ही आज हम किसी स्वार्थ या पक्षपात के कारण स्वामीजी को अपनी श्रद्धा का आलम्बन न बना पाए हो, किन्तु हमारा यह विशवास है की आनेवाली पीढ़िया इस महापुरुष की ग्रन्थ हीं चेतना को पहचान कर महसूस करेंगी की वास्तव में सदगुरुदेव श्री कानजी स्वामी के कारण एक ऐसे युग का सृजन हुआ जिसमें अध्यात्मिक क्रान्ति ने जन्म लिया और सच्चे सुख को पाने के लिए सही दिशा दी |

५-७-६६ को स्वामीजी योग्सार गाथा ७३ पर प्रवचन करते हुए बोले चिढ़ी या मोर, मेंढक नाग रात्री आहार नहीं करते | अहो ! ....अन्य सर्प तो रात्री में इधर उधर घूमते हैं परन्तु जिसे आत्मा का श्रद्धां ज्ञान हुआ वह जहरीला सर्प भी रात्री भोजन नहीं करता |

शशिभाई भावनगर के संपादकत्व में आत्म धर्म में ट्रस्ट के निर्णयों के खिलाफ छापा गया की गुरुदेव की स्टेच्यु समाधि मंदिर में लगेगी | गुरुदेव श्री के वचनामृत का भी लिखा हैं | ट्रस्ट के निर्णय अनुसार स्टेच्यु नहीं लगनी है एवं बहिन श्री के वचनामृत के साथ अन्य विद्वानों आचार्यों के भ बचनामृत लिखे जाने थे | दिस १९८३ का अंक |

महेंद्र कुमार तलाटी, दाहोद गुज वीतराग विज्ञान मई १९८४

दोपहर प्रवच एवं भक्ति के बाद स्वामजी के साथ हम १०-५ आदमी बेठे थे समाचार पत्र पढ़े जा रहे थे | स्वामीजी की बुराय भरे समाचार पढ़े जा रहे थे | हम्म में से एक भाई बोले - कैसा लिख रहे हैं इन्हें कुछ भी विवेक नहीं है | फिजूल में ही कागज काला करते हैं | इन्हें कुछ और काम नहीं हैं | स्वामीजी अत्यंत करुना पूर्वक बोले - कागज को कौन काला कर सकता है ? वे तो स्वयम द्वेष भाव करके अपनी पर्याय को ही कला कर रहे हैं अपना संसार परिभ्रमण ही बधा रहे हैं | अरे भाई ! वे भी भगवान आत्मा ही है, भूले हुए भगवान ही हैं | भूल भी एक समय मात्र की है | इस एक समय की भूल को सुधार कर वे पर्याय में भी भगवान बन सकते है | हमे तो कोई विरोधी नहीं दिखता है | सभी भगवान् ही दिखाई देते है क्योंकि द्रव्य दृष्टी से तो सभी भगवान ही हैं न |

हम सभी उनका करुना मिश्रित सद्भाव देखकर दंग रह गये, और हमे लगा की सच्चा अध्यात्मिक जीवन तो ऐसा होता ही हैं |

ब्रह्मचर्य की दृढता

बाबूलाल कन्हैया लाल सर्राफ दाहोद गुज

२३ साल (१९८४ से) पहले स्वामीजी गिरनार जी पधारे थे सेकड़ो मुमुक्षु साथ थे | स्वामीजी की लाइन में ही थोड़ी दूर पर बहनों को ठहराया गया था | स्वामीजी ने संघ व्यवस्थापक मलुकचंद्र को बुलाया और बहिनों को दूर ठहराने का निर्देश दिया | तत्काल दूसरी व्यवस्था की गई |

समयसार ; अद्वितीय अजोड चक्षु

पूज्य गुरुदेव श्री ने विक्रम संवत १९७८-१९९१ १३ वर्षों टक गूढ़ मंथन करके जिनवानी सा समपूर्ण निचोड़ इस शास्त्र में से ढूँढ़ निकला और फरमाया है की -

१- समयसार तो द्वीय श्रुत स्कन्ध का सर्वोत्कृष्ट आगमों का भी आगम है |

२- समयसार तो सिद्धांत शिरोमणि , अद्वितीय अजोड़ चक्षु और अंधे की आँख है |

३- समयसार तो संसार विष-वृक्ष को छेदने का अमोघ शस्त्र है |

४- समयसार तो कुंद कुन्दाचार्य से कोई ऐसा शास्त्र बन गया ; जगत का भाग्य की ऐसी चीज भरत क्षेत्र में रह गई | धन्य काल

५- समयसार की प्रत्येक गाथा और आत्म ख्याति टीका ने आत्मा को अंदर से दुला दिया है | समयसार की आत्म ख्याति जैसी टीका दिगम्बर में भी दूसरी किसी शास्त्र में नहीं है | इसके एक एक पद में इतनी गंभीरता (कि) खोलते - खोलते पार न आये- ऐसी बात अंदर है |

६- समयसार तो सत्य का उद्घाटक है |

७- समयसार तो भारत का महारत्न है |

८- समयसार के थोड़े शब्दों में भावों की अद्‌भुत और अगाध गम्भीरता भरी है |

९- समयसार तो भरतक्षेत्र का प्रवचन का सर्वोत्कृष्ट बादशाह है |

१०- समयसार तो सार शास्त्र कहलाता है |

११- समयसार तो जगत का भाग्य की समयसार रूपी भेंट जगत को मिला , स्वीकार नाथ ! अब स्वीकार ! भेंट भी दे वह भी नहीं स्वीकारे ?

१२- समयसार तो वैराग्य प्रेरक परमात्म स्वरूप को बतलाने वाली वीतराग वीणा है |

१३- समयसार में तो अमृत चन्द्र आचार्य ने अकेला अमृत बहाया है, बरसाया है |

१४- समयसार एक बार सुनकर ऐसा नहीं मान लेना की हमने सुना है , ऐसा नहीं बापू ! यह तो प्रवचन सार है अर्थात आत्मसार है , बारम्बार सुनना |

१५- समयसार भरत क्षेत्र की अंतिम में अंतिम और सर्वोत्कृष्ट सत को प्रसिद्ध करने वाली चीज है |

१६- समयसार तो भरत क्षेत्र में साक्षात केवल ज्ञान सूर्य है |

१७- समयसार ने केवली का विरह भुला दिया |

१८- समयसार की मूलभूत एक-२ गाथा में गजब गम्भीरता !

१९- समयसार की एक-२ गाथा में हीरे मोती जड़े हैं |

२०- समयसार में तो सिद्ध की भन्कार सुनाई देती है |

२१- समयसार में तो शाश्वत अस्तित्व की दृष्टी करानेवाला परम हितार्थ शास्त्र है |

२२- समयसार तो साक्षात् परमात्मा की दिव्य ध्वनि/ तीन लोक के नाथ की यह दिव्य ध्वनिहै |

1970 से पहले पर्मागम मंदिर बनाने की बात चल रही थी गुरुदेव श्री अधिक धन खर्च करने को उत्सुक नहीं रहते थे | अतः ३ लाख में बन जाएगा ऐसा कह कर अनुमति ली |लोगों ने आपत्ति ली की इतनी कम राशी छोड़ २५लाख में भी नहीं बनेगा | बाद में कितना ही लग जाए परन्तु पहले इतना ही बताना चाहिए |

तब डॉ साहब ने चिमन भाई ठाकरसी से कहा ३ लाख दे डॉ तो मैं तुम्हें जीवंत परमागम मंदिर दे दूंगा | बात आई गई हो गोई | जयपुर में बात चली कि यदि विद्यालय खोलना है तो स्थान आदि का क्या

होगा ? गोदिका जी बोले मैं जगह दे दूंगा | पैसे का क्या होगा ? बाबुभाई जी फाटे पुर बोले इसकी जिम्मेदारी मेरी है | "पढाने मैं तैयार हूँ |"- डॉ साहब बोले |
अब गुरुदेव को कैसे तैयार किया जावे इसकी किसी को गंध भी नहीं मिलना चाहिए | गुरुदेव पहले सुनी बात का विशवास ज्यादा करते थे | शशिभाई ओर डॉ साहब हवाई जहाज से भावनगर पहुंचे | और गुरुदेव को विद्यालय का प्लान बताया | वह जयपुर में ही खुल सकता है | कारण कि इसकी शिक्षा की सुविधा मात्र राजस्थान में ही हैं |

इतिहास –
१९५८ में भोपाल में शिविर लगा था | तब श्वे मंदिर में ३ साधू चेतन विजय विकास विजय एवं लाभ विजय महाराज साहब | उन्होंने नेमी काका रखियाल से कक्षा सुनी और दिग बन गये | झिर्नों के मंदिर में ब्र. आश्रम में रहने अध्ययन करने की सुविधा ड़ी गई थी | यहाँ के ३ श्वे परिवार भी दिग बने | मंदिर के तीसरी मंजिल पर श्वे मंदिर होने पर भी दिग ग्रन्थ रखते पढ़ते थे | ८-१० श्वे साध्वियों ने भी पढ़ा था | बाद में लाभ विजय अगास चले गये | चेतन सोनगढ़ रहे |
यहाँ मुमुक्षु मंडल की स्थापना १९४८ में हुई थी | - सोभाग्य मल जैन भोपाल २४-१-१५

अन्य कथन – जानकारी

क्या बहिन श्री को स्वाध्याय मंदिर में प्रवेश के समय अर्थात सोनगढ़ आने के ३ वर्ष ३ माह ३ दिन बाद भगवती ऐसा विशेषण प्रदान किया था ?

स्वाध्याय मंदिर सोनगढ़ में संसार समुद्र में जहाज जैसा लगता है |- मंगलायतन दिस १४

१- पं.कैलाश चन्द्र जी के अनुसार यह कानजी युग है क्योंकि सारी सभाओं में उन्ही के लक्ष्य से प्रवचन होते हैं |

२- *७ अगस्त १९५६ को गुरुदेव श्री ने प्रथम तीर्थ यात्रा की स्वीकृति दी |*

३- *१२ नव ५६ को १५ नव तक नेमिनाथ भगवान की वेदी प्रतिष्ठा हुई |*

४- *१७ नव को गुरुदेव श्री प्रवचन में कहा – "देखो ! कल तो सम्मेद शिखरजी तीर्थ यात्रा हेतू जाना है |अनंतों तीर्थंकरों ने वहां से मोक्ष पाया है | जिस मार्ग से भगवान ने मोक्ष पाया है वाही उपदेश में कहा है | हे सर्वज्ञ पिता ! आप कहने वाले एवं मैं झेलने-सुनने वाला, हम भी आपके पीछे -२ चला आ रहे हैं |"*

५- *मंगल तीर्थयात्रा –१९५६-५७ पूज्य गुरुदेवश्री की उत्तर भारत की मंगल तीर्थयात्रा –१९५७*

सोनगढ़ से वल्लिभपुर	*कार्तिक सुदी पूनम १८ नव ५६*	*पैदल-डोली यात्रा प्रारम्भ |*

पाटणा	कार्तिक वदी १, १९ नव	
बरवाला	कार्तिक वदी २-३, २०-२१ नव	
पोलारपुर	कार्तिक वदी३ २१ नव	भीमनाथ के महंत ने स्वागत सन्मान किया /
धन्धुका	कार्तिक वदी५, २२ नव	प्रवचन में सम्मेद शिखर के शास्वत सान्थियाँ का स्मरण कर सिद्ध जीवों जैसा अपना जीव है उसकी पहचान कर हे जीव ! सम्यक्ज्ञान द्वारा तेरे आत्मा में मांगलीक सान्थिया पूर /
खडोल-फेदरा	२३ नव	खडोल में एक ग्राम सेठ ने स्वागत किया / दोपहर प्रवचन फेदरा में /
भोडाद	कार्तिक वदी ७ २४ नव	ओमकार नदी आई / नोक विहार
गोलाड़ा	कार्तिक वदी ८ २५ नव	मोटीबोर ग्राम से साबरमती जाने के लिए नौका बिहार किया /गोलाणा आये / यहाँ अमृतलाल नरसी भाई के स्वर्ग वास का समाचार सुनकर सत्वधता छ गई /
खम्भात	कार्तिक वदी ९ २६ नव	इतने दिनों में पहली वार जिन(विमलनाथ का) दर्शन करते ही आनंद आ गया / गुरुदेव श्री व् बेन श्री बेन भक्ति कराई /
वडवा	कार्तिक वदी १० २७ नव	वडवा श्रीमाद राज चन्द्र जी आश्रम में 'निज पद की प्राप्ति यह अनेकांत का फल हैं' पत्र पर प्रवचन किया /
बोरसद	कार्तिक वदी ११ २८ नव	आदिनाथ का दर्शन किया / एक गृह चेत्य में स्फटिक के अजितनाथ भगवान के दर्शन किये /
आगास	कार्तिक वदी १२ २९ नव	आश्रम के स्वाध्याय हाल में प्रवचन हुआ / अगले दिन चन्द्र प्रभ का दर्शन किये और वापिस बोरसद पधारे वहां स्वागत एवं प्रवचन किये / यहाँ से वासद – छाडी में चन्द्र प्रभ के दर्शन किये /
पावागढ़	२ दिस	
वड़ोदरा	मगसर सुदी १ ३ दिस	सुखसागर नाम का सरोवर, न्याय मंदिर जहाँ गुरुदेव श्री का मुकद्दमा चला था / रात्रि में सम्यक्त्व की महिमा विषय पर तत्व चर्चा हुई थी /
ईटोला	मगसर सुदी ३ ५ दिस	बालकों को संस्कार सम्बन्धी सुंदर उद्बोधन वृक्ष के नीचे दिया / वचपन से ही आत्म ज्ञान के संस्कार देने जैसे हैं / सा विद्या या विमुक्तये /
मीयागांव	मगसर सुदी ४ ६ दिस	दोपहर में मंडप में प्रवचन हुआ /

पालेज प्रतिष्ठा	मगसर सुदी ५ ७ दिस	१० दिस से १३ दिस वेदी प्रतिष्ठा हुई / १२ तारीक को रेल से हाथी आया जो घुन्घरूं बाँध कर नचा , सूढ़ से बाजा बजाय, पुष्पमाला से सन्मान किया /
भरूच	मगसर सुदी १२, १४ दिस	
अंकलेश्वर – सजोद	मगसर सुदी १३, १५ दिस	सज्जोद = सत की जोत , अक्ल के ईश्वर = अक्लेश्वर गुरुदेव ने अर्थ किया / सजोद में शीतलनाथ भगवान के दर्शन किये /११-३० पर बंद बाजे से स्वागत किया गया /
कोशम्बा- कीम	मगसर सुदी १४, १६ दिस	
सूरत	मगसर सुदी १५, १७ दिस	२ दिन रुके / सेठ मूल चन्द्र किशन चन्द्र कापडिया एवं फाबा भाई धीरजलाल हरजीवन भाई ने सुंदर व्यवस्था की / प. हिम्मतभाई यहाँ कई वर्ष रहे हैं , बेन श्री भी कई महीनों रहीं हैं /
कतार ग्राम – सूरत		पुराने आचार्यों के ७५ चरण स्थापित हैं /
पलसाणा	मगसर वदी २, १९ दिस	यहाँ से नवसारी फिर चीखली में थियेटर में ६०० शिक्षित लोगों ने प्रवचन सुना /
बलसाड	मगसर वदी ५, २१ दिस	गीता सदन में उतारा / गृह चेत्य में दर्शन किये / दोपहर में प्रवचन हुए /
वापी	मगसर वदी ६, २२ दिस	
तलासरी	मगसर वदी ७-८ , २३ दिस	आ. कुन्दकुन्द आचार्य पद आरोहण दिवस जंगल में मनाया / अच्छा लगा तब सभी को लेकर सायं फिर गये /
कासा ग्राम	मगसर वदी ९, २४ दिस	यहाँ सूर्य नदी है, २०० मराठी शिक्षकों के मध्य शिक्षणशिविर में "सप्त व्यसन" पर उपदेश दिया /आदिवासी लोग गरीब , दूध मीलों तक नहीं मिलता है / कच्चे मकान , घनघोर जंगल , दूल्हा शर्ट एवं लंगोट लगाता है
मनोर	२५ दिस	साधारण ग्राम, अजाने मनुष्य, ढोर बाँधने के स्थान में रसोई बनाई, चारो ओर दुर्गन्ध , गुफा जैसे छोटे छोपड़े में उतारा था गुरुदेव का /
भीमंडी	मगसर वदी १२, २८ दिस	सेठ मगनलाल सुंदरजी भाई ने व्यवस्था की / ५०० लोग मुंबई से आये / आज सायं थाणे पधारे /
शीव –मुंबई	२९ दिस	रास्ते में घाटकोपर में ५०० , कुर्ला, मुलुंड,शीव में १५०० लोगों स्वागत किया / सुमन भाई रामजी भाई दोषी के घर उतारा हुआ / दोप.में तमिल होल में २००० लोगों के बीच प्रवचन हुआ /

मुंबई	मगसर वदी १४, ३० दिस	मारवाड़ी पंचायत वाडी में गुरुदेव १७ दिन रहे / रविवार को १०००० श्रोता तक हो जाते थे / जवेरी बाजार के दिग जैन मंदिर में ईट गुरुदेव के हस्ते लगाई /
भीमंडी	पोष सुदी १५ १६ जन ५७	सेठ मगनलाल सुंदरजी भाई के ११-३० पर भोजन सभी यात्रिओं का हुआ /
गजपंथा	पोष सुदी १५ १६ जन ५७	मशरूल में दर्शन किये / १७ जन को पर्वत पर गये /
मान्गीतुंगी	पोष वदी ३ १८ जन	गजराज गंगवाल कलकत्ता ने व्यवस्था की / रावल गाँव, एलोरा गुफा, मालेगांव होते हुए धूलिया /
धूलिया	पोष वदी ५ २० जन	एक दिन का कार्यक्रम होने के बाद सोन्गिरी, एवं सेंधवा में सेठ हुकुम चन्द्र इन्दोर की जीं मिल हैं वहां भोजन हुआ / दोप में प्रवचन , में ३००० श्रोता थे /
बडवानी बावनगजा-चुलगिरी	२० जन-	२२ जन को ७ बजे गुरुदेव ने १-डेढ़ हजार वर्ष पूर्व स्थापत पूर्व दिशा सन्मुख हाथ जोड़े खड़ी आ. कुन्दकुन्द की प्रतिमा देखि एवं सभी को दिखाई /अंजड में सोनगढ़ में प्रतिष्ठित प्रतिमा यहाँ विराजमान है /
पावागिर ऊन	२२ -२३ जन	
खंडवा	२४ जन	
सनावद	२५ जन	गुरुदेव की रात्रि तत्व चर्चा पीछे जनता के आग्रह पर थोडा प्रवचन भी हुआ / रात्री विश्राम
सिद्धवरकूट	पोष वदी ११ २६ जन	बडवाह सायं / तत्व चर्चा के बाद रात्री विश्राम /
इंदौर	२७ जन	
उज्जैन	माह सुदी-१-२,१-२ फर	
मक्शी-पार्श्वनाथ	२ फर	
भोपाल	३ फर	झिर्नों के मंदिर दर्शन , भोजपुर
कुराना		
नरसिंह गढ़		

राधव गढ़		
गुना	४ फर	
बजरंग गढ़	४ फर	
बदरवास		
कोलारस		
सेसई		
शिवपुरी		
झांसी	५ फर	
बबीना		तालबेहट
ललितपुर		देवगढ थूबोनजी कुछ यात्री अलग से गाये गुरुदेव न पधारे।
चंदेरी		
सोनागिरी	माघ सुदी ६ ६ फर	
ग्वालियर	माघ सुदी ८ ८ फर	
धोलपुर	माघ सुदी ९ ९ फर	
आगरा	माघ सुदी १० १० फर	
शौरिपुर बटेश्वर	माघ सुदी १४ १४ फर	
मथुरा	माघ सुदी १५ १५ फर	

फिरोजाबाद	माघ वदी २ १६ फर	
मैनपुरी	माघ वदी ३ १७ फर	
कानपूर	माघ वदी ४ १८ फर	
लखनऊ	माघ वदी ५ १९-२० फर	
रत्नपुरी	२० फर	
अयोध्या	माघ वदी ६-७-२० २१ फर	२ मील में आदिनाथ, अजितनाथ,अभिनन्दन नाथ, सुमतिनाथ,अनंतनाथ का जन्म स्थान हैं / राम जन्म भूमि / भरत-बाहुबली युद्ध, अनंत तीर्थंकरों की जन्म भूमि, वैष्णवों के ५००० मन्दिर हैं /३२ फूट की आदिनाथ की विश्व में सबसे बिशाल प्रतिमा विराजमान हैं / ५०००० का पाषाण तथा ४ लाख रु की बनाबाई मकराना के कारीगरों को ड़ी गई / ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम हैं / जहाँ मन्दिर बना है वहाँ ४५० वर्ष पहले आदिनाथ भगवान का जन्म धाम मंदी के स्थान पर कोई बादशाह मस्जिद बनाने का हुक्म दिया था परन्तु लाला केशरी सिंह नामके जैन दीवान को स्वप्न में भास् होता था कि यहाँ आदिनाथ का जन्म धाम है दीवान जी जी निवेदन किया तो बादशाह ने पूछा क्या प्रमाण हैं ? खोदने पर एक दीपक , नारियल एवं एक स्वस्तिक निकलेगा / और निकला तब से यहाँ यह जैन मन्दिर बनाया गया /
बनारस –काशी	माघ वदी -८ २२ फर	जैन सन्देशके सम्पादक, स्यादवाद महाविद्यालय के प्रधान आचार्य प. कैलाश चंद्रजी , प. फूलचन्द्रजी, प्रो खुशाल चन्द्र जी ने स्वागत किया / उस समय २५ जैन घर थे /सुपार्श्व नाथ एवं पार्श्वनाथ की जन्म नगरी हैं / रेवावाई की धर्मशाला के सामने भात गली में धर्म चन्द्र जवेरी के मकान में तीसरे माला पर पार्श्वनाथ की सुंदर रत्न प्रतिमा है / रात्री चर्चा टाउन हाल में थी /भेलूपुर में पार्श्वनाथ का जन्म धाम है /3 में से २ दिग जैन मन्दिर एवं एक में दिग स्वेताम्बर का संयुक्त जैन मन्दिर हैं /
चन्द्रपुरी	माघ वदी -८	चन्द्र प्रभु का जन्म धाम
सिंहपुरी	माघ वदी 9	श्रेयांशनाथ का जन्म धाम / पास ही सारनाथ का बौद्ध स्तूप हैं /गुरुदेव श्री स्यादवाद

	२३ फर	विद्यालय पधारे / यहीं सुपार्श्वनाथ स्वामी का जन्म धाम हैं /
डालमिया नगर	माघ वदी १० माघ वदी ११ २४-२५ फर	सेठ जगत प्रसाद के यहाँ भोजन / सेठ साहू शान्ति प्रसाद (स्वागत समिति के अध्यक्ष) एवं श्रीमती रमा देवी गुरुदेव के दर्शन को पधारे / साथ ही मीठा नमकीन यात्रिओं के लिए लाये / साहू जि की और से समस्त संघ को भोजन था / पूज्य गुरुदेव श्री का भोजन भी उन्ही के यहाँ हुआ / शाम का भोजन प. भागचन्द्र जी के यहाँ हुआ /रात्री विश्राम विक्रमगंज में हुआ / भारत भूमि क्र भूषण स्वरूप गौरव गुण गरिमा से गरिष्ट पूज्य गुरुदेव श्री ....व्याकारनाचार्य पांडे जी/-जहाँ बच्चे भी अध्यात्म की चर्चा करे वहीँ सोनगढ़ हैं / डॉ भागचन्द्र जि ने भी स्वागत किया / प. अयोध्या प्रसाद गोयलीय भारतीय ज्ञान पीठ काशी के मंत्री हैं / ने गुरुदेव श्री को सन्मान पात्र अर्पण किया / "जब सूर्य और चन्द्र हजारों वर्षों तक भटक -२ पृथ्वी की गोद में खोजते हैं तब कहीं हजारों वर्षों की तपस्या के फल में कोई कोई महान संत दिखाई देता हैं / उसी प्रकार भारत वर्ष में आज कोई पूर्व तपस्या के फल में यह विश्व वन्द्य विभूति के दर्शन जिसके लिए मैं सोनगढ़ जाना चाह रहा था वह आज स्वतः यहाँ विराजमान हो गई हैं / "गोयलीय ने कहा - "किन शब्दों से आपका स्वागत करूँ ? अरे ! स्वामीजी की मोटर की धूल से भी अपने को पावन समझते हैं /"
आरा-जैनपुरी	माघ वदी १२ २६ फर	
पटना	माघ वदी १३ २७ फर	
राजगृही	माघ वदी १३ से फागुन सुदी १ २७ से २ मार्च	
कुण्डलपुर – नालंदा	२ मार्च	
पावापुरी	२ मार्च	
गुणावा	४ मार्च	

गया	५ मार्च	
सम्मेद शिखर	फागुन सुदी ५- ६ मार्च से ईशरी ७ मार्च मधुवन के दर्शन ८ मार्च- पर्वत यात्रा	गुरुदेव श्री ने आज यहाँ स्वयं ने जय बुल्बाई – सम्मेद शिखरजी तीर्थधाम की ...जय श्री चन्द्रप्रभ भगवान् की .....जय , श्री पार्श्वनाथ भगवान् की .....जय, श्री शास्वतधाम की जय / लेखक ब्र.हरिभाई के १८ वर्ष के परिचय में यह तीसरी वार जय बुलवाई थी / पहले १- २० फर १९४९ को आठवी वार के समयसार प्रवचन पूर्ण होने के समय २- १९५४ में गिरनार यात्रा में "गिरनार गिरी पर ३ कल्याणक प्राप्त नेमिनाथ भगवान् की .....जय /" १३-१४ मार्च को यहाँ फिर आये यहाँ सागर के श्री गणेश प्रसाद वर्णी दि. जैन संस्कृत विद्यालय का स्वर्ण जयंती महोत्सव हुआ – फागुन सुदी १३ १४ मार्च को सामूहिक पूजन के बाद प्रवचन हुआ जिसके बाद वर्णीजी बोले –"मैं क्या बोलूं , आपने आश्रव के ऊपर जो विवेचन किया है उसमें शंका को कोई स्थान नहीं है / फिर भी शंका हो किसी को तो समाधान कर लेना अच्छा है भैया /" १५ मार्च को सामूहिक पूजन पांडुक शिला पर हुई जिसमें गुरुदेव भी पधारे / रथयात्रा निकली / रात्रि में स्वर्ण जयंती महोत्सव में गुरुदेव भी पधारे /
गिरिडीह	१० मार्च	रामचन्द्र सेठ के यहाँ कुछ देर रुके , वह बहुत प्रभावित हुआ /
देवघर	१० मार्च	भोजन किया /
चम्पापुरी – मंदार्गिरी	१० मार्च	अंग देश की यात्रा ११ मार्च चम्पापुर-नाथनगर पधारे /१२ मार्च को मंदार गिरी के दर्शन किये /
ऋजुवालिका	१५ मार्च	फिर सम्मेद शिखर जी वापिस आये और यहाँ १६ मार्च को प्रवचन हुआ जिसमें इंदौर के प.बंशीधर सिद्धांत शास्त्री जी ने गदगद होकर कहा – "अनंत चौबीसी के तीर्थंकर और आचार्य ने सत्य दिग.जैन धर्म अर्थात मोक्षमार्ग प्रगट करने वाला जो संदेश सुनाया है वाही आपकी वाणी में आया है / महावीर भगवान् एवं आचार्य कुन्दकुन्द की वाणी ही अप कह रहे हैं / तीर्थंकरों एवं कुन्दकुन्द स्वामी का ह्रदय खोल कर रख दिया ... आपकी दृष्टी से जो तत्व प्रतिपादित होता है वह जगत के लिए कल्याणकारी है /"प. फूलचन्द्र जी एवं मुन्नालाल जी सागर ने भी प्रसंशा की /
जमशेदपुर	१७ मार्च	कार्यक्रम न होने पर भी कामाणी भाइओ तथा सो.हेम कुंवर बेन के आग्रह से पधारे , सेठ श्री नरभय राम भाई ने व्यवस्था की / TATA का स्टील कारखाना देखा /
झरिया धनवाद	१८ मार्च	मोरबी वाले शांतिलाल उमियाशंकर ने व्यवस्था की / प्रवचन हुआ /२००-३०० फूट गहरी खदानों में लिफ्ट से गये , बिजली के हिंडोले में बैठे /
आसनसोल – चेन्सुरा	१८ मार्च	

कलकत्ता	फागुन वद ४ १९ मार्च	रात्री में बेलगछिया में विश्राम /
खंड गिरी उदय गिरी	फागुन वदी १३ २८ मार्च	कलिंग देश की यात्रा
कलकत्ता	फागुन अमावस ३१ मार्च	दिल्ली को प्रस्थान /
चौपारन	फागुन अमावस	रात्रि विश्राम मात्र को रुके /
डालमियानगर	१ अप्रेल	सोननदी पार करने के लिए रेल में बस एवं यात्रिओं को बिठाया जाता है इस तरह रेल में गुरुदेव भी बैठे /
बनारस	१ अप्रेल	भोजन मात्र को रुके /
ईलाहावाद	१ अप्रेल	प्रयाग में किले के अंदर एक अक्षय वटवृक्ष है जो आदिनाथ की तपोभूमि है /
कानपुर	चैत्र सुदी १ १ अप्रेल	विश्राम एवं भोजन मात्र को रुके /
कुरावली	चैत्र सुदी १	दोपहर में
एटा	चैत्र सुदी २	दोपहर में आधा घंटा प्रवचन हुआ /
हस्तिनापुर	चैत्र सुदी २ -३	यात्रा की
दिल्ली	चैत्र सुदी ४ – ४-४-१९५७	३००० व्यक्तिओं द्वारा स्वागत / स्वागत प्रमुख लाला राजकृष्ण जैन थे / तथा प्रथम श्रेणी जज श्रीमती काँताबेन जैशी राम प्रधान मंत्रानी थी / वीर्सेवा के नये भवन में गुरुदेव का उतारा था / परेड मैसन में मंडप बनाया गया था / लाल मन्दिर में स्वागत हुआ था /उछरंग भाई ढेबर कांग्रेस अध्यक्ष भूत पूर्व गुजरात के मुख्य मंत्री भी मिलने चर्चा लाभ लेने आये / भारत वर्षीय दी जैन परिषद् की तरफ से प. जुगल किशोर मुख्त्यार की अध्यक्षता में गुरुदेव श्री का सन्मान हुआ / वीर्सेवा मन्दिर की तरफ से भी स्वागत हुआ / अभिनन्दन पात्र भेट करने में आया था / गुरुदेव श्री ने कहा - स्वभाव का स्मरण विभाव का विस्मरण यही सच्चा मांगलीक हैं / और यही संतों का आशीर्वाद हैं / ताराचंद्र जी प्रेमी, जेना वाच वाले प्रेम चन्द्र जी सेठ / दिल्ली मुमुक्षु मंडल की तरफ से अभिनन्दन पत्र दिया गया /
मुजफ्फरनगर	चैत्र सुदी ७ सायं	रात्री विश्राम

	७-४-५७	
सहारनपुर	चैत्र सुदी ८ ८-४-५७	जम्बू प्रसाद जी ने अभिनन्दन पत्र भेट किया / समयसार कलश प्रथम पर प्रवचन हुआ /
खतौली	चैत्र सुदी ८ ८-४-५७	रास्ते में स्वागत किया परन्तु रुकना सम्भव नहीं था / बेशुमार भीढ़ थी /
दिल्ली	८-४-५७	रात्री विश्राम चैत्र सुदी 9 को अलवर के लिए गमन
अलवर	चैत्र सुदी १० १०-४-५७	
आमेर	१०-४-५७	
जयपुर	चैत्र सुदी ११-१४	रास्ते नीबई ग्राम में दर्शन किये /
अलीगढ –टोंक	चैत्र सुदी पूनम १४-४-५७	रात्री विश्राम
अजमेर	चैत्र वदी १ १५ अप्रेल	
लाडनू	चैत्र वदी २ १६ अप्रेल	
सुजानगढ़		यहाँ से वापिस लाडनूं आये
कूचामन	चैत्र वदी ६ २० अप्रेल	
किशनगढ़	२०	रात्री विश्राम
ब्यावर	२१	
शिवगंज	२२	

जावाल	*२२*	*को आये परन्तु*
आबू	*२२ -२४*	
जावाल	*२५ अप्रेल*	*को पुनः आये |*
तारंगा	*चैत्र वद १३ , २७ अप्रेल*	
अहमदाबाद	*३० अप्रेल*	*६८ वि जन्म जयंती मनी १ मई को*
सोनगढ़	*बैशाख सूद ६ ५ मई ५७*	*वापिस पधारे*

मंगलायतन – अप्रैल २०१५ से साभार

चातुर्मास – सूची

१९७०/१९१४	बोटाद	१९८१/१९२५	गढडा
	लाठी		बढवाण
	राणपुर		दामनगर
	दामनगर		राणपुर
	राजकोट		लाठी
	पाणियाद		अमरेली
	दामनगर		पोरबंदर
	राजकोट		जामनगर
	राणपुर	१९३३	राजकोट
	बोटाद	१९९०/१९३४	राजकोट
	बोटाद		

परिवर्तन के बाद १९३५ से १९८० तक १९३९,१९४३ २ वार राजकोट चातुर्मास के अलावा सोनगढ़ रहे

- शांतिनाथ कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन परमागम मंदिर में लिखी प्रशस्ति |

मंगलं भगवान वीरो , मंगलं गौतमो गणी |

मंगलं कुन्द्कुंदार्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलं ||

आत्म ग्यानी स्वानुभव रसास्वादी परम प्रभावक अध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी निज शुद्धात्मा का अनुभव करके निज कल्याण हेतु सोनगढ़ (गुज) में रहे |और आत्मार्थी जनों को कल्याण पथ पर ले जा रहे हैं | उन्होंने इस काल में द्रव्य-गुण-पर्यायों, उपादान निमित्त, निश्चय व्यवहार का जिन प्रणीत यथार्थ स्वरूप प्रत्येक द्रव्य की स्वतन्त्रता , शुद्धतम द्रव्य सामान्य की त्रैकालिक शुद्धता एवं परिपूर्णता , सम्यक दर्शन का स्वानुभूति युक्त अपार माहात्म्य द्र्व्यादी अनेक विषयों का स्वानुभव झरते प्रवचनों द्वारा तथा ग्रन्थ प्रकाशन डरा व्यापक प्रचार प्रसार करके भारत वर्ष तथा विदेशों के मुमुक्षों जनों पर असीम उपकार किया है | उनके प्रताप से अनेक जिनागम ग्रंथों की तथा जिनागामों पर स्व स्वसंवेदन मुद्रित प्रवचन ग्रंथों की लाखों प्रतियां प्रकाशित हो चुकी है इस प्रकार उनके द्वारा हुई परम धर्म प्रभावना से भारत वर्ष के मुमुक्षु जनों के हृदय में जिनागम के प्रति जो भक्ति प्रगट हुई है उसके एक अंगभूत कार्यरूप में मुमुक्षु समाज द्वारा "पूज्य श्री कानजी स्वामी के भक्तों द्वारा " यह मंदिर निर्मापित हुआ है |

इस परमागम मंदिर में वीतराग सर्वज्ञ देवाधिदेव भगवान महावीर की उंकार ध्वनी द्वारा निकले हुए परमागम श्रीमद भगवत कुन्दकुन्द आचार्य देव प्रणीत श्री समयसार नियमसार, प्रवचनसार जी पंचास्तिकाय जी अष्टपाहुड की मागधी भाषा में गाथाएं तथा हरिगीत उत्कीर्ण किये गये हैं | इस परमागम मंदिर का उद्घाटन संवत .....श्री जिनेन्द्र भगवान् के परम पवित्र परमागम शाश्वत जयवंत वरतो उर जगत का कल्याण करो |

सर्व मंगल मांगल्यं , सर्व कल्याण कारकं |

प्रधानं सर्व धर्माणां , जैनम जयतु शासनं ||

आत्मा की अन्य शक्तियाँ

श्री अनुभव प्रकाश, पद्मनंदीपच्चीसी, राजवार्तिक, आदि ग्रंथों के आधार से ३७ अन्य शक्तियां |

१- सम्यकत्व शक्ति – सम्यक दर्शन पर्याय हैं, परन्तु यह शक्ति तो त्रिकाल है | वह द्रव्य गुण पर्याय तीनों में व्याप्त हैं | वह शक्ति कोई राग या निमित्त में से नहीं आती हैं |

२- चारित्र शक्ति – महाव्रत या निमित्त में से नहीं आती | स्वरूप रमणता रूप चारित्र शक्ति आत्मा में त्रिकाल हैं | पर्याय मात्र नहीं |

३- स्वयंसिद्धत्व शक्ति – किसी के द्वारा कृत्रिम नही |

४- अज शक्ति – अनादिपना है किसी से जन्म नहीं |

५- अखंडत्व शक्ति

६- विमल शक्ति – स्वच्छत्व शक्ति में अस्ति से यहाँ नास्ति से |

७- भेद शक्ति – राग के कारण नहीं, एकांत अभेद नहीं | गुण भेद |

८- अभेद शक्ति – प्रदेश भेद नहीं एकांत भेद |

९- नास्तित्व शक्ति – पर परिणति रूप नहीं |

१०- साकार शक्ति- स्व का आकार आत्मा में हैं |

११- निराकार शक्ति – जडाकार नहीं | विभाव व्यंजन पर्याय का प्रवेश नहीं |

१२- वस्तुत्व शक्ति

१३- अचल शक्ति – स्वभाव से अचल हैं |

१४- ऊर्ध्वगमन शक्ति – अन्य की तुलना में महत्वशाली बन कर रहता है | ऊर्ध्व गमन स्वभाव भी |

१५- सत शक्ति

१६- असत शक्ति

१७- सूक्ष्मत्व शक्ति – इन्द्रिय गोचर नहीं |

१८- स्थूलत्व शक्ति – केवल दर्शन ज्ञान में देखने जानने में आता है |

१९- अप्रमेयत्व शक्ति – जगत के कोई क्षेत्र काल से आत्मा का माप नहीं हैं दुसरे के माप में न आ सके ऐसा भाव से माप में आ सकता हैं |

२०- अन्यत्व शक्ति –

२१- अनंत अगुरुलघुत्व शक्ति – अगुरुलघू अनंत हैं | समस्त गुण अगुरुलघु है |

२२- भव्यत्व शक्ति –

२३- अभव्यत्व शक्ति – अभव्यता नहीं छोड़ता है |

२४- सर्वगत शक्ति – अपने को जानते हुए सर्व को जान लेता हैं |

२५- द्रव्यत्व शक्ति – द्रवणपना |

२६- अवगाहनत्वशक्ति – प्रतिजीवी – दूसरों को अवगाहन देता हैं |

२७- अव्याबाधत्व शक्ति – प्रतिजीवी –

२८- सूक्ष्मत्व शक्ति – प्रतिजीवी – नाम कर्म के अभाव में |

२९- अगुरुलघुत्व शक्ति – प्रतिजीवी – गौत्र कर्म के अभाव पूर्वक |

३०- वैभाविक शक्ति – विकार-विपरीत | सिद्धों में स्वभाविक हैं |

३१- योग शक्ति –

३२- क्रियावती शक्ति – स्वयं शक्ति अशुद्ध नहीं परन्तु मात्र संसार अवस्था में कार्य होता हैं |

३३- अनवगाहनत्व शक्ति – यह शरीर में अवगाहन –जन्म –अवतार नहीं लेता |

३४- भोक्तृत्व शक्ति – रागादि को नहीं स्वयं स्वयं को भोगे |

३५- असर्वगतत्व शक्ति – अपने प्रदेश को छोड़कर अन्य में नहीं जाता |

३६- अनादिसंतति बंधन-बंधत्व शक्ति – पर्याय का क्रमबद्धपना |

३७- पूर्ण शक्ति – अपूर्ण नहीं होता |

महापुरुषों में आत्म साधक, परमात्म आराधकों को लौकिक साहित्य में संत गिना जाता है | मैंने अनेकों भक्ति मार्गी एवं ज्ञान मार्गीय संतों का जीवन परिचय एवं साहित्य पढ़ा है | जैन तत्व ज्ञान की धारा उन सब साधकों से प्रथक परिचय को परतंत्र नहीं हैं | ज्ञान एवं भक्ति धारा का रूप यहाँ के मनीषीयों / ऋषियों में भी दीखता हैं परन्तु परन्तु वह प्राण नहीं वारदानावत हैं | मूल प्राण तो हैं 'मैं स्वयं भगवान स्वभावी सत्ता हूँ, और भगवान बन कर रहूँगा |'पराधीनता की कारा नष्ट हुए बिना न रहेगी | इतना सुंदर प्राण तत्व अतीन्द्रिय गोचर, अव्यक्त, रत्नागार के दुर्लभ रत्न वत ग्रंथागार में अमावस के अन्धकार में छिपे हुए थे | श्वे. ने इस अचिन्त्य दुर्लभ धारा को ओझल रखने में ही अपने कर्तव्य की इतिश्री समझी | परन्तु दिग आमने में वह तीक्षण धारा जागृत ज्वालामुखी वत बीच बीच में अंतराल में प्रस्फुटित होती रही है | और अचानक २० वी सदी के प्रारम्भ में विस्फोट हुआ और ज्वालायें भड़कने लगी...और अब फिर लगने लगा है की ये स्वाध्याय का तूफान अब न थमेगा |

ज्ञात इतिहास में इतना स्वाध्याय का दौर पढने सुनने में नहीं आया | और यह सब कुछ हुआ एक महापुरुष सत्पुरुष कानजी स्वामी के खोजी व्यक्तित्व, निर्भीक अडिग पर्वतवत अचल व्यक्तित्व के उदय से | निर्दोष बालकवत चेष्ठा परन्तु तीक्षण मेघा के धनि कि जिससे बड़े-२ पाखंडो के महल ढहाता, लो रोको तूफ़ान चला रे |

आगम पथ मई १९७६ में पृष्ठ ४७ जगन्मोहन लाल कटनी लेख अत्यंत पठनीय हैं |

५५ साल पहले बिना में विद्वत परिषद् में ७५ विद्वानों के बीच जैन तत्व मीमांसा पास कराई गई उससे पहले सोनगढ़ में गुरुदेव श्री के पास लेम्प की रौशनी में फुल चन्द्र जी ने पढ़ी गई थी | इसमें २४ वर्षीय थे मोती लाल जी डॉ साहब के मौसाजी के साथ बिना ले गये | जब तक प्रवचनकार नहीं आये तो समाज के लोग नाराज हो गये और डॉ साहब को गाडी पर बिठाया | डॉ साहब बोले फिर मैं उतरूंगा नहीं | सभी ने कहा कोई नहीं उतारेगा | ५ मिनिट बाद ही समस्त विद्वान आ गये | इसमें वंशीधर जी न्यायाचारी इंदौर अध्यक्ष थे | जो गोपाल दस जी बरैया के शिष्य थे | तब कहा था मिथ्यात्व का ताला खुलता नहीं टूटता है | सम्यक्त्व मिथ्यात्व नाश का कारण नहीं वरन कार्य हैं | सभी ने बधाई दी |

KUNVARJI JAADAV JI BHAAI PAALEJ – 10-3-16 KOCHIIN SE PRAPT JAANKARI

बड़े भाई शिवलाल जादव जी – पत्नी मोती बेन १९४२-४३ में गुजर गई भाई ८१ वर्ष की उम्र में निःसन्तान गुजरे |

बहिन – सोमू बेन

कुंवरजी जादव भाई १८८६-१९७२ में लगभग १.३० बजे गुजर गये तार भेजा गुरुदेव श्री पालेज मंदिर बनने के १० वर्ष बाद गुजरे प्रवचनोंपरान्त स्वयमेव ही कहा "कुंवरजी भाई गुजरी गया" |

पिताजी की पहली शादी १९१० में हुई वह निःसन्तान गुजर भी गई |

तब दूसरी शादी गोदावरी बेन (१८९३ में जन्मी १९८९ में गुजरी ९६ आयु)कुंवरजी भाई पालेज १९१९ में विवाहित अनुमानित |

सन्तान भाई –

मनसुख कुंवरजी भाई१९२१ में जन्मे-२०१० में गुजरे | (गुरुदेवश्री के तत्वज्ञान से सबसे अधिक लाभान्वित) पत्नी शारदा बेन ७५ वर्ष, **(भीकू भाई – नयना बेन पालेज, अरुणा जोबालिया – हिम्मत जोबालिया कांदिवली, चन्द्रिका – रोहित कुमार जामनगर, इल्ला- नलिन कुमार भावनगर, पंकिता शाह - रमेश शाह कांदिवली किरण भायाणी-शैलेश भायाणी कांदिवली)**

कांता बेन १९२२ में जन्मी – छोटा लाल(५७) चीतल हाल पूना, ८२ वर्ष की आयु में २००३ में गुजर गईं | स्व.कीर्ति मेहता(६२) प्रदीप मेहता(६५) हंसा मेहता मिलिंद प्रदीप मेहता – अर्चिता मेहता(पियूष मेहता-३७)पुणे, जस्मीन मेहता (५८) - नितिन मेहता दादर, (६५) (कोचीन से प्राप्त जानकारी ११-३-१६)

सरस्वती बाई डगली - १५-१-१९३१ में जन्मी (२०१६ मार्च में ८६ वर्ष की) चंदुलाल जी डगली जन्म ४-११-२७ - अवसान ६-१२-२००७ बीछिया से १९५१ में विवाह हाल कोचीन | विवाह के २० साल बाद १९७२ में पिताजी कुंवरजी भाई गुजर गये | - सन्तान दर्शना५-४-५१-बलबंत राय मेहता२४-८-१९४३, वसई,

प्रतिमा(६-७-१९५७)- रजनी कान्त शाह- १८-९-१९५५ तथा जिनेश-(२९-१-१९६०)- भावना डगली(६-१०-६२) कोच्ची मितेश जिनेश डगली (११-४-१९८७) जीनल डगली ३०-९-१९९० (फोन – ०४८४-२२२७३२८, ९४४७०२७१२५) प्रसिद्ध पंडित हिम्मत भाई डगली आपही के कुटुम्बी हैं | सोनगढ़ प्रति वर्ष ४ माह को जाती थी |

कंचन बेन ८१ की आयु में गुजरी सोनगढ़ प्रति वर्ष ४ माह को जाती थी |

हंसमुख कुंवरजी १९३३ में जन्मा – यशवंती वड़ोदरा,(जयश्री-दीपक मेहता दादर, तृप्ति-तुषार भायाणी वोरिवली, बकुल- आशा शाह वड़ोदरा)

१४ मार्च १९३६ में नटवर कुंवर जी भाई हाल वड़ोदरा |

उत्तम चंद जी सिवनी के संस्मरण

१२- १९६९ में भावी तीर्थंकर की चर्चा निकली | १५ पेज गुजराती भाषा में सायक्लोस्टाइल में निकला था जिसकी फोटो कॉपी नेरोबी से लाये थे |

१३- १९८५ में राजकोट पंच कल्याणक में लालूभाई ने स्वयं के तीर्थकर एवं संध्यावे न के गणधर पने की सुचना दी थी तत्काल डॉ. साहब ने निषेध कर दिया था |

१४- सूर्यकीरति तीर्थंकर प्रतिमा प्रतिष्ठा के विरोध में १० लेटर पंजी.पोस्ट से सोनगढ़ भेजे थे |

१५- साधर्मी वात्सल्य – १९६९ में प्रथम दर्शन पाए सोनगढ़ में आने-जाने के किराया एवं साहित्य की राशि सिवनी पंहुचा दी थी | हिंदी में प्रवचन का आग्रह किया था | आत्म सिद्धि मिली पढ़ी और वही घूमते-२ प्रश्न पूछे थे | जाते समय १० घंटे बस से खड़े -२ सोनगढ़ गये थे |

१६- गुरुदेव से मिलने से पहले आलू, भटा, प्याज खाते थे |

१७- इटली से अक्षर खोदने की मशीन २८०००/- रु में आयी थी |

१८- कांतिभाई कामदार (गढडा) मद्रास ८ लाख खर्च कर गुरुदेव श्री पर एनीमेशन बना रहे हैं |

१९- कांतिभाई भायानी ११ वर्ष सोनगढ़ में मेनेजर रहे | शिविर खर्च व्योरा ७८०००/- बताया | गुरु. एक भी भगवान बन गया तो शिविर सफल हो जायगा |

२०- सेठ बाबूलाल जमादार कलकत्ता में वर्णी जी के पक्ष का प्रश्न लाये तो गुरु. ने उठा दिया | प्रश्न – कर्म विकार कराते हैं | वर्णी जी से चर्चा करने के बाद कलकत्ता में गुरुदेव श्री गजराज जी गंगवाल कलकत्ता के घर ठहरे थे |

२१- परिवर्तन के कुछ समय वाद- सोनगढ़ में सर्व प्रथम गौरीशंकर रसोइया नियुक्त किया था हरिभाई भायानी ने एवं रसिकलाल लेखापाल रखा था / हरी भाई भायानी २५ वर्ष व्यापार मंडल के प्रधान रहे थे /

२२- २८-४-७९ के प्रवचन का अंश – पृ-१२५ स्वामीजी " सर्व प्रथम ६३ वर्ष फागुन सुदी १४ को यह भाव आया था / शब्द नहीं थे वाचन नही था /"

संस्मरण

श्री प. ज्ञान चंद जैन 'स्वतंत्र ' सह सम्पादक जैन मित्र सूरत पृ ६५

सन १९५१ रेलवे स्टेशन से तागे से धर्मशाला आया, अठन्नी दी / तो तांगे वाले ने कहा मैं कानजी स्वामी का भक्त हूँ असत्य नहीं बोलता / आप मुझे चार आने दे दीजिए / एक सवारी का यही किराया है / वह चवन्नी ले कर चला गया /

२- दूसरा प्रसंग मंडप में से धर्मशाला आते हुये स्वामीजी के प्रवचन की चर्चा मैं अपने मित्रों से कर रहा था बीच में एक मित्र कह उठा कि व्यवहार सर्वथा अग्राह्य नहीं हैं / तब एक अज्ञात व्यक्ति ने कहा यदि व्यवहार ग्राह्य होता तो हमारे पूर्वज ऋषि मुनि व्यवहार हो हेय न बतलाते / हम अनादि काल से व्यवहार को ही अपना मान रहे है इसलिए हमको तात्विक वस्तु हाथ में नहीं आती /

वह अज्ञात व्यक्ति राजकोट जिले का अजें पेंटर था जो २ वर्ष से वहाँ काम करता था / उसको भी इतना तो समझ में आ गया / उस पर स्वामीजी का अध्यात्मवाद देखकर हम दंग रह गये /

स्वामीजी की पृथ्वी जैसी क्षमा शीलता और समुद्र जैसी गम्भीरता,उदारता के समक्ष उनका विरोध एक नगण्य वस्तु है / वे किसी के वैर विरोध में पड़कर अपना समय और शक्ति नष्ट नहीं करते / उनका चाहे जितना विरोध होता रहे फिर भी वे सुमेरु के समान अटल एवं अडिग हैं यदि वे ओरों की तरह तू -२ मैं-२ में पड़ जाते तो उनका जो आज स्थान है वह नहीं होता / ....सचाई तो यह है कि विरोध ही प्रचार की कुंजी है स्वामीजी का जितना विरोध होगा उतना ही अधिक प्रकाश एवं प्रचार होगा / ....पू कानजी स्वामी जिस धुरी पर स्थित थे उसीपर आज भी स्थित हैं / **<u>आज से २००० वर्ष पूर्व कलिकाल सर्वग्य आ.कुन्दकुन्द स्वामी ने जिस अध्यात्म वाद की गंगा बहाई थी उसी गंगा को कानजी स्वामी बहा रहे हैं</u>** /ठीक ही तो है 'दिये से दिया जलाते चलो'

कानजी स्वामी स्वयं कहते हैंकि मैं अव्रती हूँ पर वे अव्रती होते हुये भी उनका खानपान एवं दैनिक चर्या, दानी-व्रती,साधु संत से कम नहीं है उने पास ढोंग आडम्बर पाखण्ड नहीं चाल सकता / इस दृष्टि से वे (चारित्रिक दृष्टि से, विद्वता की दृष्टि से खानपान की दृष्टि से) लाख दफे अच्छे हैं / यह मैंने कटु सत्य लिखा है जो कि कुछ लोगों को रुचेगा नहीं

कानजी स्वामी जो कुछ कहते हैं,वह उनके अंदर की निष्पक्ष एवं पवित्र आवाज होती है और कहते समय उनकी जो तन्मयता है, वही तन्मयता लोगों के हिरदय पर चुम्बक का कम करती है / वे उपदेश करते समय एक रस एकाकार एवं तदाकार हो जाते है / और आध्यात्मिक विषय की उनकी जो अनुभूति है ,वह मूकभाषा में लोगों को अपनी और वरवस खीच लेती है /

" मैं प्रथम बार जब सोनगढ़ गया, तब वहाँ मंदिरजी में श्री जिनबिम्ब के दर्शन किये | प्रतिमाजी के ओंठ लाल थे , नेत्र में काला सफेद भाग था |....एक दिन साहस कर स्वामीजी से कहा – स्वामीजी ! सर्व मिथ्यात्व को छोडकर थोडासा क्यों रहने दिया " वे समझ गये और प्रतिष्ठा मंडप में खुलासा कर हटवा ने का रास्ता पूछा | तो अब न रंगना प्रक्षाल होते-२ स्वतः छूट जायेगा | और ऐसा ही किया गया |

प. जगन्मोहन लाल शस्त्री कटनी आभार सन्मति सन्देश १९५५-२००५ वी.नि.स.२४८८ कानजी स्वामी जयंती विशेषांक मई १९६२ सम्पादक प्रकाश हितेषी | सन्स्थापक – सहजानंद जी वर्णी

पृ-४२.....२९ – जो भाई अपने गाँव-नगर में भी प्रवचन का लाभ उठाना चाहते हैं, उनको रिकॉर्डिंग मशीन मधुकर भाई के हाथ भेज दी जाती है |

पृ-५२-५३

जावाल यात्रा बैशाख सुदी १२ स.२०१४ शुक्रवार २३-४-१९५७

३६ कौम के ठाकुर सुमेर सिंग, श्री वन चंद, चावान्नीलाल, ठा जोरावर सिंह, ठा. उमेद सिंह आदि ५४ व्यक्तिओं के हस्ताक्षर से पात्र लेख –

सार- १- ऋषभ चंद जी जावाल वालों के निमंत्रण पर पधारे | २- मंडप में ट्यूब लाईट लाउड स्पीकर का प्रबंध किया गया ३- प्रातः ७-३० बजे स्वागत जुलुस निकला ४- मंडप के पास आते ही ५-७ लोग अशांति फेलाने लगे-नारे लगाने लगे ५- स्वामीजी वापस चले गये ६- प्रवचन का आग्रह टाला वे नही चाहते थे कि उनके जाने के बाद ग्राम में अशांति एवं वैमनस्य फेल जाये ७- २ बजे मध्यान्ह भोजनोपरांत माउंट आबू गमन किया ८- रात्री ९ बजे स्थानीय नागरिकों ने निर्णय कि समस्त ३६ जाति के लोग २ बस ४ कार से प्रातः ७-३० बजे लगभग १०० लोग गुरुदेव को वापिस लेने गये |

९-२४-४-५७ को पुनः मंडप बनाकर भव्य स्वागत एवं प्रवचन कराया गया | २५ शामियाने ध्वज निशान ५००० आदमियों ने स्वागत किया १०- ठा. सुमेरसिंह ने २५ रु चरणों में चड़ाये ११- १ रुपया श्री फल प्रत्येक यात्री को भेंट किया | ११- १ बजे जावाल से विदा हुये |

उस दिन के प्रवचन का विषय –

११- आत्मधर्म प्राप्ति की प्रथम सीढ़ी कौनसी है ?

१२- सुख का सच्चा सधन क्या है ?

१३- पूर्ण एवं सच्चा ब्र. कौं पालन कर सकता है ?

१४- आत्मा को पूर्ण शांति कैसे मिल सकती है ?

१५- गृहस्थ धर्म के पालन का उपदेश |

श्रद्धांजलि